भाग-8

सम्पादक :

मोहनलाल मधुकर

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, जयपुर

सम्पादक

मोहनलाल मधुकर

अध्यक्ष

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी

□

प्रकाशक

गोपाल प्रसाद मुद्गल

सचिव

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी

□

आवरण

सकेत गोस्वामी

□

पैलो सस्करण 1993

□

मूल्य

पचास रुपया

□

□

प्रकासन स्थल

78, श्री कल्याण नगर, करतारपुरा जयपुर

दूरभाष 513588

□

मुद्रण स्थल

पोपुलर प्रिन्टर्स,

महावीर मार्ग, अलवर

विसै सूची

'राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार ग्र थ के या आठए भाग मे प्रदेस के चार ब्रजभाषा साहित्यकारन की ब्रज-रचना-माधुरी अरु व्यक्तित्व कृतित्व की झाकी प्रस्तुत कीनी गई है। ये हे—

श्रीमती विनोद कुमारी 'किरण' (सम्पादन सहयोगी डॉ रामकृष्ण शर्मा), श्री भँवर स्वरूप 'भँवर' (सम्पादन सहयोगी श्री राजाराम भादू), पटवारी श्री रामजीलाल शर्मा (सम्पादन-सहयोगी श्री जमुनाप्रसाद शर्मा) अरु श्री यशकरण खिडिया (सम्पादन-सहयोगी डा शक्तिदान कविया।)

या भाग मे जहाँ एक ओर ब्रजभाषा गद्य की मँजी भई लेखिका श्रीमती विनोद कुमारी 'किरण' के रेडियो रूपक, रेखाचित्र अरु कहानी पाठक के अन्तरतम कौ स्पर्श करिबेवारी हैं, वहाँ दूसरी ओर समाज सुधारक स्वतत्रता सेनानी प भँवर स्वरूप 'भँवर', कलगी ख्याल उस्ताद पटवारी श्री रामजीलाल शर्मा अरु जन-चेतना के भक्त कवि श्री यशकरण खिडिया जैसे वयोवृद्ध कविन कौ अनुभव भरौ काव्य साहित्य है जो सत्तर-अस्सी बरसन सौं मरुधरा कौ ब्रजरस मे सराबोर करतौ रह्यौ है।

पहले के भागन की तरियाँ याहू ग्र थ मे प्रारभ मे प्रत्येक साहित्यकार की निजी अरु परिवार की जानकारी बिन्दु रूप मे दई गई है। अपनी रचना-प्रक्रिया अरु साक्षात्कार माँहि बिन्ने अपने विचार, सुझाव अरु अनुभव प्रगट करे हैं, जिन सौं साहित्यकार

की रचनान की पष्ठभूमि परिस्थिति-सदभ अरु अनुभूतीन को पतो चलै है । रचनाकार के जीवनकाल मे वाके अनुमोदन सौ छपिबे क कारन जि सामिग्री समीच्छक, शोधकर्त्ता इतिहासकार अरु जिज्ञासु पाठकन के ताई प्रामाणिक ह्वैबे तं बडे महत्व की सिद्ध होइगी । यासौ नये रचनाकारन कौ साहित्य क्षेत्र मे प्रवेस की प्रेरना हू मिलैगी ।

व्रज-रचना-माधुरी माहि बानिगी क रूप मे साहित्यकारन की मूल रचनान कौ सग्रह है । या सग्रह के आधार पै विद्वानन के कछू लेखहू दिए गए हे जो बिनके मूल्याँकन म सहायक हुगे ।

या ग्र थ की सामिग्री सौं जि बात सही नाय लगै कै व्रजभाषा म श्री राधाकृष्ण की भक्ति, प्रेम अरु सिंगार कौ ही वनन है । हा, श्रीकृष्ण भक्ति, रामलीला, शास्त्रीय सगीत अरु ब्रजलोक साहित्य नै ही ब्रजभाषा कौं व्यापकता, जीवतता अरु स्थायित्व दीनौ हैं, यामे कछु सदेह नाय । ब्रजभाषा की अपनी सरसता अर मधुरता हू या दृष्टि सौ बहौत सहायक रही है ।

पिछिले एक हजार बरसन सौ ब्रजभाषा जन-जन कूँ नेह सागर माहि डुबाइकै राष्ट्रीय एकता दढ राखिबेवारी भाषा रही है । इतनौं ही नही, हिन्दी के मध्यकालीन साहित्य सौं ब्रजभाषा कौ काव्य-साहित्य निकारि दियौ जाइ तौ हिन्दी काव्य साहित्य मे और कहा रह जाइगौ ।

ब्रजभाषा मे आजु के सदभन मे विपुल साहित्य रच्यौ गयौ है । समय के सग ब्रजभाषा के रूप मे हू परिवतन भयौ है अरु परम्परागत उपमा, उत्प्रेक्षा आदि की ठौर नये-नये उपमानन कौ हू प्रयोग कियौ गयौ है । या ग्रन्थ की सामिग्री सौ ग्यात होइकैं ब्रजभाषा काव्य की ही नाइ, गद्य की हू सशक्त भाषा है । यामे कृष्ण-कन्हैया कौ गुणगान करिबे के सगई समय के अनुकूल नये नये विषयन पै हू रचना है रही है । ब्रजभाषा कविता की ही भाषा नाइ, वामे आजु के गद्य की सिगरी नई विधान म हू खूब लिख्यौ जाइ रह्यौ है अब ब्रजभाषा कवित्त, सवैया अरु समस्यापूर्त्तीन तानूँ सीमित नाइ रही, वामे नित नूतन छन्दन की छटा अरु गीतन की माधुरी हू मिलै है ।

ब्रजभाषा के साहित्यकारन कौ आजु के वातावरन मे राष्ट्रीय स्तर पै प्रोत्साहित कियौ जाइ, आजु के प्रमुख प्रचार माध्यम दूरदसन पै बिनकी रचना-माधुरी कौ रसा-

स्वादन करायौ जाइ तौ औजू हमारे देस के साहित्य, कला अरु सस्कृति मे विद्यमान प्रेम, करुणा अरु वात्सल्य भावन कौ सगम साकार है सकैगौ। जौ ब्रजभाषा के साहित्य कौ समुचित प्रचार-प्रसार कियौ जाइ तौ हमारे रूखे-सूखे मनन मे सनेहू की सरिता प्रवाहित है सकैगी।

या ग्रथ माँहि गद्य अरु पद्य की विधान मे आपकूँ विविधता के सग-सग परम्परागत अरु या युग के नय भाव-बोध की ब्रजभाषा के सरस सुहाने रूप की एक झलक मिलैगी।

☐ श्रीमती विनोद कुमारी 'किरन' —

श्रीमती विनोदकुमारी 'किरन' नई पीढी की ब्रजभाषा लेखिकान मे सबसौं आगे है। ये अपने आसपास की देखी, भोगी अरु समझी यथार्थ घटनान पै रेडियो रुपक, एकाकी कहानी, रेखाचित्र अरु सस्मरण लिखिबे मे सिद्धहस्त है। अब बिन्ने ब्रजभाषा मे उपन्यास हू लिखिवे कौ मानस बनायौ है।

'किरण' जी समाज ते लई भई सामिग्री ही समाज कूँ परोसैं है। समाज की बिसगतीन पै, चली आइ रही कुरीतीन पै सूधी साँची मुहावरेदार ब्रजभाषा मे गद्य-साहित्य की रचना कर रही है, जो हिरदे मे सहजई पैठि जाय।

किरण जी पहलै खडी बोली हिन्दी मे कहानी लिखिबे लगी, ता पाछै ब्रजभाषा मे आई। ब्रजभाषा मातृभाषा हैबे के कारन ब्रजभाषा गद्य मे बिनकूँ बडी सफलता मिली। ब्रजभाषा गद्य मे ही रचना करिकैं विनोद जी नैं सिद्ध करि दियौ है कै ब्रजभाषा मे पद्य की ही नहीं, गद्य की हू सशक्त अभिव्यक्ति है सकै है। खडी बोली हिन्दी मे तौ किरण जी नें कविता हू रची परि ब्रजभाषा पद्य मे कतई कलम नही चलाई।

या पुरुष-प्रधान समाज मे प्रताडित हौंते आये नारी समाज सौं बिनकी विसेस सहानुभूति है। वे जाने है कै भारत की नारी सबसौ जादा बिबस, लाचार अरु दुखी रही है। या कारन विनोदकुमारी जी ने नारी जीवन-की बिडम्बनान पै ही मुख्य रूप सौ लेखनी चलाई है। वे दहेज प्रथा के विरोध के सगई नारी-समाज सौं हू आभूषन-प्रेम अरु फैसनपरस्ती मिटानौ चाहै। समाज सौं मृत्युभोज, कर्जा लैबे की प्रवृत्ति अरु सब तरिया की बिसमता दूरि करिबे कौ प्रयास किरण जी की रचनान मे मिलै है।

त्रिनोदकुमारी ने सौने का कौवनी' लोकप्रिय रेडियो रूपक सौ ब्रजभाषा मे लिखिबौ प्रारम्भ कियो परि बिनकूँ कहानी लिखिबौ सबसौ अच्छौ लगै है। बिनकी दष्टि मे कहानी ही गद्य की सर्वाधिक रचनात्मक विधा हे। किरन जी की कहानीन मे हमारे समाज मे फैली निठुराई, जनानीपन, अफसरन की चमचागिरी, पुरानी पीढी कूँ हिकारत सौं देखिबौ, जीवन मे व्याप्त ढोग, सौतेली मैया की क्रूरता, ईमानदारी ते काम करिबे वारेन कूँ मिलिबे वारे कष्ट आदि कौ वनन है। नारी हैबे ते वे नारी मन की गहरी जानकारी राखैं हैं सो बिन्ने अभिशप्त अबला की पीडा कहबे के सग सग अन्याय अरु शोषण कौ विरोध करिबे वारी सबला के साहस की कथा हू कही है।

विनोदकुमारी जी के रूपक गाम की धरती ते उठे भए हे सो बिनमे गाम की माटी की गन्ध है तौ कहानीन मे आधुनिक महानगरीय जीवन की झाकी अधिक है। बिन्ने ब्रजभाषा गद्य मे बहौत लिख्यौ है परि प्रकासित प्रसारित थोरौ ही भयौ हे।

हमारी मनोकामना है कै किरण जी कौ जस प्रकास दिन दूनौ राति चौगुनौ फैलतौ जाइ।

☐ श्री भँवर स्वरूप शर्मा 'भँवर'—

आर्य समाजी ते गाधीवादी बने 'भँवर' ब्रजभाषा माहि सहज हास्य के ऐसे समाज सुधारक रचनाकार हैं जो अपने गाम अँधियारी ते लैकें दूर दूर तानूँ समाज मे उजियारौ करि रहे हे। भोरे भारे परि दूरदष्टिवारे भँवर जी अपने गाम की ठेठ ब्रज-भाषा के हिमायती है। बिन्नें गाम मे किसानन के बीच रहकें लोक साहित्य अरु लोक-भाषा के माध्यम सौं सामाजिक चेतना जगाइबे कौ महत्वपूण काम कीनौ है।

गाम के खेतीवारी के कामकाज कूँ वना बताइकै भँवर स्वरूप जी गाधीजी की आँधी मे राष्ट्रीय स्वतत्रता सग्राम मे कूदि परे अरु जेलयात्रा करिकें अनेकन यातना सही। बिनके वा त्याग अरु बलिदान के कारन ही आजु केन्द्र अरु राज्य सरकार दोनून की ओर सौं न्यारी न्यारी पेशन अर सम्मान सुविधा मिलै हैं।

सदाँ एकरस रहबेबारे भँवरजी अपने जीवन अरु कायन मे बनाबट, मिलाबट, दिखावट अरु सजाबट सौ कोसन दूरि रहे है। वे भीतर बाहर ते हर तरिया देहाती ही है। 'हिन्द सुराज' के सस्थापक अरु 'विश्वबन्धु समाज' प्रचारक भँवर जी अपनी लोकधुन की तज

बारहमासी अरु आल्हा छ दन की ि तान सौ दलित, गलित, थकित अरु शोषित समाज कूँ ऊँचौ उठाइबे मे लगे रहे है, समाज की बुराईन पै चोट करत रहे है । वे छुआछूत साम्प्रदायिकता, जातिपाति, दहेज प्रथा, मृत्यु भोज, बाल विवाह, अनमेल ब्याह, अ ध विस्वास, ढोग ढपाक ढुढियापुरान, धूम्रपान ााग्पान, मदिरापान, मुकदमाबाजी आतकवाद, जूआबाजी, घूसखोरी हरामखोरी, फैशनपरस्ती, फिजूलखर्ची अरु अश्लीलता के घोर विरोधी हे शाकाहार सीमित परिवार अरु सवधम समभाव के समथक है । याके ताई वे गाठि कौ पैसा लगाइके छोटी छोटी पोथी हजारन की सख्या मे अरु लाखन की सख्या मे पम्पलेट छपाइके बॉटि चुके है।

लोकभाषा म लोकसाहित्य रचिके लोकचेतना जगाइबे बारे भवर जी खरी-खरी कहवैया हे । बिनकी बहुआयामी कवितान मे आध्यामिक सामाजिकता, राष्ट्रीय एकता अरु अखडता के स्वर है । वे अपनो तरिया के अनूठे लोकप्रिय मचीय कवि है । बिन्ने अपन हास्य-व्यगन मे राजनेतान की गिरगिटी चाल अरु तीथन के पडा पुजारी, स्याने-भोपाल की लूट पै करारे प्रहार किए है । ब्याह म अ धाधुन्ध जेबर बनवाइबे, धूमधडाकौ करिबे अरु गाजे-बाजे सजावट मे धन की बरबादी कौ डटिके विरोध कीनौं है ।

भँवर जी ने ब्रजभाषा कविता मे कहानी लिखिबे को नयौ प्रयोग कियौ हे । आजादी को लडाई कौ तज आल्हा मे बिनकौ कियौ वनन बडो रोचक है । बिनकी किसान राज अरु हिन्द स्वराज रचना छपि चुकी है । पर्यावरन सुधार अरु प्रौढ शिक्षा जैस आजु के राष्ट्रीय सरोकारन सौ हू बे जुरे भए हे । बिन्ने महिला मडनन के माध्यम सो जागति लाइबे कौ बीडा उठायौ अरु बडौ काम कीयौ । इन दिनान अपनी वृद्धावस्था अरु अस्वस्थता की परवाह कीये बिना वे श्रीमदभगवद गीता अरु बाल्मीकि रामायन कौ ब्रजभाषा पद्य माँहि भावानुवाद करिवे मे लगे है ।

मातृभूमि के परम उपासक, भारतीय सस्कृति के प्रबल पोषक अर युगचतना के या साहित्य-साधक की समता भला को करि सकै है ?

☐ पटवारी श्री रामजीलाल शर्मा—

आसुकवि प रामजीलाल शर्मा पटवारी रामलीलान क तुल ीदास, समाज की पचायतन के प्रमुख पच (अध्यच्छ), ख्यालगोई के उस्ताद, भजन जिकरीन के कथवैया अरु पुरानन के ज्ञाता है । या तरियाँ बिनक अनेकन रूप है परि बिनकौ सबसौ चहेतौ

रूप है—ख्यालगोई के उस्ताद कौ। ख्यालन मे हू वे कलगी अरु तुर्रा दोनू अखाडेन के उस्ताद है। आजु वे कलगी अखाडे के नौ राजस्थान मे एकमात्र पहौचे भए उस्ताद माने जाय है।

प रामजीलाल जी कौ पहलौ ख्याल भोजन थारी पै गाये गए खुर्जा के प हरिबस तुर्रा उस्ताद के ज्वाब मे लिख्यौ गयौ हो। ता पाछे तौ पटवारी जी नै लोक-साहित्य की अनेक विधान पै जमिकै लिख्यौ, अकूत लिख्यौ, बेजोड लिख्यौ। बिन्ने कवि सम्मेलनन कें काजै समस्यापूर्त्ति हू करी। कामवन महात्तम मे चौबोला लिखे, ऊषा-अनरूद्ध चरित्र रच्यौ, द्रोपदी हरण की नई नौटकी लिखी। कथानकन मे भजन-जिकरी ख्यालगोई की रचना करी। हास्य पैदा करिबेवारी फटकेबाजी अरु नौंकझौंकन सौं पटवारी जी बडे लोकप्रिय रहे।

ख्यालगोई के उस्ताद पटवारी जी कौ पहलपट्ट कौ गायक चेला नबाव मिया तौ आजकल पाकिस्तान मे है। बिनके दूसरे चेला श्री छुट्टनखाॅ 'साहिल' ब्रजभाषा के जाने माने कवि है अरु ख्यालगोई परम्परा की बागडोर सॅभारे भए है।

पटवारी जी ने सिगरी रगतन मे ख्याल लिखे है—रगत खडी, रगत माफत लावनी, रगत छोटी लावनी, रगत बहरे तबील, रगत छोटी तबील, रगत शिकस्त, रगत बारह-मासी, रगत जामिनी, रगत लॅंगडी आदि।

पटवारी जी कू आजु ख्यालगोई की शास्त्रीय परम्परा, नौटकी सब कछू मिटौ-मिटौ सौ सिमटौ-सिमटौ सौ लगै है बिनकी प्रबल इच्छा हैकै ब्रजलोक सगीत ब्रज लोक-नाटय अरु ब्रज लोक साहित्य कौ सरच्छन- सवधन होनो चहिऐ जासौ ब्रजराज की सेवा-बारौ ब्रजलोक- सस्कृति बनी रहै, बची रहै। वे हिरदे ते चाहै हैं कै ख्यालगोई की पुरानी परम्परा लुप्त नही होनी चहिऐ।

पटवारी जी नें पुरानन कौ गहरौ अध्ययन कीनौं है अरु 'आर एल जी पी' उप-नाम सौ विपुल मात्रा मे रचना करी है। या ग्र थ माँहि नमूना के रूप मे छपी रचनान सौ पतौ चलैगौ कै पटवारी जी कू पिंगलशास्त्र कौ कितनौं गूढ ज्ञान है अरु बिनकी रचनान म भाव पक्ष के सग सग कला पक्ष कितने ऊँचे स्तर कौ है। पटवारी जी के काव्य मे छन्दन कौ चमत्कारपूर्ण प्रयोग बेजोड है।

☐ श्री यशकरण खिडिया—

वतमान मे चारण वश के सुमेरु अरु पुरानी पीढी के चारण कविन माहि अगण्य रचनाकार श्री यशकरण खिडिया मेवाड अचल की भीलवाडा नगरी कौ गौरव बढाइबे वारे वयोवृद्ध कवि है।

खिडिया जी कूँ डिंगल अरु पिंगल की कविताई के सस्कार वश परम्परा सौ जनम घुट्टी म मिल। अति विनयी अरु सूधे सुभाव के जसकरण जी पुरखान की परम्परा त्यागिकै राजा-महाराजान की ठौर परमात्मा कौ जस बखान करिबे मे लीन रहे हे। देश कूँ पराधीनता क फदा ते मुक्ती दिबाइबे मे हू बिनकौ योगदान रह्यौ है। बे माँ भवानी (शिवा) के अन य भक्त हे, देशप्रेमी समाज सुधारक ह, विचारन की खेती करिबे वारे किसान चारण है। वे नीतिवेत्ता अरु आयुर्वेदीय औषधीन के ग्याता हे।

खिडिया जी ने अपनी कवितान मे कबहू डिंगल कौ डमरू बजायो है तौ कबहू पिंगल की ब्रज-बासुरो पै लट्टू भए हे। खडी बोली हि दी मे हू बिन्नें कुशलता सौ कलम चलाई है।

प्रभु सौ लगाव मानव मात्र के उद्धार की कामना अरु प्राणीमात्र क उपकार के भाव खिडिया जी मैं कूट कूट के भरे है। आस्तिक अरु धार्मिक प्रवृत्ति क कवि खिडिया जी के काव्य माँहि कवि-कम की कुशलता, लोक-व्यवहार की मार्मिकता, जन-जीवन मे गहरी पैठ अरु कवि-हृदय की सम्पूण सरसता मिलै हे।

खिडिया जी नें आध्यात्मिकता, मानव धम अरु समाजसुधार सम्बन्धी हजारन दोहा रच हे। बिनकी कृतीन माँहि खारी कौ बाढ-वनन, शिवाशिव महिमा अरु यश-करण दोहावली प्रकासित है चुकी है। उदबोधन काव्य, सवैयावली, राजस्थान दोहा वली, घरेलू औषधालय, प्रश्नोत्तरी काव्य, सुकहावत शतक आदि अप्रकासित हैं।

श्री भँवर स्वरूप 'भवर' की नाई खिडिया जी नें हू अपने काव्य मे छुआछूत, टीका दहेज,प्रथा, वृद्व विवाह, अनमेल ब्याह, सती प्रथा, मृतक भोज, मदिरापान, रूढ़ि, अधविश्वास, घूसखोरी जैसी सामाजिक बुराइन पै तीखौ प्रहार कीनौं है अरु परिवार कल्याण याजनान कौ समथन कियो है। विचारन पै आय समाज के प्रभाव के कारन कहू-कहू वे मूर्तिपूजा कौ हू विरोध करै है। खिडिया जी के काव्य मे हिरदे के सहज-साँचे उद्गार है जिनमे राष्ट्रीयता अरु समाज सुधार के स्वर सुनाई परै है। बिन्नें आज-कल के नेतान पै, वकीलन पै, बैदन पै अरु कवीन पै हू चुभते व्यग किए हैं।

खिडिया जी ने अपने मन की बात काव्यमय पत्रन के थोरे से आखरन माँहि मार्मिक रूप मे व्यक्त करी है। डॉ शक्तिदान कविया जी कूँ लिखी एक पाती मे बिन्ने अपनौ परिचै या तरिया दियौ है –

'बालकाल मे ब्याह भौ, पिता गए तन त्याग।
अपढ रह्यौ इतउत भ्रमौ, रख ईसर प्रति राग ।।'

अपने भोग विलास सौ, पैसा सदा बचाय ।
विविध विसै पोथीन कूँ, पढत रह्यौ मँगवाय ।।

जो एक बेर खिडिया जी सौ मिलि लेइ, बिनकौ ई है जाय। बिनकी आवभगत, बिनके सनेह मने विनयपूण व्यवहार सौं निहाल है जाय।

खिडिया जी कौ काव्य जन जन कौ काव्य है। बिनकी भाषा माँहि सादगी अरु सहजता है फिरिऊ ठौर ठौर रूपक, उत्प्रेक्षा, उपमा, विसमक्रम, उदाहरण, बयण सगाई (डिंगल कौ लोकप्रिय शब्दालकार) अरु चौकडिया अनुप्रासन कौ अनायास ई प्रयोग भयौ है। समीक्षक के या कथन मे कछू ससय नाइ कै 'खिडिया जी की रससिद्ध रसना सौ काव्य के उद्‌गार सहजई झरना की नाई झर झर झरत रहे है।'

अकादमी अत्य त आभारी है डॉ शक्तिदान कविया जी की जिन्ने खिडिया जैसे एकातवासी ब्रजभाषा कवि की जानकारी दई अरु बिनके सम्ब ध मे द्वै महत्वपूण आलेख प्रस्तुत करे।

ब्रजभाषा की विदुषी रचनाकार श्रीमती विनोदकुमारी 'किरण' अरु भँवर जी पटवारी जी अरु खिडिया जी जैसे वयोवृद्ध मनीषी साहित्य साधकन क ताई हिरदे सौ नमन करते भई अकादमी कामना करै है कै वे शताधिक स्वस्थ आयु पाइ राष्ट्र, समाज अरु साहित्य की सतत सेवा करते भए नई पीढी कूँ सत्प्रेरणा देते रहे।

या ग्र थ के ताई प्रेस कापी तैयार करिबे मे अकादमी परिवार ते जुरे सिगरे भैया ने विसेसकरि सचिव श्री गोपालप्रसादजी मुदगल ने सक्रिय सहयोग दीनौ, कछू लेखन कौ ब्रजभाषीकरण कीनौ अरु मागदशन कर्‌यौ जासौं जि ग्रन्थ छपि सक्यौ। बिन सबन कूँ हिरदे त आभार, नमन।

अ त मे कहनौ चाहू कै या सकलन की रचना अरु लेखन माँहि, साहित्यकारन के निजी विचार, सुझाव अरु अनुभव ह। बिनसौ अकादमी की अरु सम्पादक की सहमति होइ ऐसौ कतई आवश्यक नाय।

श्रीमती विनोद कुमारी 'किरन'

आयु—उनचा[illegible] बरस
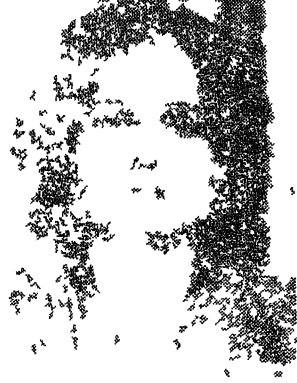
सुनावे ब्रज-माधुरी

सोने की कोधनी गढी ही जिन हातन नें,
चतुर से चितेर की बात कछू और है।
आखर बरन पाय परम जाकी लखनी को,
बनि है तस्वीर चर्चा होय ठौर-ठौर है।
बसि है विनौउगढ लिखि है ब्रजभाषा मे,
सुनावै ब्रज माधुरी, सिहावै दौर-दौर है।
नाम विनाद पायो किरन उपनाम सग,
नई पीढी नई बात होत सिरमोर है।

श्रीमती विनोद कुमारी 'किरन'

परिचै

जन्म तिथि	22 नवम्बर, 1944
जनम स्थान	भरतपुर
पिता को नाम	श्री महेश नारायण भारद्वाज
मैया को नाम	श्रीमती शांति देवी
काव्य गुरु	मैया
शिक्षा	एम० ए०
परिवार	एक छोरी द्व छोरा
वतमान पतौ	जी–127 उदयपथ, श्याम नगर विस्तार भाग, जयपुर

मेरी रचना के ताने बाने

मेरी रचना प्रक्रिया या के बारे में अधिक का लिखूँ ? मेरी सबते पैली रचना खड़ी बोली की कविता (महारानी कालेज मैगजीन) में छपी। जाको शीर्षक ओ —

"जगमग करती दीपावली"

वाके पीछे ब्याह के बाद भरतपुर आई यहाँ पे श्री गोपाल प्रसाद जी मुदगल जी मेरी कहानीन नै पढ़ो करे हे बोले -

"विनोद जी तुम ब्रजभासा में चौं नाय लिखो मैं चाहूँ तुम ब्रजभासा मे लिखबो सिरू करो।

विनकी बात मान के मैंने ब्रजभाषा में लिखबो सिरू कियो।

हमारे परास मे काकी रहो करे ही लहौरी सी, गोल मटोल, मोर के अंडा जैसी आँखिन वारी काकी भगती दौरती सी हमारे घर आमती और हमारी सास के ढिंग बैठिके सब मन गुन की बतरामती। काकी के व्यक्तित्व पे मैंने एक रेखा चित्र लिखो 'गुलकन्दी काकी।' और एक रेडियो रूपक लिखो—

'सोने की कौधनी'

'सोने की कौधनी' सन 1978 मे मथुरा आकाशवाणी से प्रसारित भयो। वाकी सबने सराहना करी। अबहू मैंने सुनी है कै चाहे जब या रूपक ए आकासवाणी प्रसारित करै।

एक बेर एक छोरा को ब्याह भयो। बेटी वारे ने बन्द लिफाफे मे चारो ढिक दिये। पैले ढिक मे चोखे रुपइय्या दै दिये। बेटा वारे ने समझी चारो ढिक

बराबर क आमिगे। कज कर के जेवर जाटो बनवायो। बाजे ताशे करे। बेटी वारे ने तीन ठिकन मे सूखे टरकाय दिये। छै महीना पीछे जब अपनी छोरी को ब्याह करनो परो।

अब जो आमतो वाई कहतो 'बन्द लिफाफे मे भौत माल लियो अब देवे के बखत चौं हाथ खेंच रहे ओ।'

बडी मुसकिल मे जान फॅस गई। मेरौ रूपक 'बन्द लिफाफो' मैंने या घटना ते प्रेरणा पाय कै लिखो।

हमारे एक मित्र की पत्नी, आन्मी ए आदमी नॉय समझती अपनी धुन मे रहती जो म्हौडे मे आमती भक्क सो निकार देती। जे नाय सोचती सुनबे वारे ए कैसी लगेगी ? 'भाभी रेखाचित्र विन पै ई आधारित ऐ।

ऐसे ई मेरी कहानी, आसपास की घटना जो मैने देखी सुनी, भोगी और समझी बिन पै ई लिखी भई ऐ।

हमारे समाज मे भौत से घरन मे बडेबूढेन की ठीक ढग ते देखभाल नाय करी जाय पर बिनके मरबे कै, पीछे नुक्ता करौ जाय गाव के गॉम बुलाये जॉय।

'जीमत कता पूछी ना बात, मरे बुलाई नाइन हात'

'मत्युभौज' याई भावना प आधारित रूपक ऐ।'

जब कबहू कोऊ बात मोय प्रभावित कर जॉय। मन ए छू जॉयं तो मै वाए समाज के सामई लावे को प्रयत्न करूँ। सामग्री समाजते लऊ समाज कूँ परोस दऊ। याए आप कछू समझ लेऔ। रचना प्रक्रिया कहालेऔ। रचना के ताने बाने कहलेऔ। रचना की कहानी कहलेऔ।

–श्रीमती विनोद कुमारी किरण

श्रीमती विनोद कुमारी किरन सौं साक्षात्कार

☐ आप सबसौ पैले तो अपनौ सक्षिप्त परचै दैबे की महती कृपा करे ।

मेरौ नाम विनोद कुमारी किरण ए । मेरे पिताजी श्री महेश नारायणजी भारद्वाज हे । मेरौ जन्म स्थान भरतपुर है । सन् 1942 मे 22 नवम्बर कूँ मेरो जन्म भयौ । सन् 1964, फरवरी 8 कूँ मेरौ ब्याह डा एस एल शर्मा सौ भयौ । परिवार कल्याण जो राष्ट्री सरोकार ए वाकौ निर्वाह करने भये जीवनयापन कियौ । दो छोरा और एक छोरी हमारी सन्तान है । छोरी का नाम रचना जो एडवोकेट श्री सतीश जी कूँ रेवाडी ब्याही ए । दोनो छारा कुवारे है । बडौ छोरा नवीन, कमबाईड डिफेन्स सरविस के साक्षातकार की तैयारी कर रयौ ए । छोटो छोरा समीर डेन्टल सरजरी के द्वितीय वष मे पढ रह्यौ है । ये ई मेरौ छोटौ सौ परिचय हैं ।

☐ भौत भौत धन्यवाद, अब आप अपनी अकादमिक उपलबधीन सौऊ थोरौ परचै करावे ।

मैने सन् 1962 मे महारानी कॉलेज जयपुर ते ग्रेजुएशन कियौ । सन् 1964 मे मेरौ ब्याह है गयौ वाके पीछे सन 1970-71 मे मेने राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर ते हिन्दी मे एम ए प्रथम श्रेणी मे उत्तीण कियौ ।

☐ भौत-भोत कृपा करी आपने, धन्यवाद ! अब आप सौ ई पूछनौ चाहू कै आपकौ रुझान साहित्य-सृजन की ओर कैसे भयौ ? कहाँ सौ प्रेरणा प्राप्त भई ?

मेरी माता श्रीमती शान्ती देवी कूँ अध्ययन कौ भौतु सौक हो । विनकी देखा देखी मैऊ पढबे लग गई । वाके पीछे सूरदास, रसखान कौ साहित्य पढौ । सबते पैले मैने एक कविता लिखी जो महारानी कालेज की मैगजीन मे छपी ।

ब्याह के पीछे मेरे पति ए मेरे लिखबे पढवे की रुचि के बारे मे पतौ लगी । भरतपुर के स्थानीय अखबारन मे मेरी कहानी छपी जिनके नाम है—

(1) विश्वास की विजय ।

(2) बाल का हत्यारा भी रो उठा ।

कहानी और ऊ छपी पर या वखत माए बिनके नाम याद नाय । मेरी ये कहानी श्री गोपाल प्रसाद जी मुद्गल ने पढी । वे बोल कि—

'विनोद जी आप ब्रजभासा मे चो नाय लिखौ । मै चाहू क आप ब्रजभासा मे लिखौ ।'

बाके बाद मैने ब्रजभासा मे एक रेडियो रुपक लिखो 'सानै की कौधनी ।' जो आकासवाणी मथुरा ने कई बेर बजौ । सबने भौत पसन्द कियो वा ते प्रेरणा पाय कै मै ब्रजभाषा मे लिखबे लग गई ।

☐ आपकी प्रेरणा क ओर काऊ स्रोत रहे होय तौ कृपया बिनके बारे मेऊ थोरौ प्रकास डारें ।

मोय लिखबे की प्रेरणा मेरे आस पास घट रही घटनान ते मिलै । जो कछू मैं घटतौ देखूँ वाइए अपनी रचनान मे ज्यो की त्यो लिख दऊ ।

☐ ब्रजभासा सौ आपका लगाव कैसे भयो ?

मैंने जब सुनवौ सिरू किया तो ब्रजभासा सुनी, बोलवौ सिरु कियौ तौ ब्रजभासा बोली, पढवौ सुरु कियो तो सूर-रसखान की कविता पढी । मेरौ मतलब है कै ब्रजभासा मेरी अपनी भासा है जा कारण या ते लगाव स्वभाविक है ।

☐ ब्रजभासा के कैऊ रुप प्रचलित ऐ जैसे जगरौटी, काठरी, डागी मेवाती अरु गोकूँली । इनम सो कौनसी ब्रजभासा कूँ आप मानक ब्रजभासा माने हे ? आपकी रचनान मे कौन से सरुप की प्रधानता है ।

आपने जो बात पूछी ऐ उन रूपन कौ स्वरूप मेरे मामई नॉय । या सौ मै तुलनात्मक रूप सौ आपके समक्ष या कौ सोदाहरण उत्तर नाय दे सकूँ । मै मथुरा-वृन्दावन गोकुल, भरतपुर मे बोली जावे वारो ब्रजभासा को पक्षधर हू । मैं यही जनमी ऊ, यही पली ऊँ, यही लिखबौ सीखौ हे । यहा की भासा ही मेरी भासा है ।

☐ ब्रजभासा मॉहि आपकी सबते पैली रचना कौन सी है ? ई कब लिखी गई ? या के लिखबे की प्रेरणा कहॉ सौ मिली ?

मेरी सबते पैली रचना 'सौने की कौधनी' है। ये सन् 1978 मे लिखी गई और 78 मई आकासवाणी मथुरा ते प्रसारित भई। ये रूपक साची घटना पे आधारित है। हमारी एक काकी ही अबहू हतै। वाके छोरा को ब्याह ओ। हमने भौत समझाई पर बू नाय मानी कज कर कै वाने बडी रच पच कै सौने की कौधनी बहु कै काजे गढवाई और ब्याह पीछे जौ वाको हाल भयो वाए आप सोने की कौधनी मे पढे या सुनै तौ ज्यादा अच्छौ है। या तैं मोय प्रेरणा मिली कै मेरे आस पास जो कुरीति चली आ रई हे जो कुछ है रह्यो है वाए सबकै सामने लाऊँ और मैने ये रुपक लिखौ।

☐ आपकी प्रकासित अरू अप्रकासित रचनान कौ कछू परचै दैवे की कृपा करे।

मेरी कहानी समाधान और चक्रव्यूह, राजस्थान पत्रिका मे छपी जो भोत पसन्द करी गई। प्रससा के पत्र मेरे पास आए। 'कमाऊँ बेटा' मध्यप्रदेस के अखबार "नई दुनियाँ" मे छपी। 'नासूर' और एक दो और कहानी चित्तौड के स्थानीय अखबारन मे छपी। मेरी कैई कहानी अप्रकासित ह जिनमे ते कछून के नाम ये है कस्तूरी मृग, दोषी कोन, अपशकुनी, जवाँ मद आदि।

☐ आपकी कौन-2 सी रचना आकासबानी सौ प्रसारित भई है। ध्यान होय तौ आकासबानी केन्द्र कौ नाम व तिथि हू बतायबे की कृपा करै।

मेरी एक वार्ता 'भरतपुर सहर कौ इतिहास आकासवाणी मथुरा ते प्रसारित भई। दो कहानी 'अन्तिम कर्ज' और एक कहानी और उदयपुर आकसबाणी उदयपुर ते प्रसारित भई जिनकी तिथि मौय याद नाय।

☐ आपने गद्य की विविध विधान प लेखनी चलाई हैं परि पद्य नैकऊ नाँय लिरयौ। या कौ का कारन है ?

मैंने अपने लेखन काय की मिरुआत पद्य सौ ई करी। सबते पैले मैंने कविता ई लिखी अबहु कबहु कछू लिख लऊँ जैसे कै मैने ये लाइन लिखी —

'गम ना कर अगर सोने पे चोट लगी
गमॉ के दौर यूँ ही आ के गुजर जाते है
आ हर एक गम को हँस के झेले साथी
हम तो हम हे यहा फरिश्तो के भी इम्तहान लिये जाते है।

☐

वही राते वही बाते मुलाकाते वही होगी
बशर्ते गर्दिशो मे साथ तू छोडे न ए साथी

'बेवफा है वक्त ये हम जानते थे मगर
बे मुरोव्वत इस कदर हो जायगा ये ना था पता'

ऐसे ई जब कबहू मेरौ मन करै मै लिख दऊँ पर मेरी प्रिय विधा गद्य ऐ। ब्रजभासा मे मैंने पद्य मे कछू नाँय लिख्यो।

☐ आपकी रचनान कूँ पढिके ऐसौ लगै जैसे आपने भोगे भये यथाथ कूँ ई चित्रित कियौ है। ई अ दाज कहाँ ताँनू सही ऐ ?

ये बात आपको सही ऐ। मेरी रचनान मे भोगो भयौ और देखौ भयौ यथाथ चित्रित कीयौ गयौ ए।

☐ आपने यथाथ कूँ तो निर्भीक है कै चित्रित कियौ ऐ--परि का यथाथ को चित्रण करि कै ई साहित्यकार अपने दायित्व सौ मुक्त है सकै ?

या ते ज्यादा साहित्यकार का करि सकै। वो तौ स्थिति ऐ पाठकन के समक्ष प्रस्तुत कर दे और समाधान का होयेगो या का होनो चाइये याए पाठक जाने। फिरऊँ समाधान स्वत निकस आवै तौ साहित्यकार की सहज अभिव्यक्ति है।

☐ आप कला कूँ कला के लिये माने है या जीवन के ताँई हू बाकौ कछू औचित्य स्वीकारे है।

मै आज के युग के अनुरूप कला कूँ जीवन के ताँई स्वीकार करूँ। जीवन इतनौ जटिल है गयौ है जाए जीवे के ताई कला के सहयोग की जरूरत है। कला कै युगधरम ए कै वो जीवन के अनुरूप चलै। जीवन जीवे के ताँई कला सौ राह खोजी जा सकै।

☐ आपने नारी जीवन की बिडम्बनान कौई ज्यादा चित्रण करयो है ? का पुरुष कौ जौवन बिडम्बनान कौ मुक्त होय ?

पुरुष कौ जीवन बिडम्बनान सौ मुक्त होय सही बात नाँय पर हमारौ समाज पुरुस प्रधान समाज है यामे नारी जीवन ज्यादा प्रताडित है। नारी ज्यादा विवस है, लाचार है, दु खी है। या कारन मेरी रचनान मे नारी जीवन की बिडम्बनान कौ चित्रण है। वैसेऊ एक नारी हैवे के कारण नारी की भावनान नैं ज्यादा अच्छी तरियाँ समझ सकी ऊँ।

☐ आप अपनी रचनान के माध्यम सौ ससार कूँ कहा सदेस दैनौ चाहौ ?

मैं ये बात कहनौ चाहू कै ससार मे ते कुरीति समाप्त है जॉय । जैसे दहेज प्रथा है नारी कू जो दबाय कै रखयो जॉय या विचार मे परिवतन होय और नारी कू समान अधिकार मिले । वैसे सच्ची बात ये है कै मैं तो जो देखू जो भोगू वाए पाठकन के सापने रख दऊँ अब पाठक बाए कैसे रूप मे ग्रहण करे याए वे जाने ।

☐ ब्रजभासा के प्राचीन साहित्यकारन मे ते आपकू सबसौ ज्यादा कौन प्रभावित करे है ।

मोय सूरदास, रसखान, घनानन्द ने समान रुप सौ प्रभावित कियौ है । सूरदास मोय अधिक प्रिय है ।

☐ वतमान समै के ब्रजभासा साहित्यकारन मे ते आपकू सवश्रेष्ठ कौन लगै और क्यो ?

म गोपाल प्रसाद व्यास के हास्य व्यग्य की पक्षधर रही ऊँ । श्री गोपाल प्रसाद व्यास के काव्य मे जीवन के ताई जीवे कौ एक ओर स्पष्ट सकेत, है तो दूसरी ओर समाज के कटकन पे करारे व्यग्य है ।

☐ गद्य की विविध विधान मे ते आपकी दृष्टि मे सर्वाधिक ससक्त विधा कौन सी है ?

मोय कहानी अच्छी लगै । मेरे विचार ते ये ई गद्य की ससक्त विद्या है ।

☐ ब्रजभासा अकादमी ने जब आपकौ सम्मान करयौ आपकू कहा अनुभूति भई ?

मोय अच्छौ लगौ । प्रसन्नता की अनुभूति भई ।

☐ राजस्थानी भासा कू लै के जो विवाद चल रहयौ है वाके बारे मे आपकौ का मत ए ?

मेरे विचार मे राजस्थानी नामक कोई भाषा है ई नाँय । चौ के अलवर मे मेवाती, हरियाणवी, ब्रजभाषा मिश्रत बोली प्रचलित ए । भरतपुर, करौली, धौलपुर मे ब्रजभासा बोली जाय । कोटा अचल मे हाडौती और उदयपुर के आसपास मेवाडी बोली जॉय । ऐसी हालत मे पूरे राजस्थान मे एक भासा तौ है नॉय जॉय राजस्थानी कौ नाम दे सकू फिर बाय लागू करबै ते का फायदा ? मारवाड क्षेत्र की भासा कू राजस्थानी कहबो कहाँ तक उचित है ? आप सोच सकें ।

☐ कछू लोगन कौ ई मत है कै ब्रजभासा की सेवा करिबे ते राष्ट्रभासा हिन्दी कौ अहित है सकै। आपकौ का विचार है ?

मै ब्रजभासा कू हिदी सौ अलग नाय समझू। ब्रजभासा की वद्धि हिन्दी साहित्य की ही बृद्धि है। सूर मीरा तुलसी, रहीम, रसखान हिन्दी मे ते निकार दिये जॉय तो हिन्दी मे रहई का जायगौ ?

☐ ब्रजभासा के प्राचीन और अर्वाचीन सजन मे आपकू का भेद दिखाई दैबे है ?

ब्रजभासा मे प्राचीन काल मे पद्य मे साहित्य सजन कियौ गयौ है और अब गद्य मे साहित्य सृजन कियौ जा रह्यौ ए ई सबते बडौ भेद ऐ।

"कचन करत खरो"

"काहे कौ झगरौ उपन्यास लिखे गए है।"

'रेखाचित्र, रूपक, सस्मरण, रूपक आदि विधान मे हू लिखौ जाय रह्यौ हं।

☐ ब्रजभासा मे आपकू कौन से गुण दोस दिखाई दे ?

ब्रजभासा मधुरता लिये हुए कोमल का त पदावली की भासा है। या के बारे मे मे ये पक्ति कह सकू जो गोपाल प्रसाद व्यास न कही है—

कँकर हू जहँ काकुरी है रहे।
सकर हू की लग जँह तारी
बूठे लगे जॉह वेद पुराण
अनूठे लगे रसिया रस गारी

ऐसी अनूठी ब्रजभासा म भोय कोई दोस नाय दीखै पर खडी बोली मे ओजवीर जैसो उतारौ जा सके वैसौ ब्रजभाषा मे तुलनात्मक रूप सौ सभव नॉय।

☐ ब्रजभासा अकादमी के बारे मे आपकी कहा प्रतिक्रिया है ?

ब्रजभासा अकादमी सतत प्रगति के पथ पै बढ रई ए याने सबुसौ अच्छो काम ब्रजभासा गद्य कौ पुनजीवन कियो ए। नई पीढी कू समस्यापूर्ति करायबौ और गद्य लेखन के ताई तैयार करबौ अकादमी कौ सराहनीय काय है।

☐ आप नई पीढी कू कहा सदेस दैनो चाहो ?

मै तो ये ई कह सकूँ कै नई पीढी ब्रजभासा ए पढै-बोलै वाए समझे जबई याकी उन्नति है सके।

☐ आप अपनी सबसौ अच्छी रचना कौन सी कूँ माने है और का कारन तै ?

मे मेरे रेडियो रूपक सोने की कांधनी' ए अपनी सबसौ अच्छी सुनी गई ए और याई ने सर्वाधिक प्रससा पाई ए।

☐ भविस्य म आपकी लेखन योजना का ए ?

मेरी कोई विशेस योजना नाय ? मै तो जब मेरो मन करै लिखवे लग जाऊँ। वैसे मेरो विचार एक उपन्यास लिखबे कौ है। याकी रूपरेखा बनाय लई है।

☐ आपके लेखनकाय मे आपकूँ काऊँ तरिया कौ सहयोग काऊ तै मिलतौ होय तौ बताव ?

स्थायी सहयोग तौ कहू तै नॉय मिलै। हॉ जब कबहू कोऊ रचना प्रकासित होय या प्रसारित होय तो पारिश्रमिक मिल जॉय।

☐ ब्रज की सस्कृति के बारे मे आपको कहा विचार ऐ ?

ब्रज की सस्कृति तो भारत की सस्कृति ऐ। जो ब्रज मे नॉय वौ कहू नॉय। या ब्रज की सस्कृति मे लोकरजक स्वरुप और आनन्द तत्व समाहित है।

☐ ब्रजभासा के भविस्य क बारे मे अपने कछु विचार बताइबे की कृपा करे ?

ब्रजभासा अकादमी के सहयोग सौ ब्रजभासा को भविष्य सुखद प्रतीत होय। अब ब्रजभासा साहित्य मे नवीन विषयन पे (समसामयिक) लिखौ जा रह्यो ए। पर या के ताई मेरो सुझाव ऐ के ब्रजभासा साहित्य दूरदरसन पे आनौ चइये जासॉ ई पूरे भारत मे प्रकास मे आवे।

आपने बढे धैय के सग अरु सूझ-बूझ सौ भारी आत्मीयता प्रदर्शित करते भये जो उत्तर दीने ऐ बिनके तॉई आपके भौत-2 धन्यवाद ! आपके सनेहपूरित अतिथि सत्कार के तॉई हू हार्दिक आभार ! जै सिरी कृस्न !

☐ **डॉ० रामकृष्ण शर्मा**
सरस्वती सदन, कौडियान मौहल्ला
भरतपुर (राजस्थान)

विनोद कुमारी 'किरन' कौ ब्रजभासा-रूपक साहित्य

न को ऽप्यन्य नारी सदृश 'बराह मिहिर के या कथनै गहराई ते देखै तो बामन तोला पाव रती सही बैठै। नारी पुरुष ते कौन से काम मे कम परै ? नारी पुरुष ते बढिके सहृदय होय क्योंकै वाम दया, करुना, रति, भक्ति वात्सल्य जैसे भावन कौ अभाव नाँय। वैदिक ऋषिकाल ते लैकै आज तानू भौतसी नारी भई जिन्हे कला अरु साहित्य मे कमाल दिखायौ है। सिगरौ लोक साहित्य अरु लोक कला नारी के जतनन तेई जीमती रहीयै। बू अपने मन के भावन्नै अपनी योग्यता के अनुसार काउ तरियाँ ते समाज के सामई धरि दे। बिनमे ते भौत सी साहित्य सिरजनैं अपनौं माध्यम बनामे। ऐसी साहित्य की सलौनी राह पै चलिबे वारी है श्रीमती विनोद कुमारी किरण'।

विनोद जी ने न्योतौ भौत सी कहानी रेखा चित्र एकाकी अरु रेडियो रुपक ब्रजभासा माहि लिखे। परि हम या लेख मे बिनके रुपकन पैई विचार करिंगे। न्ह्या हमारे सामई बिनके जाने माने तीन रुपकं, जिनमे ते एक 'सौने की कौधनी' तौ आकाशबानी ते प्रसारित है चुक्यौ है। दूजौ 'बन्द लिफाफो' राजस्थान ब्रजभासा अकादमी के प्रकाशनन माहि छपि चुक्यौ है अरु तीजौं 'बुरे फँसे' स्यातै अप्रकाशित है।

रेडियो रूपक एक ऐसी ल्हौरी विधा है ज्याम सब कोऊ पढिले क्योकि यामे समै भौत कम खरचनो परै लम्बी रचना कौ आनन्द ल्हौरी रचना मे ई आय जाय। विनोद जी नै सबकी चहेती या विधाकूँ अपनाय कै जन मानस माहि ठौर बनाय लई हैं। लोक चहेती विधा अरु लोक ते जुरे भये विषैन पै लोक भासा माहि लिखी भई है।

विनोद जी के तीनो रूपक गाम की धरती ते उठाये गये हैं सौ विनमे ते गाम की गन्ध आयिबौ स्वाभाविक है सिगरी रचनान माहि ब्रज सस्कृति अरु रीति रिवाज उजागर करे।

'सौने की कौधनी' मे दहेज की डाकिन ता झाकई रही है परि सबते बढिकै तौ या अनसमझ समाज की थोथी सेखी झूँठौ प्रदशन नगौ करयौ गयौ है। छौरा छगू तौ सुधौ सादौ बालिक है बू विचारौ दद फन्द नै कहा समझै परि बाकी मैया तौ या समाज मे भौत दिनाते रह रही है। अरु अब तानू ऐसौई देखती रही हे। सौ बाय छगू के ब्याह की चिन्ता भौत व्यापि रही हे। क्यौ कै वाय थोथी चाल निभानी है, अपनी नाक बडी करनी है, दूसरेन की नाक काटनी है, अपनी जाति बिरादरी माहि सबतें ऊँचौ दिखावौ करनौ है व बेर-बेर या बाते कहै-'देखि लाला तेरे बाप कौ भौत बडौ नामो अब बू नॉय रह्यौ तौ काय बाकौ नाम तो हतै। सो वाकी नीची नाय होन दैनी। पैसा चाय कितेकऊ खरचनौ परै परि तेरे बाप कौ नाम नही डूबै। सो सौने की कौधनी तौ चढानी जरूरी है।

या महगे समै मे सोने के भाव तौ आसमाने छू रहे है अरु बिना बाप कौ बेटा चल्यौ कौधनी चढायवे। कुल्ली मे हाथी कैसे समावै ? परि बिचारौ करै का ? भैया की बात तौ माननी परैगी अरु बाप की नाक ऊ कौ तौ सवाल है। अपनी नाक पै माखी कोउ नाय बैठन दे। चाय वाकौ सब कछू दावपै लगि जाय। अरु फिर भैयान कं खटकोलाऊ तौ नाय सहे जॉय।

छगू ने सोचि तौ लई क भाई चाय मोय भीख मागनी आय जाय पर भया की बातै नई पिटन दऊँगौ अरु डोकरा की नाकै नई कटन दऊँगा। परि कर का, 'सुतैमिन तौ भौत परि राधै का । घर मे नई दाने मैया चली भुँनाने' सोचत भयौ फिर भैया ते पूछ बैठयौ। मैया की सलाह सूत पै अपने परौसी ए सग लै कै सुनार पै कौधनी गढवाय आयौ। मैया बेटान्ने सोची, इतेक तो बेटी बारौ दैई देगौ सुनारै चुकाय दियो। परि भयी कुछ ओरई। थरा म कछू नई मिल्यौ। कुरकुरामते रह गये। सुनार रुपैया मागिवे आयौ सग मे दीराऊ। फैसलो भयौ या कौधनी मे हीरा कूँई दै देओ परि दुलहन बिचर गई। फटकार कै न्हाई करि दई, 'मै तौ कौधनी आज दऊँ न कल्लि। कौधनी मेरी और मेरे बाप की।' जादा करिंगे तौ धर राखौ तुम्हारी धरमसालाए मैं तौ ई चली अपने पीहर कूँ। कहके चलती बनी। बिचारी पुकारती रह गई।

'बन्द लिफाफौ' उ दहेज के दानव कौ ई कच्चौ चिट्ठा है। वकील साब के सपूत की सगाई आई बेटी वारेनै बन्द लिफाफे मे दस हजार रुपैया दै दिए। बडे राजी भये। बकीलनी ने तौ समझायीउ परि लोग अपनी अक्कल के आगै सबन्ने भैंस समझै। एक नही मानी। आये गये सबने लिफाफा तो देख्यौ परि बामे भीतर कितेक रुपैया है ई काऊ कूँ पतौ नाऔ। अपने अपने हिसाब ते अन्दाज लगायवे लगे को ऊ पचास हजार समझि रह्यौ तौ कोउ या ऊँ ते जादा लगन पै अरु थरा मे 501/-

सौ एक रुपैया दे कै ड्यौढो परयौ। वकील साब के भैया भौत मन्नाये परि
ल साब नै कछू सोचि कै बिनके ह्हते बात बढायवे बारे कदम नही उठाये। वैसे तौ
तो वकील साब की निकर गई। मुँह नैकुसो रह गयौ। पामन के नीचे ते माना
नी खिसक गई। शीत सौ मारिगयौ। रह-रह कै एकई बात याद आती, जो
गहनौ गढवायौ है अब बाके पैसा कहा ते चुकिगे? भैया के नाही करत-करत ऊँ
हने लिवाय लाये। घर पै राधा ने समझाये परि एक समझ नही आई।

वकील साब की बेटी निमला ए देखिवे तिवारी जी आये। वे साफ-साफ
त करनो चाहते। वकील साब ने चारो ठिक दस-दस हजार की अरु सामान अलग
कौ बायदौ करयो। तिवारी जा यापै राजी नही भये अरु बोले पचास हजार तौ
हारे बन्द लिफाफे मे धरे। बिन मे ते ऊँ राखनो चाहो। वे नाराज है कै चले गये
सम्बन्ध तै हो ता, हो तो टूट गयौ। वकील साब भौत पछताये, वा लिफाफे ए सबन
मामई खोल द तो तौ ई बात काई कूँ बनती।

तीसरौ रूपक 'बुरे फँसे' मृत भोज ते नातौ राखै अरु मगई थोथी सेखी झूँठौ
प्पन अरु नाक बडी करिबे की खोखली परम्परान प करारी चोट। झड् कौ डोकरा
मार है गयौ। स्याने भोपे नै इक्ठौरे करत डोलै। डाक्टर कू पैसा दैबे मे अरु
ाईन के दाम दैव म ता जी टूटतो सौ घर लियाऐ, अपनी मोत मरिबे के ताई।
ऊ पानी की ऊँ नॉय पूछतौ बिचारो भूखौ प्यासो अरु दवाई इलाज के अभाव म
रगयौ। मरे पीछे लोगन्ने फुटैन पै धरिदिये कै बावरी खेरा के सरपच ते कम खच
ी होनो चाहियें नही तौ नाक कटि जायगी। ग्राम सेवक जी के समझाइवे पै ऊँ
य माने। कज लैकै नुक्ता करौ। बीच नुक्ता मे पुलिस आय जाय ग्राम अरु सव
ासिन्ने पकरि ले जाय पाची जो अपनी नाक बडी करिबे कूँ फग्फराम रही रोमती रह
ाय।

समाज माहि फैली मृत भोज की बुरी रीत, बुढाप मे मैयाबाप की सेवा नई
करिवौ, देवी देवता अरु स्याने भोपान का झारा फूँकी मे विसवास करिवो, एक दूसरे
कूँ नीचौ दिखायवौ अरु पतरौ पारिवौ, चुगलई अरु विना सिर पैर की बात, बिरथा
धन गमायवौ जैसी बातन की कलई खोली है। भोजन करि कै ऊँ लोग भल मनसाई
नॉय दै कौऊँ पुआन्नै कच्चे बताय रह्यौ तो कौऊँ साग मे नॉन जादा काऊँ मूँड अरु
बाकी बहू कूँ नाम धरिबे लगि रहे -अरे जोमन तौ पानी ऊ नॉय प्यायौ अब कारज धरे
याते तौ डोकरा को इलाज ई करवाय देते।

या तरिया विनोद जी ने अपने तीनो रुपकन माहि सामाजिक कुरीतिन पै
करारी चोट करी है। कुरीतिन के चित्रन के सग-सग फल उँ बतायौ है। इनमे ब्रज
की सस्कृति बडे अच्छे ढग ते उभारी गई है।

रूपकन के सँवाद ल्हौरे ल्हौरे अरु सूधे सादे होते भये ऊ पात्र अरु भाव के अनुकूल ह। देखौ सवाद की भाषा कैसी स्वाभाविकै —

छगू—भूमरेई भूमरे काई कूँ काय-काय करि रहियै अरी मैया ?

काकी—तोय तौ सब काय-काय लगै। तेरे ब्याह कौ तौ महीना भर ऊ नाँय रह्यौ। याके काजे गहने गाठेन का जुगाड करनोए का नाँय।

छगु—मन तौ सब करै परि घर मे नाँए दाने अम्मा चली भुनाने।

तीनोई रूपकन मे कथोपकथन पात्रन के अनुकूल है। बडे नाँय सुनबे बारेन पै असर करिबे बारे है। कथानक कू आगै बढावे बारे हे।

रूपकन माँहि एक तौ पात्रन की भरमार नाँय अरु विनकोऊ चरित्र भौत अच्छी तरिया चित्रन करयौ है। बन्द लिफाफे माहि वकील साब पढे लिखे होते भये ऊ कुरीतीन ते नाँय बचे जो आदमी दूसरेन कूँ अक्कल बेचै या रूपक म बाकी अक्कल कौ ऊ देवालौ निकस गयौ है। राजा कौ चरित्र भौत आदश बतायौय बू अपन पतीऐ बेर-बेर म समझावे। सबते पहले तौ लिफाफौ देखतई पचन ने दिखायवे की सलाह दे- भाग्य खुल गये, बिरादरी मे नाँक ऊँची है गई। जाऔ पचन ने दिखाऔ कछु बेटी वारे नौ नाम होय।' वितेकई रुपैया राखौ जितेक अपनी बेटी कूँ दैसके। बाकीन्ने वापिस करिदेऔ। "देखौ जी आदमीयै बिते कई पाम पमारने चइये जितेक लम्बी सौर होय।' दहेज कम मिलबे पै ऊ वकील साबै भौत समझावै। इन सिगरी वातन ते सिद्ध होय कै वकील साब की घरवारी राधा एक आदश नारी है। अच्छी सास है। व्यावहारिक पत्नी हे, ईमानदार है, लौभिन नही है, सच्छी सलाह देवे वारी है, झगरौ वढानौ नाँय चाहै अरु सबते अच्छो गुन वामे ई यै कै कोऊ बातै साफ-पाफ कहदे। वकील साब कौ बडौ भैया एक व्यौपारी, लोभी, स्वारथी, निदयी अरु बिना सोचे समझे बोलिबे और करिबे वारो है।

सौने कौ कौधनी म छगू भौरौ बालकै अपनी मैया के कहे पै चलिबे वारौय परि इतेक दम नाँय कै बुराई कौ विरौध करि सकै। बुराई के आगे झुक जाय। 'काकी' छगू की मैया एक अटेकी अरु थोथी सेखी मे विसवास रखिबे वारी है। बू अनसमझ विवेकहीन अरु ईर्ष्यालु औरत है। हीरा कौ चरित्र एक सहयौगी परौसी कौ सौ है। 'बुरै फँसे' रूपक कौ नायक, झहूमल सरपच मूख, ईर्ष्यालु, थोथी सेखी बघार बे वारौ, गुन मैटा बेटा, अन्ध विसवासी अरु अपनी जिम्मेदारी ते भागबे वारौ है। झहूमल की बहू बाते कम नाँय परै। बीमार सुसर कूँ रोटी तौ दूर पानी ऊ नाँय

प्यावै अरु बाके मरिबे की बाट देखती रहे। छिन छिन पल-पल कोसती रहै। चौधरी अरु चौधरिन घर बिगारबे बारे है।

सिगरे पात्रन कौ चरित्र दूसरे पात्रन के वचनन तेई करवायौ है। सिगरे रूपकन के पात्र गामन के साधारन आदमीन मैं तेई है जो गामन के अनपढ अरु अन समझ जनता के प्रतीक हे।

जहा तानू भासा की बात है। विनोद जी की भाषा विषै, पात्र अरु भावन के अनुकूल सूधी सादी सी है जादा लाग लपेट नाँय। स्वाभाविक रूप ते जो मुहावरे आये ह विनकौ प्रयोग सही ठौर पै करयौ है। ठोर ठौर प कहावत मुहावरे ऐसे लगे जैसे सोने कै गहन म नग जड रहे होय। आओ या मुहावरेदार भासा कौ नमूना देखै—

काकी —ई बात नाय। बाजे तेई घोढी नाचै और दूसरी बात ई ए जैसी तेरी कौमरी वैसे मेरे गीत। जितेक गुर डारिंगे वितेक ई मीठौ होइगौ।

छगु —तू जाने तेरौ काम जाने। जैसे नचावैगी वैसे ई नाचुगो।

इतेकई नाय-मुँह फटिवौ, टाग अडाइवौ, नाक पै माखी बैठवौ, हाथ खैंचिबौ, हरी झँडी दिखायवौ अल्ल बल्ल करिबौ, घूरे प पर्‍यौ पायवौ, कान पै जुआँ रेंगिवौ, कटी नाक पटेरेनते पोछिबौ हाथ धरिबौ जैसे भौत से मुहावरे अरू अपनौई दाम खोटोनई होय तौ परखन हारे य कहा लगी ये, हीग के कोथरा मे वासईवास बाजेतेई घोडी नाचै जैसौ गुरडारे वेसौ मीठौ होय जैसी तेरी कौमरी वैसे मेरे गीत, चालनी मे दूध काढे करमन कूँ दोस दै जैमे भौत सी कहावतन कौ उचित ठौर पै प्रयोग करयौ है।

मुहावरेदार भाषा ते कथोपकथन भौत प्रभावी है गये ह। सुनिवे अरू पढिबे वारेन कूँ रूचिकर लगे। वे उकतामे नाँय। सक्षेप मे न्यौं कह्यौ जाय सकै कै भासा अरू शैली की दृष्टि ते सौने की कौधनी सबते अच्छौ है। बाकी के दोनूँ रूपकऊँ अच्छे कहे जाय सके।

तीनो रूपकन माहि ब्रज लोक सस्कृति उजागर करी गई है। टीका, समै समै पै गाये जायबे बारे गीतन कौ सकेत, लोकगीत गहने, रीति रिवाज, समाज की कुरीति जैसी बातन कौ तौ समावेस तौ करयौ ई है सगई गामन के लोगन की प्रकृति कौ वणन करयौ है जैसे नाँक कूँ पचिवौ, दूसरे की नाक काटिबौ बराबर के भैयाय पतरौ पारिवौ, चुगलई करिबौ जैसे मनोवैज्ञानिक वणन ऊँ करे है। पुरानी परम्परा रीतिरिवाजन के सग ई नई भावनान कौऊँ वर्णन मिलै। दहेज की बढती भई मात्रा की चाह, माता पिता के अहसानै भूलिबौ जैसी टेव समै कै सग पनप रही है। तीनो रूपकन मे देशकाल अरू परिस्थिति कौ चित्रण अच्छौ भयौ है।

मचन करिवे बारे ऐकाकी माँहि रगमचीय निरदेश भौत जरूरी हौय पर रेडियो रूपकन मे तौ ध्वनि कौ सकेत ई महत्व राखै सौ इन तीनो रूपकन माहि ध्वनि कौ ठौर-ठौर पै सकेत पायौ जाय।

इन रूपकन्ने लिखिकै अरू समाज के साँमई लायकै लेखिका समाज के आगे बाकी कुरीतीन कौ खुलासा करनौ चाहै अरू सग मे वाकौ परिणान ऊँ बतानौ चाहे। ज्याते समाज मे बसे भये जन ई निरनय करि सके कै हमन्ने कैसौ करनौ चइयै ज्यासे अच्छौ फल मिलै। अपनी छिमता ते ज्यादा नुकता, जेवर, दहेज नाम कै सामान है। सछेप मे लेखिका कौ उद्देश्य ई रह्यौ है कै तेते पाँय पसारिये जेती लम्बी सौर। मुँह मे आवै वितेकई खावै। कुटम्ब मार ब्याह अरु बैल मार खेती नई करै।

—मेवाराम कटारा
36, जसवन्त नगर, प्रदशनी मार्ग
भरतपुर-321001

नारी सुभाव कौ सहज चित्रन

चित्रन दो तरिया तें होय एक तौ तूलिका सौं अरू दूसरे लेखनी सौ ? तूलिका ते निर्मित चित्तर तौ बाहरी आखन ते ई देखे, सराहे जा सके पर लेखनी के चित्तर ऐसे होय जो हिरदै के नैनान सौं निरखे-परखे जा सके ए । तूलिका के चित्तर कौ रग काल की शाति हर सकै पर लेखनी के चित्तरन कौ रग बडौई पक्कौ होबे । बू चढ जाय तौ फिर छटिबे कौ नाम नाय लई । जाकौ प्रभाव अमिट होय । विनोद कुमारी जा तरिया के चित्तर बनायबे मे भौत सिद्धहस्त है । बिन्ने नारी की बाहरी स्थिति, हावभाव, स्वभाव और मनोदसा को ऐसौ सुघर चित्रन करयौ कै का कहनो ।

'गुलकन्दी काकी मे बुढापे की स्थिति कौ बरनन करते भए लडखडामते भये चलिबे कौ कैसौ स्वाभाविक पर ऐन चित्तर खैंच्यौ ए—

"अपनी ज्वानी के दिनान मे चलती होयगी तौ धरती कापती होयगी परि बाकी बुढापे क मारै चाल ऐसी है गई है कै जच्चा की नाई अचक पचक उठा धरै ए ।"

नारीन मे विशेसरूप सौ गामन की नारीन नै बिभिन्न प्रकार के उच्छिबन के औसर पै अपनौ उछाह दिखावे कौ चोखौ माध्यम मिलि जाय । नारी आजऊ घर की चारदीवारी मे कैदी की तरह ते रहै । विभिन्न प्रकार के उच्छिब बाके जीवन मे एक नई तरग दैम । बाय अपने दबे भावन नै दिखाइबे कौ अच्छौ मारग मिलि जाय अपने रेखाचित्र 'गुलकन्दी काकी' मे विनोद कुमारी ने याकौ स्वाभाविक बरनन या तरिया सौं करयो ए ।'

"काँकी नातेदारी निभाबे मे पूरी चौक चौबन्द रहै । कहू ते नेक पाती आइबे को देर ए जाईबे की देर नाँय । काऊ को भात-छोछक दैबो होय तौ महीनान पैंले धुना बुनी लग जाय। कहू ते कथा भागवत कौ नौतौ आ जाय तौ काकी अपने मन कौ पूरौ जुगाड बैठाइ लेई ।"

जि काकी भारतीय नारी की प्रतीक। आज के आधुनिकीकरन के जुग मे ऊ भारतीय नारी अपने कस्टन नै उजागर नॉय करै। बू हमारी प्राचीन मर्यादान-रीति रिवाजन नै निभाबे के नाई भौन कस्ट झेलती रऐ पर अत्याचार के प्रतिरोध मे अपनी जबान खोलिबो उचित नाय समझै ए, जैसौ कै याई रेखाचित्र मै दरसायौ ए —

"जब मेरौ दोमइ नाय तो इनके जे हाले। जौ मै कट्ट कछु कहबे-सुनबे लगि जाऊँगी तौ जब तौ घर मे रहिबो दूभर हे जायगौ।"

नारी चाए पढी होय, चाए अनपढ, गहनेन मे बाकौ अडिग मोह होय। जाके काजै बू आकास-पाताल एक कुलाबे मिला देय। कोरध करै पती ने लडै नाना भाति के उपालम्भदेय, चौकै बाकू चईए गहनौ। फिर सगई अपने छोरान की बहून तक कूँ गहनेन ते सजाइबे के अपने सपनेन नै भौत पैले तेई देखती रेई? जा मनोदसा की अभिव्यक्ती या तरिया सो बडेई सहज रूप मे बिनोद जी नै करी ए।

"काकी ए सबते जादा सौक जेवर-जाटे कौ ए। जेबर जाटे के काजै तौ बू जीती मरै जब बू अपने पीहर मे रैती अरु मइया कूँ सौने चादी के जेबरन मे लिपटौ भई दखती तौ वाकौ रौम-रौम खिल उठतौ । सुमरार मे जब ते आई तबई ते अपने घरबारे ते दुबकाय कै बचा कर-कर कैं इतैक पइसा करि लती कै दो चार बरस पीछे कोउ न कोउ गैनौ गढाय लेती ।"

भारतीय परिबारन मै सास- भऊँ कौ झगरौ-मनमुटाब काऊ सौ छिपौ नॉय। जब ब्याबली आबै तौ सास के तरुआ धरती ते नॉय लगै। डोलै डोलती-फुदकती इत ते बित बूँ और बित त इत कूँ। 'पर चार दिना की चादनी फिरि अँधेरी रात' बारी कहाबत चरितारथ हैबे मे ऊ देर नाय लगै। अब आबै बारी हुछो तुछो की। छदू तत्काल दूध है जॉय और भऊँ दिखाबै बाद मे सिगटा है। या कौ सजीब मार्मिक चित्रन 'गुलकन्दी' मे इन पक्तीन मे कारयौ गयौ है।

"अब रोज हुज्जो-तुज्जो होय! काकी की नीद हराम है गई है। भूख उडि गई है। काकी अपनौ जौर जताबै अरु सौने की हमेलै बेर-बेर मे माग, परि सौने की हमेल क नाम काकी की बहू ठरेया दिखाबै अरु काकी जेवर-जौटौ बनबाय कै मनई-मन पछताबै, परि अब पछताये होत का जब चिरिया चुग गई खेत। कछू दिना पाछै छौरा की नौकरी दूसरी ठौर लग गई, सो बू अपनी बहू ए लै कै रफू-चक्कर। सग मे सौने हमेल ऊ ले गई ।"

आज के समाज मे नारीन के अनेकन प्रकार मिलै। ऐसी बात नॉय कै मन्दोदरी, सुलौचना, सीता अरु सावित्री न हौय पर जा ब्राण्ड को नारी कमई मिलै है,

हाँ सूपनखा, ताडिका, पूतनान की कमी नाए , याई कै सगई भैडकी, लोमडी, गिर-किटी अरु फ्याबरी छाप की और ऊ जादा मिल जाईगी। आज कल बिज्ञान कौ प्रभाव ऊ भौत परयौ ए नारीन पै, सौ कछू ग्रामोफोन तौ कछू लाउडस्पीकर और टेप-रिकाडर ऊ तरिया की ठौर-ठोर पै मिल जाइगी। अपने रेखाचित्र भाभी मे विनोद कुमार जी नै एक टेपरिकाडर छाप नारी कौ दिग्दमन जा तरिया करायौ ए।

"पैले नैनई-नै मटकते, अब तौ नैनन के सग सैन ऊ चलै , सिगरौ मौह भटकें। जीभ तारु ए ते जाय लगै। मुनिबे बारौ भलई हार जाय पर का मजालै जो भाभी चुप्प है जाय। मुनबे बारे पिड छुडाइबे के ताई हा मे हा मिलाय, सुबऊ है जाय। पर भाभी की जीभ तारु ए ते नाँय लगै। कतरनी की नाई चलती ई रहे ? बू ऐसे दिल्ली के धैंसेरा मारै जाकौ कहू न और न छोरै। बाय या बात ते कऊँ मतलब नाँए कै सुनिबै बारो सुननौ चाहै कै ना चाहे। वू तौ अपनी-अपनी हाकती ई चली जाय।"

आज के युग मे परिबार नियोजन की जितनो आवश्यकताए बितनी याते पैले काऊ जुग ने नाइ। जब घर मे जादा "सूआ-पालक" बढि जाय तौ बडी ख्वारी होबै ऊ। न बैठिबे कूँ ठौर न सोबे कूँ। जादा बाल-बच्चे भए कै घरबारी की आफत आई। बिनके काम-काज से पैलेई सास नाय परै। बाई सदंभ मे परिबार नियोजन न अपनावे बारी नारी की दुदसा कौ करारो चित्रग कयौ करौ ए 'भाभी' मैं —

"भाभी पुराने चल्ला की बैयरबानी ए। आज के जमाने म आधे दजन बच्चा ए। सबेरे कलेऊ बनाय कै खवाइबे दिबाइबे ते निश्च् नाहि है पाबै। तब लौ धौपर कौ चूल्हौ चेत जाय। धौपर की रोटी-पानी ते उठिके बासन-ठीकरा माँजे-धौए कै साझ की व्यारू के ताई, हाय-तोबा मच जाय।"

कछू बैयर-बानी तौ कामचार होय ए फिर नारी कौ दृष्टिकौन बडौ सकरौ होय। लाख छिपाय-दबाबे की कोसिस करै पर बाकी सकीरनता प्रगट हुई जाय बाके बातन मे बाके त्यौहार मे। जाई प्रवत्तिकौ दमन करायौ ए 'भाभी के मोह ते जा तरिया—"

"काऊ ब्याह-बरौद मे जानौ होय तौ कब हू टैम सो नाँहि पौचे। न भैया ए टैम सौ पौचन दे ? अब कौऊ पूछ बैठे कै इतेक देर कैसे है गई तो भइया सौ पैले तपाक ते बोल परै अ कहा करै, हमारौ गिरस्ती कौ घरै। चार-बच्चान की रोटी पानी करिके आये एँ। नौते के पीछे का अपने बच्चान नै भूखे मार दै ? पूछिबे बारौ अपनौ सौ मौह लैकै रेइ जाय।"

"श्रीमती विनोद महिला मनोविज्ञान कीऊचतुर अरु अच्छी जानकारी है। जि जगत विख्याते कै हमारे देस मे सास बहू पै अपनौ अधिकार नाना प्रकार सो बहू के हर त्यौहार काम-करतव मं कछून न कछू खोट निकास कै जनामती ई रहै। पुरानी सभ्यता मे पती सामनन कौ रबैया कछू ऐ सौ होय के नई सभ्यता मे परी भऊ-भौटिनान के पीछे इ परी रहे। बात-बात मे बबैला करती। रहे जाकौ बरनन अपने रेखाचित्र 'भाभी' मे लेखिका न बडेऊ प्रभावसालो ढग सौ कियौ ए। बानगी के ताई प्रस्तुतै —

"बहू नै कउ छोटे देबरै देखिकै हॅसले कै बाते बात करिबे लगि जाय तो बू बापै भूखी सेरनी-मी अर्राय कै परैऊ अरी बहू, तेरे खसम और देबर मे नौ महीना की ल्हौर-बडाई ए। का हेबे कू देबर ए पर, जेठ ते कम नॉय तू बाते का बतराबै बतराबे कूँ हमनाएँ का।"

"बहू नै कबहू ससुर कूँ पानी कौ गिलास ऊ पकरा दिया तौ 'भाभी' के माथे पै बल पर जाय। एक सग बरस परै, अरी बहू तेरो जेठ-ससुर ते का मतलब ? जा हम हत नॉय का ?"

श्रीमती विनोद कुमारी मै नारि मनोविज्ञान कूँ समझिबे की अच्छी क्षमता है। नारी सुभाव के विभिन्न अगन कौ बरनन करि कै लेखिका नै एक अभाव की पूर्ति करिबे मे अपनौ सराहनोय योगदान करयौ ए।

—हीरालाल शर्मा 'सरोज'
पुरोहित मौहल्ला
भरतपुर-321001

पच्छिमी सभ्यता नै हमारे परिवारिक जीवन कौ या तरिया सौ सत्यानास कियौ हे इनकी "आक्रोस" कहानी मे देखौ जा सकै। विदेस मै रहवे वारौ खास माँ जायौ भैया अपने देस मे आकै अपनी बहिन ते नैकु आकै चलतौ फिरतौ सौ मिल जाय, बिचारौ बहिनोई बाट ई देखतौ रह जाय पर वाये अपने यार-दोस्त, नाच घर, क्लब तेई फ़ुरसत ना मिलै। अन्त मे बहिन स्टेसन पै रेल मे बैठे भये भैया ते मिलबे जाय। बहिन-बहिनोई की भावना चूर-चूर है जाय। पर पच्छिमी सभ्यता ने आज के आदमी कूँ कितनौ स्वार्थी और पत्थर बना दियौ हें 'किरन' जी ने बडी चतुराई ते हमे बता दीनौ है।

'किरन' जी की पैनी निगाह तै आज हमारे समाज मे फैली निठुराई बनावटीपन, अफमरन की चमचागीरी, पुरानी पीढी कूँ हिकारत ते देखवौ और यहा तक कै फैशन मे आयकै अपने सिसुन कूँ अपने आँचर कौ दूध नाँय पिवावौ आदि बात छुपी नाय रही। उनकी कहानी "जी तौ मरि गयौ" मे ये सबई बात एकई सग देखी जाय सकै। आधुनिकता क चक्कर मे बडे-बडे अफमरन की चमचागिरी करिबौ एक फैसन सौ बन गयौ है। पर हमारे समाज क पतन की चरम सीमा तब देखने म आवै जब छोटे अधिकारीन की पत्नी वा बडे अफसर कौ स्वागत करिबे कूँ होटलन मे सज धज कै जाँय अपने सग साथ की दूसरी बईयरन की बुराई करै। अनाप सनाप पैसा पानी की तरियाँ बहामै। पर या कहानी कौ मात्र इतेक ही उद्देश्य नाँय। "किरन जी ने होटल के बाहर एक भिखारी और दिखायौ है। जो भूखौ-प्यामौ ए, पर बाकूँ भोजन तो भोजन पानी ऊ नाँय पिनाबै। जबकि होटल कै बैराऊ कोकाकोला और शराब पीम रात कूँ जब देर-अबेर पार्टी खतम होय और नशा म चूर अफसर साहब बाहिर निकसै तौ उनकौ पाव अचानक काऊ तै टकरा जाय। बू विचारा और कोऊ नाँओ बू ही भिखारी ओ जो भूख प्यास और ठड ते मर गयौ। "किरन" जी ने हमारे समाज की बिसमता कौ कितनी चतुराई ते या कहानी की रचना मे बुन दीनौए देखो जाय सके, और 'आधुनिकता" के रग मे रगे समाज के उच्च वग के प्रति मन मे घिन भर जाय।

'टूटन' कहानी म ऊ जीवन की बिसमता कौ एक और ऊ करूनाजनक चित्र देखवे कूँ मिलै। कहानी की नायिका निसा कूँ बैंक म एक ऐसी बुढिया मिलै जो बिचारी हाथ-पाँव और आँखिन ते लाचार होय। बा पै पैसा तौ है पर वाके पढे लिखे बेटा-बहू, न तौ बाकी सेवा करै न वाकूँ प्यार दै। 'किरन' जी ने बुढिया के माध्यम ते हमारे समाज की एक ऐसी सच्चाई उघार कै रख दई ए कै पढकै रोगटा खडे है जाँय, भैया बच्चान कूँ जन्म देय, दुख उठाकै बाये पारै-पनासै, पेट काटकै पढावै-लिखाबै, ब्याह-गौने करै पर पति के मरे पीछे वा विचारी को कितेक बेकदरी होय, कोऊ पानीऊ नाँय पिवावै। हाँ बाकै पैसा ए छीन कै। सबई खानो चाहे। बडी ही मार्मिक कहानी

बन पडी है 'टूटन'। "किरन जी" न अपने हिया की सबरी पीर उडेल कै रख दई ए वा निराश्रित बुढिया के कार्जै। जो सब कूछ होते भये ऊ लाचार ए।

भारतीय समाज एकई सग दो नावन पै चल रहौ है। एक तरफ 'आधुनिक' तौ दूसरी तरफ, व्रत उपवास, भूत-प्रेत, चामढ-सेढ मानबौ पूजबौ और कष्ट उठायबौ। "पछतावे के आसू" ऐसी कहानी है जामै एक सास अपनी अच्छी पढी लिखी और गभवती बहू कूँ "करवा चौथ" को व्रत करबे कूँ मजबूर कर दे। निरजला व्रत के कारन पानी की कमी आ जाय तो बहू बेहोस है जाय। सास की छोटी बहिन डाक्टरनी ए समय प आकै बहू ए सँभालै और अपनी बहिन कूँ डाटै तब वाए पतौ लगै कै एक सग दो नावन पे चलनौ कितनौ गलत होय। डॉ प्रतिभा के ये शबद कितने मार्मिक एँ।

'जीजी तुम तौ सबरी उमिर निराहार वरत करती रही फिर अखण्ड सोभाग्यवती काहे कूँ नाय रही ?'

इन शब्दन के माध्यम त 'किरन जी नै जीवन मे व्याप्त ढौग कौ परदा उघार कै धर दीनौ ए।

सरकारी अस्पताल म मरीजन के सग कितनौ निठुर और क्रूर तथा अपराधी व्योहार होय 'लापरवाही" कहानो मे देखौ जाय सकें। मरीज कराह रहौ ए, रोय रहो ए, दवा दारू, इजेकसने धरे एँ पर नस कूँ फालतू बातन ते फुरसत नॉय, जच्चा के पलँग पैई बच्चा है जाय और मर जाय पर उन नसन पै कोऊ असर ना होय। बडो कटु और साचौ अनुभव व्यक्त हुओ ए या कहानी मे।"

"नासूर" कहानी नारी जाति की हीनता कौ ऐसौ चित्र खीच के रख देय जो बडौ करूना जनक और हृदय विदारक है। बिन मा-बाप की लडकी कौ ब्याह चाचा चाची एक ऐसे लडका ते कर दे जो दहेज तौ नॉय ले पर पौरुष ते हीन होय। घर के सब लोगन को राजी ते बहू वाकै छोटे भैया ए अपना ले, जातै घर की बदनामी नई होय। पर वा छोटे भैया की शादी है जाय और वा बिचारी बहू ए धक्का मार कै घर त निकार दे। वा पै आत्महत्या के अलावा और कोऊ रस्ता नाय होय। नारी जाति के प्रति हमारे समाज मे जो उपेक्षा भर रही ए वाकौ सफल चित्र या कहानी मे देखो जाय सक।

"किरन" जी की हर कहानी मे नारी जाति के मन की कोऊ न कोऊ पीरा उजागर होय। "असली मईया" एक ऐसौ ही कहानी ए। सौतेली मईया हमारे समाज मे बडी क्रूर दिखाई गई ए। कैकयी को उदाहरण सब जानैं। पर "राधा"

ऐसी सौतेली मईया नाँय। तू अपनी बहिन के बालकन नै बडे प्यार तै पारै। अपने पति कूँ परिवार नियोजन कौ आपरेसन करवा दे। पर ब्याह हुए पीछे जो बहू आवै बू 'राधा'' ए अपनी असली सास नाँय मानै। ''राधा'' कौ हिया टूक-टूक है जाय। वाकौ स्वाभिमान जग जाय पति ए डॉक्टर के पास ले जाय। डाक्टर बतावै कै 'तेरे पति कौ आपरेसन है जायगौ और तेरे बालक ऊ हे जायँगे। पर छोरी है गई तो और ऊ मुस्किल है जायेगी। 'राधा' की समझ मे बात आ जाय। उतकूँ वाकै लडका 'जग्गू' ने सुनी तो बू डाक्टर के पास आके अपनी मईया से माफी मागे और सग ले जाय। नारी मन की पीर उजागर करबै वारी कहानी ए ''असली मईया''

''चक्र व्यूह'' कहानी मै नारी मन को एक औरऊ अछूतौ चित्र उकेरौ ए कहानीकार ''किरन जी'' नै। ईमानदारी ते काम करवे बारे आदमौ कूँ कैसे-कैसे दुख मिलै या समाज म या कहानी मे देखे जा सके। एक ईमानदार डाक्टर सारे जीवन भर बिना फीस के सेवा भावना ते मरीजन की सेवा करै। पर जब बाकी लडकी ब्याह लायक होय तो दहेज को लालची समाज बिना पैसा के लडकीन न ब्याहवै कूँ तैयार ना हौय। तब डाक्टर पैसा लैवे लग जाय खूब पैसा कमाके लडकीन के ब्याह कर दै। पर अन्त म रिस्वत ले तो पकरो जाय। कैसी विडम्बना है कै एक तरफ ईमानदारी कूँ समाज मे कोई सम्मान नाँय और बेईमानी करै तो सजा है जाय केसौ ''चक्र व्यूह'' है जो समाज।

''भारत कौ परदा'' नारी के साहस की कहानी ए। परिवार की आर्थिक हालत देख के ''सुधा'' ब्यूटी पालर मे नौकरी करै पहले ससुर कूँ समझावै फिर अपने बाप कुँ समझा के उनकी आँखिन पै पडे ''भरम के ''परदा'' कुँ हटावे। नारी यदि साहस करै तो क्या ना कर सके।

''कमेरो पूत'' दहैज की बुराई दूर करवे को एक अनौखौ प्रयास कहौ जा सके पढो-लिखौ डाक्टर बिना दहेज के सादी करनौ चाहै पर अपने लालची पिता के छल करके दहेज लेवे तै इतेक नाराज है जाय के बू अपनी ससुराल मे कमेरे पूत की तरिया रहने नौ निश्चय कर ले तब जाके बाकै पिता की आँख खुलै। दहेज की बुराई कौ निराकरन या ही प्रकार सौ है सके है। ''किरन'' ने एक अच्छौ प्रयास कीन्हो ए।

कहानीकार विनोद कुमारी ''किरन'' की ऊपर बताई गई सबई कहानी नारी मन की विविध कथा कहबै वारी एँ। ''किरन'' जी ने कथोपकथन के माध्यम ते पात्रन कौ भली भाँति चरित्र उजागर कीन्हौ ए। आपकी भासा बडी चुटीली, पात्रा-नुकुल बन पडी है। ''किरन'' जी की अधिकाँश कहानी आधुनिक महानगरीय जीवन

की झाकी प्रस्तुत करे। उनके पात्र ऊपढे-लिखे ओर उच्च वग के हे। या कारण उनकी भासा मे अग्रेजी शबदन को प्रयौग मिल जाय।

कहानीन के 'शीषक'' बडे सोच समझ के रखै एँ। कहानी कौ सबरो अथ शीषक ते पतौ चल जाय। दा विषय मे किरन जी एक सफल कहानीकार मानी जा सके।

या प्रकार सौ ''किरन' नारी मन की पीरा कहवे वारी समाज मे व्याप्त ढोग, दिखावौ, विसमता, अन्याय, शोषण व्यक्त करने वारी एक सफल कहानीकार हैं। ये आगे और ऊ उन्नति करेगी ऐसौ आभास इनकी कहानीन नै पढके सहजई हो जाय।

☐ **रामबाबू शुक्ल**
मौ॰ रेवरापति होलिकेश्वर महादेव
भरतपुर (राजस्थान)

एकॉकी रूपक (रेडियो)

सोने की कौधनी

काकी—अरे बेटा ! छगू ! औ छगू ! अरे छगू सुनै कै नाय ?

छगू—सुबेरैई सूबेर काय कू कॉय कॉय कर रई ए अरी मैया ?

काकी—तोय तो सब कॉय काय लगे। तेरे ब्याह को तो महीना भरऊ नॉय रह्यौ। याके काजै गहने गाठे कौ कछू जुगाड करनोएँ कै नॉय ?

छगू—मा तो सब करै पर घर मे नाए दाने अरू अम्मी चली चने भूनाने।

काकी—बेटा या बात ए रहन दै। तेरे बाप को बडो नाम औ। या चौखट पे अच्छे अच्छे ने माथे रिगडे एँ।

छगू—अरी मैया बिन बातन नै रहन दै। जाको अवए बाकौ सब एँ।

काकी—बेटा अवई या घर को चोखो बानक बन रह्यो ए। दुनिया यौ समझे जानै हम का दाबै परे ऐ।

छगू—समझन दै। खरी बात तौ ई ए मैया कै अब तौ हींग का कोथरा मे बासई बास रह गई ए।

काकी—ई बास बनी रहै याई कै काजै तौ मै मर गई ऊँ। कज करके ऊँ गहनॉ गढानै है।

छगू—मैया मेरी समझ मे तो जो कछू अपने पास ए बाई ए लै कै चले जाईगे।

काकी–बेटा ! सोने के कड़ूला, हँसुलिया, पौंची और टड्डे तो हतै पर कमर कूँ सौने की कौंधनी जरूर चाहिएँ ।

छगू–सोने की कौधनी नही होय तो—?

काकी–नही होय तो नाम धराई होगी और दहेज ऊ कम मिलेगो । बेटी बारेऊ ओछे पर जाइँगे ।

छगू–अरी मैया, याकौ कछू असर नॉय होय का चढायौ का नॉथ चढायौ । कोऊ अपनी नाक पै मक्खी नाय बैठन दे । देबे बारे एँ जो उछू दैनौ होय वाए दैई दे ।

काकी–ई बात नॉय । बाजे तेई घोडी नाचे और दूसरी बात ई ए कै–जैसी तेरी कोमरी वैसेई मेरे गीत । जितेक गुड डारौगे बितेकई मीठो होयगो ।

छगू–चोखौ तू जानै तेरो काम जाने । जैसे नचावेगी वैसेई नाचूगौ ।

काकी–देख तोय नाचनौ फाँचनौ नॉय, रुपैया तौ पडोस को तेरो हीरा चाचा दे देगो । तू तो बाके सग बदना सुनार की दुकान प बैठ कै कौधनी ऐ गढवाए लईयौ ।

छगू–तू कैगी तौ सब करूँगो ।

काकी–अच्छो तौ मै हीरा ते सलाह सूत कर आऊँ और रुपैयान कौ बन्दोबस्त कर आऊँ तू वाके सग चलौ जाइयो ।

□

काकी–अरे ल्होरे देवरिया है कै नॉय ?

हीरा–भाभी ए का ?

काकी–हम्बै

हीरा–सौ भीतर चलो आ ।

काकी–कहा हैं रह्यौ ए देवरिया ?

हीरा–है कहा रह्योए पलोथन पीट रह्योऊँ अपनौ म्हौ भुरसाय रह्यो ऊँ ।

काकी–चौ दयौरानी कहाँ गई ?

हीरा–पीहर कूँ गई ए। छाटे सारे कै ढौरौ भयौ ए। कुआ पुज रह्योए बाई मे गई ए।

काकी–चोखो तुमने भली करी। मोते पहलै कह देते तो का बिगर जातौ। मैऊ एकाध जोडी कुरता टोपी कछू रयाल खिलौना धर देती। हाँ तो कइए।

हीरा–अब जान दै तू बता कैसे आई ए ?

काकी–देख लाला अब तेरौई सहारोए तेरे ई सहारे गाडी चल रईए।

हीरा–भाभी लल्लो चप्पी की बातन नै तौ दै छौड। मतलब की बातएँ बता।

काकी–देख लाला छगू के ब्याह कौ महीना भर ऊँ नाँय रह्यौ और गहन गाठे की कुछ तजवीज नाँय बैठी।

हीरा–अरी भाभी तेरौ पुराना घर ए तोपे का नाय ? तू तौ माल ए दावे परी ए।

काकी–देख लाला बातन नै हँसी मे तो टारे मतीना। साची-साची बात ई कै पुरानी चलन की थोथी पोली एकाध चीज ऐ सौने की एक नइ कौधनी बनवानो ए।

हीरा–भाभी चौ चक्कर म परै। हल्की ते हल्की कौधनी केऊँ काजे बीस हजार रुपैया चइएँ।

काकी–अरे लाला ठाकुर जी पार लगामिगे। चार, चार हजार चार ठिकन मे आय गये सोई बेडा पार ए। कमी बेमी के काजै तुम हतई हतौ।

हीरा–भाभी मोय तो ई बात जचै नाय। बडे बूढेन कौ बात माननी चईये कै तेते पाव पसारिये जेती लाबी सोर।

काकी–सो तौ जानूँ पर लाला नैक वखत की शोभा है जाइगी। तुम्हारे भइया कौ म्हौडा ऊजरौ है जायगौ। तुमारी बात रह जाइगी।

हीरा–तेरी राजी भाभी। मैं तौ तौते काऊँ तरिया दूर नाऊँ।

काकी–तौ देखो लाला छगू और तुम दोनौ बदना सुनार की दुकान पै बैठ कै जैसी समझो बैसी आठ तौला की कौधनी बनवाय लो। जैसे-जैसे रुपया आमते

जाइँगे वैसे वैसे सुनार कु देते जाइँगै । और सुन देवर ब्याह तो तुमैइऐ करनो ए । मैं कछु नॉय जानूँ ।

हीरा–चोखो भाभी ।

ब्याह के बाजे बजना

ब्याह के पाछै –

काकी–अरे निपूते समधी तेरौ सत्यानास जइयौ तैने मोय चौडे लूट लई । थरा मे दो हजार रुपइया दे कै चुप्प लगा गयौ । अब या साने की कौधनी के कज ए कौन चुकावैगो ?

गू–मैया अब तू झिकझिक चौ कर रहिए जब तो तेरे पुरखान को नाम डूब रह्यौ ।

काकी–मोय का खबरई कै समधी कोरो फाकानन्द है । जब आयौ तब तौ बडे दिल्ली के घैमेरा मारे । अब बता कौन कूँ रोऊँ ।

छगू–मैया अब रोवे फिफाबे तै का होय । चालनी मे दूध काडै करमन नै टटोरे । मोय तो पहलैई चौरै मे दीख रई ।

काकी–अरे मोय चौड मे दीखती तो मैं सौने की कौधनी ए काय कूँ गढवातौ विते कूँ हीरा रुपइयान कै काजे रोज चक्कर काट रह्यौए वाने तौ देहरी की धूर लै लईए, दिन देखे ना रात । आए दिन आधमकै ।

छगू–जाके चइएँ बू तो मागैगौई । । नई देगी तो एक की मौ सुनावैगो । सब बखिया उधेर कै धर देगौ ।

काकी–नो अब कैसै पिंड छूटे । मै तो बडी भँवर जाल मै परि गई । भूख प्यास नीद सब उड गई ।

छगू–मैया अब तो एकई उपाय ए । या सोने की कौधनी ए हीरा चाचा के माथे मार दै । मेरे प्रानन नै तौ चाटे मनीना । मै तौ जाऊँ अपने काम पै ।

काकी–हाय रे कैसे करम फटे बेटा ते पालौ परयौए । पूरी बात सुने बिनाई चल दियौ । अरी बहू तोते कहा कहू तू तौ वैसेई महौडौ फुलाऐ बैठी है और स्याँपिन सी फुँफकारै रही है । अब बता मै कितकूँ जाऊँ ?

इत गिरूँ तौ कुआँ उत गिरूँ तौ खाई ।

बहू–देखो भाभी जी स्यॉपिन ब्यापिन तो केऔ मतीना, ब्याह कै आई ऊँ कोऊ घरेजौ नॉय कीयौ। सौने की कौधनी चढाये विना का नाक फटी परेई।

काकी–अरी बहू तू तो कल्ल ब्याह कैंई आई ए। चौ भन्नावै। नैक तो लिहाज कर। सुनते-सुनते कान बहरे है गए है।

बहू–लिहाज गई चूल्हे भार मे साची बात तो कही ही जाइगी।

काकी–हाय रे गजब है गयौ। बडी आई साची बात कहवे वारी या कज ए का तैरौ बाप चुकावैगौ।

बहू–देखो मइया-बापन तक मत पहुचौ नही तौ मोते बुरौ कोऊँ नॉयै।

काकी–तौ का तू हमे मारैगी ?

बहू–मारबे की बात छौडो एक की हजार सुनाऊँगी कान खौल क सुन लेऔ।

काकी–हम्बै चौ न सुनावैगी। याई कै काजै ती ब्याह कै लाए एँ। याई कूँ तो सोने की कौधनी चढाई ए।

बहू–फिर बाप तक पौची मै तो तिहारौ लिहाज कर रई ऊँ। अपनौ मॉजनौ चाहौ तौ म्यान मे रहेऔ।

काकी–अरे तू तो हमे बोलनऊँ नाय देगी का ? आग लगै तेरे म्होडे मे मेरी कौधनी ए द दै और जो तेरे मन मे आवै बक।

बहू–अजी कौधनी तो मेरी और मेरे बाप की। कौधनीए तो आज दऊँ न काल।

काकी–अच्छौ बडी आई कौधनी वारी अपने माजने ते रह। ऐसी अन्धेर गिरदी मेरे यहा नॉय चलेगी।

बहू–तुम कछू कैऔ। कौधनी मे तुमारे नाना को झगरो नॉय। तुमने अपने हातन ते चढाई ए ज्यादा करौगी तो अपनौ चूल्हा चौका अलग कर लऊँगी। ब्याह के आई हू।

काकी–ब्याह कै तो आई पर पनमेसुरी पर मेरे मूँड पै तौ बीस हजार को कर्जा ए ई कैसे चुकैगो ?

बहू—तुम जानो तुमारो काम जानै मै तो कौधनी ए दऊँ नाऊॅ चाहै तुम सो मूँड की है जाओ।

काकी—तोय दैनी परैगी, दैनी परैपी। दैनी परैगी।

बहू—नॉय दऊँ, नॉय दऊ, नाय दऊॅ। देखूॅ कैसे ले लेओ कौधनी। मै तो चली अपने पीहर तुम पै रोकी जाऊँ तौ रोक ले ओ।

काकी—अरी ब्याहवली, ओ बहू, अरी ब्याहवली नैक सुन तो सही।

—विनोद कुमारी "किरन"

बुरे फँसे

पात्र परिचय —

झङ्गमल—सरपच

गगू—सरपच कौ छोटो भइया

पाँची—सरपच की पत्नी

अन्य पात्र—डाक्टर, चौधरी, इसपेक्टर, गाम के आदमी, ग्राम सेवक

झङ्गमल–डागधर जी ! अजी डागधर जी !!

डाक्टर–का ए भइया ?

झङ्ग–'अजी नैक दरबज्जौ तौ खोलौ ।'

डाक्टर–'आह रहेएँ भइया आमतेई आमते तौ आमिगे। अब का ऊपर ते कूद परै ।'
(दरवज्जो खुलिबो की आवाज डाक्टर को प्रवेस)

'का बताए चौ हल्ला मचा रक्खौएरे ।'

झङ्ग–'डाकधर जी हमारे काका की हालत ठीक नाय ।' याए दिखाइबे कूँ लाएँ अपने आलेए लगाय कै नैकु देखो तौ सही का बात एँ ?

डाक्टर–(मरीज देखि कै)—भइया तुमने तौ भौंत देर कर दई। या काकाए पैले चौ नाँय लाये ।

झन्डू–'महाजन खेतीवारी कौ बखत औ गैहू पक गए ऐसे काम के बखत याग लैके को आमतौ।

डाक्टर–(चैक के)—'तो अबऊ काय कूँ लाएऔ ?' अब यामे कुछ नॉय बचौ घडी दो घडी कौ महमान एँ।'

झन्डू–'हमे तौ एक बेर तुमारे पास लानौ सौ ले आये। लोकलाज ऊँ तो रखनी परै। गाम मे पीपरी बारी चामर कौ भोग चढा दियौ ए। अब पनौ कूँ देवताउएँ कुदवाय दिगे।'

डाक्टर–पर भइया देवता कुदवायवे ते का होयगो ? इलाजऊँ तो करबानौ चइये।

झन्डू–'तो याई मारे तो तुमारे पास ले के आये ऐ। इलाज मे कितेक खरचा है जायगो।

डाक्टर–खरचा का येई कोई दो सौ तीन सौ।

झन्डू–'साहब फायदा तो परि जायगौ।'

डाक्टर–फायदा की बात यो जे ए कै तुमने मरीज की हालत भौत खराब कर दई ए। जरूरी नॉय कै फायदा है ई जॉय पर जौ लौ सास तो लौ आस।

झन्डू–पर पानी मे तौ पइसा फकौ नाय जॉवे। गारन्टी देऔ तौ बॉत बन।

डाक्टर–तुम या आदमी ए पहलै लै ऑते तौ मैं गारन्टी ऊँ लै लैतौ पर अब मैं गारन्टी नाय लै सकू। तुम चाहौ इलाज करवाऔ नाय चाहौ तो मत करबाऔ।'

झन्डू–'साहब हम गरीब आदमी ए कछू दवाई मूरी अस्तपाल तेई दिवाय देऔ।

डाक्टर–अच्छो एक काम करौ याये अस्पताल म भरती करबाय देऔ। एक आदमी या के पास रुक जाऔ। कुछ दवाई अस्पताल से दिवा दिगे कछू तुम लै आइयौ।

झन्डू–'फिर काका ठीक तो है जायगौ।'

डाक्टर–परेसान है कै–'देख भइया मैने सूधी सट्ट कह दईए गारन्टी कछू नॉय राजी होय तो इलाज करवाओ नॉय तो रहन देऔ समझै कै नाय ?'

झन्डू–समझ गयौ साहब सब समझ गयो अपनी खेती बारी कौ नुकसान करूँ दो सौ तीन सौ रुपइया खरच करूँ तोऊँ गारन्टी नाय ऐसे पार नॉय परेगी साहब।

डाक्टर–'तो ठीक ए फिर यहा ते लम्बे परो। मेरे प्रानन को छोड देऔ। पैलै तौ मरीज ए अवमरो कर लै फिर कहे कै गारन्टी लेऔ कूड मगज जाने कहाँ-कहा ते आय जाय। सकारेई दिमाकए चाट गयौ गमार कही कौ।'

(2)

पाची–दिखाय लाये काकाजी ए कहा कही चारबाग वारे डाकधर नै ?

झन्डू–अरी कहनौ काऔ ? बाय तौ अपने नोट सीधे करने। पैलै चौ नॉय लाये। अब भरती करवाय देऔ। दो सौ तीन सौ रुपइया खर्च है जाइँगे। गारन्टी कछु बात की नॉय ऐसे ही कहतौ रह्यो मै ऊँ ऐसौ भोरो नाऔ जो वाकी बातन मे आ जातौ।'

पॉची–'फिर तुमनै का कही ?'

झन्डू–'मैने तौ सूधी-सूधी कह दई गारन्टी लेऔ तो इलाज करवाऊँ नॉय तो जै रामजी की। अच्छौ ला छाछ महेरी दै दै मै खत जाऊँगो।'

पाची–'अभाल लाई तुम हाथ म्हौ धोय लेओ।'

बूढा–(कराहतो भयो) –बहू एक गिलास पानी गाह दै।'

पाची–(बडबडाती भई) –याने अच्छे प्राण पीये या डोकरा मरे ना मोय छाडे। दिन रात की किट किट ते मेरी तौ फदा मे जान परि गई ए।'

बूढा–'पानी पानी गरौ सूख रह्यौए कोऊ पानी देऔ।'

पॉची–'ला तौ रही ऊँ काय कूँ हल्ला मचा रह्यो है।'

(3)

चौधरी–भैया झन्डू काका मर गयौ बडो बुरो भयौ। हमे तो कल सजा कूँ पता परयो।'

झन्डू–हा चौधरी काका का मरो हम पैतौ पहार टूट परयौ। काका कौ हमे भौत सहारोओ।'

पाँची–का बात ए म्हौडे पे उदासी कैसे छाय रई ए को आयौ का बात भई ?

झन्डू–चौधरी आयौ यो कह रह्यौ सात गाम जिमाऔ तो इज्जत बचैगी ।

पाची–बात तौ साची ए । अभाल बाबरी खेडा की सरपचनी आई । पैलै तौ बडे-बडे टसुआ बहाये । बडे वैन करि-करि के रोई पीछे मोते बोली —

'भैना कितेक चून करैगी ? मैने कही'—हम तो एक गाम जिमावे की सोच रहे ऐ ।'

इतेक सुनिबोऔ कै अपनी ऊँट की सी घूघनी ए उपर कूँ कर कै कहबे लगी–

भैना बुरौ मत मानियो ये नाक कटबे बारी बात ए । मेरी साम मरी जब हमने सात गाम जिमाये । खीर और मालपुआ करे आज तानूँ वैसौ नुकता आसपास तो नॉय वैसे ऊँ हे काम जबर छाती बारे कौ ए । हरएक आदमी याए नॉय कर सके ।

झन्डू–'अच्छो ये बातए वाने ऐसी बात कही । वाकौ घम ड तौ तोरनौई परैगौ । गगू कहाँ है ?'

पाँची–'लेऔ नाम लैतेई आय गये ।' इनतेऊ सलाहसूत कर लेऔ ।

गगू–राम-राम भाभी राम-राम भइया का सलाह सूत करनी ए ?

झन्डू–'का बताऊँ भइया यो कह रह्यौए नुकता मे सात गाम जिमाओ ।'

गँगू–'अरे भइया तुम कौन की बातन मे आव रहेऔ दुनिया को तो बू-वारो हिसाबए भुस मे आग लगाय धमाला दूर परी । सात गाम जिमावे कूँ रोकड का गाम वारे दिवा दिगे ?'

झन्डू–'येई तो मै सोच रह्यौ ऊँ । बडौ भारी खरचा है जायगौ गाठ मे वेलाऊँ नॉय ।'

पाची–कछू है जॉय मेरो सबरो जेवर बिक जॉय चाहे करजा लेनौ परे पर गाम तो लाला पूरे सातई जिमाने परिगे । बाबरीखेडा की सरपचनी ते हमऊ कछू कम नाय ।'

गगू–पर भाभी पाम वितेक ई पसारने चइये जितेक लम्बी सौर होय । घर मे नाएँ दाने और अम्मा चली भुनाबे । करजा लै कै नुकता करबे की बात मेरी समझ मे नॉय आवै ।

चौधरी–'बात तो सही कही ए भइया पर बूढो आदमी तो पकौ पान होय। जाने कब झर जाय। काका कौ इलाज तौ करबायोई होयगौ ?

झन्डू–'हाँ चौधरी साब इलाज करबाये देबी देवता ढुकाये चारुबाग वारे डागधर की ऊ पेस नाँय खाई का करे।'

चौधरी–'भइया जब सास पूरी है जाँय तो कोऊ की पेस नाँय खावे। चलो अब छोडो जे बताऔ काका को नुकता कब को ए ?'

झन्डू– नुकता मावस को ए।'

चौधरी–'कितेक चून करैंगौ। भइया ?'

झन्डू–'का बताऊँ चौधरी अब कै बडी मार परो। इतकूँ काका मर गये। वितकूँ खेती अच्छी नाँय भई। मैं तो एक बोरी खाड गराबे की सोच रह्यौ ऊँ।'

चौधरी–'अरे सरपच तैंने अच्छी नाक कटाई। जब बाबरी खेरा के सरपच की मइया मरी तब सात गाम जिमाये। ऐसे कुरकुरे मालपुआ करे के स्वाद आज ताँनू म्हौ मै घुर रह्यौ ए तू का वा सरपच तै कछू कमए ?

झन्डू–चौधरी बात तौ तुमारी सही ए पर तुम जानौईऔ मेरे पास ज्यादा जमीन जायदाद नाय। फिर दौनौ भइयान की गिरहस्ती कौ पैटउ मोय पारनौ परै। इतेक भारी नुकता करबौ मेरे बस की बात नाय। कौहनी कबहू म्हौ कूँ आबैई नाँय। इतेक जिम्मेदारी*कै ऊपर बचैई नाय।'

चौधरी–पर झन्डू भइया बाप कौन से रोज-रौज मरै। कैसेऊ करौ करनौ तो परगौ।'
झन्डू–चौधरी साची जान या बखत मेरौ हात भौत तग है रह्यौ ए। बडी तगी तुरसी मे दिन कट रए ऐ और फिर सरकार नै ऊ तो मृत्युभोज पे रोक लगाय राखी है।

चौधरी–'येऊ खूब कही। अरे करबे वारे करई रहै।है। तोई ऐ सरकार पकरैंगी का। वावरी बातन ने करे। रही पइसा की तौ ग्राम कौ महाजन मर थोरे ई गयौ है। बापै ते उधार लै लै।

झन्डू–'समझ मे नाँय आवे कहा करूँ कैसे करूँ ?

चौधरी–जो तेरी राजी होय सोई कर पर एक बात कहे दऊँ सात गाम जिमाये बिना तू कोई ते आँख मिलाय कै बात करिबे लायक नाँय रहैगौ। अच्छौ भैया हम तौ चलें जो कहनी सौ कह दई।

पाची–का बात ए म्हौडे पे उदासी कैसे छाय रई ए को आयौ का बात भई ?

झ डू–चौधरी आयौ यो कह रह्यौ सात गाम जिमाऔ तो इज्जत बचैगी ।

पाची–बात तौ साची ए । अभाल बाबरी खेडा की सरपचनो आई । पैलै तौ बडे-बडे टसुआ बहाये । बडे बैन करि-करि के रोई पीछे मोते बोली —

'भैना कितेक चून करैगी ? मैने कही'—हम तो एक गाम जिमावे की सोच रहे ऐ ।'

इतेक सुनिबोऔ कै अपनी ऊँट की सी घूघनी ए उपर कूँ कर कै कहवे लगी—

भैना बुरौ मत मानियो ये नाक कटबे बारी बात ए । मेरी साम मरी जब हमने सात गाम जिमाये । खीर और मालपुआ करे आज तानूँ वैसौ नुकता आसपास ता नाँय वैसे ऊँ हे काम जबर छाती बारे को ए । हरएक आदमी याए नाँय कर सके ।

झ डू–'अच्छो ये बातए वाने ऐसी बात कही । वाकौ घम ड तौ तोरनौई परैगौ । गगू कहा है ?'

पाची–'लेऔ नाम लैतेई आय गये ।' इनतेऊ सलाहसूत कर लेऔ ।

गगू–राम-राम भाभी राम-राम भइया का सलाह सूत करनी ए ?

झ डू–'का बताऊँ भइया यो कह रह्यौए नुकता मे सात गाम जिमाओ ।'

गँगू–'अरे भइया तुम कौन को बातन मे आव रहेऔ दुनिया को तो बू-वारो हिसाबए भुस मे आग लगाय धमाला दूर परी । सात गाम जिमावे कूँ रोकड का गाम वारे दिवा दिगे ?'

झ डू–'येई तो मै सोच रह्यौ ऊँ । बडौ भारी खरचा है जायगौ गाठ मे वेलाऊँ नाँय ।'

पाँची–कछू है जाँय मेरो सबरो जेवर बिक जाँय चाहे करजा लेनौ परे पर गाम तो लाला पूरे सातई जिमाने परिगे । बाबरीखेडा की सरपचनी ते हमऊ कछू कम नाँय ।'

गगू–पर भाभी पाम वितेक ई पसारने चइये जितेक लम्बी सौर होय । घर मे नाएँ दाने और अम्मा चली भुनावे । करजा लै कै नुकता करबे की बात मेरी समझ मे नाँय आवै ।

(वाई बखत बाहर ते कोऊ ने अवाज दीन्ही)—सरपच जी ओ सरपच जी

झन्डू—को ए ग्रामसेवक जी ए का ?

ग्राम सेवक—हाँ मैई ऊँ का है रह्यौ ए ?

गगू—हौनौ का है भइया काका के नुकता की सलाहसूत है रइए। भाभी कह रईए सात गाम जिमाओ मै कह रह्यौऊँ अपनो जात बिरादरी मे छोटो सो नुकता कर देऔ।

पाँची—पर लाला नाक तौ हम बडैन की कटेगी दुनिया तो हमे नाम धरेगी हमारे जनम मैं थूकेगी। तुमारो का है तुम तो छोटे ओ।

ग्राम सेवक—भाभी तुम लुगाइन मे जाने कब अकल आवेगी ? सात गाम जीमावे की जगह पइसाए कछू धरम के काम मे लगाऔ। दूर क्यो जाऔ अपने गाम के स्कूल मे कमरान पे छत नॉय छन डरवाय देऔ, धरमसाला बनवाय देऔ। ऐसौई पइसा फुदक रहयोए तो इन कामने करौ काका कौ नामऊँ अमर है जायगो।

पाँची—लाला पइसा धैला तौ खैर कछू नॉय करज लैनौ परैगौ पर मेरी समझ मे बाप ए मरेठान मे राख मैं लौटिबे कौ छोडबो अच्छी बात नॉय। आदमी बेटा, याई दिना कूँ पैदा करै।'

ग्राम सेवक—भाभी तोते माथौ मारिबौ बिरथा है। तू नाय समझैगी। एक बात तोय बतादऊँ आजकाल मृत्युभोज करिबौ कानूनी अपराध है। कोऊ नै सिकायत कर दई तौ पुलिस पकर ले जायगी।

पाँची—नौ तुम काय बात कूँ औ ? हमारौ यहा कौन दुश्मन ऐ जो सिकायत करैगौ। तुमे का पतौ बाबरीखेडा की सरपचनी सबरे गाम मे अधर नाचती फिर रईए धरती पै पाम नाय टिक रह्यो ओर जीभ तारुए ते नाय लग रई बाकी नाकए तौ मै काट केई मानूँगी।'

गगू—पर भाभी कोऊ नै साचई मुखबिरी कर दई तौ तेरी नाक के चक्कर मे हम दोन ो भइया बे मौत मरि जाइँगे।

पाँची—अरे मद बनौ मद गाम मे है कोई ऐसो माई कौ लाल जो हमारी मुखबिरी कर दे। मैं बइय्यर है कै हिम्मत नॉय हार रई तुम मद है कै टॉय-टॉय फिस्स है रहेऔ।

ग्राम सेवक—पर भाभी तू बेकार की जिद कर रईए ऐसै पइसा पानी की तरियाँ बहाबे ते का फायदा ?

पाची—रहन देऔ लाला अपनी पढाई अपने ई पास रक्खो बाप मरोए कोऊ कुत्ता नाय उठ गयौ। गाम में थू-थू थू-थू है जाइगी। पीढीन तॉनू कोऊ बोलन ऊँ नॉय देगो।

ग्राम सेवक—अच्छौ भाभी जैसी तेरी राजी। जब काका जिन्दाऔ तैने एक घूट पानीऊँ खुसी-2 नॉय पिबाऔ और अब सात गाम जिमावेगी बिचारे गगू और झन्डू दोनोने जीमतई मार देगी। तेरे तू बूँ हालऐ जीमत कता पूछी ना बात मरै बुलाई नायन हात।'

पाँची—लाला चुप्प है जाऔ अब जो आगे कछू कही तौ एक की हजार सुनाऊँगी मैंऊ तुमारी लुगाई के लच्छन खूब जानूँ। कैसी भोरी भारी ए विचारी ?

झन्डू—अरी भागवत रहन दे मूडन ने मत फोरे तू जैसौ कहैगी वैमेई करिगे।

(5)

मृत्युभौज चल रह्यौए। लोग लुगाई बतरामन कर रए ऐ।

एक—लडुआ तो चोखे बनेएँ परि नुकती बडी राख दईए छोटी नुकती छाट देते तो मलूक लगते।

दूसरे—रायते मे तो मिर्चै ई मिच झोक दईऐ। सन्नाटो सौ छाय रह्यौए दिमाक मे।

तीसरा—एक बात ए सरपच है दिलदार आखिर सात गाम न्यौतई दिये।

चौथो—अजी सब दिखायबे की बात ए। हाथी के दात खायबे कै और दिखायबे के और बाप तो मरि गयौ पानी कूँ तरस तरस कै अब मरे पीछे सात गामन कौ जैमा-जूठन है रई है।

पाचवा—भइया जब काका ए अस्पताल ले गये मैऊ सग मे गयौ। बिचारे डागधर ने भौत कही याए भरती करवाँय देओ पर सरपच के कान पे जुआऊँ नॉय रेगी। वू ता खेतीबारी कौई गीत गामतो रह्यौ।

छठौ—अरे चुप रहो लडुआ खाओ मस्ती मारौ। कोऊ नै सुन लई तो अभाल लठ चल जाइगे।

तीसरो–यामे लट्ठ की कहा बताए ? साँची बात एकौन नाँय जानें। जब डोकरा पानी मागतो सरपचनी दस गारी सुनाती, तब पानी पिवाती। रही बात इलाज की डागधर की एकऊँ बात नाँय मानी। जीमतो रह्यो तब ताँनू तौ सडतौ रह्यौ अब मरे पीछे लड्‌आ कचौरी है रहे है।

चोथो–अरे चुप्प रह्यौ देखो तो सही ई इसपेक्टर कैसे आयौ ए ? कछू सुनन तौ दैऔ सरपच ते का कहा सुनी कर रह्योए ?

पाँचमो–भइया मोय लगै काऊने सिकायत कर दई ऐ। बू देखो गगू बरछी लै कै आयौए यहा ही झगडा हौ तौ दीखै चलौ देखे का है रह्यौ ए ?

झन्डू–इसपेक्टर साहब बैठौ तौ सही मेरी बात तौ सुनौ।

इसपेक्टर–मै बैठिबे नाँय आयौ तुम्हे पकरिबे आयौ हू। तुमने कानून के खिलाफ काम करौए।

झन्डू–साहब कायकूँ बात बढाय रहेऔ चार लड्‌आ तुमऊँ खाऔ पीछे मै खुद आपकै पान मिठाई कूँ रुपइय्या नजर कर दऊँगो।

इसपेक्टर–रिस्वत की बात कर रहेऔ ठहरो मै तुम्हे अभाल बताऊँ।

गगू–अरे इसपेक्टर ज्यादा जोस मे मत आवे अपनी खाल मे रह जो हम अपनीन पे उतर आये तो तेरी वरदीए फारिकै बन्दूकए छिनाए लिंगे।

इसपेक्टर–धमकी दे रहैऔ ठहरौ अभाल पतौ लगै कौन का करेगौ ?

(सीटी बजिवे की आवाज) हवाई फायर, भगदड, मिली जुली आवाज।

इसपेक्टर–कोठार ए सील कर दौ और दोनो भइयाननै गिरफ्तार कर लो।

झन्डू–साहब हमे माफ कर देओ।

गगु–साहब जैसे भी बने हमारी इज्जत रख लेलो हमते गलती है गई सरकार।

पाँची रोती भई–महाराज हम गरीबन कै माऊँ देखो हमारे बाल बच्चान पै दया करौ।

इसपेक्टर—तुम बड़य्यरबानिओ घर मे बैठौ हमारे हात कानून ते बँधे ऐ हम कछू नाँय करि सके ।

गगू—अब काँय कूँ रौबे भाभी तोय तो बाबरीखेढा की सरपचनी की नाक काटनी अब हम तौ फँस गये ना ।

पाँची रोती भई—अब कैसे होयगी ? नुकता अधूरो रह गयौ । अरे मेरे काका जी अब तुमारी मुक्ती कैसै होयगी ? हाय मेरे काका जी ।

—विनोद कुमारी "किरन"
C/o डॉ॰ एस एल शर्मा
जी- 127, उदयपथ श्याम नगर
एक्सटेन्शन, जयपुर

रेखाचित्र

गुलकन्दी काकी

गुलक दी काकी साठ सत्तर बरस की होयगी, रग गोरौ कद ठिगनो, बार आवे कारे आधे भूरे। ऐसै समझौ जैसे हिन्दुस्तान मे हि दु अरू मुसलमान सग सग रह रहे हौय। मोटी मोटी ऑखिन मे घौटन तक कौ काजर लगाए कै काकी एक दम दिप उठै। मौह पै झुरी परी भई है बिन मे काकी कौ साठ सत्तर कौ अनुभव बोलतौ। वाकी सूधे पल्ले की सूती धोती जाकौ मेल पोलका ते बैठे चाये ना बैठे परि बडे जतन ते पहरे है। अपनी जवानी के दिनन मे चलती होयगी तो धरती कॉपती होयगी परि वाकी बुढापे कै मारे चाल ऐसी है गई है कै जच्चा की नाई अचक पचक डग धरै। काकी नानेदारौ निभावे मे पूरी चाक चौब द रहे। कहू ते नैक पाती आयबे की देर ए जाइबे की देर नॉय। काई कू भात छोछक दैवो हौय तो महीनान पहले बना बुनी लग जाय। कहू ते कथा भागवत का नौतो आ जॉय तो काकी अपने मन मे पूरो जुगाड बैठा ले, काऊ मरे गिरे की खबर आ जॉय तो बारहमे दिना क ताई कोरी पाग पहलेई ढू ढ के धर लेय। कहबे को मतलब ई ले कै काकी नातेदारी निभावे मे ब्यौहार कुसल खूब है।

वैसे काकी को सुभाव सूधौ साचोए 'न ऊधौ कौ लेबौ ना माधौ कौ देबो' तोऊ घर मे बिचारी ऐसै रह रई ए जैसे दातन के बीच मे जीभ। भीजी बिल्ली बन कै रहे तोऊ बाए भन के उराहने तुराहने सुनने परै। काकी ने जबाब देवो ती सीखौई नॉय, एक पौत मैने काकी ते कही कै—

'तू मैन कू खरी-खरी चौना सुनाय दै। तो बू बोली—

'जब मेरो दोसई नॉय तब तो इनके जे हालए जो मै कछू कहबे सुनबे लग जाऊँगी। जब तौ घर मे रहबौ दूभर है जायगौ। काकी कौ कहबौ सौ टच सही लगौ एक चुप सौन मे हरावै।

काकी ए गीत गारीन को खूब सोक हू पास पडौस म कहू कोऊ करनी हौये तो काकी ढौलक लै के तैयार रहे। खबर लगतेई जच जचू कै करनी वारे के यहाँ पौच जाँय। ऐसी ऐसी गारी सुनावै जो खरी-खरी होय पर सुनवे वारेन के मन मे रस डमगायबे बारी हौय। अरू गोपाल प्रसाद व्यास की वा पक्तिए साथक करै—

"झूँठे लगे जैहू वेद पुरान अनूठे लगे रसिया रस गारी।"

मौहल्ला पडौस वारीऊ गुलकन्दी काकी ते ऐसी हिल गई है कि वाके बिना कोऊ करनी ई नॉय है पावै।

हा कागी ए सबते ज्यादा सौक जबर जाटे कौ ए। जेवर जाटे के काजे तौ बूँ जीती मरै। जब बू अपने पीहर मे रहती अरू भइया कूँ सौने चादी के जेवरन मे लिपटी भई देखती तो बाकौ रोम-रोम खिल उठैओ और बू बीज मन मे ऐसौ जम गयौ कै दिन दूनौ राते चोगनौ फूलतो फलतौ गयौ। सुसरार मे जबते आई तबई ते अपने घरवारे ते दुबकाय कै कौरचो कर कै इतैक पइसा कर लैती कै दौ चार बरस पीछे कोऊ ना कोऊ जेवर गढाय लैती। काकी ए खूब समझाते पर वाके कान पू जुआँऊँ नाय रैंगती। हॉ इतैक जरूर है के गहने बूँ अपने ताई नॉय बनवाती ब्याह वरौद मे चढावे कै ताई घर के नाम की बढौतरी के ताई ललकती रहती। बिना गहने के बूँ अपनी बदनामी समझती।

थोरे दिना पहले बाकौ छोरा आन्यौर ब्याहौ। सगाई लगन अरू ज्यौनार मे खूब मन कर के रुपइया बहायौ। पर गहनेन के ताई वाके मँन मे तलामली मच गई। कुछ अपने पास ते अरू कछू उधार लै कै सौने की हमेल गढवाय लई। खूब धूम-धाम ते ब्याह भयौ। गाजें बाजे के सग बहू की अगवानी भई। ब्याहूली कूँ खूब लाड लडायौ गयौ। ब्याहुली नैउ काम करिबौ तो दूर तिनकाउ नॉय तोरौ। बैठी-बैठी पलका पे खूब पुजी काकी नैऊँ अपने घर के नाम के ताँई जो गहनो चढायौ वाय सबै पहराय कै बहू पीहर भेजी। आन्यौर मे हल्ला मच गयौ कै फलाने की छोरी गहने गाठेन ते खूब सज-धज कै आई ए। जो चढायौ बूँ सबकौ सब पहर कै आईए। आज कल अपने नाम के ताँई अरू बेटी वारे पै ते नकद नारायण ऐंठबे के ताँई काऊ ते लै दै कै गहने गाठे की प्रदशनी करै परि पीछे ब्याहुली ए नगी बूँची कर कै भेजे। काकी ए ई बात पसन्द नॉयी। काकी तो बाई नाम के ताँई सिगरी उमर मरती खपती पचती रही।

पहलै छौरा के ब्याह के पीछे जब बहू कौ आइबौ जाइबौ भयौ बहू कौ बोलबौ चालबौ सिरू भयौ तौ बासनन कौ खटकबौ सिरू है गयौ। पहलै तौ घूँघट मे

ते सास-बहू काना-फूसी सी सिरू भई फिर धीरे धीरे तरवार म्यान मे ते निकर आई। नैक-नैक सी बात पे कहा सुनी ह्वैबे लगी। थोरे दिना पीछे तो नँगे नाच ह्वैवे लगे। ई बात घर तक ई नॉय रही। याकौ चबैया पास परोस मे ह्वैबे लगौ। छौरा पैले तौ ऐसौ रहतौ जैसे स्याप सूँघ गयो होय परि धीरे-धीरे बाऊ कै पर निकस आये। अब रोज हुज्जो तुज्जो होय, रोज खग बजै, रोज फजीते होय। काकी की नीद हराम है गई है। भूख उड गई है। काकी अपने जोर जनावे अरू सोने की हमेल ए बेर-बेर मागे परि सोने की हमेल के नाम काकी की बहू घुरकी दिखाबै अरू काकी जेवर जौटौ बनवाय कै मनईमन पछताबै परि अब पछताये होय का जब चिरिया चुग गई खेत।

कछु दिना पैलै छोरा की नौकरी दूसरी ठौर है गई ही। बू अपनी बहुए लिवाय कै लै गयौ। सग मे सोने की हमेल ऊँ लै गयौ। काकी रोमती फिफामती रह गई अब काकी हारी बीमारी मे ऊँ आपई चूल्हा फूँकै। आपई पानी पत्ता कौ काम करे। काकी की आखिन मे मोतिया बिन्द उतर आयौ ए। ना दीखे ना भारे। अपने बीते दिनान कूँ याद करे अरू या बात कूँ बेर बेर दोहरावे —

"मोह सकल व्याधिन कर मूला।"

मोह छोरा छोरीन ते होय चाहे कोठे तिबारेन ते होय चाहे गहने गूँठेन ते होय जो मोह मे फँस कै अपनी ऊच नीच ए नाय देखे वाये आखिर मे पछतानोई परै।

-विनोद कुमारी "किरन"

आप मेरी अम्मा नॉय है सकौ

रात कै दस बजे को बखत है रोनक अपने कमरा मे घुसौ। आव देखो ना ताव लपक कै सोर मे दुबक गयौ। बाप रे! कैसौ जाडौ पर रह्यौ है। जाडे के मारे प्रान ई नॉय निकर रहे और तो सब सब गति है रही ए। वो तौ भलौ करै भगवान माजी को जिनने एक बेर कहबे तेई नई सौर भरवाय कै दे दई नई तो अबकै जाडेन से राम नाम सत हे वे मे कछू देर नाही, वैसे मॉजी है बडे नरम मन की। काम तौ ग्वेच कै लै पूरौ तेल निकार ल सरीर को, पर राखैऊँ बडे प्यार तएँ। माखन कौ सौ नरम मन है विनकौ नेकु मे पिघल जॉय। कल सकारेई तो मेरे म्होडे मे त निकर गई —

"मा जी अबकै जाडो बडो जानलेवा पर रहयौ ए।"

'सौर मे जाडो लगे का ?' 'हॉ माजी सौर की रूई तीनं चार ठौर ते टूट गई ए ओर चद्दर बिछावे ते काम नॉय चले नीचे तेउ जाडे की लहर सी उठै।

'अरे बावरे तौ कही चौ नाही और मैऊँ कैसी भुलक्कड ऊँ सौर भरमे को दई वाए मँगवाबौ भूल गई। जा सबरौ काम छोड कै पैलै सौर ले के आ।'

रात के सोवे ते पहले एक गद्दाउ दै दियौ। अव सुसरौ जाडौ कहॉ ते आवेगौ आज नीद आवेगी। तीन चार दिनॉ ते तो पेट मे घोटुनने घुसाय कै सोतो तौउ सिक-सिकातौ रहतौ जाडौ जाडौ जडनपुरी जाडौ मॉगे खीर पूरी जाडे की मइया भौत बुरी।

रात भर याही को जाप करतौ रहतौ नीद तौ आमती नाही। आजकाल कामउ तौ भौत है। सकारेई सात बजे वाके सिरहाने लगी घ टी बज जॉय। दस मिन्ट मे भीतर नॉय पहुचे तो मॉ जी की कडाकेदार आवाज सुनाई परै—

• 'अरे उठे कै नाँय अब का ढोल नगाडे बजामिगे तौ उठैंगौ ।'

फिर वाके बाद सिरू होय बाके पाम को चक्कर । ऐसौ लगै जैसे पामन मे पहिना लग गये होय । सबते पहये मा औ बाबू जी की फीकी चाय । अबई विनकी चाय छानई रह्यौ होय कै बडे भैया की आवाज सुनाई परै—

'रौनक नीबू पानी लइयौं ।'

चाय की ट्रे बाबू जी के सिराहने धर कै बडे भैया कूँ नीबू पानी पकडावे की देर नाँय होय के छोटे भैया रसोईमे आख मलते भये ठाडे है कै भुन-भुनावे लग जाँय—

रौनक जै का दादागिरी ए अबई तानूँ चाय नाँय बनी और नैकु अदरक चीनो ढग ते डारियौ मोपै नाय पीई जाँय फीकी चाय ।

अभाल चाय ला रह्यौऊँ भैया तुम कमरा मे पहुचौ पीछे-पीछे मैंऊँ आय रह्यौऊँ ।

भैया की चाय उबल रही होती कै दीदी की आवाज आती—

रौनक भैया नेक सोनू को दूध दे जा जग गयो तो भौत रोवैगौ ।

इतकूँ बाबूजी के नास्ता को बखत होतौ वितकूँ मा जी की दूसरी चाय को । जब तानूँ दो कप चाय भरै के नीचे नाँय उतर जाती पलग के नीचे पाम नाँय धरती । करे कहा सरीर मैं हजारोन बीमारी जो लग रही ऐ । वो कहा कहे अलर्जी प्लपी टेसन, अन्जाइना और जाने कहा कहा । एक अकेलो रौनक और हजार काम । रौनक जे कर रौनक वौ कर, रौनक इतकूँ आ रौनक वितकूँ जा । एक अनार सौ बीमार । कहा करै रौनक कौन से कुआ मे जाय परै । जल्दी-जल्दी बाबूजी को दूध दरिया और टिफन मे परामठे और अचार राख कै पकरा दे तब तानूँ माँजी उठ कै आ जाय । बाबू जी तो ऑफिस चलै जाय और फिर सबकी बैठक जमे । आजकल बडे भैया लाम पे ते पन्द्रह दिना की छुट्टिन मे आये है । छोटे भैया मैडीकल कॉलज ते आये है और दीदी सुसरार ते आई ऐ सब जने इकठौरी बैठ जाँय फिर चलें गप्प सडाके ओर चाय काफी नास्ता पानी । बडे भैया चाय काफी के शौकौन ए । बिनकूँ हर आधे घन्टा मे काफी चाय चाइये सग मे माजी कूँ जबरदस्ती पियाबै छौटे भैया खाबे के सौकीन ए विनकूँ चइये समोसा, कचौरी, हलुआ, पूडी, इमरती, जलेवी बडे मजे है चक्क की छन रही ए । खूब पेट पूजा है रई ए । सब जने चले जाईगे जब फिर वोई रूखो सूखो खानौ परेगौ । बाबू जी कै बलडप्रेसर जो है ।

घन्टा दो घन्टा पीछे छोटे भैया और दीदी खूब फूलस्पीड पे टेप चलाय कै गान सुने और छोटे भैया बीच-2 मे नाचबे लग जॉय। छोटे भैया ऐन मेन हीरो की तरिया नाचे। ऐसो मन करै कै देखतौई रहू पर मैं देखबे लग जाऊँ तौ जा घनपटए कौन पीटे ? मेरे भाग मे तो काम करबोई लिखौ है। बडे भैया मा जी ए खीच कै अपने कमरा मे लै जॉय और फिर बिनकी गोदी मे घटान सोते रहे। माँ जी बार-बार कहे—

'अरे लाला मोय जान दे भौत काम परोए तोऊ बडे भैया विनको पल्लो पकर कै बठ जॉय नीचे नाँय आन दे।

ऐसे बाखत मौय अपनी अम्माँ की भौत याद आवै। मैऊ तो अपनी अम्माँ के गरे ते ऐसैई लिपटौ करै औ। मेरी अम्माउ तो ऐसैई अपनी धोती के पल्ले ते मेरे म्हौ ए पौछ पौछ के प्यार करौ करै ई। बच्चापन कितेक जल्दी बीत गयौ। गाम अकाल परो। अम्मा मर गई और बापू मोय लै कै सहर आ गयौ। दो तीन महीना कितेक बूरे बीते। वो तो भगवान भलो करे बिहारी काका कौ जाने बापू कूँ फेक्ट्री मे काम दिवा दियौ और मोय यही रखबा दीनो यहाँ खावें पीवे और कपडान की कोई कमी नाही। बडे भैया और छोटे भैया खूब कपडा दे दें। बस बडे भैया के पाम दवावे की देर ए और छोटे भैया कै हलुवा बनाय कै खवाँबे की देर ए। एकई दुख है सवेरे दिन काम परे बैल की तरियाँ। वैसै अपनी बात जे ए कै मैं काम चोरऊँ। काम तो बिन दिनन मे होय जव सब जने छुट्टीन मे आयें बाकी दिना तो आराम ई, आराम ए। आज अम्माँ भौत याद आ रई ए। जाने कब रौनक की आँख लग गई पतौ नाय परयौ।

रौनक कै सिरहाने लगी घन्टी बजी ट्रिन ट्रिन-ट्रिन। ऐं सात बज गये। बडी जल्दी रात बीत गई। रौनक ने करवट बदल लई।

अरे मा जी उठ गई। जल्दी-जल्दी रौनक उठौ और रसौई मे घुस कै चाय बनावे लग गयौ। बाबू जी ऑफिस चले। सब जने बैठक मे बैठे। बडे भैया बोले—

रोनक सुन ये ले बीस रुपइया औंर नुक्कड की दुकान ते दस पन्द्रह समोसा ले आ फिर आय कै गरमागरम चाय बनइयौ।

'जी बडे भैया' रौनक नैक खडौ देख रह्यौ।

'जी बडे भैया का ? ये रोमनी भिर बन कै चौ ढाडौ ए नैकू हँस मुस्करा तेरो तो नामई रौनक ए। बडे भैया ने अपनौ फौजी हाथ रौनक की पीठ पै जमा दियौ।

एक तो मन भरौ भयौ और दूसरौ हाथ भारी भरकम औ। छोटे भैया माँ जी की गोदी मे लौटे भये और दीदीउ मा जी ते छोटी सी बच्चा की तरिया लिपट कै बैठी। रौनक की आखिन मे ते आसू बहवे लग गये।

'अरे का भयौ रोवे चौ लग गयौ ? जे का छोरीन जैसो सरीर बनाय रखौए नेक जान रखो कर सरीर मे। दण्ड बैठक लगायौ कर।

बडे भैया पीठ सहराबे लगे। सब जने वाए घेर कै ठाडे है गये—

'का बात ए रौनक का जोर ते लग गई ?' मा जी ने प्यार ते पूछी।

'नॉय मा जी'

'अरे तो फिर का भयौ ?' बोल तो सही ?

मा जी मौय मेरी अम्मा की याद आय रई ए।

'अरे बावरे खोदी पहाड निकसी चुहिया। अच्छौ एक बात बता 'मे' तेरी अम्मा नाऊँ। इन सबके सग-सग म तेरीउ अम्मा हू।

आप मेरी अम्मा कैसे हे सको। अम्मा तो प्यार ते माथौ चूमे अपने हाथ ते रोटी खवावै छाती ते लगाय कै प्यार करै। आप भौत अच्छी ए आप मेरी अम्माँ जैसी ए पर आप मेरी अम्मी नॉय है सकै।

सिसक-सिसक कै रौनक रोतो भयौ बोलो और सब जने वाए देखते रह गये।

मेरौ मन कहबे लगौ रौनक को अहम् ठेस खाय गयौ है। बडे नै सहज भाव सो पीठ पै हाथ जमाय दियौ। खातौ पीतौ सरीर है नयौ खून कसमसामतौ रहै जाकू पजे लडाबे कौ सौकए वाकू जब कोऊ पजे लडायबे कू नॉय मिलै तौ जगला के तानन पै जोर अजमायौ करै सोई बात बाकी रोनक के सग है गई। बडे ए अपने शरीर कौ गरूर ऊ है वाए अबई अनुभव नाएँ दुनियाँ मे एकते एक ताकतवर एँ। मल्लन कू मल्ल घनेरे, घरनाएँ बाहर भुकतेरे। मान लई बाके पास ताकत ए पर रौनक पै जोर अजमायवे कू ए का ? गरीब कू सतायवे कू ए का ? असहाय के मन दरपन कू चकनाचूर करबे के ताई ए का ? सेवा करै अरू मार खावै कहाँ की भलमन साहत है। सेवा करबे करौ फटकारने कु ए का ? हर समै घुडकी खामवे कू ए का ? मौय लगे कै यही दौर रह्यौ तौ सेवा करबे वारे ढूँढे ते नही मिलिंगे।

—विनोद कुमारी (किरन)

ई कैसौ पछु ?

'का है रह्यौ है भैना कोऊ घर मे हते कै नॉय ?'

अरी आ जा राम प्यारी भीतर आ जा।'

'ए भैना द्रोपदी तू तौ गजब करै इतैक दिन चढ आयो तौऊ अब चानू खाट तौर रई ए। का बात ए रात भर लालाजी ते का बतरायन करी। जो अब तानू आँखिन मे नीद कौ नसा चढ रह्यौए ?'

'अरे नॉय रामप्यारी तेरे लालाजी के पास इतैक बखत कहा है जो मेरे ढिंग बैठ कै मौते बतरामे। वे तो एक पल मे यहॉ तो एक पल मे म्हॉ हॉ, बात ये है कि कै आज घर सूनो-सूनो है गयौ है। तीनो बच्चा अपने-अपन्ने ठिकाने चले गये।

'अरे, ज्योति बिटिया सुसरार चली गई। मेह्मान कब आये लिवाबे। मोय तो पतोई नॉय चल्यो।'

दीपक कल रात कै अपनी मारुती लै कै आयौ। सकारे ई चले गये। भौत कही 'लाला एक दिना तौ रूकौ हमारौउ तौ मन करै तुम पे लाड प्यार करिबे कौ पर कहबे लगौ।'

'छुट्टी नॉय अस्पताल मे आपरेसन करने है, रुक नॉय सकूँ।'

'हॉ जे बात तो है डागधरन कूँ इतेक बखत कहाँ ?'

'तू बता रामप्यारी सकारेई-2 कैसे आई ?'

'अरी का बताऊँ बू ँ मेरी अलीगढ बारी दयौरानी है ना वा के चाचा कौ छोरा जो वकील है गयौ ए वो आयौ है वाके सग मे दो जने और है बिन मे तो एक जनौ छाच पीवैगौ। येरे घर मे दई हते नाय तेरे पास होय तो दे दै।

'हा-हा दहीउहते छाछउँ हो जो चइये ले जा।'

रामप्यारी चली गई और द्रोपती फिर अपनी खाट मे परि गई। वाकी आखन के सामई पैले कै सात आठ दिन सिनेमा के रील की नाई घूमबे लगै। सात आठ दिन ते घर मे बडी चहल-पहल है रही तीनौ बच्चा आये भए। बडौ बेटा मनोज इजीनियरिंग के आखिरी बरस मे पढ रह्यौ, छोटो प्रभाकर मेडीकल के दूसरी बरस मे पढ रह्यो। दोनो दिवारी की छुट्टीन मे आये भए। ज्यौति कै दूसरो जापो भयौ। बाके पहला ठी की छोरी ही अबके छोरा भयौ। वो डेढ महीना के छोराए लै के आई। सबरौ घर हँसी ठट्ठानते भर गयौ। तीनो भइया भैन बतरामन मे लगे रहते। अपने ढिग द्रोपदीए उ वैठा लेते। बतरामन मे पतौई नाय चलतो कै दिन कब निकर जातौ। पूरौ दिन चाय नास्ता मे निकर जातौ। कलेऊ बारह बजे हो तौ धौपर की रोटी साँझ कूँ चार बजे खाते और ब्यालू तो राम भरोसे होती कबहू रात के दस बजे तो कबहू बारह बजे। द्रोपती तो साग भाजी बनाय कै धर दैती पीछे बिनकी मरजी होती जब वे खा लेते द्रोपती और गोपाल तो रात कै साढे नौ बजते ई सो जाते। गोपाल ए भूभरेई सात बजे फैक्ट्री जानो पडतौ और द्रोपती पाँच बजे उठ कै वाके नहाबे धोबे को कपडा लतन को इन्तजाम करती और धौपर को खानो सग धर देती या मारे वे दोनो समय ते सो जाते। जब कबहू पास के कमरा मे तो ठहाके की आवाज ते और कबहू किचिन मे खडकते बतनन ते नीद खुल जाती तो एक गहरे सतोष से भरे कै वौ फिर गहरी नीद मै सो जाती।

एक दिन गोपाल फैक्ट्री ते घर आयौ तो बढो परेसान दीख रह्यौ।

का बात हे बढे परेसान लग रहे हौ ?

'हाँ कछू ऐसीई परेसानी है। दिमाग काम नॉय कर रह्यौ।'

'ऐसी का बात है कछू मोय तो बताओ स्यात कछू मै मदद कर दऊँ।'

'बात जै है कै अजमेर वारे जीजाजी ने एकदम बीस हजार रुपइया मँगाये है। सात दिन के भीतर।'

'सात दिना के भीतर-2 ऐसी का परेसानी आय गई। कोई चिट्ठी आई है।

'नॉय फैक्ट्री मे फोन आयो है कह रह्यै प्लाट खरीदनो है सात दिना में पेमेन्ट करनौ ए।'

जे अच्छो कगाली मे आटो गीलो भयो। इतेक बडी रकम कहा से लाइगे।

'सब ठीक है द्रोपती, पर इन्तजाम तो करनौई परैगो। बखत परे पर बिनने हमारौ सग दियो। अब हमे बिनकी चूकती रकम लौटा देनी चइये। इन्सानियत कौ तकाजौ है।

'प द्रह हजार तो मोय मेरी एल आई सी के मिल रहे है बाकी पाच कौऊ पै उधार ले लऊँगा।

'और ज्योति कू पच देनऔ बाकी का होयगौ ?

होगो का कम दे दिगे। ऐसो कर ज्योति दीपक व दोनौ बच्चान के कपडे बनवा दे। सौने की चैन तू अपनी दे ई रही हे। अरी हॉ भली याद आई बो चैन सुनारके यहा बैठ कै उजरबा तो लई कै नॉय ?

'हा वू तो उजरवा लई पर ज्योति की सास तो 10000 और माग रई है। आखिर समाज मे बाकीउ कछु इज्जत है नाते, रिस्तेदार, ब्यौहार मे दिखारो तो करनौई परैगौ।'

'वो सब तो ठीक हे पर अब ऐसी हालत मे मै का करू। तोय तौ पतोई ए मेरौ बैंक बैलेन्स कछु नाय। या मकानए बनवाय के पूरी तरिया ढोल मे पोल है गई ए। गहने तेरे सब बिकई गये अब बोल मै का करू।

तुम्हारी हालत ए मै का जानू नॉय, पैले नॉ कही कि गरे मे इतेक बडो ढोल मत डारौ पर कौन सुने मेरी। कै तो रौइगे नही और रौइगे तो बाबा ई बाबा। देखो मै कछु नॉय जानू समधियाने कौ मामलौ है ज्योति कू तौ रुपइया देने ई परिगे।

क्यो देने परिगे ? जा तू साफ साफ कह दे हमारे पास रुपइया नॉय। वैसे ऊँ दूसरौ जापो है अबकै रुपइया नई दिये तो कौन सौ पहाढ टूट परैगौ। तुम्हारे झूठे खोखले रीति रिबाज लेन देने के पीछे आदमी टूट के बिखर जॉय बाकी कमर टूट जॉय। जब मेरी अच्छी स्थिति ही तब टिन्नी के पैदा हैवे पै पन्द्रह हजार नकद सोने की बाली, फल, मिठाई, मेवा दिये।

' और ज्योती कौ ब्याह कितक धूम धाम ते कीयौ, बता नॉय कियो का ?

गोपाल ठीकई कह रह्यौ ज्योति के ब्याह की छाप लडका वारेन के दिल पै तौ लगी हती लडकी वारेऊ देखते ते देखते रहे गये। गोपाल ने हर मेहमान के ठहरबे कौ खायबे पीबे कौ बरातीन की तरिया प्रबन्ध करवायौ। काऊ कू कोई असुविधा नॉय होन दई। दस दिना तानी घर मे मेलौ सौ लगयौ रह्यौ आजऊँ जब इकठौरी बैठे तो ज्यौति के ब्याह की बात जरूर करै।

पर अब हालत अचानक ही पतरी है गई। जीवन के पच्चीस तीस बरस बडे आराम ते बीते समाज म उनकी अच्छी प्रतिष्ठा ही। एक अच्छौ सौ बगलाउ खरीद लियो बस याही गलती है गई। जहा अपनी चद्दर देख कै पाम फैलान बहा पाव चद्दर त बाहर निकार दिने। जि दगी भर की कमाई मकान मे लग गई। द्रोपती न समझाया कै इतैक महँगा मकान मत ले औ पर जिद्दी गोपाल भता सुनतौ कौऊ की मकान लै कै ई मानो और हालत ह गई ठन ठन पाल मदन गोपाल।

स्थिति काबू के बाहर है। चार हजार प्रति माह तो मनोज व प्रभाकर ले लेते बाकी पइसान ते जसे तैसे घर कौ खरचा चलै।

पइसा आयै और सात दिना पीछे फिर पहली तारीख की बाट देखबे लग जॉय ऐसी हालत म जीजा जो न चूकती रकम की माग कर लई। इत कू ज्याति पहली बार टिकू ए ले के आई है रिवाज क मुताबिक वाकू पच देनो है नही तो ससुरार मे बाकी हेठी है जाती। बाकी सास की आदत दिखाबे की कछु ज्यादा ई है अपनी बेटीन कौ हैसियत से ज्यादा दे और बदने मे चाहे कै बेटा के ससुरार ते ऊ इतैकई आवै।

गौपाल न तौ साफ मना कर द, कह कै पल्ला झाड लियौ द्रोपती की तौ नीद उड गई ऐसै कैसे कह दे ? छोरी की ससुरार म कैसी छीछालेदार होयगी ? मइया कौ उतरौ चेहरा देख के तीनोन ने कारण पूछौ तौ वाने सबरी बात साफ साफ बता दई। सुनतेई ज्योति बोली—

'हाय अम्मा अब कैसे होयगी ? मेरी सास तौ मेरौ जीबौ दूभर कर देगी' ताने-ताने मार-मार क मौय रुवा लेगी। दयौर-जिठानी म्होडे फेर-फेर कै हसेगी। इनकौ भरोसो ए पर इनतेऊ कैसे कहूगी ? ये तो है सकै कै दस हजार की जगह पाच हजार दे देऔ पर एकदम खाली हाथ कैसे जाऊँगी ?

'का करू ज्योति मोय रात भर नीद नॉय आई।' द्रोपती बोली

'प्रभाकर मै जो कपडे बनवाने की बात कर रहो बिनने मत वनबइयौ।

'पर बेटा कपडा और जूता तौ ज्यादा ते ज्यादा आठ सौ मे आ जाइगे बात आठ सौ की नॉय प द्रह हजार की हे।'

कछू भी ह्रोय अब मैं नई बन-बाऊँगो आठ सौ बचै तौ आठ सौ ही सही।'

'मोय मन ई मन म गारी दे रह्यौ होयगो कै कहाॅ ते मगतन आय गई ? ज्योति ने कही।

अरे नाय जीजी तू ऐते मत सोचे ऐसी कोऊ बात नाय। हमारे दिना अबई अच्छे नाय चल रहे एक बेर डाक्टर बन जान दे फिर देख तमासौ भैया कौ।'

अब भइया भैन बैठ कै येई सौच विचार करते रहते कै कम ते कम खरचा कैसे कियौ जाय। प्रभॉकर और मनोज वापस अपने अपने कालेज चलै गये। दीपक कौ फौनऊ आय गयो कै व ज्योति ए लिवावे आय रह्यौए। द्रोपती अपनी एक भौजाई के पास गई और पन्द्रह हजार रुपइया उधार ले आई। शगुन के कपडा खरीद लिये ख्याख, खिलौना, दार-चामर, मगध के लडुआ, काजू, किसमिस, बदाम सब बाध दियौ, सब तैयारी कर दई। रात कूॅ दोपक आयौ द्रोपती और गोपाल बाकी आवभगत मे लग गये। भूमरेई उठ कै जानौ है। बारह घटा कौ सफर बच्चान कौ सग और जाडे कौ महीना। सकारे विदा के बखत द्रोपती ने दीपक के माथे पे रोली चावल को टीका लगायौ और 101 रुपइया सगुन के ह्राथ मे दिये। एक हात ते रुपइया लै के दूसरे हात ते दीपक ने लिफाफौ थारी मे धर दियौ। द्रोपती के तो प्राण हलक मे आय गये। जे तो वोई गोटा किनारी लगौ भयौ लिफाफो जामे धर के वाने पन्द्रह हजार रुपइया ज्योति कूॅ दिये।

'जी का ए ? द्रोपती ने धडकते दिल ते पूछी।'

'अम्मा मोय ज्योति ने सबरी बात बता दई ए। मै ये रुपइया नई लेऊँगा मोय पतोए ये रुपइया आप उधार लै कै आई हैं। मनोज और प्रभाकर की पढाई के चक्कर मे अपनी अपनी भविष्य निधि के पइसाऊ अग्रिमरूप मे ले लिये है या सबए जान कै मैं ऑख मूॅद के आपकी छाती पे कज को पत्थर तो नॉय रख सकूॅ।'

'पर बेटा गृहस्थी मे तो यह सब होतौई रहे। आज उधार, लियौ है कल चुका दिंगे। और अब तौ दो तीन साल की बात है दोनौ पढ कै आइगे फिर कछू चिन्ता नॉय।

• 'ये ई बात तो मै कह रह्यौ ऊँ दो तीन साल मे सब ठीक हो जायगो। या बीच मे रीत-रिवाज नॉय निभाये तो नॉय सही कौन सी उमर निकर गई ए। मोय तो ताज्जुब ए ज्योति ने सब कछू जानते पूछते रुपइया लै कैसे लिये ?

मे का करती। मैने सोची की अम्मा जी नाराज ना है जाय। कही उनके सामने अम्मा बाबूजो को सिर नॉय झुक जाय।

'अरी बाबरी सिर कज लेवे ते झुको करो है। कज लैबौ कोई बुद्धिमानी की बात नाय।

गोपाल जी अब तानी सबकी बातन ने चुपचाप सुन रह्यौ बोलो —

पर बेटा तुम अपनी मइया ते का कहोगी ?'

'बाबूजी वो मेरी मइया है बि नै मे समझा 'लऊँगौ। मे इन रिवाजन ने नॉय मानूँ इन रिवाजन क पीछे रिस्तेन मे दरार पड जॉय बाबूजी और तो और भाई बहन भी खुले दिल ते नॉय मिल सके। मा बाप अपनी बेटी को अपनी खुसी ते दै या बहन भाई एक दूसरे कूँ उपहार दे वहा तक तो ठोक है पर अपनी हेसियत सौ ज्यादा देवौ नेबौ अपने शरीर मे घुन लगाबौ ए।

'पर बेटा बिना पच लिये जावौ कछू अच्छो नॉय लग रह्यो। ज्योति व गोपाल दोनो एक सग बोले।'

बाबूजी अम्मा माना मैं आपको बेटा नॉऊ दामाद हू परायौ हू,पर इतेक परायौ तौ नाहू के आप मौय या घर सै अलग समझबे लग जॉऔ। अपनी परेसानी अपने दुख मोते छिपा कै रखौ। जो आप मोय पच मे कछू देनोई चाहो ता या घर के बेटान को ना सही बेटा जैसौ अधिकार देऔ जाते या घर के ताई मेरौ जो कतव्य है। बाए मैं पूरौ कर सकूँ।

'चल ज्योति सूरज बासन चढ आयौ है। देर है रई ए।'

'दीपक ने द्रोपती व गुपाल के पाम छूए और कार मे बैठ कै हवा हो गये।'

हतबुद्धि से ऑसुआन भरी आखिन सौ दोनो देखते और सौचते रहे गए। ई कैसौ पच ? का ऐ सौऊ होय का ?

—विनोद कुमारी (किरन)

मैने या तरियाँ नाँय सोचौ

वकील साहब अपनी कोठी के बाग मे बैठे अखबार पढ रहे कै बिनने डाक्टर अनीस को कार आमती दीखी। वकील साहब उठ कै अनीस के स्वागत कूँ ठाडे हैं गये। कार मे ते उतरते ई अनीस जोर ते चिल्लाओ।

'ओर सुना मेरे यार का हाल चाल हे? मोय तो ऐसौ लगै पाचौ अगुरिया घी म और मूँड कढैया म है।

'हा यार और का मजे ई मजे है बस तुम ओर भाभी सकारेई अपने दरवज्जे पे तारा लगाय कै तैयार रहियौ।'

'जरूर जरूर याई मारे तो मैं आयौऊँ कै कितेक बजे चलनौ है?'

सकारे सात बजे निकरबे को विचार है। लम्बो सफर है, देर करबे ते लू लगुबे कौ डर है।'

दोनो बतरामते-बतरामते लान मे आय कै बैठ गये। कमल ने नौकर ते दौ गिलास सरबत लायबे की कही।

अरे हा अनीस तेरी नीद तो खुल जायगी कै मैं सकारे फोन कर के जगा दऊँ।

अरे यार बूऊँ कहा बात करे। डाक्टरन की नीदउ, कोऊँ नीद होय। एक कॉलबेल के सग सबरी नीद गायब है जाय। कल तो वैसेउ हम अपनी बारी बहुए देखबे जॉय रहे है खुसी के मारे वैसेई नीद नॉय आबैगी और फिर हमारी देवीजी जो सँजा ते ई सलवारसूट और साडीन के ढेर मैं बठी है। बिनकी समझ मे नॉय आय रही कै साडी पहरूँ कै सलवार सूट। ढेर मे बैठी ऐसी लग रही है कै पूछे मत —

'साँरी मे ही नारी है कै नारी की ही सारी है ।'

'देख लीजौ वापस जाऊँगी तब तानू याई हालत मे पावेगी फिर मौते कहेगी—

'कछु तुमई बताऔ ना का पहरू ? मेरौ तौ दिमाग काम नाय कर रह्यौ ।'

जब साडी तय है जायगी फिरमैचिग चूडी हार कगन को चक्कर सबरी रात खटर-पटर करती रहैगी तब कही जॉय कै परदा ते बाहर निकरैगी ।

अरे भगवान कूँ धन्यवाद दे जो ऐसी भागवान मिली है। बस जब देखो तब बिनके पहरबे ओढवे के पीछे छीटा कमी करतौ रहे। चालीस के ऊपर है गई पर आजऊँ तीस ते ज्यादा की नाय लगे मेरी भाभी, मिलती कोई सिडबिल्ली तो आठ आठ आँसू रोतौ दीखतौ ।

'हा भाई कमल जे बात तो सही है मेरी जिन्दगी मे सबरो मेरी देवी जी के कारन हैं। अच्छो चलूँ। युगल जोडी सकारेई सात बजे दरवज्जे पे स्थापित है जायगी ।'

'अच्छो ठीक है ।'

कमल और अनीस दोनो बचपन के यार है। दोना के परिवारन मे उ आइबौ जाइबौ हे। हिन्दू और मुसलमान है पर धरम विनकी दौस्ती मे आडे नॉय आतौ। कमल के पिता भौत जल्दी भगवान कूँ प्यारे है गये। वा बखत अपने सब पराये है गये। अनीस क पिता ने विनकूँ भौत धीरज बँधायौ। कमल की मा कूँ मुसीबतन ते लडवौ सिखाया। हर तरिया ते सहायता करी कमल की पढाई लिखाई पूरी करवाई। आज कमल अपने सहर को प्रतिष्ठित वकील है। दोनो के परिवार एक दूसरे के धम कौ आदर करौ करै है। दिवारी के दिन अनीस कौ परिवार कमल के घर आयकै लच्छमी पूजन करतौ और खूब सुरी फटाके चलातौ। ईद पे अनीस के घर महफिल जमती। खूब सैमई खाई जाती। अब तो दोनो के मैइया बाप ना है। कमल के दो बच्चा हे। एक लडका एक लडकी। अनीस के कोई सन्तान नाँहि। अनीस और उनकी वेगम कमल के बच्चाननै अपने बच्चा समझते। अनीस घोडा बन कै इन बच्चान ने अपनी पीठ मे घन्टान तक घुमातौ रहतौ तौ बाकी बेगम जब तानी विनने खीर, पुलाब, बिरयाणी अपने हाथ ते नॉय खबा देती तब तानू चैन नॉय परती। अब बच्चा बडे है गये अनिरुद्ध डाक्टर बन गयौ वाई के ताई एक डाक्टर लडकी देखबे दोनो परिवार जा रहे है या रिस्ते कौ विचार सबते पैले, अनीस के मन मे आयौ। प्रभा नै बिनके अन्डर मेई इन्टनशिप करी। वो भौत अच्छी और मलूक छौरी ही।

कल प्रभा के घर सब जॉय रहे और सौच रहे कै लडकी अनिरूद्ध ए पसन्द •आय गई तो गोद भर दिगे। दो कार ल के जाइबे को विचार हो। एक कार मे अनीस, विनकी बेगम, कमल कमल की पत्नी और दूसरी मे अनिरूद्ध बाकी भैन और अनिरूद्ध के यार दोस्त। वैसे आगरा ते ग्वालियर कोई ज्याद दूर ना हो पर मई के महीना मे तीन चार घन्टा की यात्रा धूप मे करिबौ मुसकिल हो। याही सौ भूमरै जल्दी करिबो ठीक समझौ।

दूसरे दिन सकारेई दोनो परिवार चल दिये। धोलपुर मे सबने कलेऊँ करौ और कार की डिक्की मे कोल्ड ड्रिंक्स भर कै रवाना है गये। लडकी वारे ने भौत भव्य स्वागत कियो। प्रभा सबे पसन्द आय गई। गोद की रस्म कर दई और फिर बेटी वारे ने भोज को इन्तजाम कियौ। विनकी तरफ से पीवे पिवावे को पूरौ इन्तजाम हो। मनीस की तो कमजोरी ही बाकी तो रोज की दिनचर्या ई दो पैग लिये बिना वाए नीद नॉय आती फिर आज तो जाम और पीवे कौ बहाना दोनो मौजूद है। पूरी पार्टी मे कमल अनीस के आगे पीछे डोलतौ रहा। पर वे भला कब मानबे वारो वाने खुद तो पाच छै पैग पी लिये और कमल कूँ ऊ दो पेग पिवा दिये।

रात के बारह बजे पार्टी खतम भई रात्रि विश्राम कौ इन्तजाम रेस्ट हाऊस मे कर राखो। इतकूँ मेहमान खाना खाये बितकूँ थके मादे घरवारे सोबे की तैयारी करबे लगै। अचानक फोन की घन्टी बजी—

'फौरन अस्पताल पहुचे आपके मेहमानन को एक्सीडेण्ट है गयौ है।

प्रभा व घरवारे अस्पताल पहुचे पतौ लगौ डाक्टर अनीस व विनकी बेगम की हालत चिन्ताजनक है कमल और विनकी पत्नी कै मामूली खरौंच आई है। पल भर मे डाक्टरन के ठट्ठ के ठट्ठ जुर गये। पूरे छत्तीस घन्टा बैचैनी मे बीते। सब के प्राण नोहन मे समाये रहे प्रभा दिन रात डाक्टर अनीस के सिरहाने बैठी रहती बाकी तो जैसे भूख प्यास नीद सब उड गई। म्होडो नेक सो निकर आयौ। जब डाक्टर अनीस ने आख खोली और यूनिट हैड ने कही–

'अब मरीज खतरा के बाहर है चिन्ता की कछू बात नॉय। अब तो बस सात आठ दिन के आराम की जरूरत है।'

तब जाय कै सब की जान मे जान आई। आठ दस दिन सब जने नम्बर ते डाक्टर अनीस की देखभाल करते रहे। आज डाक्टर ने कह दई कै 'अब आप आगरा जाय सको पर सलाह दई म्हा जॉय के आठ दस दिन और आराम करियौ काम मे मत लग जइयौ।

कमल डाक्टर अनीस के पास बैठ गयो और बाकी जने सामान पैक करकै चले गये।

का बात है कमल बडे सौच मे डूब रह्यौ ए ? डाक्टर अनीस ने पूछी।

'कछू नॉय बस ऐसे ई।'

'कछू तौ बात है। मैने तौय इतेक गभीर कबहू नाय देखो। बडो खोयो खोयो सौ लग रह्यौ ए। का मेरी बजह ते परेसान है।

'हा अनीस अबकै तो भगवान ने ई तेरी और भाभी की जान बचाईए।'

'वो सब तौ ठीक है पर अब का बात ए ? हम तो अब भले चगे है, अब कॉय कूँ रोमनी सूरत बनाय रखी हे ?'

अनीस मै ये सम्ब ध तौडबौ चाहू। जा लडकी ते सम्ब-ध-जौडबे ते ये मुसीबत आई है वाके घर मे 'पाम रखबै ते का हौयगो या बात ए सौच कै मेरो मन काप उठै। सौच रह्यौ ऊँ।

'प्रभा के बाप त कह दऊँ ये ब्याह नाय होयगो।'

'का बात कर रह्यौ ए ? बाबरौ है गयौ का ? अनीस अचम्भे मे परि कै बोलौ।

'मै साची कह रह्यौऊँ अनीस बे छोरी कुसोनी है। या के घर मे आयबे ते हमारो कबहू भलो नाय होयगो।'

'कमल ऐसी बात अच्छी नाय लगे। सौन सुगन कछू नॉय होय। सम्बन्ध ऐसी बातन पे नाय टूटे और फिर यामे प्रभा कौ का दौस।

'तू याए छोटी-छोटी बात कह रह्यौ ए। अरे तुम दोनो ऐ कछू हे जातो तौ हम कही कै नॉय रहते। अनीस तेरे बिना तो जि-दगी के बारे मे सौचऊँ नॉय सकूँ। तू कह रह्यौ ए प्रभा को का दोस अरे सबरो दौस तो प्रभा कोई है। हमारे ताई सुभ नॉय। सुभ होती तो ये दुघटना कॉइ कूँ होती ? तेरी भाभी को उ येई विचार है।

'कमल मोय तौ ऐसौ लगे कै तू और भाभी दोनो बाबरे है गये हो। भाभी स्त्री हे कै प्रभा कै सग ऐसौ व्यौहार कर रही ए। और तू पढो लिखो गमार चौ बन

रह्यौ ए। भइया ना कोऊ सोनी होय ना कुसौनी। अरे गमार गलती तो मेरी ही। वो रात मैने सराब पी रखी। गलती नगर पालिका वारेन की ही जिनने सडक के किनारे तीने फुट गहरौ गड्ढा खोद के छोड दियौ। गलती बा ट्रक बारे की ही जाने डिपर नॉय दियौ और वाकी हेडलाइट मे मौय वो गड्ढा दीखो नई और बताऊँ सबते ज्यादा और बडी गलती तेरी ही जो तैने सराब के नसा मे मोय गाडी चलान दई। हम सबकी गलतीन की सजा वू बिचारी पभा कूँ देवो चाह रह्यौ ए। कसूरवार हम है कमल, और सजा मिलै हमारे बच्चान कूँ यामे कौन सी तुक है ?

'हाँ कमल भैया ये ठीक कह रहे ए। सौचो तौ सही ये सम्बन्ध टूट गयौ तौ प्रभा और अनिरुद्ध पे का बीतेगी ? का म्हा दिखाइगे वे बिरादरी मे बिनने चौ जीते जी मारबौ चाहो। फिर यो चौ नॉय सौचो कै का पतौ प्रभा के भाग्य तेई हम आज जिन्दा है। इतेक बडे एक्सीडेन्ट के बाद बचबौ मामूली खेल नॉय। वाके भाग नेई हमे बचा लिये हैं भइया। या सम्बन्ध ए तौडो मत ये मेरी प्राथना है।

'भाभी मौय माफ कर देऔ मै साच-माच वावरौ है गयौ। मैने या तरियॉ नॉय सौचो। आज तुम दौनोन ने मौय एक गलत निर्णय लेने ते रौक दियौ।

—विनोद कुमारी "किरन"

कहानी —

आक्रोश

बालकनी म लगो विक मे न जैसेई बाहिर नजर गई वैसे ई नीलम चौक गई

'अरे यह तो कमल जैसौ लग रह्योए पर कमल यहा कैसे आय सके। बो तो एक साल पहले अमेरिका चलो गयौ ए। फिर भइया के मिलते-जुलते चेहरा देखबे कूँ जैसेई नजर सडक पै डारी कै मारे खुसी के उछर परी अरे ये तो कमलईए। जल्दी सौ नीचे की ओर दोरि परी और फिर जब दोनो भैन भइया बात करेबे लगे तो मानो नीलम को तो अन्तई नॉए आय रह्यो महीनान ते एक चिट्ठी नाए डारी काऊ खोज खबर नाए लई। भैन की याद नॉए आई का ?'

अब दीदी पत्र की जगह म खुद साक्षात आ ही गयौ ऊँ अब काए कूँ सिकायत कर रही ए ? 'और सुना कमल म्हा काई छोरी पसन्द कर लई ए का ?'

'अरी दीदी छोरी पसन्द कर लैतौ तौ वाए छोड कै कैसे आ जातौ ? सग लैके नाई आतौ।'

'अच्छौ तू बैठ। य मैगजीन पढ। मैं खानो बनाय कै लाय रईऊँ।'

'नॉए दीदी बैठ खानौ तौ मैने दोस्त के यहा खाय लियो। जीजा जी कब तक आईगे।

वे तो शाम कूँ पॉच बजे तक आवेगे तैने खानो दौस्त कै यहाँ क्यो खायौ ? नीलम ने भइया ते शिकायत भरे सुरन मे पूछी।'

भौत पीछे पड गयौ दीदी पुरानो दोस्तओ।

और फिर नीलम ओर कमल बात करते रहे घर की बात बचपन की शरारतन की बात अमेरिका को बात ओर भौत सारो बेसिर की बात फिर कमल बोलो 'अच्छा दीदी मे नैक दोस्तन ते मिल आऊँ।' अरे अब छोड कल चलौ जाईयौ तीन तो बजइ गयेए। तेरे जीजाजीऊ आते हुगे बैठ कै बात करिगे।'

'नाए दीदी कल तो फिर वापिस लोट आनौए दीदी बस आज कौ ही दिनए। कल तो चेतक एक्सप्रेस मे मेरी रिजर्वेशन ए।

'अरे इतेक जल्दी चौ कॉ डयूटी करनी ए ?'

'हा दीदी आठ दिन बाद डयूटी जोईन करनीए।' 'अच्छो रात कूँ टाइम पै आ जइयौ।' 'हा दीदी मै आठ बजे तक आ जाऊँगौ।

॥ 2 ॥

'नीलू अरी नीलू का हे रह्यौ ए ?' रजन ने स्कूटर रख कै नीलम कूँ आवाअ लगाई। 'अरे नीलू आज बोत जल्दी आय गये।

जल्दी अरे साढे पाच बज रएऐ। और आप कह रइए जल्दी आय गये आज भौत खुस होय रईजो का बातए ? और जब रसोई मे दावत को पूरो इन्तजाम देखो तो चौक परो 'कौन आय रह्योए नीलू आज ये कैसो तैयारी है रईए ?

'कमल आयोए अपने दोस्तन ते मिलबे गयो ए।'

'अच्छो साले साहब आयेए तबई इतेक रौनक है रईए।'

दोनो मिल कै तैयारी करिबे लगे नीलू ने झटपट तीन चार सब्जी बना लई पूरीन कौ आटौ लगा कै रख दियौ पुलाव के ताई चामर भिजौ दिये। पूरी तौ वाई बखत गरम उतार देगी। रसौई मे ते निकर कै जैसेई बाहिर निकर कै आई तौ रजन की व्यवस्था देखि कै दग रह गई।

'बडी प्यारी मेज सजाईए।'

'अरे भइया चौ ना सजामे हमारौ सारौ जौ आय रहयौए। सबरी दुनिया एक तरफ जौरू कौ भैया एक तरफ। सालार जग जिन्दाबाद।'

'पर वो आयो चौ नाए ?' 'आ जायगो थोडी भौत देर तौ हूँई जाए।'

और फिर नीलम जाने कितेक बेर कमरा मे ते बालकनी के चक्कर लगाय आई। बाट निहारते-निहारते दस बज गये तो रजन खीझ उठो 'लाओ खाना ले आओ अब भूखो नाँए मरयो जाए।'

'किचिन मे जाए कै खानो गरम करत बखत नीलम की आँख भर आई। अब तक चौ नाँए आयौ का बात है गई ?

बतन समेटत समय नीलम बोली एक काम करौ नैक जायकै देख आओ कहा रह गयौए ? 'वाके दोस्त के घर चले जाओ।'

'अरे अब का देखनौए तुम तो बेकार मे परेशान हे रई गे होयगौ का ? दोस्त के घरई खाय पी के कहू घूमिबे फिरबे चले गये हुगे।'

'फिरउ देखबे मे का बुराई है ?' बुराई कछू नाए पर मे जानूँ तुमारे पीहर वारे कैसे है कोऊ मिल गयौ होयगौ वाके सग सैर सपाटे पे निकर गयो होयगौ। वाए अपनी भैन ते मिलनौ। आय कै मिल गयौ। मोते वाऐ का नेनो देनोए ?

'ऐसी बात नाँए मोय तो डर लग रह्यौए कछू अनहोनी नाय है गई होय कल मेल ते तो वाए वापस जानाए' 'कछू अनहोनी नाँए भई तुम्हारी भैया तुमारो परवाह नाँए करे बाने सोच लई होयगी मिल तो लियोईउ अब यार दोस्तन मे घूम फिर लऊँ, जब वाने टाइम दिया तो वाए आनो चइयौऔ ओर ना आयो तो खबर करनी चईयेई। ऐसे लापरवाह आदमी मौय पस द नाए मै तो सोच रह्यौउ तुमऊ खाय पीय कै सोय जाओ।

'तुमे वाकी परवाह नाए पर मोय तो है मेरो तो बू मा जायो भइयाए।,

'तुमे परवाह है तो तुम देखबे जाओ सर्दी की रात के ग्यारह बज रएएँ ऐसे गैर जिम्मेदार आदमी के मारे दर-दर भटकबे को मोय नेकऊ सौक नाँए।'

गुस्सा और दुख के मारे नीलम काँपनी गइ तो का वाको इतेऊ हक नाँए क अपने पति सौ कछू काम करवा सके। गुस्सा मे भरी वो बालकनी मे पडी कुर्सी पे जाय क बैठ गई।

॥ 3 ॥

स्टेशन पे अच्छी खासी भीड मे नीलम चारो तरफ कमल क चेहराए ढूँढ रई याई गाडी ते तो वाए जानोए। आज रजन के दफ्तर की छुट्टीई रजन ते बिना बोले चाले गुस्सा मे भरी वो स्टेसन चली आई। वो सोचई रही कै कमल यहाँऊ नाँए आयौ का बातए ? तबई वाने देखो कै कमल अपने तीन चार दोस्तन के सग हँसतौ भयौ आय रह्यौए।

'कमल, कमल'

'अरे दीदी तुम तुम यहा कैसे आय गई ?' नीलम ने साफ देख लियौ के नीलमए देखते ही कमल कछू झेप सौ गयो।

'तू कल घर चो नॉए आयो ग्याहर बजे तक मै और तेरे जीजा जी इतजार करते रहे मोय तो डर लगबे लग गयौ कै कही कछू हे तो नॉय गयौ।'

'अरी दीदी तुम तो तेकार मे डर जाओ बात यो भई कै अनूप के घर गयौ तो तीन चार दोस्त ओर मिल गये और कहबे लगै 'कै चल यार आज तौ मिनर्वा मे डिनर लिगै भैन के हाथ कौ खानौ तौ जब चाहिगे मिल जायगो पर यार दौस्तन के सग मिनर्वा मे डिनर कबहु-कबहु मिल सकै। 'कमल ने झेपते हुए कही।

नीलम कमल की बातए सुन कै भौचक्की रह गई। ये वोई भइयाए जाके ताई रात भर परेशान हेरान रही रजन ते लडाई करी। गुस्सा के मारे वाकी सारी देह थर-थरावे लगी —

ठीक कह रह्याए कमल। मैई खून के रिस्तेन मे बँधी भूल गई कै तू पश्चिमी सभ्यता मे रग गयोए। तेरी नजर मे खून के रिस्ते की कछू कीमत नॉए रखे। ठीक है भइया तोय तरे यार दोस्त तेरी पश्चिमी सभ्यता मुबारक होय। मैं चली।

कमल दीदी-दीदी करतौ रह गयौ और नीलम तीर की तरिया स्टेशन के बाहिर निकर गई। घर आय कै देखी कै नाश्ता ज्यो की त्यो मेज पे धरौए और रजन कोउ किताब पढ रह्यौए दौरि कै नीलम रजन ते लिपट कै जौर-जौर ते रौयवे लगी।

'का भयौ नीलू का भयौ अरे रौय चौ रईए।'

और नीलम रोये जॉय रही। पति पे जो आक्रोश और क्रौधऔ बू मानौ वाके ऑसून मे घुल-घुल कै पिघलौ जाय रह्यौ!

—विनोद कुमारी (किरन)

कहानी —

लापरवाही

रात के बारह बजे जनाने अस्पताल के दरवज्जे पे एक तागौ रुकौ। ताँगें मे ते एक कराहती भई ज्वान छोरी ए सहारौ दे कै एक बूढी अम्मा ने नीचे उतारो। वाके पीछे एक ज्वान छोरा उतरौ। दरवज्जे के भीतर घुसते ई एक लम्बी गैलरीई। गेलरी के दूसरे छौर पे खैरे हाथ माऊँ डयूटी रूम औ। डयूटी नस दो तीन मेजनने मिला कै आराम ते सौरई ही। बूढी अम्मा ने नस कूँ जगाबे की कौसिस करी, औ बहना नेक मुनियो 'तीन चार बेर आवाज लगाईबे के पौछे नस की उनीदी सी आवाज आई—'कोनए भाई का बात ऐ ?'

बहना एक जच्चा दिखानी ए।'

'अच्छौ भीतर लै आऔ।'

बूढी अम्मा छोरीए लिवाय कै भीतर चली गई। नस कछु बडबडाती सी उठी और पूछबे लगी —

'कौन सो बच्चाए ?'

'पहल पोत को ए जी।'

'तबियत कबसौ खराब भई है ?'

'कल रात ते दद है रह्यौ ए।

'अच्छो, मेरे सग आऔ ।'

नस वाड के भीतर चली गई वहाँ डयूटी डाक्टर मिस अरोडा पहले तेई दूसरे बीमारएँ देख रई। नये मरीज कू देख के पास आई और बडी होसियारी ते जाच पडताल करके नस कूँ सबरी बात समझाय कै डयूटी रूम मे चली गई। जाते-जाते बूढी अम्मा की पीठ पे हाथ फेर के कह गई अम्माँ घबरइयौ मत सब ठीक है जायगो ।

डाक्टर के जाते ई नस बूढी अम्मा ते बोली–'जा अपने सग के आदमी ए बाजार भेज कै सूई मगवा ले अबई लगानी ऐ।

बूढी अम्मा बाहर चली गई और नस फिर अपने कमरे मे जाय कै सौ गई। जब बुढिया अपने बेटाए बाजार भेज कै आई तौ छोरी दद के मारे बिलबिला रई। वाके पास वारे पलग पे एक और लुगाई दद के मॉरे उल्टी सीधी हैरई। पूरे वाड मे घिघ्यामन मी मच रई। कोई कौ बच्चा रो रह्यौ तो कोई आप परेसान या सबै देख कै बूढी अम्मा नस कूँ बुला लाई नस आय तौ गई पर बीच कमरा मैं ठाडी है कै चिल्लाबे लगी, 'तुम लोगनने तो मेरो दिमाग खराब कर रखो ऐ। अब पाच-पाच मिनट मे का देखूँ ? हम मरीजए बेर-बेर मे नॉय देखे, बेर-बेर हाथ लगायवे ते इन्फेक्शन है जावे है। लम्बौ-चौडौ भाषण दे कै नस डयूटी रूम मे जाय के उपन्यास पढवे लग गई। थोडी देर बाद बूढी अम्मा की बेटा सूई लै कै आयौ —'बहना मैं ये सूई लै आयौ हू।'

'तुम कौन औ ?'

'वाड नम्बर चार मे खाट नम्बर दस पै जो मरीजए मे वाको घरवारोऊ।'

'फिर अब का चइये ?'

'ये सूई डाक्टर साहब ने मगाई ही अबई लगानीए।'

'अच्छी बात ए रख देओ, लगा दऊँगी।'

'बहना वाकी हालत अच्छी नाय बैसेई सूई लायवे मे भौत देर है गईए आप अबई लगाय देओ।'

'देर है गई, जा की जिम्मेदारी मेरी नॉय' नम ने बुरो सौ मौह बनायौ। 'का करूँ बहना सबरी दुकान बन्द है गई खुलवाय के लायबे मे देर है गई।'

‘अच्छो बाबा लगा दिगे अब तो मेरौ पीछौ छोड।

‘बहना मे मरीज कूँ देख कै बाकौ हाल जाननौ चाहू।’

‘या समे कोऊ पुरुष भीतर ना जाय सकै है जि नियम के खिलाफ बातऐ।

‘बहना तुमई देख कै बताय देओ मै तुम्हारौ आभारी रहूगौ।

‘जे मेरो काम नाय अब तुम बाहर जाऔ, सकारे आके मिल लीजो।’

ढोरा दुखी हे के बाहर चलौ गयौ। नस फिर उपन्यास पढबे लगी। नैक देर पीछे फिर एक बुढी अम्मा आई—‘बहना ’

‘ओह अब का भयौ’ नस चैक गई।

‘बहना हमारौ बच्चा दूध नाय पी रह्यौ।’

‘हे राम आज जाने कौन को मौह देख कै उठी के एक पल कूँ भी चैन नॉय मिलीए।

बाई बखत चपरासिन ने आय के कही—‘बहना डॉ अरोडा आपए बुला रही है।

नस अनमनी सी आई और बोली ‘नमस्ते डा साहब।’

‘नमस्ते का बात ए आज वाड मे भौत हल्ला मच रह्यौए।’

‘का करै डॉ साहब इन लोगन की तो हल्ला मचायबे की आदत परि गई ए।

‘देखौ तुम्हे ऐसे नई कहनौ चइये। जे दुखी अरू परेसान इसान ए। हम इनके दुख दद कूँ नाय समझिगे तो कौन समझेगौ ?’ डाक्टर ने कछु नाराज है कै कही। फिर नस कूँ सिगरी बात समझाई और अपने कमरा मे चली गई। डाक्टर के जाते ई नस बडबडायबे लगी।

‘ऊँह् बडी आई मोय समझावेवारी, कल की छोरी डाक्टर का बन गई अपने आपऐ भगवान समझव लगी। मेरो कोई का बिगाड सके मरीजन नैं मौते काम करवानोए तो मेरे हाथ तो जोडनेई परिगे।

'चपारसिन बाड नम्बर चार मे ते नई मरीज ऐ लेबर रूम मे लें चलो।' नस चीख के बोली।

चपरासिन ने मरीजे लाय के मेज पै सुवा दई। मेज के पासई बूढी अम्माँ अपनी बहूए हिम्मत बँधाय रही। बहू कराह्य के बोली, 'बहना जाँ दद ते कब पीछे छूटैगौ ?

'अरे दद तो होयगोई यौ चीख-चीख कै हमारे दिमाकऐ खाली मत करै।'

बूढी अम्मा बोली —'बहना ऐसी बात तोय नाँय करनी चइये, तुऊ तो एक औरत ए।'

'तुम बाहर जाऔ। यौ भीड लगायबे की जरूरत नाय।'

'ना मैं बाहर नाय जाऊँगी।' बूढी अम्माउ अब गुस्सा आय गयौ।'

'ठीकए-ठीकए सुई लगा दई ए बच्चा सकारे ते पहले ना है सकै।' नस अपने कमरा मे चली गई। बूढी अम्माँ अपनी बहूऐ ढाढस बँधानी रई। कोउ एक घन्टा योई निकर गयौ कै अचानचक्क बहू तडफडायवे लगी, 'अम्मा अब सहन नाँय हौय नर्स ऐ बुलाय लाऔ।' लाऊँ बेटी अभाल बुलाय कै लाऊँ तू घबरइवो मत।'

बूढी अम्माँ चली गई। चीख सुन कै बहू के पास चपरासिन आय के खडी है गई। वाने देखी बच्चा को जन्म है गयौ और जच्चा बेहोश है गई है। वो भाग के नस के कमरा माऊँ गई। बूढी अम्मी नस ते कह रई—बहना एक बेर चल के देख लै मौय लगे बच्चा हैवे वारोए। कहू कोउ ऊँच नीच ना है जाय।'

'अरे जा जा बच्चा हैवे मे कोउना मरे पहल पौत कौ बच्चाए। जा मारे नखरे दिखा रईऐ। बच्चा सकारे ते पहले ना है सके।'

तबई चपरासिन बोली —'बच्चा तो है गयो, पर बू रो नाय रह्यौ और जच्चा बेहोस है गई ऐ।

'का' बूढी अम्माँ और नस दोनो लेबर रूम की माँऊ भाग छूटी। लेबर रूम मे आय के देखौ के बच्चा तौ साँचई मर चुकोऐ और जच्चा बेहौस है गईए।

नर्स घबराय के बोली 'डाक्टर बुलाओ' नेक देर मे डाक्टर आय गई बच्चाऐ देखते ई चिल्लाय कँ बोली —नर्स देख लियौ अपनी लापरवाही कौ नतीजौ, ये बच्चा तुम्हारी लापरवाही ने मार दियौ ऐ।'

'पर डाक्टर' नर्स कुछ कहती वाते पहले ई डाक्टर बोली —

अब कछु कहिबे को जरूरत नाँय बाहर निकर जा। मै तुम्हारी सिकायत करूँगी और तुमे अपनी लापरवाही कौ फल भौगनौं परैगो। नर्स कमराते बाहर चली गइ। डॉ बहू कौ इलाज करबे लगी। बूढी अम्माँ मरे वच्चाए छाती ते लिपटायके बोराइ सी ठाडी की ठाडी रह गइ।

कहानी —

असली मइया

राधा खाट पे लेट गई एकदम छत के माऊँ देख रई। आज बाकौ मन भौतु उदासऔ। जाने कैसे-कैसे रयाल आय-आय कै तग कर रऐ। बहू जमना खेत पे रोटी ले कै चलो गई। जाते बख्त राधा ते एकऊँ आखर नॉय बोली। तो तीन दिना ते सास-बहू मे अबोलो चल रह्यौ। यौं तो जब वो खेत पै जाऔ करैई तो राधा ते घर द्वार की निगरानी करबे की कह कै जाओ करैई पर आज बाने कछु नॉय कही। लडाई वारे दिना ते बेटा जग्गू के ब्यौहार मेऊँ फरक आय गयौए। राधा ए लगयौ कै जा छत के नीचे बू लैटी भईए वाकी नीव ज्यादा गहरी नॉए। हल्के से झटकाते कोई बखतउ गिर सके है। और फिर वो कहा जाएगी दब कै रह जाएगी ईट चूने और माटी के नीचे।

या विचार कै आतेई राधा कॉप उठी। नॉय ऐसौ कबहू नाए होन देगी। अबई वाकी उमरई का है। कहबे कू चार बेटान की मइयाए एक कौ ब्याहउ कर दियोए सासउ बन गई ए पर कैसी मइया और कैसी सास अपनी सौत के बच्चा वाने अपने कोख जाए समझ कै पारे पनासे विनकी नीद सोई बिनकी नीद जगी पर फायदा का भयौ बेई ढाक कै तीन पात' राधा फफक-फफक के रोयबे लग गई वाके अपने कोख जाए बेटा होते तौ का ऐसौ करते पर अच्छो भयौ जो इनकी कलई जल्दीई खुल गई नई तौ वो तो झूँठे भरम मे भरमाई रहती। तीस बरस की उमरऊँ कोउ उमरए वाके पति देवी दयाल जी मानी के 40 बरस कै ऐ पर जाकौ मतलब ये नॉए कै विनकैं सन्तान नॉय है सके। राधा ने अपने आँसू पौछ लिये और सोच लियो कै वोउ अपने बच्चाए जन्म देगी। आज वाए अपने पति पै भौत गुस्सा आय रह्यौ जो हमेसा वाकी माँ बनबे की इच्छाए दबातौ चलौ आए रह्यौ पर वाते ज्यादा गुस्सा खुद पे आय रह्यौ वाने खुदनेई तो अपने पामन पै कुल्हाडी मार लई। वाईने तो अपनी बहन के मरबे

के पीछे वाके छोटे-छोटे बच्चान पै तरस खाय कै अपनी उमर ते दस बरस बडे आदमी तै ब्याह रचाय लियौ जा दिना वा आदमी के पल्ले ने गाठ जोरी कै वाके घर मे आय गई वा दिना कोउ नॉए जानतो के यं मोह ऐसौ मॅहगो परैगो जिन बच्चान कै पीछे वो अपनी सबरी इच्छाननै दबाय के बैठीए वेई वाकी कुत्ता की सी कदर कर दिगे पर अबहू कछू देर नॉय भई सुबह कौ भूलौ शाम कू घर आए जाए तौ भूलौ ना कहावै बू बखत ए पहचान गईए। अब बू अपनी कौख ते अपने बच्चाए ज म देगी। या निस्चय कै करते ई राधा कौ मन शा त है गयौ और बू उठकै घर कै काम काज मे लग गई।

डॉ सक्सेना अपने कमरा मे बैठे एक मरीजए देख रहे कै देवीदयालजी कमरा मे आय गये —

'नमस्ते डाक्टर साहब'

नमस्ते सरपच जी अबकै तो भौत दिनान मे दरसन दिये। कहो सब ठीक तो है ?'

'ठीक है साहब आपकी दया है मैं तो एक तकलीफ देबे आयो हू।'

'वाह साहब तकलीफ काए की जो कहनौए आराम त कहो।'

'डाक्टर साहब मेरे सामने भौतु बडी समस्या आए गईए। मेरे चार लडका ऐ और मैंने नसबन्दी को आपरेशन करवा रखोए। भगवान की कृपा ते सब ठीक ठाक चल रह्यौ पर अब इतैक दिना पीछे मेरी दूसरी पत्नी के मन मे फितूर चढ गयौ ए कै वाकौउ अपना बच्चा हौनो चइये। समझ मे नाय आय रह्यौ का करू ?

'पर राधा बहन तो विवेकशील बडी अच्छी महिलाए का बात भई' 'का बताऊँ डॉ साहब मेरे बडे बेटा जग्गू की बहू ते राधा की नॉए बनै।

वाइने कछू ऐसी बात कह दईए जो राधा के दिल पै लग गई ए और वो हठ ठान कै बैठ गई ए। आपई बताओ अब ऐसो कैसे सम्भवए। मैने तो आपरेशन करवा रखौए।

नॉए सरपच जी ऐसी बात नॉय दरअसल आप लोगननै परिवार नियोजन कौ गलत मतलब लगा रखोए। परिबार नियोजन कौ ये मतलब नॉए कै पुरुष पुरुषता खोय देबे है। परिवार नियोजन को अथ है अपने परिवारए नियन्त्रित रखबो यदि

आप चाहो कि आपके दुबारा सन्तान होय तो हम आपको दुबारा आपरेशन कर दिगे यामे कछू परेशानी नाए है पर मै सौच रह्यौऊँ चार बच्चान के होते भए और बच्चा पैदा करबो यह ठीक नाँहै।

'या बातए तो मेउ जानूँ साहब तिरिया हठ आगै कौन की चली ए।' तौ ठीकए एक काम करो कल आपके गाम मैं परिवार नियोजन कौ कम्प लग रह्यौए मैं टीम के सग आऊँगौ मैं राधा बहनऊ समझाइबे की कोशिश करूँगौ फिरउ बात नाँए बनेगी तो आपकौ दुबारा आपरेशन कर दिगे।

'हाँ डॉक्टर साहब ऐसौ है सकै कै नाए ? आप तौ जानौई ओ कै सरपचजी ने आपरेशन करबा रखोए।'

'हाँ मोए पतौए। मैं दुबारा आपरेशन कर दऊँगौ। आपके गाम छज्जू पटेल ने जब नसबन्दी करवाई तो वाकै दो छौराए दो साल पहले दोनो छोरा एक दुघटना मे मर गये। मैने वाकौ दुबारा आपरेशन कियौ और वाके एक छोरा पिछले साल भयौए।'

इतेक देर मे छज्जू पटेल आयकै डाक्टर साहब के पामन मे परि गयौ।

'भले आये डाक्टर भैया तुम तो हमारे भगवान हो। और तुमरे कारण फिर बेटा को म्हौ देख लियौ हम तुम्हारौ ई अहसान पूरी जिन्दगी नाए उतार सकै।

अरे भई मेरो कछु अहसान नाए सब भगवान की किरपा है। उठो मेरे पास बैठो।

'डाक्टर साहब मेरे ऊपरऊ या अहसानए कर देओ मैऊँ अपने बेटा को म्हौ देखबे कूँ तरस रईऊँ।' राधा ने कही।

वो तो ठीक है राधा बहन पर पहले मैरी बात तौ सुन लेओ।'

'का बातए डाक्टर भइया का वा आपरेशन मे कोउ खतराए ? राधा ने विकल है कै पूछी।'

'नाँए बहन खतरा कछू नाए पर मैं ये पूछ रह्यौए कै आपरेशन के बाद बेटाई पैदा होयगो या की का गारन्टीए और फिर तुम ये चाहोगी कै बेटा के इतजार मे तीन चार बेटी जन्म लेती रहे।'

औह ! राधा ने एक गहरी सास लई ।

•

तस्बीर को ई पहलू तो वाने देखौई नाहौ ये बात तो दिमाग मेई नाँए आई ।

'अरे फिर आज सरपच जी 40 बरस केए पाँच दस साल पीछे बुढापो आयेगो ऐसी हालत मे बेटीन को बोझ कैसे सम्हारोगे कैते ब्याह सादी करोगी ?

'पर येउ तो है सके के बेटा है जाए तब कोऊ समस्या नाँए होयगी । राधा ने कही—

तुम भौत भौली ओ राधा बहन समस्या तो तबहू आमिगी पहली समस्या जमीन की होयगी 20 बीघा जमीन पाच बेटान मे बँटेगौ तो एक के हिस्सा चार बीघा आयेगी और दूसरो समस्याये कै लडाई झगडे तो फिरऊ हम अपने बेटा कौन सौ बढौ काम कर दे कपूतऊ तौ निकर सकै । ये तो मन समझौते की बातए फिर जा देस मे दो यॉ तीन बच्चान को नारो लगायौ जा रह्यौए वामे तुम चार बेटान के होते भऐ पाँचवे की इच्छा कर रईओ । राधा बहन केवल जन्मई तो नॉय दियौ बाकी पारे पनासे तो तुमने ईऐ । केवल जन्म देवे तो कौई मा नाँए बने वायै पनासवे बारी जन्म देवे वारी मा ते ज्यादा हूऔ करै है । देवकी ने जन्म दियौ भगवान कृष्ण कूँ पर मइया कौ लाड दुलार दियौ यशोदा ने फिर बहन जहाँ चार बरतन होय तो खडकैंईए ।

डाक्टर साहब कछु ओर कहते या के पहलेई पास मे बैठौ जग्गू जो इतेक देर ते चुपचाप सून रह्यो राधा के पामन पे गिर परयौ ।

मौसी हमे माफ कर दै हमारी मइया तूई ए । जब तक मोय माफ नई करौगी मै इन चरननै नई छौडूगौ ।

'देखी राधा बहन याए माफ कर देऔ कहा सुनी सबमे होय । पीछे सब ठीक है जाय । तुम इन सबकी असली मइया हौ ।' 'राधा ने काँपते हातन तै जग्गूए उठाय कै छाती ते लगाय लियौ ।

'अच्छो राधा बहन मै चलू यदि चाहो तो सरपच जी ए कल कैम्प मे भेज दीजौ ।'

'अब बाकी जरूरत नाए डा साहब और राधा मुस्कराबे लगी ।

—विनोद कुमारी "किरन"

कहानी —

भरम कौ परदा

'भाभी ओ भाभी'

'का ए ?'

'नैक इतकूँ आइयों।'

'लै मै आय गई, अब बोल का बात ए ?

बाई बखत चपरासिन ने आय के कही —'बहना डॉ अरोडा आपए बुला रही हैं।

'पैले मोय वचन देओ मेरी बात मनोगी' रजनी ने अपनी भाभी सुधा के गरे मे गलबहिया डार कै बडे लाढ सौं कही।

'बोल तो सही का बात ए ?'

'नई भाभी पैल वचन देओ।'

'अच्छो बाबा अब तो बोल मैंने बचन दियौ, तू जो कहेगी वोई करूँगी।।'

'मेरी प्यारी भाभी आज मोय अपनी सहेलीन की दावत करनी ए, कैन्टीन मे समोसा खवाने ऐ बीस रुपइया दे देऔ।'

'बीस रुपइया मेरे पास तो बीस पइसाउ नॉए, मोय छोड, भौत काम करने

सुधा रसोई की ओर मुडीकै रजनी कहबे लगी–

'ठीक ए भाभी तुमारे भरोसे सहेलीन ते सत लगा बैठी, मौय का पतौ कै तुम मेरे सग ऐसी चौट करौगी ।'

सुधा जल्दी-जल्दी तेरजनी के ताई चाय बनाबे लगी । तबई कॉलेज बस आय गई, सुधा ने जल्दी ते बीस रुपइया निकार के रजनी के हाथ पे धर दिये और खुद घर के काम काज मे लग गई ।

बाके हाथ जितेक तेजी ते चल रहे वाते ज्यादा तेजी से दिमाक सोच रह्यौ । ये रजनी और वाको छोटो देवर अनूप कितेक प्यारे-प्यारे अपनी भाभी पे जान छिडकबे वारे । इनकी मइया तो कबहू की मर गई । सुधा ब्याह कै आई तबई इन्हे मइया को प्यार मिलो । अब दोनो कितेक खुस रहबे लगे हे ।

बेटी सुधा बाहर दो कप चाय और नाश्ता भिजवा दे,सक्सेना साहब आऐ है ।

काम के बीच मे सुधा ऐ होस नाऐ रह्यौ कै वाके ससुर जी कमरा मे आय गऐ ।

'जी पिता जी अबई भेज रई ऊँ ।'

सुधा तेजी ते रसोई मे घुस गई । चाय को पानी गैस पे चढाय कै जैसे ई चीनी को डिब्बा खोलो तो खाली डिब्बा बाको म्हौ चिडाय बे लगौ । हे भगवान अब का करे तबई ध्यान आयो के अनूप अवई घर मे ई ए, कॉलेज नॉए गयौ ।

दौरि कै अनूप के कमरा मे चली गई–'अनूप भैया मेरौ एक काम कर देओ ।'

'का काम ए ।'

भैया घर मे मेहमान बैठे ए ओर चीनी को एक दानोऊँ नॉए, दौरिकै चौराहे की दुकान पे ते एक किलो चीनी ला दे ।'

'हॉ ला तो दऊँगो पर अपनी मेहनतानो लऊँगौ, मोय पिक्चर के ताँई दस रुपइया चइये ।'

'अच्छौ अच्छौ दे दऊँगी, अबई तो जा ।'

'अरे मेरी प्यारी-प्यारी भाभी और अनूप सुधाए गोदी मे भर कै कमरा में नाचिवे लगो ।'

'अरे सैतान उतार माथ मे गिर जाऊँगी छोट मेरी हड्डी पसली तौरैगौ का ?'

अनूप ने धीरे त सुधा उतार कै जमीन मे खडी कर दई और खुद बाजार माऊँ दौरि गयौ।

'सुधा सोचबे लगी बीस रुपइया रजनी ल गई, दस गये अनूप के चक्कर मे कैसे या घर को खच चलै। का कर ? सुधा इन दोनोन ते मना भी तो नाए कर सके। ये दोनो तो वाए अपनी जानते ज्यादा प्यारे ए। इनकी छोटी-छोटी इच्छान ने पूरी करिबे के ताहि तो तू पागल जसो है जाए। एक तरफ बाकी प्यार ते भरो भयौ हृदयऔ और दूसरी ओर सुरसा की तरिया म्हा फलाए हुए मँहगाई। पति एक बैक मे क्लक ए तनरवाह ग्यारह सो रुपइया और 500 रुपइया पिताजी की पेसन सौलह सौ रुपइया मे पॉच आदमीन की गड्डी खींचबो बडे जीवट को काम है। वैसे तौ सब खर्चा सुधा करती पर हिसाब की जाच पडताल पिताजी जरूर करते। नैकऊ कही फिजूल खर्ची नजर आती कै खिचाई सुरू है जाती - कबहू कौऊ चीज लाते तौ दस दुकानन पे देख-भार के पूँछ-ताछ कै लाते। कबहु कौऊ सौक नॉए कियो यहाँ तक कै पानऊ कबहू ब्याह सादीन म खाते। सिग्रेट के तो दूर तेइ दसन किये और सिनेमा हाल मे तो कबहू पामई नाए रखौ। याही कारण ते सुधा अपने पति मुकेश के सग कभी कभार ही सिनेमा देखिबे जा पाती। वो भी चोरी छिपे। एक तो मँहगाई मनोरजन की इजाजत नॉए देती दूसरे पिताजी ते पूछिवे की हिम्मत ना तौं बेटा मे ई ना बहू मे।

सुधा जल्दी-जल्दी हाथ चला रई पाच बज गये मुकेश आबे वारौ हैं। वाके ताँहि चाय पकौडी तैयार कर रई। साईकिल की आवाज ते वाने जान लई के मुकेश आय गयौ है। चाय पकौडी वाने बठक मे ई भेज दई। खुद बाकी बचे काम कूँ पूरौ करिबे मे लग गई। वो अबई रसौई मे ई हती के मुकेश भारी कदमन ते अन्दर आयौ। वाए उदास और निढाल देखि कै सोचवे लगी आज जरूर कोई खास बात ए जबई तो इनेक चेहरा उदास एँ नई तौ इतेक उदासी क्यो है मुकेश ते उदासी को कारण पूछती वाते पैलैई मुकेश ने वाके हातमे दो पत्र रख दिये। दौनोई बडी ननदन के घर ते आये भये। एक के घर मे पुत्र जन्म भयौ वाके कुआ पूजबे की सूचनाई तो दूसरी के यहाँ बेटी को ब्याहऔ। अब सुधा की पलक झपकतेई मुकेश की उदासी को कारन समझ मे आय गयौ। तीन हजार को खरचाऊ। चार महीना की मोहलतई। सुधा की आँखिन के आगे अँधेरौ छाय गयौ। यहाँ तो दाल रोटीन को पूरौ नाए परि रह्यौ ऊपर ते ई खरचा और आय गयौ।

सुधा का ऐसौ नॉए है सके कै ये खर्चा कछु कम है जाय ? मुकेश ने भौतई दुखी है कैं पूछी।

ऐसे कैसे है सके ? पिताजी भोतई रूढीवादी हे। और फिर जरूरी काम तो करनेई परिंगे। ज्यादा नई तो कछू तो करनौई परेगौ।

पर ये सब होयगो कैसे ? सुधा मेरो मन थक गयो है, मै टूट गयौ उँ। इन समाज के रीति रिवाजन नैं ई हमे गरीब बना दिये हैं। ब्याह ज म मरण कोई ऐसौ वखत नॉए जब पइसा पानी की तरिया नॉए बहायौ जाए और वोऊ झूँठी खोखली सामाजिक शान के तॉई पिछले बरस दीदी के मकान के मुहूत पे जो कर्जा लियौ वौई नॉए चुकौ और अब फिर नये दो कर्जा लेवे की तैयारी है गई। 'मुकेश अपने माथे पकर कै बैठ गयौ।'

'चलौ जान देऔ कछू न कछू तौ उपाय निकरि जावगो। मैं चाय लै कै आय रईऊँ।'

चाय लै कै सुधा जब आई तो मुकेश ने बतायौ के ये पत्र चार दिना पैलेई आय गये। मैं तवई तै भौत परेसानऊँ। पिताजी कह रए ऐ कै विनके पास प द्रह हजार रुपइया रजनी के ब्याह के तॉई रखे है विनते वे हातऊँ नाए लगान दिगे। ये बात बिनकी सही है आखिर रजनी के हातऊँ पीरे करने हे। समझ नॉए ऑए रई कै कैसे बेडा पार लगेगौ।

सुधा खुदऊँ याइ समस्या को समाधान निकारिबे मे लगी भई भौत सोच समझ कै बोली–

'मेरी एक सहेलीए वाने अपनौ ब्यूटी पार्लर खौल रखौए मै सोच रइऊँ वा-के पास जाकै मैऊँ कोस कर लऊँ और चौना ब्यूटी पालर खोल लऊँ।

'का पागल हे गई मेरे हौते भए तू काम करैगी दुनिया का कहेगी ? '

पागल हूई तौ नाहू पर है जाऊँगी। जरा ठँडे दिमाग ते सोचौ पइसा पास मे नॉए रोज नए नए खरचा लगे रहे। कैसें पूरो परेगौ। कज लैकै और वा कज के नीचे तुम अकेले दबनो चाहौ। वौ का मै तुमारी कछू नॉऊँ मैंउ तौ तुमारी पत्नी ऊँ। का मैं सिफ नाम की अर्द्धांगिनी उँ। मै कोउ तमासगीर तौ नाउँ जो बैठी बैठी तुमारी हालत ए देखती रहू ओर तुम कज कै पहाड के नीचे पिसते रहौ।' कहते-कहते सुधा की ऑखिन मे आँसू छलक आए।

'अच्छौ-अच्छौ जैसी तेरी मर्जी पर रोए मत तेरे आसू नॉए देख सकूँ। पिताजी ए तैयार करिबे की जिम्मेदारी मेरी नॉए। तूई विनने तैयार करियौ।'

'हाँ ये मेरी जिम्मेदारी है पिताजीए मै तैयार करूँगी या मँहगाई ते बचिवे को और कोई उपाय नॉए, सिवाय याके के हम अपनी आमदनी बढामे और झूँठी शान या दिखावे के ताँई होड छोडै । सामाजिक रीति-रिवाज को विरोध कर । बस जितेक जरूरत ऐ वितेकई खरचा करै ।

'ठीक है जैसौ तू ठीक समझै ।'

पिता जी सुधा की बातए सुनकै इस परि भौतु हल्ला मचायौ पर जब सुधा ने दो तीन दिना तक धीरज धर कै सब बात समझाई तो विननेऊँ हथियार डार दिये ।

चार महीना बीत गये । अब सुधा ब्यूटी पालर पै जाइबे लग गई । वाकी सहेली ने दिल खोल के स्वागत कियौ और निस्वाथ भाव सौ हरसम्भव सहायता करी । घर की स्थिति मे सुधार आइबे लग गयौ ।

मुकेश ते वाने कह दई कि अबई तौ वे कर्जा ले लै । पीछे मिल कै उतार दिगे और ये विनकी जिन्दगी कौ अन्तिम कज होयगौ बाद मे जरूरत नॉए परैगी । अब वे झूँठी शान मे दिखाबे के ताँई कुछ नॉए करिंगे । एक शाम जब वो पालर ते लौटी तो घर मे पाम रखतेई कोई के जोर-जोर ते बोलबे की आवाज आई 'अरे ये तो मेरे पापा की आवाज ए पर बे इतने गुस्सा क्यो कर रहे है वाको मन काउ आशका ते कॉप उठौ । तबई वाने सुनी पापा कह रहे —मेरी फूल सी बेटी बाहर जाकै काम करै ये मैं सहन नॉए कर सकूँ । तुमने अपने बेटा को ब्याह याई मारे कियौ के बहू की कमाई —

वो अपनी बात पूरी कर पाते याते पैलैई सुधा बोल पडी —बस पापा बस अब एक लब्जाए म्हौ मे ते मत निकारियो ब्याह ते पैले मे आपकी बेटीई फूल सी बैठी पर ब्याह के बाद मै या घर की बहुऊ घर के हर सुख-दुख की हिस्सेदार । ये काम मैने खुद अपनी मर्जी ते कियाए अपने परिवारए सुखी सम्पन्न बनावे के ताँई 'पर बेटी तोय पतोए दुनिया का कह रईए ?'

'कहन देऔ पापा मै दुनियाँ ते नॉए डरपूँ अच्छौए तुमउ मत डरपौ कौई की परवाह मत करौ ।'

'पर बेटी समाज मे रहनौए तौ समाज के अनुसार तो चलनौई परैगौ ।'

समाज-समाज समाज आप चौं ना समझ रए पापा ये समाज हमारोई बनायौ भयौ है अपने अन्दर की बुराईन ते दूर करिबे की हिम्मत हममे नई होयगी तो कौन मे

होयगी ? पापा ये झूँठी शान ए। कोरो आडम्बरए गृहस्थो को बौझा पति-पत्नी दौनौने मिलके ठानो चइये। का तुम ये चाहौ के तुमारो जमाई ज्वानीमेई बुढापे कौ सिकार है जाए। मँहगाई के बोझ के निचै दब जाएँ। विनकी शक्ति और साहस तिल तिल करके मिटतो रहे या फिर वे बेईमानी के रास्ता पै चल परैं और मैं चुप-चाप सब देखती रहू सिफ या लिए कि दुनिया का कहेगी। नई पापा मै ऐसौ कबहू नाँए हौन दऊँगी। कबहू नाँए हौन दऊँगी।

सुधा कछू और कहती याते पैलैई दीनदयाल जी बोल परे—बस बेटी आज नजर पै ते भरम को परदा उठ गयौए मोय माफ कर दै बैटी मेने तेरौ और तेरे ससुरजी को दिल दुखायौ। हवा का एक हल्को सौ झोका आयो ओर घर मे प्रसन्नता बिखेर गयौ।

कहानी —

कमेरौ पूत

रात के ग्यारह बजे कौ बखत औ। लच्छमी खिरकी के सहारे खडी अरू अपने पति मुकन्द की बाट जोह रही। बू भूमरेई पैली बस ते आँगरा गयौ लच्छमी ते कह गयौ कै सझा कूँ आखिरी बस त लौट आऊँगौ तू बेफिकर रहियौ। पर लच्छमी ए चैन ना पर रई। जब ते बिनकी बिटिया रजनी की सगाई आगरा के एक डाक्टर छौरा ते भई तबई ते वे दोनो भौत परेशान है गये। सगाई ते पैलै तो बेटा वारे ने कछू नाँय कही बडे भोरेभडारी बन गये। कहबे लगै —

हमे कछू नाँय चइये हमे तो सवगुण सम्प न बहू की जरूरत ए दहेज की नाँय।

सुनतेई लच्छमी और मुकन्द बडे खुस भये। दोनो नौ-नौ हाथ उछरबे लगे। अपनी बिटिया के भाग पै सिहाबे लगे।

बडे पुन्न करे है पिछले जनम मे जो ऐसे देवता जैसे सास-सुसर मिले नई तो आजकल के जमाने मे तौ बेटावारेन कौ म्हौ सुरसा के म्हौ की तरियाँ फटतौई जाँय फटतौई जाँय ब दई नाँय हौय।

अबई वे दौनो सगाई की मन खौल कै खुसी नाँय मना पाये कै मुसीबतन की पिटारी खुल गई। आये दिन बेटावारे के यहाँ ते बुलाबे आवे लगे। कबऊँ बेटावारे ब्याह की सलाह सूत करते आमते तो कबऊँ मुकन्दए बुलवा लेते। कबऊ छौरा की भौजाई भैन बहूए देखबे आमती तो कबऊ छौरा का मामा छौरा के कपडा लत्तानन पसन्द करबे आ धमकतौ। जब कौई आमतौ तौ सो को पत्ता खर्चा है जातो पर दौनो मर्द बैय्यर सबर कर लैते आखिर है कितेक दिना की बात ब्याह करे पीछै तौ कछू बात

है नॉय।" वैसेऊ कहतेऊ का विचारे बेटावारे ने तौ कछू माँगऊ नॉय रखी। आवौ जानौ तौ लगौई रहे। याते का डरबौ। आजऊँ मुकन्द याई सिलसिले मे गयौ। लच्छमी ऐसैई सौच विचार कर रई कै रिक्सा की घण्टी बजी। लपक कै वाने दरवज्जौ खोल दियौ और मुकन्द के हात मे ते बैग ले लियो -

"चाय पीओगे कै ब्यारू लै आऊँ।'

'चाय पिवा दे लच्छमी भूख नॉय लग रई।

'का भयौ म्हौडो चौ उतर रह्यौ ए, पर नेक डटो मै पैन्ने चाय लै आऊँ पीछे बतरामिगे।'

'लच्छमी चाय कौ कप मुकन्द कूँ दै कै बोली -

'अब बताऔ का बात भई? समधी ने काइ कूँ बुलौआ भेजो?

का बताऊँ लच्छमी हम तौ बुरे फँसे। साप छछून्दर की सी गत है गईए। नॉय तौ उगलते बनि रई और ना निगलते।

'पर भयौ का? पूरी बात खोल कै तो बताऔ।

'लच्छी बेटावारे ने दहेज के सामान की लम्बी चौडी लिस्ट पकडा दइए।

पर वू तो कह रहे हमे कछू नॉय चइये अब लिस्ट कौ कहा काम?

येई तो बात ए लच्छमी वे हमारी कमजोरी का फायदा उठा रहे एँ। वेया बातए जाने कै हम सगाई नॉय तोड सकै। बिननै सीधी सट्ट कह दईए फ्रिज, टी वी वी सी आर, स्कूटर तो चइये ई चइये। टीके मेऊ 25 हजार मागे है।

पर तुमने कही चौ नाय कै हम इतेक दान दहेज कहाँ ते लामिगे। ऐसी नाक फटी पर रई तो पैल काय कूँ सुट्ट खैंचि गये। जब ई कहु दैते। हमारे हिय मे समाती तो सगाई करते नॉय तो जै राम जी को।'

सब कह दई पर समधी तो अडियल टटू की तरियाँ अडौ रह्यौ और पतौ ए एक धमकी और दे दई क जौ जे बात मेरे बेटा ए पतौ परि गई तो अपनी बेटीए सोने मे पीरी करि कै लाऔगे तोऊ भॉवर नॉय डारिगो मे सगाई तोरि दऊँगौ। मेरौ तौ कछू नॉय बिगरैगौ तुम्हारी छोरी कौ का होयगो यो वातए तुम सोच लीजौ।

'बडौ घाघ निकरौ अब का करिगे ?'

येई सोच तो मोय खाय जा रह्यौए। कसे पीरे हाथ हुगे, कैसे बेटीए विदा करिंगे। कैसैं इतेक दान दहेज जुरैगौ ?

अरे भार मे जान देओ नॉय मानै तो सगाई तोर देओ।'

'का अल्ल बल्ल बक रई ए ? बाबरी हे गई का ? सगाई तोरि कै बेटी जनम भर क्वारी रखनी ए और फिर या बात की का गारन्टी कै दूसरे मान्स दहेज नॉय मागिगे।'

कहबे कूँ लच्छमी रोस के मारै कह गई कै सगाई तोर देओ पर बू वा बातए जानती कै ऐसौ नॉय हे सके। सगाइ टूट तेइ पूरी बिरादरी मै नाक कट जायगी और जितेक म्हा बितेकइ बात बनिगी कौन-कौन कै म्हौडाए पकरिंगे। अनमनी सी लच्छमी उठी। मुकन्द कूँ ब्यालू करवाइ और अपनी खाट मे जाय कै परि गई —

'अब सौ जाऔ सकारे सोचिगे का करनौए।'

दिन भर कौ थकौ मादो मुकन्द सो गयो पर लच्छमा की आख ते आख नॉय लगी। हे बसीवारे, बिहारी जी महाराज अब तुमइ लाज रक्खो। प्रभू, काइ तरियाँ या बेलए भडारै चढा देऔ। कन्हैया, चढी छानए मत उतरन दीजौ गोवरधन धारी मेरी पत रखियौ।

भौतु सलाह-सूत कर कै ये सोची कै मकानए गिरवी रख दै और जेवर जाँटौ बेच दै बेटी नाम के कूरेए सोने की बुहारी ते झाड कै चॉदी के सूत्र मे घर के बाहर कर दै। रह जाइगे छोरो इनकौउ कछू तौ हैई जायगौ। ब्याह कौ महूरत निकर गयौ लगनतेई सबरे नाते रिश्तेदार इकठौरे है गयें। दुलहन के हरदी चढ गई। रात-रात भर छोरी-छापरी बन्नौ गाबे लगी नेग टेवला हैबे लगे। कबहु घरो पूज रह्यौए तो कबहू आँधो मेह मूँदे जाये रहे ए। कबहू भुँन-भूआ मरवट लगामती तो कबहू भौजाई काजर लगामती। ऐसैई करते-करते बरात दरवज्जे पै आय गई। दूल्हे की आरती उतारती लच्छमी फूली नॉय समाँ रई। दूल्हे बनो रजत बडौ मलूक लग रह्यौ मानौ साँच माँच राजकुमार आयौ, होय। मर्द बइय्यर सब एऊई बात कह रहे —

भाई वाह आनन्द आय गयौ दूल्हे तौ साच्छात राजा रामए। रग बरस रह्यौए भाई जोडी खूब सज रईए।

इन सब बातनन सुनि सुनि कै पति पत्नी कौ दुःख हल्को पडिबे लग गयौ। वरमाला के वाद एक-एक कर कै सब नेग पूरे हेवे लगे। गौन्नी पुजी, पलकाचार भयौ अब आई विदा की बेला। भीतर भाभी, चाची, मौसी मिलजुल कै रजनीए तैयार कर रई कोऊ चोटी गूँथ रही तो कोऊ बीछियान नै दबाय रई कोऊ समझाय रई—

देख लाली या बटुआ मे रुपइया धरि दियेएँ। अँगूठा छुवाई के सास कूँ एक सौ एक दे दीजो और हा सास ए पामन ते हात मत लगान दीजौ, देवर गौदी मे बैठेगो वाकूँ इक्यावन रुपइया देने ए और हाँ मै तो भूलई गई सबते पैलै तौ नन्द सरबत पिवावे आवेगी बाकूँ इक्कीस रुपइया दै दीजो।

भीतर ज सब है रह्यौ और बाहर कछू और ई खीचडी रँध रई। इतकूँ लच्छमी कौ आँखिन को आँसू नाँय सूख रह्यौ। करेजा फट सौ रह्यौ बिदा की बात सोचतेई वाये ऐसौ लग रह्यौ जैसे करेजाए चीर कै लै जाँय रह्यौ होय। इतेक मेई मुकन्द भीतर आयौ और लच्छी ए बुलाय कै बगल वारे कमरा मे लै गयौ—

लच्छमी एक बात सुन देख रजनी तौ अपने घर चली जायगी और हमे जो मकान सात दिना के भीतर भीतर खाली करनौ परैगौ बू कौऊ मेहमान ते यहा रुकबे की मत कहियौ।

जे का कह रएऔ ? हमारे पुरखान कौ मकान हमे खाली करनौ परैगौ ? लच्छमी जैसे बेहोस सी-हैवे लगी।

मुकन्द ने लपक कै लक्छमी कूँ सहारौ दियौ और पलँग पै सुवाय दई। खुद वाके पास बैठ गयौ—

लच्छमी मेरी लच्मछी तू हिम्मत रख देख तू हिम्मत हार गई तो मै तो बिलकुल टूट जाऊँगौ। मोय तेरोई आसरौ ए लच्छमी तू घबढावे मत विहारी जी सब ठीक करिगे। बस धीरज रख। मेरे सग-सग चल लच्छमी। मैं तौ विदा ते पहैले तोते कछू नई कहतौ पर तू बडी जीजी ते रुकबे की कह रई या मारे सबरौ भेद खौलनौ लच्छमी तू ही बता अपनौ दुख कोई कूँ दिखाबे ते का फायदा जग हँसाई के सिवाय और का मिलैगौ।

अब तक लच्छमी समरि गई व बडे करेजा वारी लुगाई ही। हिम्मत कर कै उठी और बौली—

'ठीक बात ए तुम ठीक कह रएऔ जी हम अपनी पीर कोई कूँ चौ बतायै ।'

अबई दोनो पति पत्नी अपने आपए समझाय बुझाव रहे कै परलै परि गई। सबरी बात परौस की भुआ ने सुन लई बाये चैन कहा वाके पेट मे तो पानीऊ नॉय पचैऔ। भजि कै गई और सबरी बात ज्यौ की त्यो कछू नोन मिच लगाय कै दुलहन के सामई सुनाये दई। सुनत खेम दुलैहन म्हो फक्क सौ रह गयौ। पीरौ पर गयौ।

का कही पापा ने मकान गिरवी रख दियौ है। मम्मी को सबरो जेबर बिक गयौ और छौरी धडाम ते नीचे गिर परी।

अरे दुलैहन बेहोस है गई जल्दी करो रे कोई डागधर ए लाओ। मइया बाप भजे चले आये। सबरी बात सुनि कै तकदीर फोर लई।

'हे विधना अब और का दिखावैगो ?' कोई बोलौ –

'अरे भैया घरई नाग ना पूजिये बाँबी पूजन जॉय' दूल्हे आप डागधर ए बाई कूँ दिखा देओ बाहर जाबे की का जरूरत ए।'

बात बरातीन तक पहुची। रजत के पिताजी बोले –

'जा बेटा देख तो सही आखिर किस्सा कहा ए ?'

आपके भायले के सग रजत भीतर पहुचौ। जाँच पडताल करिबे के बाद पतौ कै जे बेहोसी कोई मानसिक आघात के कारण आई है। रजत ने मुकन्द ते पूछी–

'चाचा जी ऐसे कबहू पैलैऊ जे बेहोश भईए का ?'

'नॉय बेठा जा कौ तौ कबहू मुडऊँ नॉय चढ्यौ।'

मइया बाप तौ हरेक छोरीए छोडने परै पर कोऊ छोरी ऐसे बेहोस होती नॉय देखी। फिर कोऊ बीमारीऊँ नॉय दीख रही। कहू कोई दिमागी बीमारी तो नॉय या फिर कहू याकौ ब्याह याकी मरजी के खिलाफ तौ नॉय कर दियौ। रजत के मन मे हजार बात एक सग आय गई।

'चाचा जी मोय माफ करियौ परे कहू जे ब्याह याकी मरजी के खिलाफ तो नॉय भयो ?'

इतेक सुनतेई लच्छमी भेभाटेनते रोयवे लग गई। बात छोरी के चाल चलन पै आय गई तो मुकन्द ने सबरी बात खोल कै रजत कूँ बता दई। अब बैसेऊ बाते का परदा। दाई ते पेट कब तानूँ छिपाते ? अब तू बू विनकौ जमाईऔ कोऊ गैर नाऔ।

'पर चाचा जी ने मोते कछू नाँय कही। मोते तो ये ई कही गई कै सब चीज बस्त आप अपनी मरजी ते अपनी बेटी कूँ दे गए औ। मै तो खुदई अचम्भेऔ कै आखिर एक नौकरी पैसा आदमी इतेक दान दहेज दे कैसे रह्योए ?'

बेटा हमते तुम्हारे बाबू जी ने यौ कही कै जो ये बात रजतए पतो चल गई तो सगाई तोर दिंगे और बेटा मरतौ आदमा कहा ना करै, बेटी वारे की पगडी तो सदा ई बेटा वारे के पामन के नीचे रहे बेटी के बाप की मूछऊ कबहू ऊँची रईए जेई सोच के सब करनौ परौ।'

अमेर होती देखि कै रजत के बाबूजी भीतर आ गये—

'बेटा रजत का बात ए बहू बेहोस कैसे है गई ?'

कछू बात नाय बाबू जी रात भर सोय ना सकी भूमरेई नैक आख लगी तौ एक डरामनौ सपनौ दीख गयौ जाई ते चीख कै बेहोस है गई। इतेऊँ ना जानै कै सुपने ते का डर सपनो तौ सपनौ होय।

ओह ! तो अब अमेर काहे कूँ कर रह्यौ। समधी जी महूरत निकरह्यौ जाय रह्यौ ए बरातए विदा करो।

'हाँ चाचा जी बरात तौ बिदा हौनीई चाइये।'

'तुम ठीक कह रह्यौ बेटा मैं अभाल सबरी तैयारी करवाऊँ।'

जब सब सामान बस मे रख दियौ तौ मुकन्द ने समधी जी ते कही—

सब तैयारी है गई समधी जी वी सी आर और टी वी कार मे रखवा दिये ध्यान ते ले जइयौ। कह्यौ सुनो माफ करियौ हमारी गलतीन पै ध्यान मत दीजौ समधी जी हमारौ सग निभा दीजौ।

'अच्छौ रजत बेटा मैं बाहर जाय रह्यौ ऊँ तू बहूए लिवाय कै आ जा।'

'नई बाबू जी हम आपके सग नॉय चल रहे। हम दोनो यहाई रहिंगे। बरात विदा है गई ए आप बरात ए लै कै जाऔ।'

चौतरफा सन्नाटो सौ छाय गयो सुई ऊँ गिरे तो आवाज सुन लेऔ। सबके म्हौडे खुले के खुले रह गये। जे दूल्हे का कह रह्यौ ए।

का बक रह्यौ ए ? भामर परतेइ सुमरार कौ है गयौ कबहू ऐसौऊँ भयौए के बिना दूल्हे दुलैहन के बिदा है जाय ?

'आज तानू ऐसौ नॉय भयौ पर आज ऐसौइ होयगौ। ऐसौ जा मारे होयगौ कै आपने मेरो ब्याह नॉय रचायौ मेरो सौदा कियोए। आपने ये नॉय सोची कै चाचा जी इतेक दहेज कैसे जोरिंगे ? चाचा जी ने अपनौ मकान गिरवी रख दियौ। चाची जी के सबरे जेवर बिक गये आपकी तरफ से कछूइ होय। आपके दहेज की लालसा ने या परिवार की सबसी खुसी छीन लइ है अब रजनी के मइया बाप कहाँ जाइगे या के भइयान की पढाइ कैस होयगी ? इन सब कौ का हौयगौ ? याकी आपए कछू परवाह नॉय। पर इनकी बरबादी को कारण मैऊ बाबूजी समझ लेऔ आपने अपनौ बेटा ब्याहौ नॉय गिरवी रख दियौए आज ते मै इनको बेटा ऊँ। अब मे याही रहुगौ इनके सग परिवार को कमाऊँ पूत बनिकै जब दहेज की सबरी रासी चुकता कर दऊँगौ तब आ जाऊँगौ। आपके पास आपकी बहूए लै कै।'

'ये का कह रहेऔ बेटा ?' मुकन्द की तौ कछू समझ मे नॉय आय रई बाकी सब लोगऊँ बीजरी मारे से ठाडे रह गये। आखिन देखी कानन सुनी बातऊँ गरे ते नॉय उतर रई कहू ऐतौऊँ हुओए।

मैं ठीक कह रह्यौऊँ चाचा जी मइया बाप के पापन कौ प्रास्चित मै करूँगौ। मैं यही रहूगौ रखौगे ना मोय अपनो बेटा बनाय कै या आपऊँ मोय ।'

और कछू कहबे ते पैलै मुकन्द ने रजत को अपनी छाती ते लगाय लियौ। मुकन्द कूँ तौ रजत मिल गयौ पर का सबरे मुकन्द ऐसे रजत पाय कै निहाल होय।

—विनोद कुमारी (किरन)

भँवर स्वरूप भँवर
ग्राम—अँधियारी, भरतपुर
आयु—उन्यासी बरस

भँवर स्वरूप 'भँवर'

भँवर स्वरूप गाव अधियारी बास करै,
अँधियारौ पीकै उजियारौ बगुराबै हैं।

कैमरा अनोखौ पायौ, आखिन के लैंस लगे,
मन कौ बटन दाव, फोटू खैंच लावे हैं।

ठेठ ब्रजभाषा के हिमायती हमेसा रहे,
ठेठ ब्रजभाषा मे लिखै है बतरावै हैं।

ऐसे है भँवर जब रपट सुनावै तब,
स्रोतान के पटन मे बल पर जावै है।

श्री भँवर स्वरूप भँवर

परिचै

जनम	सामन सुदी आठै समत 1971 वि (30 जुलाई सन 1914 ई)
जनम स्थान	गाम अँधियारी, तहसील रूपबास, जिला भरतपुर, राज
पिता कौ नाम	श्री प्रहलाद प्रसाद
मैया कौ नाम	श्रीमती हरभेजी
शिक्षा	हिन्दी मिडिल
व्यवसाय	खेती
प्रकासित रचना	पत्र पत्रिकान मे फुटकर रचना छपती रही । 'किसान राज', हिन्द सुराज', विश्वबन्धु समाज आदि सकलन हू छपे
अप्रकाशित रचना	समाजसुधार छन्द सग्रह, ब्रजभाषा मे रामायण, गीता आदि ।
प्रसारन	आकासवानी सौ कवितान कौ प्रसारन
विसेस	स्वतत्रता आ दोलन मे 1938 सौ ही सक्रिय
सम्मान	श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर अरु राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी सौ सम्मानित ।

परिवार परिचै—

पुत्र

1 डॉ बलराम शर्मा, एम एस सी (कृषि) पी एच डी (सोवियत सघ सौ) आनुवाशिकी विभागाध्यक्ष भारतीय कृषि अनुसधान सस्था (पूसा) नई दिल्ली
2 श्री ओकारनाथ शर्मा, एडवोकेट, भरतपुर
3 श्री जवाहरलाल शर्मा, अधिशासी अभियन्ता, सिचाई विभाग, जयपुर
4 डा बालगगाधर शर्मा, एम डी , लीबिया मे कायरत
5 डॉ अशोक शर्मा, एम डी (बालरोग विशेषज्ञ) लीबिया सौ लौटिकै दिल्ली मे कायरत

पुत्री — डॉ मोहिनी शर्मा, एम बी बी एस (विवाहित)

वतमान पतौ — गाम अँधियारी, तहसील रूपबास, जिला भरतपुर, राज

श्री भवर स्वरूप 'भवर' व्यक्तित्व अरु कृतित्व

खद्दर की धोती, कुरता, जाकिट अरु सफेद टोपी मे सीधे-सरल व्यक्तित्व बारे भरतपुर जिले के लोक कवि भवर स्वरूप 'भवर' भलेई कोऊ बडे साहित्यकार अरु रस अलकारन के ग्याता नई है, परि समाज की विभिन्न बुराईन पै चोट करिबे बारी बिनकी सूधम सटट रचना नें पढिबे अरु सुनिबे के ताई लोग हर समै तैयार रहे।

'भवर' कौ जनम 73 बरस पहले सन 1914 मे राजस्थान के भरतपुर जिले के गाम अधियारी मे एक ठेठ सनातनी किसान परिवार मे भयौ। इनके बाबा लालजी, पूजा पाठ अरु छुआछात मे बिसबास करते हे। बि नै गाम मे मंदिर बनबायौ। इनके पिताजी कौ नाम प्रहलाद हौ अरु वे सस्कृत पाठशाला मे पढते हे। खेती अरु पशुपालन के अलावा घर मे लेन-देन कौऊ काम होतौ।

'भवर' अपने बच्चापने तेई घरिकेन कूँ रामायण, आल्हा अरु विजय मुक्तावलि पढिके सुनायौ करते तौ जापै खुस है कें बड-बूढे कह्यौ करते कै छोरा पढिबे मे हुसियार है। इन ग्रन्थन कूँ पढिबे तेई इन कूँ अपनी कविता लिखवे की प्रेरना भई। 1927 ई मे इनै अपनी पैली कविता एक दोहा के रूप मे लिखी जब कि इनके एक मित्र सहपाठी श्याम लाल की हँसी बाके दूसरे सगी-साथी बाके ऊपर दोहा बनाय के उडाय रहे तौ भवर ने बिनके जबाब मे एक ई दोहा बनाय के बिनकूँ सुनायके झेपायौ—

'ग्राम अटारी मे रहै लाला दुलिया चन्द।
क्वार सनीचर वार कूँ प्रगट्यौ नकटा नन्द॥'

'भवर' अपनी कक्षा मे हमेसा हिन्दी मे अच्छे नम्बर लायौ करते। उच्चैन स्कूल ते रोजीना अपने गाम कूँ आमते अरु जाते रस्ता मे अपने सहपाठीन के सग ऊल जलूल तुक बन्दी अरु कविता करौ करते।

इनकी पढाई घरेलू सकटन मे बीच मे ई छूटि गई तौ ये अपने एक रिस्तेदार पै ते लै नै के आय समाजी साहित्य पढो करते जाते इन पै आय समाज कौ सुधारवादी रग चढयौ। इनने बाई दौर मे फिर लोकमान्य तिलक कौ 'गीता रहस्य' पढो जाते इनके मन मे एक नई चेतना जगी। इनकी इच्छा देश सुतत्र करायवे के प्रयत्नन मे लगे क्रातिकारीन ते मिलवे की भई। जाके ताई जि कलकता गये परि म्हा बुखार ते ग्रसित है के बापिस घर कू ई लौटि आये। साल भर बीमार परे रहे अरु क्रान्तिकारी बनवे की इनकी इच्छा ठडी परि गई।

सन् 1939 मे भरतपुर की सेवर जेल मे प्रजा मण्डल के सत्याग्रही ब दीन कौ एक कवि सम्मेलन स्व साबल प्रसाद चतुर्वेदी की अध्यक्षता मे भयौ। जामे दो समस्या रखी गई इनमे एक 'उमग है' अरु दूसरी 'राज की' धरी गई। भवर ने इनपै अपने सवैया जा प्रकार रचिके सुनाये–

सेबर की जेल मे कियौ है कवि सम्मेलन,
साहित्यिक साधना की बह रही गग है।
कोऊ कहै कवित सुनावत सवैया,
कोऊ गावत गानेक्या रचि रह्यौ रग है।
शत प्रजा मण्डल को कीनी स्वीकार फेरि,
नटि गौ दीवान ये तौ अगरेजी ढग है।
रहौ सब सज्जन ब धु एकता सो जेल मे,
अब सारे ससार भर मे जग की उमग है।

अरु–

व्याप रह्यौ भारी भय सारे ससार मे,
समस्या कैसी विकट बनि गई है आज की।
रूस-जमनी ने पौलैण्ड पै झपट्टा मारयौ,
होत ज्यो कपोत पै झपटट चील बाज की।
दोऊन ने आधौ-आधौ यूरूप,
दबाय, हल्ला रूस पैऊ बोलि दीनो।
हिटलर ने बरबादी कीनी अगरेजी राज की।

भवर जी ने अपनी रचनान की एक पुस्तिका 'हिन्द सुराज' छपवाय के प्रकासित करी है। जामे ज्यादातर सामाजिक कुरीतिन कौ भण्डाफौर है। 'विश्व ब धु' समाज के

नाम ते इन्नै सामाजिक बुराई, राष्ट्र विरोधी गतीविधि अरु पजाब की अराजकता पै अपने बिचारन के 25-30 हजार परचा अब तानूँ छपवाय के बाटे है।

भवर जी की इच्छा अपनी रचनान पै आधारित दो और पुस्तिकान के प्रकासन की है। बिनमे एक कौ नाम 'विश्व भारती' अरु दूसरी 'गोपाल गीना' है।

भवर जी की रचनान के तीन प्रमुख छन्द समाज अरु शासन की बुराइन पै प्रहार करिवे वारे जा तरिया हे।

बीडी औ चाय, शराब बने खूब,
भ्रष्ट कियौ यह भारत शासन।
मारत गप्प की लप्प दुसासन,
ठप्प कियौ जन तत्र प्रशासन।
घूस बिना नही काम बारै,
कोऊ काहू कौ माने नही अनुशासन।
दनि की कोन सुने अर्जी,
मरि जाऔ पड़ै दम घोरि उसासन।

□

कैमो उचौ स्तर भवर घर कौ है गयौ,
जब ते भयौ लुक्का काका सरपच है।
प्रात पीवै बैड टी फिर करत ब्रेक फास्ट,
साम कूँ डिनर अरु दुपैहर लेत लच है।
अण्डा, मीट, मछली सगु पेट मे समाय जाय,
हुक्का, दारू बाजन कौ, जोरि बैठौ मच है।
करनो हराम काम गाम मे न रच भरि,
झूठ, फूट, लूट के रच्यै फर फद है।

□

जाके नाई छान बाके ऊचे मकान बने,
भवर दूकान दार सेठ सरताज है।
जाके ना तिपइया बाके दौडे चार पइया।
गाडी जाके ना रुपइया बाके बक खुली आज है।

जाके नाई कील बाके बीसन चलत मील,
जाके नाओ नाज बाके उडत जहाज है।
जाकी नाई जत्री बाके सग रहे सत्री,
जनता की जन तत्री बने मत्री महाराज हे।

भवर की एक और रचना जाऐ सुनिबे के ताई लोग बिनते बेर-बेर अपनी इच्छा प्रगट करयौ करे—

भवर सोयौ सुट्ट, लीनी चोरन लपट्ट
घर घुसे खोलि पट्ट, लीनो सट्ट, पट्ट झट्ट।
मैने सुनी खट्ट खट्ट तब कीनी हट्ट, हट्ट,
भागे सब सरपट्ट, गयौ एक है रिपट्ट।
मैने पकरयौ झपट्ट, गयौ कठ ते लिपट्ट,
आये लोग तब झट, उन पीटयो खूब डट्ट।
गयो पाम ते चिपट्टि, बाध्यौ लेजते लपट्टि
थाने लै गये झट्ट पट्ट, मेने कीनी है रपट्ट।
थानेदार चोपट्ट वाने, कीनो है कपट्ट,
घूस लीनी भरि पट्ट, बाकूँ छोडि दियौ झट्ट।
हाथ बेत सटा सट्ट, बानी बोलै अटा पट्ट,
दारू पीके गटा गट्ट, गारी देत फटा फट्ट।
मोकूँ दीनी है डपट्ट, झूठी कीनी हे रपट्ट,
चल भाग यहा ते हट्ट, नट्टी मारूँगो चपट्ट।
मै तौ भूल्यौ अट्ट पट्ट, म्हाते भाज्यौ चट पट्ट,
सास चलै सरसट्ट, घरि लीनो सरपट्टि।

भवर ते पूछी गई कै अब आप का लिख रहे औ ? तौ बिन्ने कही कै। अब तौ मैं कबऊ कबऊ कोऊ फुटकर कवित या पद्य बनाय लऊँ। बिन्नै कहो कै—

गीता रामायन पढी, अथ न समझयौ गूढ।
ज्यो कौ त्यो बुद्धू 'भवर' कि कत्तव्य बिमूढ॥

बिन्नै कही कै मेरी ऊमर 73 पार करि गई है। अब तोता लऊ कै मेना लऊ। चलत वारत मूड पै और धरि लई है। देखौ रामजी का भली करैगौ ? बिन्नै आगे कह्यौ कै—

कागज कबहू के छिके, कटयौ धरयौ वारट,
किम जग कूँ चकमा दऊँ, रचू सौ कविता करट।

अरु– 'भवर' बार धौरे परे निस बिन जिया जटाय,
काका कहिबौ छोड सब, अब बाबा कह जाय।

भवर ने ब्रजभाषा के विकास मे अपनो जि सुझाव दियौ कै ब्रजभाषा की विभिन्न बोली मेवाती, काटैरी, चाहरवाटी, डाग और जगरौटी आदि सबन कूँ सग लैक कवितान मे अपनायौ जायँ।

भवर ने आज की नई पीढी कूँ अपने सदेश मे कह्यौ कै मेरी कल्पना विश्वब बु समाज की है जामे सिगरे विश्व की एकई सरकार होय। शाकाहार यानी खान-पान मे शुद्धता, हर तरिया की नशाब दी, अनुचित फैशन परस्ती, अश्लील सिनेमादि कौ त्याग अरु प्रत्येक गाम, मुहल्ला मे बच्चान कूँ गुरू प्रणाली की शिक्षा पद्धति अपनाई जाय।

भवर के परिवार मे इनके पाच पुत्र है जिनमे सबते बडौ बलराम रूस मे कृषि विज्ञान की पढाई करि के दिल्ली पूसा मे नौकरी पै ह। याते छोटौ ओकार शर्मा भरतपुर मे वकील है बाते छोटौ जबाहर बीकानेर सिचाई विभाग मे एक्स ई एन है। बाते छोटौ बालगगाधर लीबिया मे डॉक्टर है। अरु सग ते छोटौ अशोक लीबिया ते आयके दिल्ली मे डॉक्टर है। इनकी पुत्री मोहना अपनी समुराल इन्दौर मे डाक्टर है। सबई बहू स्नातक और बिनके दो-दो बच्चा हे।

भवर स्वरूप 'भवर' कौ सम्मान भरतपुर की हिन्दी साहित्य समिति पूव मे करि चुकी है। इनकूँ स्वतन्त्रता सैनानी कौ ताम्र पत्र मिल्यौ है अरु रूपवास के स्वतत्रता स्तम्भ पै इनकौ नाम अकित भयौ है। स्वतन्त्रता मेनानी के रूप मे केन्द्र अरु राज्य ते आपकूँ पैन्शन मिली रही है।

–मिश्री लाल गुप्त

श्री भवर जी

भँवर जी देहाती ह, पूरे देहाती । खाबे पीबे मे बोलिबे-चालिबे मे, रहबे-सहबे मे, पूरम पट्ट देहाती है। बाहर अरु भीतर ते, तन ते, अरु मन ते सौ टच देहाती है । देहाती कौ मतलब कोऊ धौदू भौदू, औगा-पौगा, गोबर गनेस या बुद्धू ते मत लगाय लीजौ । देहाती कौ मतलब लठाभारती गँवार ते मत लगा लीजौ । देहाती कौ मतलब गाव के मूधे-सादे भोरे-भारे भारतीयता के हिमायती ते है जो मन मे, सोई होठन पै । सौई व्यौहार मे । बनावट, मिलावट, दिखावट अरु सजावट ते कोसन दूर । मुलम्मा सौ बिल्कुल परे । यो समझौ भँवर जी बिठूर के पक्के सोने हे । सादगी अरु मरलता कूँ वे सुख कौ राज बतावै । वे बिनमे ते नाएँ जो है तौ ढाई आना के पर बजार मे साढे सात आना के बनकै ऐसौ निकसै—हम चौडे अरु सडक सकडी ।

भँवर जी की देह कोऊ सुडौल नाएँ । रग न गोरौ, न लाल । रूप जब बँटौ तब भँवर जी काऊ कौने कुचारे मे सोमते रह गए । बिनकौ औधक नीचौ थूथरौ देखिकै ऐसौ लगै मानो वे अमानी की ठौर ठेका मे बनवाए हो । गे हुआ रग अरु सूखे सरकन्डे सी देह । स्यात अपनी जवानी मेऊ काऊ नवयौवनाए नही रिझाइ पाए हो । भलौ होय बा बेटीवारे कौ जि नै बिनकौ क्वारपनौ उतार दियौ आज कौ सौ जमानौ हौतौ तौ स्यात वे क्वारे रह जाते चोके आज तौ छोरी जब तक छोराए पसद नाँय करले तब लौ ब्याह की बातई नाँय बनै ।

भँवर जी कद के मझोले हे । गाधीवादी विचार धारा के गाधी टोपी, खादी की धोती कुरता अरु पामन मे चमरौधी पन्हैया पहर । सदा एक रस, न सामन सूखे न भादौ हरे । सुभाव ते मनमौजी । बादरन की नाई हवा जितकूँ लै गई बितकूँ ई चल दिए । याकौ मतलब लुढकने लोटा ते मत लगा लीजौ । ई तौ बिनकौ मन-मौजीपन है । फकीरापन है यो वे पक्के इरादे के है पक्के पैराऐन के है । हाँ, इतेक जरूर है जो चित्त पै चढ गई सो चढ गई । 24-25 बरस की उमर मे गरम दल के नेतान ते प्रभावित भए

तौ जाय पहुचे कलकत्ता । ना ठौर ना ठिकानौ । गैल गिरारौऊ तौ जानी पहचानौ नाऔ । हा, मन मे आग, लाग अरु लगन जरूर हती । रस्ता मे पइसा बीत गए पर पायन ही पौच क रहे । आजादी के ताईं पन 39 मे सत्याग्रह मे कूद परे । सेवर जेल की हवा खाई पर म्हौ की नही खाई । सन् 47 मे गाधी जी कौ जब इसारौ भयौ तौ फिर पौच गए बारह तानन के पीछ । कछू जेल ते माफी माँग कै चले आए पर का मजाल है जो भँवर जी माफी मागते । तोऊ भँवर जी छोड दिए । जेल वारेन की जब खचतान भई तौ व माफीनामा लिखावे भँवर जी के घर जा पहुचे । भवर जी नै दो टूक मना कर दई । बिन्ने हक्क करी न धक्क सिर पै टोपी धरी अरु बगल मे लगाई धोती अर चल दिए जेल वारेन के सग जेलई आ पहुचे । बिनके बाबा मिलिबे पौचे तौ बिन्नै ओर कह दई, 'भवर माफी मत माग अइयो भलई मर जइयो ।' याए सुनिकै भवर जी को सीना चोडौ है गयौ । वे न प्रताडनान ते डरपे अरु न प्रलोभन मै आए ।

आजादी के पाछै वे अपनी काव्य प्रतिभा सौ दलित, गलित, थकित अरु सोसित समाज कूँ उठाइबे मे लगे है । गाधी जी की मत्यु के बारहवे दिन देस म छुआछूत मिटा-यबे को आ दोलन चलौ । भरतपुर के गगा मदिर मे हरिजनन के हाथन सो भोजन करा-इबे कौ निहचै करौ । भँवर जी बिनमे सबसौ आगे रहे । हरिजन भैयान न जब ई कही कै वे रायतौ अपने हाथन सौ बनाइ गे तौ अच्छे ते अच्छे बिचकबे लगे । कछू लाज के मारै बैठे रहे । कछून नै रायतौ परोसवा नौ लियौ पर चक्खौ तक नही । भवर जी ही ऐसे निकसे जि नै रायतौ ही रायतौ चढायौ । सब मान गए भँवर जी जो कहै सो करकै दिखावै ।

अपने गाव अँधियारी मे हरिजनन कूँ कोऊ पानी नाँय भरन दैतौ । बि नै कुआन पै कोऊ चढन तक नाँय दैतौ । कुआ ते दूर ठाडौ रखते । कोऊ महतर या महतरानी प्यासी ठाडी रहती तौ ठाडी ही रहती । खाली मटका भरवाबे कूँ एक दिना एक महत-रानी निहोरे कर रही । भवर जी नै देख लई फिर काए लिख डारी—बारहमासी—

'नाँय घर टपकाऊ पानी ।
सबके हा हा खाय कुआ पै खडी महतरानी ।।'

जब वा महतरानो सौ गारी गुपता करबे लगे तौ एक बूढे नै सिगरौ दोस महत-रानी कौ नाँय बताय कै भवर जी के माथे मढ दियौ—

'एक बूढे ने कही दोस कछु नाय बिचारी कौ ।
इनकूँ सिरी लगा रह्यौ है भँवर अँध्यारी कौ ।।

कोऊ कछू कहै खिल्ली उडाबै चाहे उपेच्छा करै, पिछ लग्गू बतावै चाहे सिर्री कहै पर जो जँच गई सो जँच गई फिर रहँटू उतरौ चाहे बहा जो आई सो कह दई गाव के एक लुक्का सरपच की कलई खोलकैई माने—

कैसो उचौ स्तर भवर घर है गयौ है,
जब ते भयौ लुक्का काका सरपच है।
प्रात पीबै बैड टी करत ब्रेक फास्ट फिर,
साम कूँ डिनर अरु दुपैहर लेत लच है।
अण्डा, मीट, मछली सगु पेट मे समाय जात,
हुक्का, दारू वारेन कौ, जोरि बैठै मच है।
करत हराम गाम काम मे न करत रच,
झूठ, लूट फूट, के रचौ करै प्रपच है।

परिवार नियोजन वारेन कूँ खूब धोय धोय कै ऊजरी कैसी करी है—

'पूरे एक दरजन, बाल बचवा पैदा भए,
खाइबे ना नाज कैसौ राम कौ बनौआ है।
कोऊ माँगै रोटी कोउ दूध औ महेरी मागै
कोऊ गुड डीमरी कौ ठिनक ठिनौआ है॥
कोऊ खाट परयौ बोबो पीबे कूँ घिघाय रह्यौ,
कोऊ बदफैल करै, जीव कौ जरौआ है।
कोऊ फैकै पत्थर परौसीन की फोरै टाट,
सिन्नी बाट 'भँवर' मनावत मनौआ है॥'

भँवर जी अपबीती सुनाइबे मे हू पीछै नाँय रहै। अपनी घरवारी कौ सरूप यो बखानौ है—

'बगम हमारी की लिलारी रिस भारी भरी,
बे लगाम बोलै जीभ नीम कौ पतौआ है।
औरन की नारिन पै गहने अनेक देख,
कहै फूटे भाग मिल्यौ भँवर भुतौआ है।
मारी जर तारी देखि कहत दुखारी मेरी,
थेगरी की घाघरी ही लाज कौ बचौआ है।
मेरे छोरा ज्वान हुगे, तबई बताय दुगी,
बैठी राज भोगुगी कहा कौ कन कौआ है॥'

याही तरियाँ दहेज लैवे वारेन कूँ कहा तरिया सुनाबै बिनके बोलन मे देखौ–

'पाप कर रहे बामन बनिया।
चालू कियौ दहेज बाबडी कर दई सब दुनिया।'

दहेज के लोभीन कूँ जैसा सुनाई है बाई तरिया नसेबाजन कूँ धुरपट्टीन सुनाई है–

'नसाबाजी सत्यानासी,
अपनेई हाथन लगा रहे है आप गरे फासी।

डोकरी पुरान की कैसी धज्जी उडाई है–

गीता रामायण पढौ, चाहे पढौ कुरान।
कान सबन के काटती, इक डोकरी पुरान॥
इक डोकरी पुरान सबन कूँ सीख सिखाती।
जनम होय चाय मरन सब जगह टॉग अडाती।
भँवर पुजाए भूत, अन्ध विश्वास बढाए।
दरिया बुस्यौ खबाय, सेढते पुत्र बचाए॥

ऐसे है भँवर जी, चाहै वे देखिवे मे चोखे नॉय लगै पर बरतबे मे खरे है। दूबरे चौला मे गुनन को भडार भरौ है। 'साठा सो पाठा' की कहावत्र चरिताथ कर रहे है। याकौ राज पूछौ तौ बतायौ मनमौजीपन अरु नीम की दातुन। चाहै छोरा नाराज होय चाहै छोरान की लुगाई पर जब तक दो तीन घन्टा नीम की दॉतुन कर नाय लेय उठैई नाएँ। जब वे अन्डमान निकोवर स्वतत्रता सेनानी के रूप मे यात्रा करबे जा रहे तौ सग लै जाइबे कूँ नीम की दातुनन कौ पूरौ गट्ठा तैयार कर लियौ। बिनते हम जैसे अनेकन नै नीम की दातुन करबौ सीख लियौ है अरु तन, मन अरु धन सौ समाज के ताई समरपन। लोक साहित्य सृजन करकै लोक चेतना जगाइबे वारे भँवर जी हमारौ अगड्डौ खैच रहे है, यापै हमे पूरौ नाज है।

□ गोपाल प्रसाद मुद्गल
पाडेय मौहल्ला, डीग (भरतपुर)

भँवर स्वरूप 'भँवर' के लोक साहित्य मे राष्ट्रीयता के सुर

ऐसे थोरेई साहित्यकार होइ जिनकौ व्यक्तित्तु और कृतित्तु एक दूसरे कौ पूरक होय। भवर' जैसे ऊपर तेएँ बैसेई भीतर ते ऐ। सादा भेस, अहकार कौ नाहिं लबलेस पहनै है खादी पर है बडे स्पस्टवादी। जब बोले तौ पूरे पिटारेअै खोले। फिर निकसती चली जाय लरी पै लरी, और सुनाते चले जाय खरी पै खरी। जाते बिन्ने कछु लैनौ-दैनौ नाँय कै को बुरौ मानेगौ और कौन भलौ। बडे निरभमानी। जब हास्य व्यग की रचनान नै सुनामे तौ फूट परै फुआरे और पेट फटि-फटि जाय हँसी क मारे। देखन मे किसान बीर बोलन सो पूरे कबीर और रचना —ऐसी समझौ जैसे नावक क तीर। भरत-पुर आचर के अधिकाश बासी बिन्नै हँसी-अरु व्यग के कबी रूप मे जानै, मानै अरु पहि-चानै। पर बिनकौ एक दूसरौ रूपउ ए। बूई बिनकी साँचमाच की सक्ती, बिनके कबी-साहित्यकार मे कैसी कूट-कूट के भरीए राष्ट्रीय भक्ती। बानगी सरूप प्रस्तुतै—

'स्वाँग सिनेमा मे सबै, करौ न धन बरबाद।
कविता हिन्द सुराज की चोखौ बढिया स्वाद॥'

छुआछूत कोऊ सामाजिक समस्याई नाए जि एक राष्ट्रीय समस्या ऐ। जाई कारन सो जाके उन्मूलन क ताईं भारत के सविधान मे प्राबधान कीनौ गयौए और छुआछूत एक ऐसौ अपराध घोसित कर दियौ गयौ है कै जाय मानबे बारे के बिरुद्ध कानूनी काय-बाही करिबे की बिबस्थाए। अब तौ चमार' और 'भगी' जैसे सब्दन कौ प्रयोग ऊ कानूनन बर्जित कर दियौ गयौए। याई कारन गत सुतन्त्रता दिवस (1992) के औसर पै लाल किले की प्राचीर ते राष्ट्र कूँ सम्बोधित करते भए प्रधानमत्री के मुँह ते 'भगी-भाई' सब्द अनजान निकस गयौ तौ राष्ट्र मे बायबेला मच गयौ और प्रधानमत्री कूँ छमा मागनी परी और अपनौ स्पष्टीकरन देनौ पर्यौ। भँवर जा समस्या के प्रति भौत

जागरूक नाय पर बाके उर मे इन निम्न वग के भाई भैनन के काजै कितनी टीसै, जि इन पक्तीन मे मूर्तिमती है उठीए—

'नाय घर मे टपकाऊ पानी।
सबके हा हा खाय कुआ पै खडी महतरानी ।।'

सुतन्त्रता के छियालीस बरस पाछेऊ नागरिक या समस्या की गम्भीरता कूँ समझ नाय पाए और आजऊ जाके उन्मूलन करिबे बारे और पिछुडे वग के प्रति सहानुभूति राखिबे बारेए बुरो समझे और बाके प्रति बिद्वेष की भावना राखे । और भवर स्वरूप की ये पक्ती जाका प्रमान ऐ —

'एक बूढे ने कही दोस कछु नाय बिचारी कौ ।
इनकूँ सिरी लगा रह्यौ है भवर अँध्यारी कौ ।।

आज राष्ट्र के सामई अनेकन भीषण समस्या ऐ । जो हमारी राष्ट्रीय समस्या । देस विदेसन नै सगते जादा दहला रही है बू है हमारी जनसरया कौ विस्फोट । पिछली जनगनना के अनुसार हम 85 किरोर ते ऊपर पौच चुके हे । रोटी, कपडा और रासन तौ जाक गम्भीर परिनाम है ई पर औरऊ अनेकन समस्या पैदा होतई चली जा रही है । गाँव और सैर गन्दगी के गढ बन गए हैं । लोग नारकीय जीवन बितीत कर रहे है । रेलु और बसन मे ठाडे ह्रैबे कूँ जगै नाय, सडक भरी परीएँ । स्कूलन मे भीर जमा है गई है । गरीबी अरु बेकारी कौ सामराज्य फैला न्नीनौए या जनसख्या के बिस्फोट नै । 'भवर' या समस्या के प्रती प्रारम्भ सौई भौत जागरूके और अपनी रचनान के माद्धिम ते लोक कूँ जा तरिया चेतावनी देते रहते—

ज्यादा बच्चा पैदा करि क्यो मरि रहे बोझन है,
भलौ परिवार नियोजन है ।
जा किसान के घर मे धरती दस बीघे आई,
पाँच चार छोरन पै रह जाय बीघे दो-ढाई ।
सधै नाय कछु प्रयोजन है ।। भलौ परिवार

जाई तरिया ते 'भँवर' नै अन्य अनेकन राष्ट्रीय समस्यान के प्रति अपनी जागरूकता कौ प्रदसन कर्यौ ए । जद्यपि दल-बदल विधेयक पारित है गयौ ए पर फिरऊ राजनीति के सौदागर धन, सत्ता अरु सुविधान मे भागीदार ह्रैबे के ताईं आजऊ खूब

फिरकैया लै रहे है और बेसरमाई के सग आज जा पार तौ कल्ल बा पार पै दीखेअ ।
'भवर' की जे चुटीली पक्ती देखिबे लाइके—

'आज कागरेस मे तौ कालि जनता एस मे,
तौ सोसलिस्ट मे लिखाऊँ नाम परसो ।
फेरि जनता मे मिल बैठूँ जनसघ सग,
आर एस एस की परेड करूँ नरसो ।
देखि रग-ढग दोऊ कम्यूनिस्ट गुहन कौ,
फारवाड ब्लाक मे लिखाऊँ नाम तरसो ।
'भवर' बबूला जैसे उडत हवा के सग,
तैसे नकसल पथी बनि जाऊँगौ अतरसो ।।

इन पक्तीन मे कबी नै राजनीतिज्ञन की गिरगिटी चाल कौ दिग्दसन करायौ है जो आज राष्ट्रीय भ्रष्टाचार कौ कारन बनौ भयो ए ।

आज की न्याय बिवस्था हमे अँग्रेजी सासन की बिरासत के रूप मे मिली ए । बडी भारी सरी-गरी बिवस्थाए जि । झूठ और छल कौ पूरौ बोलबाला ए न्यायालैन मे बकील और अफसर कौ गठजोड की खामी और दावपेच साच के गरे ए घोटबे के काजे भौते । मुकदमा बरसन नाय पीढीन ताऊ चलते रहे और फैसने को नाम नाय । झूठौ और बेईमान सफा छूट जाय और मूवौ-साचौ फँसि जाय । ऐसी न्याय बिवस्था पै कुठाराघात करते भये कह्यौ ए 'भँबर नै—

खूनी डाकू चोर ठग सोषक बेईमान ।
'भँवर' वकील दुकान के सब सच्चे जिजमान ।
धनि-धनि बुद्धि बकील की, रचे अनोखे खेल ।
चोरन बरी कराय दे, साहुकार को जेल ।।

'भँवर' की पकर बडी पक्की और व्यापकै । बिन्ने कोऊ विसै अछूतौ नाय छोडयौ । राजनीतिज्ञन के ढोग-पाखण्ड भारत मे सदाई चलते रहे जाकौ कोई राष्ट्रीय मूल नाँय होय पर अखबारन की सुरखीन मे अपनौ नाम छपबाबे कूँ और बोट बटोरबे के काजे बे कछू-न-कछू नाटक करते ई रहे, चाल चलते ई रहे । 'भँवर' नै याई सदभ मे अपनौ एक न्यादस प्रस्तुत कर्यौए—

राजनारायन कर चुके जनता दल उद्धार ।
राजघाट पै जाय के कीनौ मन्त्रो च्चार ।।

कीनौ मन्त्रोच्चार, यज्ञ करि पाय पजारे ।
गगाजल दियौ छिरकि, सुद्ध पापी करि डारे ।।
सबई पार्टी सुनौ, बनौ मत पाप परायन ।
नहिं फिर पाप हरन करि डारे राजनरायन ।।

आज भारतीय राष्ट्र के सामई एक और दुरूह समस्या बडी है गई है अरु बू ए भारतीय सस्कृति पै पच्छिमी सस्कृति कौ आक्रमण । हमारे मूल्य, हमारी परम्परा अरु भेसभूसा सबन पैई पच्छिमी सस्कृति जा तरिया ते हाबी है गई है कै हमारे राष्ट्र की अस्मिता और हमारे राष्ट्र की पहचान कूँ ई महान सकट उत्पन्न है गयौ ए । जो कहू बिना बिलम्ब के हमारे सामाजिक कायकर्ता, राजनेता अरु साहित्यक कलाकार सबै रहते नॉय चेते तौ समस्या हाथ ते निकस जायगी । भँवर स्वरूप नै आज के युबा की भेसभूसा खान पान अरु चाल चलन पै करारी चोट करते भऐ जि भाव व्यक्त करे ऐ—

बिबिध सिंगार करैं, बार बने हिप्पीकट,
डाडी मूँछ अट्ट-पट्ट, पीबैं सिगरेट है ।
नए नए सूट-बूट, माकाहार झूँठ मूँठ,
बैड टी डिनर, मद्य, मीट भरपेट है ।।
छोरा छोरी भेद कछु, 'भँवर' ना जान्यौ परै,
तहमद जनाने ते लगाय जात लेत है ।
नारि रूप नर है कै नर रूप नारि है,
अर्द्ध नर नारी ते, भलौ सी लागैं भेट है ।।

या तरियाँ ते कबी नै अपनी सस्कृती के प्रती भक्ती भाव जाग्रत करिबे कौ मन्त्र फूक्यौ ए ।

भारत मे साच माच कौ जनतन्त्र आरोपित करिबे के ताई सरकार नै लोकतान्त्रिक बिकेन्द्रीकरन कौ माग प्रसस्त कर्यौ । गाम-गाम मे सत्ता कौ फैलाब कर दियौ, पर गामन कै निर्बाचित प्रतिनिधि सेवा के अपने मूल कर्त्तव्य कै सौक-मौजन मे फँसि जाँय और ग्राम की भोरी-भारी जनता ए लूटबे के ताई अनेकन छल-छन्द और उत्पीडन के रस्ता निकासते रहे । जाकौ दिगदसन नीचे के छन्द मे 'भँवर' नै जा तरिया कर्यौ ए—

कैतो उचौ स्तर भवर घर है गयौ हैं,
जब ते भयौ लुक्का काका सरपच है ।

प्रात पीवै बैड टी करत ब्रेक फास्ट फिर,
साम कूँ डिनर अरु दुपैहर लेत लच है।
अण्डा, मीट, मछली सगु पेट मे समाय जात,
हुक्का, दारू वारेन कौ, जोरि बैठ मच हे।
करत हराम गाम काम मे न करत रच,
झूठ, लूट फूट, के रचौ करै प्रपच है।

हमारी राष्ट्रीयता पै एक भौत बडौ प्रश्न चिन्ह लगाय दियौए हमारे मतदाता नै। बू भूल गयौए कै मतदान कितेक बडौ अरु मूल्यबान अधिकारै। जो हम अपनौ लोकतन्त्र सफल बनानौ ए तौ हमे सग ते पैले जि सीखनौ परैगौ के जाति-पाति और लोभ-लालचै भुलाय कै अपनौ मत निस्पच्छ रूप ते कौन से चरितबान प्रत्यासी कूँ दें। पर हमे कै गगा उल्टी ई बहाए चले जाँय रहे ऐ। अपने नीचे के कछू दोहान ते 'भँवर' नै वोटर के चरित कौ कैसौ भण्डाफोर करके बाय स मार्ग पै लाइबे कौ प्रयास करयौए–

भैंस भए बोटर 'भवर' अकोर नट जाय,
दारु बोतल नोट लै डारै बोट सिहाय।
जाति पाति की ओट लै, ठाडे भए निधाट,
होइ जमानत जब्त जब, दे कमन कूँ खोट॥

बतमान राष्ट्र मे उत्तर ते दच्छिन ताऊ अरु पूरब ते पछा ताऊँ राष्ट्र के बिघटन कौ बिगुल बजि रह्यौ है, सबई त्याग की भाबनाए तिला जली दैके कोई कुर्सी क लोभ मे तौ कोई धन के लोभ मे डूब गयौ है और राष्ट्र के प्रती निस्ठा कौ कौन-सौ सही क्रम है, जाय पूरी तरिया बिसर गयौ है। याई स्थिति कौ उद्घाटन करते भए 'भँवर' न चेतायौ ए–

देस-भेस, भासा-धरम, जाति गोत परिवार,
भेदभाव के गढ 'भवर' ज्यो बर्लिन दीवार।
जाति पाति के नाम ते, क्यो रहे बैर बढाय,
एक पिलगा आगि ते, गाम भसम है जाय॥

राष्ट्र की उदीयमान पीढी जो राष्ट्रीय सुतन्त्रता सग्राम के त्याग अरु बलिदानन नै और बा सघष के योद्धान कूँ बिसारती चली जाय रही है, बाकूँ सबकौ स्मरन कराते भए बामैं राष्ट्रीयता की भाबना जा तरिया फूँकी ए कै देखतई बनिए–

खिलजी अलाउद्दीन, कट्टर औरगजेब,
जुलम करि हि-द ते, बैर बहु बढायौ है ।
सत्तामन युद्ध माँहि, जफर बनायौ साह,
हिदुस्तानी फौज, कीयौ गोरन सफायौ हे ।
नाना धुन्धू पन्त, बीर तातिया कुवरसिह,
झासी बारी रानी ने, महान पद पायौ है ।
लाखन सिपाही बलिदान भए देश हित,
फासी पै चढायौ कोऊ गोली ते उडायौ है ।।

राष्ट्र मे परस्पर फूट को दुस्परिनाम बताते भय भँवर जी ने जि कैसी प्रभावी चेताबनी दई ए—

आपस की फूट म, हजार साल भोग्यौ कष्ट,
नष्ट सब भाति भए, अति दुख पायौ है ।
सोई फूट भारत मे आजहू बढत जात
आयौ हे स्वराज पै सुराज नाय आयौ है ।।
फूट कौ हटाऔ, अभिमान कौ घटाऔ,
भ्रष्टाचार कौ मिटाऔ, दुराचार क्यौं बढायौ है।
एक बनौ नेक बनौ, भारत समाज बन्धु,
'भँवर' सुराज आज आन्दोलन चलायौ हे ।।

-यो तौ 'भँवर' नै अपनी रचनान के माद्धिम ते राष्ट्रीयता कौ भारी बिगुल बजायौए और पुरानी अरु नई दोनो पीढिन कूँ खूबई उद्बोधन दियौए अरु बि-नै चीनी आक्रमन, पाकिस्तान कूँ चुनौती, तीस जनवरी, बग सघष और बण सघष पैऊ अपनी चलाइए और राजस्थान की महिमा कौ सुघर बखान कर्‌यौए जिन सबन की बानगी स्थानाभाब के कारन -हा दैबौ सम्भव नाए पर अ-त मे बिनकी 'भारत की आरती' की कछू पक्ति राष्ट्रभक्ति अरु राष्ट्रीयता के सचार की दष्टि ते न्हाँ पै उद्धत करनौ समीचीन होयगौ—

मेरी माता भारती, हिमालै कण्ठ धारती,
ब्रह्मपुत्र विस्तारती, गगाजी कूँ प्रसारती ।
मेघन उतारती, सरोबरन धारती,
पबन थहारती, तू बनन बहारती ।
सुमारुती चलत, षट ऋतुन बिहारती ।।

धन धान धारती, सुफल, फूल वारती,
तू स्वग भूमि भारती, उतारूँ तेरी आरती ।

□

सव धम धारती, निष्पक्ष धम भारती,
तू विश्व धम भारती, उतारूँ तेरी आरती ।

□

दुष्टन विदारती, अनिष्टन को तारती,
तू वीर भूमि भारती, उतारूँ तेरी आरती ।।

भँवर अपनी तरिया के भरतपुर अचल के लोकप्रिय रचना धर्मी एँ । बिनकी कविता बहु आयामीएँ । जि कह्यौ जाय तौ कोई अतिसयोक्ति नाय होगी कि बिनकौ काव्य एक ऐसौ सुगंधित हारैअ जामे सामाजिकता, आध्यात्मिकता, एकता, अखण्डता अरु राष्ट्रीयता के मनभावन पूरे बिकसित सुमन बहुतायत सौ पिरो दिए गये एँ ।

□ हीरालाल शर्मा 'सरोज'
पुरोहित मोहल्ला,
भरतपुर (राजस्थान)
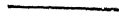
समाज सुधारक कवि भँवर स्वरूप भँवर

सिरी भँवर स्वरूप जी 'भँवर' कौ जनम भरतपुर जिले की रूपबास तहसील के अधियारी गाम मे 30 जुलाई 1914 कूँ भयौ। पिता सिरी प्रहलाद प्रसाद। भँवरजी स्वतन्त्रता सग्राम के सन 1938 तेई साचे सिपाही रहेये। सन् 1939 और 1947 के आ दोलन माहि आप कैउ बेर जेल है आये है। अब वे अपने गाम मे रहके अपनी खेती-बारी की देखभार करै। बिन्ने अपनौ परिचै या प्रकार दियौय—

'ग्राम अँध्यारी भरतपुर, भँवर कियौ कृषि धन्ध।
पढ्यौ न जान्यौ कवित्त रस, छ द निब ध प्रबन्ध ॥'

भँवर जी ने अपनौ कवि करम ल्हौरी सी उमरि मेई सिरू करि दियौ परि स्वतन्त्रता सग्राम माहि कूदि परिवे के कारन कछु व्यवधान आयो अरु कछु नई प्रेरनाऊ मिली। सौ भौत तौ नही लिख्यौ गयौ परि जो कछू लिख्यौय बू सामान्य जन तें जुरयौ भयौ अपनी धरती ते निपज्यौ भयौय। या कारन इनके विषय गामन ते जादा जुरे भये ऐ। ब्रजभासा की उपेच्छा ते ये सदाँ चिन्तित रहेऐ।

भँवर जू की कविता कुरीति अरु बुराईन ते भरे समाजे सुधारिबे के ताई लिखी गई है। हम अग्रेज शासक ते तौ स्वतन्त्र है गये परि अपनी बुरी आदत अरु बुरे सुभाव तें हम मुक्त नही भये। कुरीतीन पै करारे प्रहारन्ने अरु उपदेश भरी कवितान्ने पढिके तौ ऐसौ लगै मानौ कोऊ भक्ति काल कौ कवि आय ज मौ होय।

आज हमारे समाज माहि धन की बरबादी, बिरथा के खरच दहेज छुआछूत, नशा की टेव, नारी उत्पीडन, अनाप सनाप परिवार, बाल ब्याह, अनमेल ब्याह, विधवान की दुदशा, डुकरिया पुरान अरु अन्ध विश्वास, पाथर पूजा, पुजारी, पडा, स्याने भोपेन की

लूट, चोर बर्जारी, रिस्वत खोरी (घूँस खोरी) प्रदूषन कौ दानव अरु इन सबन के कारन पतन के गढडा मे जानी भई भारतीय सस्कृति, नये नये फैसन जैसी भौत सी कुरीति दिन दूनी रात चौगुनी है रहीये। ये समस्या सिगरे देश की है।

'भँवर' जी कूँ अपनी ज्वानी मेऊ कोउ विरथा खरच कौ सौक नाय रह्यौ क्योंकै यामे पैसा अरु समै के सग-सग शरीर तौ छीजैइयै सगई जीवन नरक सौ बन जाय। वे तौ सब बातन ते अपने मने खैंचिकै कविता करि करि के मन बहलामते अरु अपने समै कौ सदुपयोग करते अरु ऐसौई वे दूसरेन सौ चाहते। अपने 'हिंद सुराज' माहि बिन्ने सिरु मेई लिख्यौय—

स्वाग सिनेमा मे सबै, करौ न धन बरबाद।
कविता हिंद सुराज कौ, चाख्यौ बढिया स्वाद॥

प्रगतिशील अरु आधुनिकता के नाम पै लोग अपनी पुरानी सस्कृति अरु सभ्यताय छोडिके दूसरे के बाप ते बाप कहबे लगि गये ऐ। दूसरे देसन ते नये नये फैसन आय रहे य अरु हमारे ज्वान बिना सोचे समझ बिने अपनाय रहेऐ या प्रकार हमारौ देश पतन के गढ्डा मे गिरतौ चल्यौ जाय रह्यौय भारत अब भारत सौ नाय लगै ऐसौ लगै जैसे इगलिस्तान के भूखे बिडरे लोग आय गये होय फसन के अन्ध कूप माहि जाते भये ज्वानन कौ चित्रण भँवर जू ने या तरिया करयो—

बिबिध सिंगार करै, बार बने हिप्पीकट,
डाडी मूँछ अट्ट-पट्ट, पीबै सिगरेट है।
नए नए सूट बूट, साकाहार झूठ मूँठ,
बैड टी डिनर, मद्य, मीट भरपेट है॥
छोरा छोरी भेद कछु, 'भवर' ना जा यौ परै,
तहमद जनाने से लगाय जात लेत है।
नारि रूप नर है कै नर रूप नारि है,
अद्ध नर नारी ते, भलौ सी लागै भेट है॥

अपनी अनेकन कवितान माहि भँवर जी ने या प्रकार विरथा के खर्च की और भद्दे भेस कौ, बुरे व्यौहार कौ, औधे सूधे, टैम-कुटैम खाइबे पीवे कौ विरोध कर्यौय। इन नये फैसनन ने खायवे पीवे ते समाज माहि अनाचार अरु चरित हीनता बढि रहीऐ। मधुर सम्बन्ध टूट रहेऐ आपस माहि विसवास टूट रह्यौय। ज्वान निखट्टू अरु निकम्मे होते

जाय रहेये जो अपने मैया बापन कूँई समस्या नाय बनि रहे सिगरे देश की समस्या बनि गयेऐ । फैसन अरु खायवे पीवे के चक्कर मे फँसि कै छोरा छोरी पढिवेय छोडि गये अरु काम तेउ मुँह मोरि गये । हम भौतिक सुखन कै पीछे आखि बाधि के भागि रहेऐ । भँवर जी की इन विषयन मे नेकऊ रुचि नाय सो वे लोग ने सचेत करिबे के ताई सदा जतन शील रहेऐ ।

लोगन्ने विरथा धन गमायवे कौ कछू भौतई सौकै । ब्याहु मे अन्धाधुन्ध जेवर बनबामे धूमधडाकौ करिवे के ताई ऊँचे ते ऊँची बाजे की जोट लै जाय, बढिया ते बढिया नोटकी की मडली, निकासी के ताई हसन की मोटर, ऊँची ऊँची कीमत के कपडा चाय बिन्ने दूल्हे दुलहन एकई दिना पहरै परि लैजायें दुनिया भर के लोगन कूँ भोजन करामे अरु चाय काउ भाव मिलै सामान खरीद डारे । घर मे नई होय तौ काउ पै ते कज लैके करे । भँवर जी ने या विरथा खरची पै करारी चोट करीयै—

ब्याह होय याही साल, चढै जेवर जडिया सौ ।
धूम धाम ते आयौ, लाऔ नाटिक बढिया सौ ।।
बुद्धू रह जाय दग देखिके ब्याह बिशाला ।
हसन की होय कार बैठकै निकरै लाला ।।

औरऊ देखौ—

सबके बढि गये भाव कपट चादी सोने मे ।
रुपया तीस हजार लग्यौ सादी होने मे ।।
खेत कुआ बिक गये कज मे पिस रहे लल्ला ।
बेटा ब्याहौ खूब हुऔ बुद्धू कौ हल्ला ।।

इतेकई नाय, जीमत तौ मैया बापन कूँ पानीउ नाय पिवामे अरु मरे पै गगा की धार मे बहामे, जीमत तो भरपेट भोजनउ नाय करामे बिचारौ कुत्ता की नाई पौरी मे पर्‍यौ रहै अरु मरे पै सौ-सौ मन चून करै, जीमत तौ बीमारी कौ इलाजउ नाय करामे दवाईन के पैसाऊ नाय खरचै अरु मरे पीछै तो हियौ खोलिके धन लुटामे । मृत भोज की या बुरी पिरथा पै विरथा के खरच की भँवर जी ने भौत भत्सना करीयै—

बुद्धू पै विपदा बहुत, बाप हुऔ बीमार ।
बिना दवाई मरि गयौ, खर्चा ते लाचार ।।

खर्चा ते लाचार फूल गगा मे डारे ।
पडा कहे रिस्याय, दच्छिना धरि जा सारे ।।
कह रहे भैया बन्धु मरै नाय फिर-फिर दद्दू ।
दस मन होयगा चून, सनाको खाय गयौ बुद्धू ।।

या तरिया के मृत भोजन माहि कोऊ भलमनसाई नाय मिलै । धन तौ विरथा खच होयइयै सगई बुराई और मिलै । लोग भोजन मे कमी निकारिबे मे नाय चूके फिरऊ जादा चरि मरै बीमार है जाय । हैजा है जाय । परि छोडे नाय । गर्मीन ॰ दिना धौरे धौपरे धूप मे बठे धापके जै रहेये । तेल, डालडा, आलू, काशीफल का खाइबौ नुकसान तौ कहैइगौ । यामे कौन कौ दोसै । लोग चालनी मे दूध काढ अरु करमन कूँ दोष दे । अरे भैया औ माल परायौय तौ का पेटउ परायौय भँवर जीने खूब ललकारि के कहीयै—

आये नातेदार समारिके बैठै बुद्धू ।
पेट ढोल है गयौ हटै नाय तौउ भोदू ।।
घास लेट घर्राय पाद सग आवै आलू ।
कछु हैजा करि मरै करे फिर पूआ चालू ।।

अब इतेक समझायबे पैउ कोऊ नही माने तौ यामे भवर जू का कहा खोट ।

देश माहि चोर बजारी की बुराई बुरी तरिया बवर रहीयै । सरवव्यापी है रहीयै । व्यौपारीन कूँ नेक औसर मिल्यौ नई कै भावन्ने बल्लीन बढाय दे, आसमान पै चढाय दे । नेक माल रोकि लियौ, सोई दिन दूनी रात चौगुनी आमदनी होय । भवर जी नें अपनी कविनान मे अनेकन ठौरन पै या बुराई माऊँ इसारौ करयौय—

हल्ला साहेन कौ मच्यौ, सबकौ लगि गयौ दाव ।
कपडा चोनी डालडा, सबके चढि गये भाव ।।

चलो ये तौ औसर कौ लाभ उठाम परि भौत से तौ आढे दिन नाय चूके अरु धौरे धौपर आखिन मे धूरि झोके—

पानी मिलमा दूध मिलावै कछु सपरेटा ।
चीन डारै खूब चतुर व्यापरी बेटा ।।

अरु फिर भवर जी पैते बिलैक करिबे बारे कहाँ रह जाइ गे—

जो करि रहे बिलक खेचि रहे दो नम्बर पैसा।
उनते कैसे बात करि सकै कोई ऐसा वैसा ।।

व्यौपारीन मेई नाय ई बुराई, दफ्तर दफ्तर मेऊ फैलि रही यै। जहा कछू काम करिवायवे जाओ बिना पैसाय कामई नाय होय। भँवर जी ने चोरन की रपट कराई। अपनी कविता मे साचौ चित्तर खेच्यौय। थाने मे जब चोर की रपट करायबे जाय तौ थानेदार चोर पै ते घूस खाय जाय रपट करायवे वारेन ते नर्रो नर्रो बोले, नशा करिकै उल्टौ रपट करवैया के मूड पैई थोप दे उल्टौ चोर कोतवालै डाटिवे,लगि जाय। बिचारे रपट करैया कू लैवे के दैवे परि जाय अरु पास ग्बाय भागनोई परै। ऐसी समाज सेवा कौन करैगौ। या बुराई ते हमारौ देश गढडा मे गिर रह्यौय—

घूस बिना नही काम करै कोउ काहू को,
माने नही अनुशासन।
मरि जाओ चाहै दम घोटि उसासन ।।

दहेज कौ दानव या समाजै खाय ई जाय रह्यौय अरु हम अपने मूडै बाहे मुह मे उरसैई जाय रहेये। छोरा चाय पढिबे मे कैसौऊ होय, सबरी पढाई कौ खर्चा बेटी वारे पै तेई लैनो चाहै अरु लाला के सिगरे सौक बेटी वारे के माथेइ मढे जाय। भँवर जी नें यापै अपनी कलम खूब खर खराइयै—

पढिवे मे बुद्धू भवर चटक मटक मे तेज।
मोटर फटफट रेडियो, मागै खूब दहेज ।।

औरउ— नौ दस दर्जा पास सगाई वारे आवै।
मागै बीस हजार लौट सब वापिस जामे ।।

दहेज के मामले मे सबन कौ एक सौई रागै चाय कोउ जाति होय। कसरि कोऊ नाय छोडै। हिन्दू समाज की बारहमासी माहि भवर जी ने लिख्यौय—

'पाप कर रहे बामन बनिया।
चालू कियौ दहेज बाबडी कर दई सब दुनियाँ।'
लखमी चन्द किरोडीमल बिडला के क्या कहने।
टटपूज्या हू मागि रहेये नकदी और गहने ।।

चोरन की सी लैत फिरोती सेठन की टोली ।
अपने अपने पुत्रन की बढवाय रहे बोली ।।

इतेक सपाट ब्यान भवर जी यै छोडि कै और कौन करि सकै । या दहेज के कारन भौत सी मुनिया बिचारी कै तौ क्वारी रह जाय नई तौ ब्याह विलम ते होय अरु बाउ मे बाप बिलबिलाय जाय । बेटी अरु बेटी के बाप कौ कितेक जी दूखतौ होयगौ या बाते कै तौ बेई जानै अरु कै भवर जी जानै ।

नशा की बुरी टेव सिगरे ससार माहि फैल रहीयै । और देशन माहि तौ नैतिक रूप ते इतेक बुरौ नाय मान्यौ जाय परि हमारे देश मै तौ याय बुरी दीठि तेई देखे क्योकि ई सब तरिया ते बरबादी की सामायै । भॅवर जी या कुरीति ते भौत चिन्तितै । बि ने अपनी हिन्दू समाज की बारह मासी खुलासा करिके लिख्यौय अरु ऐसे लोगन की बडी भारी भत्सना करीयै । सराब के नशा की बात तौ दूर रही वे तौ चाय बीडी अरु पान के नसाउयै पसन्द नाय करे—

'नसाबाजी सत्यानासी,
अपनेई हाथन लगा रहे है आप गरे फॉसी ।
कोऊ पान चबाय थूक की मारै पिचकारी ।
दातुन करते नाय कटे ज्याते सब बीमारी ।।
कोऊ पीवै चाय टैम ते चूल्हौ सिलगावै ।
पीवै गरमा गरम बाल बच्चेन मुख भुरसावै ।।
अपने गरे

कोऊ भगडी घोटि भग के गटकि जाय गोला ।
ज्ञान बावरे फिरै पुकारै हर हर बम बम भोला ।
अपने गरे

कोऊ खाय अफीम नीद की लगी रहै झपना ।
टट्टी उतरै नाय बैठ माथौ ठोकै अपना ।
अपने गरे

बीडी गाजे सुलपा के कोऊ लगाय रहे लुक्का ।
दै मुँह मे झूठे हुक्का करि रहे थुक्कम थुक्का ।।
अपने गरे

दमा कैंसर टीबी बनि जाय कैसी मति नासी ।
खो खो खो खो करै उठै जब जोरदार खासी ।।
अपने गरे

करै शराब खराब बनै इसान कुकर मुत्ता ।
दारु पी गिर परै मूत जाय म्हौडे पै कुत्ता ।।
अपने गरे

भारत मे तीसन करोड रुपया कौ नित खर्चा ।
गन्दी आदत छोड, भवर के पढि लीजै पर्चा ।।
अपने गरे

ऊँच नीच कौ भेद अरु छुआछून समाज कूँ गढ्ढा मे लै जायगी ई हमारे समाज पै लग्यौ भयौ कलकै । ई समाजै छीन करिबे नाई क्षय कौ रोगै । इन बुराईन ते मासि मासि कौ मन फटि जाय । ऊँचे वगन कै लोग नीचे के वगन के मासिने नीचौ समझि कै बिनके सग अ याव करे । सोई मन मुटाव बढतौई चल्यौ जाय । भँवर जी ने या बुराई कौ अपनी कलम ते विरोध कियौय । एक शब्द चित्र खेंच्यौय कितेक मार्मिकै—

'नॉय घर मे टपकाऊ पानी ।
सबके हा हा खाय कुआ पै खडी महतरानी ।।'
बोल्यौ एक रिसाय कै इनके हड्डान्नै तोरूँगौ ।
छोरेऔ लठिया लाऔ दारी के चपटाय फोरूँगौ ।।
बात सुन सुन के थर्रानी । सबके हा हा खाय
'एक बूढे ने कही दोस कछु नाय बिचारी कौ ।
इनकूँ सिरी लगा रह्यौ है भँवर अँध्यारी कौ ।।'

महतर बिचारौ चाय प्यासौ मरै परि न तौ बाय कुआ पै चढन दै अरु न बाकूँ कोऊ पानी भरै । ऊपर की कविता मे याकौ पूरौ चित्र खैंच्यौय जो पाठक के हियै पै छाप छोडे बिना नाय रह सक । बडी मुस्किल ते एक बुढिया कूँ दया आय जाय सो एक बालटी पानी डार दे । बिचारी उचै कैसे ? बडी कठिनाई ते जैसे तसे उचि के घर आई अरु बच्चन कूँ पानी प्यायौ । बिचारे महतर टट्टीन के मैल ढोय नीच भगी होवै है भँवर जी ने या विसै मे सन्देशौ या प्रकार दियौय—

जाति पाति के नाम पै क्यो रहे बैर बढाय ।
एक पितगा आग ते, गाम भसम है जाय ।।

-यौ तौ भारत के पुराने ग्र थन माहि नारी कूँ देवी मा यौय अरु बू पूज्य मानी गई यै मनुनौ तौ–

यत्र नायस्तु पूज्य ते रम ते तत्र देवता ।

कहके इतेक ऊँची उठाय दईयै कै बस पूछौई मति । परि व्यौहार माहि जब हम देखे तो स्थिति कछु औरई यै । पुरुष वाय अपने पाम की प हइयाँ मानि के चले, नेक काउ ते बतराय लै तौ वाय कलकित करै । या बुराई कौ चित्र भवर स्वरूप जी ने बिना पानी की जिन्दगानी कविता मे खेच्यौय । बिचारी महतरानी नौ दस छोरी छोरान कूँ जनम देवै, बिनके पेट ने भरे, कुआ पै ते जैसे तैसे पानी लायकै पिवावै फिरउ बाकूँ भलमनसाही नाय मिलै बाकौ धनी बाके कालिख और लगावै–

भरि लोटा लै गई पती नै हक्कानी छोडी ।
कब के प्यासे मरे कौन त बतराय रही घोडी ।
उतरि गयौ आखिन कौ पानी ।
सब के हा हा खाय कुआ पै खडी-खडी महतरानी ।।

लोग भूखे मरै । अपने पेटन की तौ पारउ नाय परै फिरऊ बिना सोचे अरु बिना रोके परिवारै बढामतई जाय रहे यै । ई एक ऐसौ विस्फोटै जौ देस तौ कहा दुनियाय भसम करि देगौ । भवर जी नै ऐसे लोगन कूँ चेतावनी दईयै–

ज्यादा वच्चा पैदा करि क्यो मरि रहे बाझन ,
जा किसान के वट म धरती दस बीघे आई,
पाच-चार छोरन प रह जाय बीघे दो ढाई ।
जो कारीगर मकान चिनवे काहू कै जावै ।
पन्द्रह मोलह बीस रुपैया नित मजदूरी लावै ।।
तऊ रहता भव ब धन है ।

बाल-ब्याह अरु अनमेल ब्याहन की पुरानी परम्परा रहीयै । स्वामी विवेकान द नेऊँ अपने एक वक्तव्य माहि कहीयै–हि दून ने एक बुराई (लडकीन की इज्जत बचायवे ताई) ते बचबे ताई दूसरी बुराई (बाल ब्याह) कौ सहारौ लियौय । गामन मे ब्याह की बडी उत्पात रहै–

लाला सोलह साल कौ लाली सत्तरह साल ।
बेटी बारौ यौ कहै ब्याह होय याही साल ।।

भारत माहि विधवान की तौ भौतई बुरी हालतै। बाल विधवाय देखिकै तौ जी ऊपर कूँ आवै हियौ भरि सौ आवै। बिनके पुनरब्याह ताई भँवर जी ने आ दोलन छेडे-ग्यौ। इनकी दीन दशाय देखिके बिनकौ हियौ पसीज्योय नाय आठ-आठ आसू रोयौय—

इन दीन दुखियान की समस्या कैसे सुरझै।
ब्याह है गयौ रे परि गोनौ नाय भयौ रे।।
दूलह पहलेई छोडि गयौ रे,
समस्या कैसे सुरझै।।

ज्यो ज्यो मौसम माहि मादकता आवै चाय सामन की ठडी ठडी फुहार होय चाय सरद पून्यो की चाँदनी होय अरु चाय बन मे बसन्त बगर्यौ होय, बिरहिन विधवा के मन माहि जो बीतै वाय भवर जी अच्छी तरह जाने अरु अपनी कविते बहाने बखाने। जब सीरी सीरी पुरवाई ब्यार चलै तौ बिचारी बाल विधवा की छाती पै चाखी सी चलै परि फिरउ नाय हलै। जाने कैसे कैसे छाती पै पत्थर धरिके दिनान्ने फोरै परि फिरउ मरजादै नाय तोरै। इन पुराने विचारन के हुक्या पच ने कौन समझावै ज्याते कोऊ इन ते नेह लगावै। बच्चापन तेई बिरहा की बीजुरी ते मारी भई न घर की रहै न घाट की। वाय कोऊ तौ नाय झेलै बिचारी कौ जीवन नरक बनि जाय—

बेटी विधवा है गई रही बाप घर आय।
माता पिता अति दुखित है बुद्धू रहे सिहाय।।
बुद्धू रहे सिहाय, इसारेन मे बतरायबे।
आगि फूस कौ बैर कहा लौ समझामे।।
पुनर्ब्याह मे नाक कटै समझे कुल हेटी।
सधवा फूली फिरै। दुखी है विधवा बेटी।।

लोग बिना बिचारे मन्दिर माँहि पाथर पूजत रहै अरु सजीव मूरत जि मानुस टूक टूक कूँ तरसतौ रहै परि कोउ कान नाय धरै अरु भूखौ प्यासौ काउ कौने कुचारे मे जाय मरै मगता कूँ तौ एक चुटकी की चूनउ नाँय डारै अरु पडा, पुजारी, स्याने भोपेन कूँ खवामे। भवर जी ने इनकी भत्सना कबीर की नाँई करीयै। ये पडा पुजारी तौ भगवान उऐ कद मे डारि दे—

साई परम स्वतन्त्र तुम राम चद्र रघुनन्द।
नन्द नन्द आनद कद क्यो हवालात मे बद।।

हवालात मे ब द गुसाईं तुम को राखै।
वे सब भोगे भोग तनक तुम क्यो नाय चाखै।

अरु तीरथन माहि कहा अनीनी है रहीयै मानो नौ तीरथ पण्डान के पुरखान की जागीर होय। जामे तौ गगा जी बि ने खरीद लइयै। एक चित्र—

खर्चा ते लाचार फूल गगा मे डारे।
पड्डा कहै रिस्यय दच्छिना धरिजा सारे।।

इतेकई नाय या समाज माहि भोत से अ ध विसवास काउ लिखित पुरान मे तौ नॉय परि डुकरिया पुरान मे तौ खूबई भरि रहे्ये। ई डुकरिया पुरान महा पुरानन तेऊ बडौ मह। पुरानै ज्याके आगे काउ की चौ नी नाय चलै। भवर जी ने इनके विरोध मे अपनौ सुर गु जाऔ, सब क्छू कह्यो जो बिनके मुँह पै आयौ अरु अपनी कविता मे खुल्ले सबदन मे गायौ—

धेला पैसा ते अलग बाबा नगादास।
म दिर पै धूनी रम सबई नमामे माथ।।
सबई नवामे माथ हाथ चरनन पै धरिकै।
बिन पूतन की नारि चूरिमा लै जाय करिके।।

इन सब अन्ध बिसवासन कौ कारन है डुकरिया पुरान—

गीता रामायण पढौ, चाहे पढौ कुरान।
कान सबन के काटती, इक डोकरी पुरान।।
इक डोकरी पुरान सबन कूँ सीख सिखाती।
ब्याह करौ चाहै मरौ सब जगह टाग अडाती।
भँवर पुजाए भूत, अ ध विश्वास बढाए।
दरिया बुस्यौ खबाय, सेडते पुत्र बचावे।।

बाजार, बस्ती अरु घरन माहि फैली भई गदगी मेउ दूर करिबे ताँईं भँवर जी ने आन्दोलन कर्‌यौ। हलवाई की दुकान पै गदगी देखिके कवि पै बोले बिना नाँय रह्यौ गयौ। खुली मिठाई पै बैठते मॉखी माछरनै देखिके बि नै उ गरिया उठाइयै—

भाति भाति मिष्ठान्न इमरती बालू साही।
दिन भर माखी परै मैल की जमि जाय स्याही ॥

ठौर ठौर पै भन्नामती माखी ने देखि के बिनकौ माथौ भन्याय वे लगि जाय।

अन्त माहि सछेप मे कह्यौ जाय सकै कै सिरी भँवर स्वरूप जी 'भँवर' एक लोक कवि के रूप मे उभरि के आमे है जिनकी कविता गामन की गलीन मे पनपीयै सो जन जन के जीवन ते जुरी भईयै। लोक माहि बुराइन ते भरे पिटारेय,खाली करिवे ताई वे सदाँ कबीर की नाई सघष करते रहे। लोग चाहै कितेकऊ रिस्याये परि वे काऊ के हाथ नही आये। बिनकी कबीर की सी सपाट बयानी अरु रहीम की सी बात सयानी देखिके ऐसो लगै कोउ भक्तिकाल के कविन्नै मिलके जनम लै लियौ होय।

☐ मेवाराम कटारा
36, जसव त नगर
प्रदशनी माग,
भरतपुर–321001

सत कविता सजीवनी

ब्रज की समकालीन कविता हू परपरा ते बिच्छिन नाय है सकै । परपरा के अजस्त्र स्रोत ते ऊजा ग्रहण करिकै ही ब्रज के समकालीन साहित्य की धारा कौ आगे विकास होयगौ । परपरा मे हू सिगरी परपरा स्वीकाय नाय है सकै । ब्रज साहित्य मे एक धारा रीतिकालीन दरबारी कविन की है तौ चारण भाटन की हू एक धारा है । दूसरी ओर तुलसी-सूर-कबीर जैसे लोक पक्षधर कविन की महान परपरा है । ब्रज साहित्य कौ आधुनिक काल भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ते सुरु होय जिनै अपनौं सपूचौ काव्य ब्रज मे रच्यौ । बिनके काव्य मे अपनी महान परपरा ते सार समाहित है तो आधुनिक युग की सवेदना कौ बोध समायौ भयौ है । समकालीन ब्रज साहित्य कौ विकास भारतेन्दु ते अब तक फैली भयी कविता मे देख्यौ जाय सकै । यामे लोक पक्षधर कविता की धारा ही मुख्य धारा ही मुख्य धारा है यई सत कविता है । दरबारी काव्य अर चारण-भाटन की चाटु-कारी काव्य काल के गाल मे समाय गयौ । सत कविता आजऊ समाज कू सजीवनी बनी है ।

समकालीन ब्रज के वरिष्ठ कवि भवर स्वरूप 'भवर' की जीवन याई सजीवनी सत कविता कू समर्पित रह्यौ है । बिनके काव्य-बोध मे भक्ति काल ते लैकै अपने पूववर्ती कवि गिर्राज मित्र तक की सिगरी परपरा समायी भयी है । यामे रसखान, पद्माकर अरु सुन्दरदास हू है । भँवर कौ जीवन अरु सृजन जन-जीवन के बीच दुख-सुख, कष्ट-सघष जीते-काटते बीत्यौ है । 'भँवर' लोक पक्षधर कवि है, जिनको लिखौ एक-एक आखर सार भरौ है ।

भवर एक आन्दोलन धर्मा रचनाकार है । पैलै वे आय समाज के सुधार आन्दोलन मे दीक्षित भये । फिर विन के मन मे क्रान्तिकारी बनवे की ललक जगी अर कलकत्ता तक है आये । याके पाछै गाधीजी के प्रभाव मे ऐसे आये कै पूरी आस्था ते बिनके सिपाई

बन गए । देश कूँ आजादी मिल गयी पर भँवर ने अपने आन्दोलन की इति श्री नाय समझी । बिन्नै विश्व बधु समाज बनायकै सुधार सग्राम जारी रख्यौ । बिनके मन मे अरु ब्रज के मबध कूँ लैके कोऊ द्वद्व नाय । वे हिन्दी के विकास मे राष्ट्रहित अरु ब्रज के उत्थान मे लोकहित मानें । हिन्दी के आन्दोलन मे हू वे सतत सक्रिय रहे है ।

भँवर पै भक्ति-आन्दोलन के जीवन मूल्य अरु आदशन कौ प्रभाव ई है कै बिनमे धार्मिक सकीणता नाय । वे साम्प्रदायिकता के खिलाफ हे अरु उदार धार्मिक प्रवत्ति के पैरोकार है । गाधी जी की धार्मिक सहिष्णुता बिनके काव्य-बोध की अभिन्न अग बन गयी है । रसखान बिन के प्रिय कविन मे एक हैं । गीता कौ बिन पै गहरौ असर है । पर गीता की व्याख्या बिन्नै लोकमान्य बाल गगाधर तिलक के 'गीता रहस्य' ते समझी है । तिलक कौ ई भाष्य स्वतत्रता आन्दोलन के दिनन मे जेल मे तैय्यार कर्‌यो गयौ अरु कैसो अजब सजोग रह्यौ कै भँवर ने ई किताब जेल मे ही पढी । विनकौ गीता कौ अध्ययन स्वतत्रता सग्राम के एक योद्धा कूँ प्रेरक-जोत बन्यौ । वे गीता कूँ धमयुद्ध को ऐसौ शास्त्र मानै जो मानव मुक्ति कौ अभिप्रेत ह ।

विनने गीता ते धम कौ ई सार गह्यौ है—'सव धम परित्यज्य मामेक शरण ब्रज' । भँवर ने अपनी कवितान की इकली पुस्तिका 'हिन्द सुराज' के कवर पै गीता के या उद्धरण कूँ दैते भये याकौ भावानुवाद छाप्यौ है–'धम भेद तजि, एक ब्रह्म भजि ।' बिहारी हू भवर के एक प्रिय कवि हे पर बिन नै बिहारी के रीतिबद्ध दोहे पसद नाय । भवर ने बिहारी के कृष्ण-भक्ति पै रचे दोहान की कुण्डली बनायी हे । इन दोहान के नायक कृष्ण कौ रूप प्रेमी कौ हे । भवर की कुण्डलियान मे नायक कृष्ण लौकिक है गये हे । एक कुण्डलिया मे भवर सृष्टि-सजना की व्याख्या यो करे– निराकार वट बीज प्रकट ससार कियौ त्यो ।' भवर धम अरु ईश्वर की व्याख्या जीवन-जगत विवेक ते करे–अणु, पिण्ड, ब्रह्माण्ड मे शक्ति अखण्ड प्रचण्ड गुरुत्व महेश्वर ते ।' याई व्याख्या मे आधुनिक उपमान हू शामिल है जामे–'नभ वल्ब समान ह भान जडे ।'

विवेक के धरातल पै निर्मित भवर के या काव्य बोध कौ ही ई प्रतिफल है कै वे सूर की तरह अपने भजनन मे आत्मालोचना प्रस्तुत करै । 'मेरौ मन भयौ विषयन कौ चेरौ' अरु 'एक दिन यह तन धरनि परैगौ' जैसे भजन जीवन की नश्वरता कूँ मामेई रखकै मानुष ते क्षुद्रता नै त्यागवे कौ अनुग्रह करै । ये भजन सूर के पद अरु तुलसी की विनय-पत्रिका की सहज मे याद दिवाते भये भँवर की क्षमता कौ अहसास करावे । दूसरी ओर भवर ने धार्मिक आडम्बर, कमकाण्ड अरु अधविश्वासन पै कबीर हाई प्रहार करयौ है ।

वतमान मे मन्दिरन की हालत पै भवर की टिप्पणी है —

हवालात मे बद गुसाई तुमको राखे ।
वे सब भोगे भोग तनक तुम क्यो नाय चाखै '

पुजारी सब भोग भोग रहे हे । बिनकौ चरित्र पतनग्रस्त हे गयौ है । भगवान मदिर मे कैद हे । कहू 'बाबा नगानाथ' अपनौ चमत्कार दिखाय रहे ह । बिन पूनन की नारि' बाबा नगानाथ कूँ चूरमा लै जाये । बाबा नगानाथ चेलान के सग भग अरु गाजे कौ सेवन कर सत्सग करे । समाज मे नशेबाजी अरु दुष्प्रवति नै रौकने की जगह ये मदिर अरु ऐसे बाबा उल्टे जादा फैलाय रहे है–'ज्ञान बावरे फिरे पुकारे हर हर बम भोला ।' समाज मे व्याप्त अध विश्वास के बलबूते पै बाबा नगानाथ फल फूल रहे ह । अनपढ, वद्धा इन रूढिन नै पोषित करती रह । भवर नै या 'डोकरी पुरान' की भत्सना करी ह जाने वेद शास्त्र, रामायन-गीता सब ठप्प कर दीने हे–'भवर पुजाये भूत अध-विश्वास बढाये । वतमान मे फैने साम्प्रदायिकता के जहर कौ एक बडौ कारण समाज मे व्याप्त ये अध-विश्वास अरु अध श्रद्धा ही है । भवर साम्प्रदायिक सहिष्णुता कौ सदेश दैवे–

'हि दू मुस्लिम भाई जान । काबा-काशी एक समान ।'

ममकालीन ब्रज की लोक पक्षधर कविता के के द्र मे किसान होयगौ । किसान के इद-गिद ही सिगरे लोक-जीवन की व्याप्ति है । ब्रज के आधुनिक कबीर कहे जायवे बारे कवि गिर्राज 'मित्र' कीं कवितान के केन्द्र मे हू किसान ही है । भवर स्वरूप मित्र की अगली पीढी के कवि है । इन दोऊ कवीन के रचनाकाल मे कस्बा अरु देहात के जन जीवन, सस्कृति अरु रहन-सहन मे कोऊ जादा भेद नाँय पैदा भयौ । या दौर तक मीडिया कौ जादा असर हू समाज पै नाय पर्यौ । इन कवीन कौ अध्ययन करते बखत ई परिप्रेक्ष्य हमे ध्यान मे रखनौ परगौ ।

भँवर किसान-वग कूँ समाज की रीढ मानै । वे लिखे–

'धन्य किसान समाज कौ, भरै जो सबकौ पेट ।
अन्न बिना सब सुन्न जग है जाय मटियामेट ।।'

कवि भँवर ने पैलै देख्यौ कै देश जब तक पराधीन है, देश की जनता कौ जीवन अरु भविष्य नाय सुधर सकै । देसी सामनत द्वारा कियौ जा रह्यौ जनता कौ शोषण हू भवर की आखिन ते ओझल नाय भयौ । प्रजा मण्डल द्वारा चलाये बेगार-विरोधी

आ दोलन मे हू भँवर ने बढ चढ कै हिस्सा लियौ अरु जेल गये ।

देस कूँ आजादी मिल गयी तौ भवर ने पायौ कै निरक्षर समाज तौ तरह-तरह की रूढिन ते ग्रस्त है । ऐसी हालत म विकास कौ कोऊ काम सभव नाय है सकै । जाकौ विकास करनौ है जब तक बू खुदई उठवौ नई चाहवैगौ, तब तानूँ कैसे कछु है सकै । याके काजै भवर ने एक बगल तौ विश्व बधु समाज बनाय के समाज-सुधार की मुहिम चलाई । दूसरे अपनी रचनान ते समाज म सुधार अरु विकास की चेतना कौ अलख जगायौ । ई परचा अरु रचना कौ मिल्यौ-जुलो अभियान हौ । सुधार आ दोलन कोऊ आसान काम नाय । ई बिनै आसान लगै जो कोरी बात बनामते रहे पर व्यवहार मे एक पाव नाय चले ।

भवर की प्रसिद्ध कविना है—'बिन पानी की जि दगानी ।'

जात-पात हिन्दू समाज को अभिशाप है । सब जातन मे नीची जात के हरिजन हे । ये गाम ते बाहर रहमे । इनके काजै पानी कौ कोऊ कुआ नाय हतौ । बिचारी महत-रानी अपने मटकाय भरवावे कूँ कुआ पै बैठी घटान गिडगिडायौ कर ही । भॅवर को ई कविता समकालीन ब्रज मे 'कलासीकल' महत्त्व की रचना है । भवर या सब ते जादा निम्न स्तरीय समाज के पक्षधर बनके उभरे है—'इनकूँ सिर्री लगाय रह्यौ है 'भवर' अँधियारी कौ ।' ब्रज की आम बोल चाल के शब्द सिर्री कूँ या कविता ने एक नयौ अथ दे दियौ है जो कवि कम के एक नय आयाम कूँ खोलै—'चेतना फलायबे वारौ आदमी ।' भवर की तीक्षन दष्टि नै हरिजन महिला कौ दुहरौ शोषण हू पकरि लियौ है । बिचारी महतरानी एक बगल नाची जाति की हैवे की नियति भोगे, दूसरी बगल औरत हैवे को दश—

> 'भरि लोटा लै गई पती ने हक्कानी छोडी ।
> कब के प्यासे मरे कौनते बतराय रही घोडी ।।
> उनरि गयौ आखित कौ पानी ।'

या कविता कौ एक महत्त्व ई है कै ई कविता मे कही गयी ब्रज की शायद पहली कहानो भी है । ब्रज के कथाकारन कूँ याते सीख लेनी चइये ।

समाज मे व्याप्त रूढिन पै भवर ने हर पहल ते लिरयौ छद के अलावा ब्रज की लोक-विधा हू अपनाई है । 'बारहमासी' एक ऐसी ई लोक-विधा है । भँवर ने दहेज पै बारहमासी मे लिख्यौ है—

'चोरन की सी लेत फिरौती सेठन की टोली ।
अपने अपने पुत्रन की बढवाय रहे बोली ।।'

मक्खीमल अरु भिक्खीमल के माध्यम ते भवर ने बेटा वारे अरु बटी वारे कौ विरोधाभास व्यक्त करयौ है–

'बोली बढति देखि मगन मन मे भिक्खीमल ।
तोवा दैया करे बडे भैया मक्खीमल ।।'

भवर ने जनसंख्या मे बढोत्तरी कौ सबध अपराधन ते जोरत भये परिवार नियोजन की वकालत करी है । बाल विधवान की सवेदनशील समस्या कूँ उठाय कै भवर नै हिन्दू-समाज के सामैई बिनकी अर्जी रखी है । वे बाल विधवान के पुनर्ब्याह की बात कूँ बडे तार्किक तरीका दे रखे । भवर ने लडका लडकी मे भेद करबे की प्रवृति बडी अनैतिक मानी है । दूजौ ब्याह करव क पीछे लडका पावे कौ लालच एक आम बात हे । भवर नै बहु विवाह कौ विरोध करयो है । भवर न शराब अरु हर तरह के धूम्रपान अरु नसान की कडी आलोचना करी हे ।

भवर चेतनाहीन समाज की प्रगति कूँ लैकै चिंतित हे । विनकी वेदना अनक कवितान मे व्यक्त होय । 'बुद्धू' या पिछडी चतना बारे समाज कौ प्रतिनिधि पात्र है जो भवर की अनेक कवितान मे आवै । याके माध्यम ते भवर समाज कूँ चेतना कौ पाठ पढामे । ब्याह मे धन कौ अपव्यय, आढतियान द्वारा किसानन की आर्थिक लूट, साहेन कौ हल्ला मचते ही मँहगाई कौ बढवौ अरु देहाती समाज को ठग्यौ जावो, मृत्युभोज मे धन बरबाद करवौ, झूठी प्रतिष्ठा कूँ लैकै चलवे वारी मुकदमाबाजी, झूठी आधुनिकता दिखायवे कूँ करयौ जावे वारौ फशन ऐसे ज्वलत विसैन पै भँवर की लेखनी चली है ।

भँवर ग्रामीण सवेदना के कवि हे । पर ग्रामीण सवेदना कौ नाम आतेई कछु लोग ई अथ लगाय लै कै ग्रामीण सवेदना कौ कवि आधुनिक नाय होय । सवाल ई है कै आधुनिकता कौ आधार कहाय । हमारे हिसाब ते आधुनिक सवेदना कवि की परिवतन कूँ समझवे वारी अन्तदष्टि ते निर्मित होय । भँवर समाज के वर्गीय विभाजन अरु विषमता ते पूरी तरिया जानकार है—

'कहु बारह मजिल मकान ऊँचे ऊँचे ठाडे,
कहू झुग्गी झोपडी सडी-सी दरसत है ।'

और देखौ– 'भँवर' नबाव साब ऐठ मे फटत कोऊ,
टट्टीन के मैल ढोय नीच भगी होवे है ।'

भँवर या विषमता कौ कारण हू सामने रखे। एक बगल जजर रूढिग्रस्त समाज-व्यवस्था हे, अज्ञान मे जकडी जनता हे तो दूसरी बगल निहित स्वाथन ते आये दिन दल बदलवे वारे नेता हे, भ्रष्ट नौकरशाही हे अरु इनते गठजोड करकै पनपवे बारौ नव धनाडय वग है। आजादी कौ लाभ याई वग नै उठायौ हे। भँवर इहे इगित करै—

जाके नाई छानि बाके ऊँचे से मकान बने,
'भवर' दुकानदार सेठ सरताज हे।
जाके ना तिपैया, बाके दौडे चार पइया गाडी।
जाके ना रुपैया, बाके बक खुली आज हे ।।

मक्खीमल की कुण्डलिया मे नव धनाडय बनवे की पूरी प्रक्रिया भवर ने दर्सायी है। या कविता मे वे हलवाई अरु स्वास्थ्य मत्री दोउन कूँ एक नाम 'मक्खीमल' कौ इस्तेमाल करै, जो या समीकरण कूँ दर्शावै। याई तरियाँ 'लुक्का कवित्त' जनतात्रिकरण के नकारात्मक पक्ष कूँ सामेई राखै, जामे लुक्का काका के घर कौ स्तर बाके सरपच बनते ही ऊँचौ उठ जाये। 'चोरी की रपट' भवर की एक और लोकप्रिय कविता है। ई हास्य की कविता है जो आख्यान शैली मे रची गयी हे। कविता भ्रष्टाचार पै सहजता पूवक कडी चोट करै। इन कवितान ते भँवर ने जनता की बदहाली कूँ जिम्मेदार बडे राजनेता, बिनके छुटभैय्या अरु दलाल, सेठ-साहूकार अरु बेईमानी ते पनपे नवधनाडय वग अरु भ्रष्ट नौकरशाही कौ शोषक गठजोड सामेई ला न्यौ है। ई भँवर की राजनीतिक चेतना अरु अन्तदृष्टि के कारण ही सभव भयौ है।

भँवर दुदशा ते उबरबे कूँ समाज की एकता पै जोर दै। वे सामाजिक भेदभाव ते बडे व्यथित है—

'देश, भेष, भाषा धरम, जाति गोत परिवार।
भेदभाव के गढ 'भँवर' ज्यो बर्लिन दीवार ।।'

भँवर अपील करते भये चेतावनी दे—

'जाँति पाति के नाम पै क्यो रहे बैर बढाय।
एक पितगा आगि ते गाम भसम है जाय ।।'

या समूचे प्रसग मे भवर की सीख है—

'काटे परे जो गैल मे, धरिये पाव बचाय ।'

एमौ नॉय कै राष्ट्रीय अ तर्राष्ट्रीय क्षितिज पै भॅवर की नजर नाय । भॅवर ने भारत चीन युद्ध अरु भारत पाकिस्तान युद्ध के दौरान देशभक्ति त ओतप्रोत जो ओजस्वी कविता लिखी हे, वे बिनकी राष्ट्रीय चेतना कौ प्रमाण हे । भॅवर राष्ट्रीय एकता अरु अखडता के प्रबल पक्षधर हे । बि ने पजाब मे आतकवाद के खिलाफ पर्चा निकार कै बॅटवायौ । स्वतत्रता आ दोलन ते लैकै अब तानू बि ने एक जागरुक नागरिक की भूमिका निभायी है ।

सब कछु के बावजूद एक श्रेष्ठ कवि की जड बाकी खुद की जमीन मेई पायी जामे । भॅवर स्वरूप की जड स्थानीय भूमि पे बडी गहराई तक फैली भई है । वे एक यथाथवादी कवि ह । बि ने ब्रजभूमि की झू ठी शान के गीत नाय गाये बल्कि यहा जैमौ जीवन है, वाकौ वैसो ही चित्रण करयौ है—

'ब्रज की कहानी हू पुरानी परि गई आज,
कु ज ना कदम्ब ठाडे मेडन फरास ह ।'

भवर की कविता मे ब्रज कौ सहज हास्य है जो 'चोरी की रपट' अरु 'टर कविता' मे देख्यौ जाय सकै जौ ब्रज कौ माधुय भी है । एक नमूना देखे—

घूमि घूमि देखे भूमि, प्रात काल पछी झील,
कुकड-कुकड, कुक्क-कुक्क कल गान है ।'

अब ब्रजभूमि मे दूध की नदी नाय बह रही । पैजो जैमौ कछु नाय रह्यौ । फिरऊ यत्र तत्र जहॉ सौदय हे बू भवर की नजर ते अछूतौ नाय—

'आक ढाक फूलन पै 'भॅवर' गु जार है ।'

कवि भवर ने जीवन मे कडौ आत्म सघष करयौ है । 'कृषि धध' मे कवि शरीर 'घाम मे सूखि जवासौ' है गयौ है । कविता ते कवि कू कछु अर्थ-लाभ नाय भयौ । 'अनफिट अरु बेतुकी' कविता कौ मचन पै बोलबालौ है । कवि भॅवर की वेदना देखौ—

'दाम नई कविता के बढे है,
छदाम की भासै मेरी ब्रजभाषा ।'

या हालत के बाबजूद कवि भँवर ना कबऊ डगमगाये, अरु ना आत्मविश्वास खोयौ। स्वतन्त्रता सेनानी रहे हू, कोऊ बडी लिप्सा नाय पारी अरु अपने गाम मे, अपने समाज मे घुले-मिले जीते रहे। अपनौ कायक्षेत्र भी बि नै अपनौ गाम चुन्यौ—

'भँवर' अधियारी है कि जगत उज्यारी हे।'

ब्रज के प्रतिबद्ध कवि भँवर अपने गाम अँधियारी मे उजियारौ करते रहे पर कविता तो काऊ दायरे मे सीमित नाय रह सकै। भवर की कविता अपने समय की दस्तावेज है बिनके भाखे सबई बोल 'करट' (समकालीन) है।

☐ राजाराम भादू
6, आदर्श कालोनी,
भरतपुर–321001

कवि 'भँवर स्वरूप 'भँवर' ते साक्षात्कार

ब्रज अकादमी के मोनोग्राफ के काजै मोय कवि भँवर स्वरूप 'भवर कौ साक्षात्कार लैनो। मोय मालुम परी कै कवि भँवर अपने गाम अँगिदारी ते भरतपुर अपने सुपुत्र ओंकार नाथ शर्मा एडवोकेट के यहा आये भये हे। मोय ई सुनहरी मोकौ हाथ लग्यौ। म वकील साब के घर गयौ तो पतौ चल्यो कै कवि भवर बीमार ह। पर जब कविवर कूँ मालुम परी तौ वे मोते मिले अरु खूब बतरावे लग परे। मोय नव साक्षरन कूँ साहित्य रचवे के एक शिविर मे अखैगढ गाम मे कवि भँवर के सग रहवे कौ सौभाग्य कछु बरस पैलै मिल चुक्यौ। सो परिचय हतौ।

पचहत्तर वष पार कर चुके कवि भँवर शरीर ते ना कछु शिथिल हे गये हे पर बिनके विचार अबऊ पूरे आत्मविश्वास ते भरे है अरु काव्य-चिंतन म ताजगी चोखी बनी भई है। अपने कवि-कम कूँ लैकै बिनमे किंचित दभ नाय। अपने पुरुषाथ अरु सादगी भरे जीवन की छाप वे पैली मुलाकात मेई छोड दै। ई बातचीत बिनते जाडेन की दो शीत भरी सध्यान मे भई।

☐ आपने अपनी पैली रचना कब लिखी ?

गाम ते पढबे कस्बा उच्चैन मे आयौ करते। स्कूल मे सातवे मे पढते। प श्यामलाल हमारे हैडमास्टर हे। वे हमारे सहपाठी दुलीच द पै चिढायवे कूँ कविता बनाय रहे। बिनकी बनाई कविता कछु बैठी नई। तब मेंने ई दोहा बनाय के सुनायौ–

'ग्राम अटारी मे रहे लाला दुलियाचन्द।
क्वार सनीचर बार कूँ प्रगटयौ नकटा चद।।'

दोहा पै मा प श्यामलाल समेत सब सहपाठी खूब जोरन ते हँसे। मेरौ याते बडौ

उत्साह बढौ । उच्चैन स्कूल ते गाम जाते-आते तौ तुकबदी करकै सहपाठीन कूँ सुनामतौ । रामायण अरु विजय मुक्तावली पढते । विजय मुक्तावली 'महाभारत' कौ वीर रस मे रच्यौ सस्करण हौ । विजय मुक्तावली के कैऊ कवित्त मै ने याद कर किये ।

☐ समाज मे कब सुनायवे लगे ?

बाद म, हिन्दी साहित्य समिति मे आयवे लग्यौ । य्हा कवि सम्मेलन मे आयकैं कविता सुनतौ । हमारी पाठ्य पुस्तक ही —'वीर रस के महाकवि ।' यामे नौ वीर-रस के कविन की रचना ही । ई सातवे मे चलती । सातवे के बाद तौ घर की समस्यान के कारण पढाई छूट गयी । वा साल प्लेग फैल्यौ । प्लेग ते परिवार के बहुत लोग मर गये ।

सन 1939 मे भरतपुर की सेवर जेल मे प्रजा–मण्डल के सत्याग्रही बन्दीन कौ एक कवि-सम्मेलन स्व सावल प्रमाद चतुर्वेदी की अध्यक्षता मे भयौ । जामे दो समस्या रखी गई । इन म एक 'राज की' अरु दूसरी उमग है' धरी गई मैने इनपै अपन सवैया या तरिया रचकै सुनाये–

व्याप रह्यौ भारी भय सारे ससार मे,
समस्या कैसी विकट बनि गई है आज की।
रूस-जमनी ने पौलैण्ड पै झपट्टा मारयौ,
होत ज्यो कपोत पै झपटट चील बाज की।
दोऊन ने आधौ-आधौ यूरूप,
दबाय, हल्ला रूस पैऊ बोलि दीनो ।
हिटलर ने बरबादी कीनी अगरेजी राज की ।

अरु—

सेबर की जेल मे कियौ है कवि सम्मेलन,
साहित्यिक साधना की बह रही गग है ।
कोऊ कहै कवित सुनावत सवैया,
कोऊ गावत गाने क्या रचि रह्यौ रग है ।
शत प्रजा मण्डल को कीनी स्वीकार फेरि,
नटि गौ दीवान ये तौ अगरेजी ढग है ।
रहौ सव सज्जन ब धु एकता सो जेल मे,
अब सारे ससार भर मे जग की उमग है ।

☐ ई तौ द्वितीय विश्वयुद्ध को समय होयगौ ?

हा, बा समय प्रजामडल के सत्याग्रहीन ने जत्थान म गिरफ्तारी दीनी । पहने जत्था में हम तेरह आदमी है जिनमे ठा देशराज अरु सानरुक के परमानन्द शामिल हे । अकाल के कारण बहुत सत्याग्रही जेल मे आय गये । जब जेल म सत्याग्रहीन कूँ चार आना रोज मिल्यौ करै हे । अकाल के मारे मजूरी कछु मिलै नाई , सो चार आना क लालच मे भौत लोग जेल चले जाये ।

☐ आपकूँ कविता लिखवे की प्रेरना, कव, कौन त अरु कैसे भई ?

हवाल बताई ही हत । जेल मे कविता लिखबे की प्रेरना मिली ।

☐ आपकी कितनी कविता प्रकाशित भई है, कौऊ सकलन हू निकरयौ का ?

एक कविता 'किसान राज' घनश्याम पीघौरा वारेन के अखबार मे छपी । कछु कविता तुम्हारे अखबार (दिशा बाध) मे छपी ही हती । अपनी कवितान कौ एक पुस्तिका 'हिन्द सुराज' मैनैई छपवा के बाटी । जो पर्चा मैनैं छपवाक बाटे, बिनम हू कविता छपी ।

☐ आप कौन कोन सी सस्थान सौ सम्बद्ध रहे ह ?

सबते पेले आय-समाजी बन, 'सत्याथ प्रकाश' पढी । ई वा समै 'रामायण', 'गोता' की तरिया मानी जाती । बाद मे आय समाजी आ दोलन बिखर गयौ । फिर हम हिन्दी साहित्य समिति मे आयबे लगे, याते जुडे । बाद मे, प्रजा मण्डल मे शामिल भए। प्रजा-मण्डल की सभान मे कबऊ जबऊ कविता सुना देयौ करे है । अपनी सस्था 'बन्धु समाज बनायी । याके माध्यम ते समाज-सुधार के कछु काम करे । मद्यपान के खिलाफ कटु भत्सना अभियान चलायौ । दहेज कौ विरोध कर्यौ । 'ब धु समाज' क प्रभाव त पैंगोर मे एक-एक रुपैया ते शादी-सबध हैवे लग गये । अँधियारी, पैंगोर मे समाज-सुधार के औरऊ काम भये ।

ई सस्था विशाल दायरे मे फैलायी जाय, या विचार ते याकौ नाम 'विश्व बन्धु समाज' कर दियौ । गाम अँधियारी मे ही याकौ मुख्यालय बनायौ । मुख्यालय पै सभा-बैठक करते । 'विश्व-ब धु' भगवान कौ नाम है अरु सस्था के नाम के रूप मे यामे विश्व ब धुत्व की भावना भी है । शिक्षित लोग अरु विद्यार्थी सस्था ते जुडे । नशेबाजी, दहेज अरु मृत्युभोज जैंसी कुरीतिन के खिलाफ सुधार-आन्दोलन आरोग्य चेतना फैलायबे कूँ

प्रचार करयौ । मिख आनकवाद पै पर्चा निकारयौ ।

सन 1960 मे बगलौर मे भारत नेवक समाज कौ सम्मेलन भयौ । प नेहरू याके अध्यक्ष है अरु गुलजारी लाल नदा मत्री । उत्तर भारत ते या सम्मेलन मे भौत कायकर्ता गये । मै यामे शामिल भयौ अरु उच्चैन-मण्डल कौ अध्यक्ष बनायौ गयौ । ब्रजभाषा अकादमी बन गयी तौ या ते जुडयौ भयौ हू । प्रौढ शिक्षा बारेन के शिविर अरु काय-क्रमन मे हू गामिल भयो हू ।

☐ आप अपनी श्रेष्ठ कविता किनने माने ?

मेरी 'चोरी की रपट' बारी रचना सबने पसद करी है । या कविता म भ्रष्टाचार के लिखाफ व्यग्य है । थानेदार रिश्वत लैकै चोर कूँ छोड दे । या रचनाय हम इतने निर्भीक ह्वेके पढे कै पुलिस बारे सोचवे लग जाये कै बिनके खिलाफ कछु कही जाय रही है । गीता पै रची अपनी कवितान ने मै सबते श्रेष्ठ मानूँ । वैसै काऊ ते कछु केऔ तो बू बात पै कान नाय धरै । एक शास्त्र के माध्यम ते कहौ तौ आदर्श बातै मानवे अरु चिंतन करवे कूँ तैयार है जाय ।

☐ ब्रजभाषा की प्रगति के ताई आपके का सुझाव है ?

हमारौ क्षेत्र भाषा के हिसाब ते कैऊ मण्डलन मे बटयौ भयौ है, जैसे-भरतपुर मडल, मथुरा मण्डल, चाहरवाटी, मेवात, बयाना ते परे को क्षेत्र जगरौठी अरु हमारे गाम की तरफ कौ क्षेत्र काठेर । काठेर नाम विशेष रूप ते परयौ है । या इलाके मे पैलै काठ कौ काम जादा होतो । अब तौ पटाव पट्टीन ते ह्वैवे लग गये ह पैलै काठ की सोटन होते । बा जमाने म मुगल बादशाहन नै पट्टी अरु चूनेन पर रोक लगा रखी ।

ब्रजभाषा के विद्वानन ने इन सब इलाके मे घूम के यहा वोली जावे बारी भाषा कौ अध्ययन करनौ चइये । भरतपुर मण्डल मे जो व्रज बोली जाय वू सबते सशक्त है, याई कूँ मानक रूप माननो चइये । ब्रजभाषा मे जो घालमेल चल रह्यौ है, बू खतम होनो चइये ।

☐ आपकूँ कौन-कौन से पुरस्कार सम्मान मिले है ?

स्वतन्त्रता सेनानी के रूप मे मोकूँ केन्द्र सरकार अरु राजस्थान सरकार ते ताम्र-पत्र मिल्यौ है । रूपवास मे मुख्यमन्त्री की मौजूदगी म बा क्षेत्र के स्वतन्त्रता-सेनानीन कौ एक शिलालेख स्थापित भयौ । यामे सबते ऊपर मेरो नाम लिख्यौ है ।

साहित्य की सेवा कूँ भारत सेवक समाज ने मेरौ सम्मान करयौ । हिन्दी साहित्य समिति अरु ब्रजभाषा अकादमी ने साहित्यकार के रूप मे मेरौ सम्मान कर्यौ है ।

☐ नयी पीढी कूँ आप का सदेश दैवौ चाह ?

वैदिक काल मे जो सस्कृति पनपी वामे आश्रम व्यवस्था कौ बडौ योगदान हौ । ब्रह्मचय आश्रम के पालन ते विद्यार्थीन कूँ गुरुकुल प्रणाली ते शिक्षा मिलनी चइये । आज युवान कौ चारित्रिक पतन है रह्यौ है । सिनेमा अरु टी वी मे आवे बारे चित्रहार अरु विज्ञापनन कौ युवा वग अरु किशोरन पै कुप्रभाव पर । इनपै रोक लगायी चइये । समाज ते मद्यपान, धूम्रपान जैसै व्यसन खतम होने चइये । हमारे समाज मे महिलान की दशा अबई तक नाय सुधरी । जब तक स्त्री शिक्षा कौ सुप्रबन्ध नाय होय तब तक समाज बदल नाय सकै ।

☐ नये रचनाकारन कूँ आप का सोचे ?

नये रचनाकारन कूँ सरकार अरु अकादमीन ओर ते साहित्य-सजन के काजे साधन मिलने चइये । और फालतू चीजन कूँ जब सरकार के पास साधन हते तौ याकूँ क्यो नाय ? नये रचनाकारन नै अपनौ श्रेष्ठ ग्र थन कौ अध्ययन करनौ चइये । स्वामी सत्य-देव परिव्राजकाचाय समाज क सत भय है, बिनकी कई श्रेष्ठ पुस्तक ह । मैनै खुद बिनकी अनेक पुस्तक पढकै ज्ञान अरु सस्कार सीखौ । ऐसी औरन की हू अच्छी पुस्तक है । नये रचनाकारन नै ऐसे सदग्र थन कौ अध्ययन-मनन करनौ चइये ।

☐ आजकल आप का लिख रहे है ?

मै आजकल गीता कौ ब्रजभापा मे अनुवाद कर रह्यौ हू । गीता के शुरु के दो अध्यायन कौ अनुवाद तौ पूरौ है गयौ है । बाल्मीकि रामायण के कछु भाग कौऊ अनु-वाद करयो है । कवित्त-सवैया हू बन जाये तौ लिख लऊँ । कोऊ सहायक होय तौ हाथ के हाथ लिख जाय नही तौ भूल जाऊँ । खुद लिख नाय पाऊँ ।

☐ ब्रजभाषा गद्य लेखन पै आपक कहा विचार है ?

असली ब्रजभाषा तो पद्य मे ही है जितने कवि भये है बिननेई ब्रजभाषा कौ विकास कर्यौ है । गद्य ठीक लिख्यौ जानो चइये—वामे घटा-बढ़ी करके ब्रज या राज-स्थानी है जाय, ऐसौ नई होनो चइये । रचनाकार ब्रजभाषाय सुधारे तौ अच्छौ गद्य लिख्यौ जाय सकै । ब्रजभाषा तौ पैलैई अपभ्र श बनाय राखी है याये और अपभ्र श काऊ

कूँ करे। ब्रज शुद्ध, परिष्कृत अरु व्याकरण-सम्मत होनी चइये। 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' कौ गद्य या हिसाब ते विकास करवे कौ आधार है सकै। अबई तक ब्रजभाषा कौ गद्य 'वार्ता' ते आगे नाय बढ़यौ।

☐ पद्य की कौनसी विद्या आपकूँ पसंद है ?

नये गीतकारन ने छन्द की हालत खराब कर रखी है। इनमे कोरी भावुकता है। हमारे ब्रजभाषा के परम्परागत छंद कवित्त, सवैया अरु कुण्डलियाँ बड़े सशक्त हैं। पद्माकर, भूषण अरु रसखान की रचना याकौ उदाहरण है। आज ब्रजभाषा कूँ जो गरिमा मिली भई है, ई इनई महाकवीन की बदौलत है।

☐ आपके पिता ब्राह्मण हे छूआछूत जात पात मान हे, बौहरगत करै हे—आप इन सब चीजन के विरुद्ध कैसे है गये ?

आर्य समाज तेई ऐसे संस्कार बने। घर मे देवी की मानता ही सब मानते पर मै नाय मानतौ। पैलै मैं स्वामी दयानंद के विचारन नै सबते अग्रणी मानतौ, फिर गाधीजी कौ अनुयायी है गयौ। पूरौ देश गाधीजी के विचारन ते प्रभावित हौ। गाधीजी के विचार मोय स्वामी दयानद तेऊ अग्रणी लगे।

जब महादेव देसाई की जेल मे मृत्यु है गयी तौ उच्चैन मे शोक- दिवस मनायवे कौ विचार बयौ। प्रजा मडल तब नयौ-नयौ बन्यौ। शौक-दिवस मनायवे कूँ लोग बुलाए तौ कोऊ नाय आयौ। मा किशनलाल मेरे सग लग गये। मै अकेलौ जैकारे बोलवे अरु नारे लगायवे लग गयौ। मा किशन लाल नै स्कूल मे लडकान कूँ इशारौ कर दियौ। सबरी वानर सेना स्कूल ते बजारे बन्द करावे निकर परी। मुकुट बिहारी गोयल बिन छात्रन कौ नेतत्व कर रहे। मुकुट बिनमे तेज छात्र हौ। हम उच्चैन के बजारै तौ पूरी तरिया बद करायवे मे सफल नाय भये फिरऊ उच्चैन मे प्रजा मण्डल कौ माहौल बन गयौ।

प्रजा मण्डल ने बेगार-विरोधी सत्याग्रह कौ आह्वान कर्‌यौ। यामे सबन कूँ बेगार रोकवे कौ काम बाट दीनौ। हम अपने क्षेत्र मे बेगार कौ विरोध करवे लगे। उच्चैन के थानेदार ने हम थाने मे बुलाए अरु गिरफ्तार कर लियो। रात भर हम उच्चैन थाने की हवालात मे रहे फिर सेवर जेल भेज दिये। सेवर जेल कौ डिप्टी सुपरिन्डेट बा बखत परशुराम सिंह हौ जो बडौ क्रूर हौ। बू हमारे बेडी डरबायवे लग्यौ तो हमने आपस मे चिपट कैं गुट बनाय लियौ। ई तरीका हमने 39 के आन्दोलन मे सीख्यौ। अगले दिना

परेड मे मैंने नारे लगायवौ शुरु कर दियौ । एक जमादार मोय पकरकै सुपरिन्डेन्ट के पास लै गयौ । मै काल कोठरी मे बन्द कर दियौ गयौ ।

या बीच भयो का कै भरतपुर मे कोई बहुत जोर की आवाज भई, तोप चलवे की सी । ई आवाज हमारे गाम तक पहुचो । काऊ ने हमारी पत्नी ते कह दई कै वे तो तोप ते उडाय दिये पत्नी कूँ पडौस की कोलीन की महिलान नै बहुत समझाई बुझाई अरु अपने सग राखी । हमारे सग बेगार-विरोध मे जो जाटव भाई बन्द हे, वे तौ बिचारे माफी माग कै चले गये । हम तेऊ डिप्टी सुपरि डट ने माफी मागवे को खूब आग्रह करयौ । यहा ते राजबहादुर हमने मिलवे सेवर जेल आये । जेल मे घनश्याम पीगौरा बारे मोते अलग हे गये, जब मे काल कोठरी मे कर दियौ । हमने एक सग रखे जावे कूँ जेल मे अनशन करयौ । 5 फरवरी सन 1947 कूँ हमे जेल मेई ई खबर मिली कै रमेश स्वामी मार दिय गये । तब हमपै और कडाई कर दई । बेगार-विरोधी सत्याग्रह मे हम 8 महीना ते जादा जेल मे रहे ।

☐ स्वतन्त्रता-आन्दोलन मे आप कैसे आये ? पैली बेर आप जेल कब गये ?

स्वतन्त्रता आन्दोलन मे आयवे के विचार तौ आर्य समाज के आन्दोलन मेई बन गये । जादातर आर्य समाजी प्रजा मण्डल मेई आय गये । जब लार्ड वैवल घना पक्षी बिहार मे शिकार करवे कूँ आयौ तव पुलिस कौ बडौ भारी बन्दोबस्त हौ । ऐसो कडी व्यवस्था मेऊ एक उत्साही लडका ने वर्तमान रेडक्रॉस सर्किल पै लार्ड बवल कूँ कारे झडा दिखाय दिये । मेऊ यामे शामिल हौ । बिन दिनान मे घरो मे जाटवन नै बेगार कूँ ले जायौ करै हे । इनकौ विरोध शुरू भयौ । 1939 मे प्रजामडल नै आन्दोलन चलायौ । या मे 13 आदमीन के जत्था के सग मै पैली बेर जेल गयौ । प्रजा मण्डल हे तौ अलग हौ पर राष्ट्रीय स्तर प 'देशी राज लोक परिषद' ते या को सम्बन्ध हौ अरु नेहरू जी 'देशी राज लोक परिषद् के अध्यक्ष हे । हमारे जत्था के जत्थेदार ठा देशराज हे । 1942 मे 'भारत छोडो' आन्दोलन शुरू भयौ । आन्दोलन के काजै हमने पीगौरा मे सभा करी फिर बिढ्यारी मे सभा करवे गयौ तो म्हा ते लौटती बेर मेह मे भीज गयौ । याते बुखार आ गयौ सो जादा काम नाय कर पायौ ।

☐ आपनै क्रान्तिकारी बनवे कौऊ विचार तौ करयौ ?

क्रातिकारी बनवे कौ विचार सबते पैलौ है । मैंने शुरू मेई लोकमान्य तिलक कौ 'गीता रहस्य' पढयौ । याते काग्रेस के प्रति विचार उदासीन हे गये । क्रान्तिकारीन ते मिलवे कलकत्ता चल्यौ गयौ पर बुखार आ गयौ, सो मिल ना पायौ अरु उल्टौ लौट

आयौ । वा समै काग्रेस के बारे मे जादा जानकारा नाई । गाधी क समय ते काग्रेस की धारा मे विश्वास जम गयौ ।

1947 के साम्प्रदायिक दगान मे हमनै मुसलमानन की सुरक्षा कूँ काम कर्‌यौ । वा समै मे रीति ब दूक लैकै गामन मे घूमतौ अरु मुस्लिम परिवारन की मदद करतौ । काग्रेस अरु आम जनता कौ विचार मुसलमानन के पक्ष मे हो । बाद मेउ हम समाज मे मेल जोल बढायवे कौ प्रयास करते रहे हमनै गाम म मेलौ लगायवे कौ प्रयास कर्‌यौ । महिला-मण्डलन के माध्यम त महिलान म चेतना प्रसार की कोसिस करी

☐ आजादी के बाद देश की कैसी कल्पना आपके मन मे रही ?

आजादी के बाद काफी दिना तक अगरेजन कौ ही सिक्का चलतो रहौ । या सिक्का पै इग्लैड के बादशाह की तसवीर छपती । लोग कहते अबई तौ सिक्का अगरेजन को ही चल रह्यौ हे । आजादी के बाद देश की स्थिति ते निराश हैवे बारे लोग पोगा-दास हैं । सरकार नै हर वग कूँ अनेक तरह की सुविधा दई है । देश ने भारी विकास करयौ है । आजादी ते पैलै देश की हालत कितनी बदतर ही, आज याकी कल्पना तक नाय करी जा सकै । हमनै देश को स्वतत्रता के बाद सही मायने म गरिमापूण जीवन अर्जित कर्‌यौ है ।

☐ अपने समाज सुधार आ दोलन कौ कोऊ और सस्मरण सुनाऔ ।

महात्मा गाधी की हत्या के बाद बिनकौ तीजौ करवे कौ विचार ब यौ । प रेवतीशरण, बाबू राजबहादुर, मा आदित्येन्द्र जैसे प्रमुख नेतान के अलावा भरतपुर के अनेक स्थानीय नेता या विचार मे शामिल हे । ई तय कर्‌यौ गयौ कै छूआछूत मिटायकें तीजो कर्‌यौ जाय । याके काजे मेहतरन ते सम्पक करवौ तय करयो गयौ । बिनते पूछी कै वे राजी हे कै नाय । बिन्ने अपने सग जिमावे कौ प्रस्ताव रख्यौ गयौ । वे राजी तौ है गये पर बिनने कई कै ऐसै नई मानेगे । हमऊ अपने हाथन ते सामग्री तैयार करामिगे अरु परोस के जिमामिगे । मेहतर जैवे-जिमाइवे मे शामिल भये तौ कैऊ नेता तो कन्नी काटकै निसर गये पर जादातर डटे रहे । सबनै हसते हसायते सहभोज कर्‌यौ ।

☐ समाज की कुरीतीन पै लिखी आपकी रचनान कौ समाज पै कोउ प्रभाव आपनै अनुभव कर्‌यौ ?

मेरी कवितान पै लोग हसे भी खूब है अरु बिनते प्रभावित है कै सुधार भी करयौ

है। समाज कीं रूढिन ते जो लोग त्रस्त हे बिनने ये कविना जादा अच्छी लगै। सुधार की कवितान कौ असर भी है। मृतक भोज पै कवितान ते असर परयौ है।

गाव मे शरद-पूर्णिमा के दिन खिरकारी (गाम ते बाहर वू स्थान जहा सुबह चरवे जावे ते पैलें मवेशी इकट्ठे करे जाय) मे जब महिला इकटठी होती तौ मोय बुलायके कविता सुनवे कौ आग्रह करती। मैं जो सुनायतौ बिनने याद कर लैनी अरु अपने-आप गायौ करती। कछु बच्चा कवितान ने याद करके आपस मे सुनायते। आम जनना के लोग हू—जाटव, कोली वगैरह मोते कविता सुनायवे की माग करते रहे।

मेरी रचना-प्रक्रिया

जब कबऊ कोऊ बात सुनी जाय तौ बाते कोऊ न कोऊ विचार जरुर पैदा होय। एक बात ते दूसरी बात निकरै अरु फिर कोऊ नयौ विचार पैदा होय। छद की तुक मिलामते मिलामते दूसरी बात बढ जाय। एक कडी ते दूसरी कडी बनती जाय। विषय या बात के आधार पै कवित्त, कुण्डलियाँ सवैया आदि विधा तय करी जाय। जैसे वीर रस कौ विषय होय तौ बाकी बढिया धज कवित्त मेई बैठे। सवैया अरु कुण्डली सहज होय। कुण्डलियान नै बिना पढे-लिखे अरु औरत हू गा सके पर कवित्त सुनायवे को खास अदाज होय, जबई बाकौ सही असर परै। कवित्त अरु सवैयान मे अनुप्रास की छटा होनी चइये।

मै एक दिना लछमन मदिर ते आय रह्यौ। मैंने देख्यौ के एक जनो ढकेल मे भर के कछु किताबन ने लाय रह्यौ। वे साधारण सी किताब ही। शायद वाने रद्दी समझ राखी। मैनै देखी कै बिनमे रसखान अरु बडे कवीन की रचनान की किताब है। मोय काम की लगी। मैंने वे खरीद लई, ठेली वारेनेऊ सस्तो बेच दई। इन किताबन ने मै पढतौ रह्यौ। इनते लिखवे की प्रेरना मिली। पर जो लिख्यौ तौ बाते कछु बात बनी नई। फिरऊ इन बडे कवीन की रचनान ते कविता बनावे मे बडी मदद मिली। मैने तो कविता बनायवे की कहु पढाई थोरई पढी है—

> 'ग्राम अधियारी, भरतपुर 'भवर' कियौ कृषि धध।
> पढयौ न जान्यो कवित्त रस, छ द, निबध, प्रबध ।।'

महाकवीन के स्वाध्याय अरु जीवन-जगत के अनुभवन तेई कविता रचवौ शुरू कियौ। लिखी तो है—

> 'कछु अपने, कछु और के, भवर' भाव लिए चोरि।
> कवित्त, सवैया, चोपाई, दोहा दीने जोरि ।।'

तौ बस ऐसेई कविता रचवे लग्यौ । लिखके बिन्नै घोकतौ अरु सुधारतौ रहतौ ।

मेरौ बेटा ओंकार नमक के कटरा म रहतौ । ओंकार वा मकान कूँ बदलवे वारौ । सजा कूँ ई बातई चल रही कै अगले दिना मकान बदलनौ है । अगले दिना तडकेई मेरी नीद खुल गई तो मै छत्त पै टहलवे लग गयौ । टहलतौ भयौ मे गीता पै विचार कर रह्यो । तो मेरे ध्यान मे आयी कै ई आत्मा या शरीरै ऐसैई छोडिकै चल दे जैसे किराये दार मकाने छोडिकै चल दे । तब मेने एक दो कडी या बारे म बनायी । मेरे दिमाग म ई बात आयी लोगून की ई बात तो सही है कै गीता कौ ब्रजभाषा मे अनुवाद करवौ कठिन है पर ई काम करयौ जाय सकै । तब मै न गीता पै एक दोहा बनायौ—

'गीता ब्रजभाषा सरल, जन रूचि के अनुसार ।
भूल चूक सब शोध के, पडित करे प्रचार ।।'

जव मेरौ ई दोहा पूरौ हे गयो तो गीता कौ ब्रजभाषा अनुवाद पूरौ है गयौ ।

भरतपुर म कवि सम्मेलन होयौ करते—कबऊ हिदी साहित्य ममिति मे तो कबऊ लक्ष्मण मदिर पै मै इनमे आतौ । इन सम्मेलनन मे मित्र जी (स्व कवि श्री गिर्राज मित्र) कविता सुनामत । बिनकी कविता मोय सबते अच्छी लगती । मै खासतौर ते बिनकी कवितान नै सुनवे कूँ ही सम्मेलनन मे आमतौ । विन्नै सबई पसद करते । बहुत दिनान बाद मे मेरी बिनते जान पहचान भई । मित्र जी एक छोटी सी कोठरी मे बठे खोखा बनामते रहते। बिनकौ जीवन बडौ कठिन हौ । मित्र जी को एक कवित्त है—

'करत ना काम कछु ठालो बैठो रार करै,
बडौ ही लवार मुख झूठ ही धरी रहै ।
कहा करूँ, कित जाऊ, गिर जाऊ, मर जाऊँ,
देख करतूत याकी छाती ही जरी रहै ।।
तन पै बसन आली रोटी भरपेट नाय,
पीसवे और कूटबे की फिकर परी रहै ।
गिर्राज गैर की मजूरी कर पारूँ पेट,
तोऊ मोदुआ के मन रिस ही भरी रहै ।।'

मित्र जी कौ ई कवित्त जब हास्य कौ लग्यौ करै हौ पर अब लगै कै यामे मित्रजी ने अपनी पत्नी की साची व्यथा उजागर करी है । मित्र जी की ऐसी कवितान ते मोय बडी प्रेरना मिली ।

तो मै कवित्त-सवैया बनायवे लग्यौ । पर जैमी कै मैने बताई है, छन्दन की कोई पढाई मैने अलग ते नाय पढी । जैसै-जैमै कविता रचवे कौ अभ्याम हैतौ गयौ, छन्द और कविता मे शब्दन की गति और लय कौ ज्ञान हेतो गयौ । कहू गति और लय मे कमी होई तो अपने आपई पतौ चल जावैऔ और सुधार कर लेऔ । या प्रसग मे सुन्दरदाम को एक कवित्त याद आवे–

वोलिये तो तब जब बालवे की सुध हाय,
नाय तौ मुख मौन गह चुप होय रहिय ।
गाइये तौ तब जब गायव कौ कठ होय,
श्रवण के सुनते मन ताई गहिये ।
जोरिये तौ तव जब जोरबो जान परै,
तुक, छन्द, अरथ अनूप जामे लहिये ।।

मे कवि-सम्मेलनन मे तौ जाय करै हो पर काऊ ते जान पहचान नाय है पाई । साहित्य मे प्रवेश करवौ मोय भौत कठिन काम लग्यौ ।

मेरी एक कविता हे–'बिन पानी की जि दगानी ।' मै गाम म देख्यौ करै हो कै महतरानी एक एक मटका पानी कू घटान लोगन ते रिरयाओ करै ही । हम न्हाई दातुन करै हे, नहावे धोवे हे । लोग-वाग सूअरन कू लैकै हरिजन ते गाली गलौच करै है । सूअर फसल मे नुकसान कर जाये । ई समाज की एक स्थिति को दश्य हौ । समाज याकौ कछु उपाय सोचै या अभिप्रेत ते मैने ई कविता लिखी ।

या तरिया ते मक्खीमल भिक्खीमल काल्पनिक नाम ह । पर इनते मिलते जुलते अनेक चरित्र हे । लुक्का काका जैसे अनेक सरपच हमारे आस पास के गामन म रह रहे ह । दहेज की घटना और ओरत कू दहेज के लालच मे जराय कै मारवे की घटना तौ हमारे ही गाम मे घटी है । बुद्धू कोऊ वास्तविक पात्र नाय ई रुढि मे फमे समाज के एक आम आदमी कौ प्रतीक हे । समाज-सुधार की कविता तौ हमारे समाज सुधार के आन्दोलन और विचारन ते लिखी गयी ह ।

कविता रचवौ अब जोबन मे रम कै एक अग बन गयौ है । याकू अलग ते कछु माथापच्ची नाय करनी परै । हा कबऊ सही शब्द नाय मिलै तो कैऊ घटा और कबऊ तौ कैऊ दिना लग जाय । यहा ई तो सरस्वती कौ स्मरण होय । कहौ करे बाकी तौ जीभ पै सरस्वती बास करै । ई कवि की याई कुशलता कू कही जाय । कविता मे जितेक घोटा लगे, वितेक ही श्रेष्ठ बने ।

जँब तक कोई रचना सब तरह ते दोष रहित और साथक नाय बने, तब तानूँ बाय सुनामवे लायक नाय समझू । या मामले मे सुन्दरदास जी के बताये कवित्त की इन आखिरी पक्तिन ने कहवौ चाहू—

'गति भग, छद भग अथ मिलै ना कछू,
सु दर कहै ऐसी वाणी नाय कहिये ।'

अब इतनी उमर हे गयी, फिरऊ रचनान मे रम्यौ रहू, मन नाय माने । याकूँ कहिये—

'कागज कबहू के छिके, कटयौ धर्‌यौ वारट ।
दै चकमा जम कूँ 'भँवर' भाखै कवित करट ।।'

☐ भँवर स्वरूप 'भँवर'

ब्रज-रचना माधुरी

रचयिता—श्री भँवर स्वरूप 'भँवर'

आत्मकथ्य-दोहा—

ग्राम अध्यारी भरतपुर, 'भँवर' कियो कृषि धन्ध ।
पढयौ न जान्यौ कवित्त रस छन्द, निबन्ध प्रबन्ध ।।

अनफिट कविता बेतुकी, जैसै फूट्यौ ढोल ।
सत् कविता सजीवनी ज्यो अमृत अनमोल ।।

यह घर नही सराय है, जहँ कछू अपने लोग ।
नीची दैकै रह 'भँवर' दिना चार सजोग ।।

तुलसी रवि सम, सूर शशि, ग्रह नछत्र कवि अन्य ।
अबके कवि जुगनू 'भँवर' रचि रह गीत जघन्य ।।

कछु अपने कछु औरके, 'भँवर' भाव लिये चोरि ।
कवित, सवैया, चौपाई, दोहा दीने जोरि ।।

कैसौ छल करिगौ 'भँवर' कविता दयी सुनाय ।
मै अपनी कहिबे लग्यौ भाग्यौ पाव दबाय ।।

सवैया—

'भँवर सुराज' है नाम परयौ, और गाव अध्यारी दियौ हरिवासा ।
काम कुआ हर जोतिबे को भयौ घाम मे सूखि शरीर जवासा ।।
पाव परे कविता पथ मे नहिं मानत है मन खूब तमासा ।
दाम नई कविता के बढे है, छदाम की भासै मेरी ब्रजभाषा ।।

गाम ते पच्छिम रेल की लाइन, दिल्ली बम्बई जात है रेला।
दक्खिन ब्यानौ पुरानौ क़िलो मधि झील जुर कैला मातु कौ मेला ।।
पूरब मे दरगाह फतेपुर आगरे ताज क़िला है नवेला।
उत्तर मे मथुरा ब्रजभूमि, भरतपुर भारत मे अलबेला ।।

हेत न कविता ते जिहे कारौ आखर भूँड
ढ हे कवित्त सुनाइवा, व्यथ मरिबौ मूँड ।
गीता रामायन पढी, अर्थ न समझया मूढ।
ज्यौ कौ त्यौ बुद्धू 'भँवर' किंकत्तव्य विमूढ ।।
कागज कबहू के छिके कटयौ धरयौ बारूद ।
दै चकमा जम को 'भँवर' भाखै कवित करूट ।।

ईश भक्ति

महा कवि बिहारी दोहा (कुण्डलिया)

मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोइ।
जातन की झाई परत, श्याम हरित दुति होइ ।।
श्याम हरित दुति होइ, प्रात ज्यो नभ छवि छाई।
हरित होय घनश्याम, इन्द्र धनु ज्यो रवि झाई ।।
मीरा ज्यो भई भक्त श्याम की त्यो तुम मेरी ।
भक्ति भाव हिय भरौ हरौ भव बाधा मेरी ।।

□

चिर जीवी जोरी जुरै, क्यो न सनेह गभीर।
को घटि ये वृषभानुजा वे हलधर के बीर ।।
वे हलधर के वीर, कृष्ण बलदाऊ भैया।
ये वषभानु कुमारि, चरावै बछडा गैया ।।
सहित सनेह गभीर, दूध दधि खाइबौ पीवौ ।
'भँवर' राधिका स्याम, जुगल जोरी चिर जीवौ।।

□

सोहत ओढे पीत पट, श्याम सलौन गात।
मनहू नील मनि शैल पर, आतप परयौ प्रभात ।।

आतप पर्यौ प्रभात, शैल नीली मनि पर ज्यो ।
विष्णु रूप भये कृष्ण, परम सुन्दर भासत त्यो ।।
तन दुति अधिक मलूक लगत सब की मन मोहत ।
श्याम सलौने गात पीत पट ओढे सोहत ।।

□

उधर धरत हरि के परत, ओट दीठि पट जोति ।
हरित बास की बासुरी, इन्द्र धनुष रग होति ।।
इन्द्र धनुष रग होति, जोति छवि अद्भुत दमकत ।
लाल होट पट पीन, पूतरी कारी चमकत ।।
श्याम बदन पर 'भँवर' मुरलिया अधर धरन तब ।
इन्द्र धनुष रग होति बासुरी हरी धरन जब ।।

□

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाइ ।
सौह करै मोहन हँसै, दैन कहै नटि जाइ ।।
दैन कहै नटि जाय खाय रही आखिन को सौ ।
मोपै मुरली नाय, पूछि लीजै सब ही सौ ।।
दैन कहै फिर नटै गोपिका भौहन मे हँस ।
मुरली धरी लुकाइ, लाल कौ लालच वतरस ।।

□

मोहनि मूरति श्याम की, अति अद्भुत गति जोइ ।
बसत सुचित अन्तर तऊ, प्रतिबिम्बित जग होइ ।।
प्रतिबिम्बित जग होइ, धूप सूरज ते जैसै ।
परमातम कौ अश आत्म तन रमि रह्यौ तैसै ।।
आत्मोनति अति होइ सोइ हरि शक्ति सोहनी ।
है अद्भुत गति जोइ श्याम की मूर्ति मोहनी ।।

□

जगत जनायौ जिहि सकल, सो हरि जान्यौ नाहि ।
ज्यो आँखिन सब देखिये, आखि न देखी जाहि ।।
आखिन देखी जाँई, बिम्ब दीखत दरपन ज्यो ।
निराकार बट बीज, प्रकट ससार कियौ त्यो ।।

ग्रह नक्षत्र आकाश विश्व ब्रह्माण्ड बनायौ ।
सो हरि जान्यो नाहि 'भँवर' जिहि जगत जनायौ ।।

□

अपने अपने मत लगे व्यादि मचावत शोर ।
त्यो-त्यो सबकी सेईबौ, एकई नंद किशोर ।
एकई नंद किशोर नाम न्यारे-न्यारे है ।
गौड, यहोवा, खुदा, राम भक्तन प्यारे है ।।
वृथा रारि क्यो करौ, जपौ चाहो जो जपनौ ।
सपनौ सो जग लगै, श्याम ही मतहिन सपनौ ।।

□

थोरेई गुन रीझते बिसराई वह बानि ।
तुमहू कान्ह मनो भये, आज कालि के दानि ।।
आज कालि के दानि, बानि स्वारथ की धारे ।
नहिं गरीब की सुने, अरज करि करि के हारे ।।
नाहिं पतितन उद्धार करौ, तुमहू भये भोरे ।
बिसराई वह बानि, रीझते जब गुन थोरे ।।

□

तौलगि या मन सदन मे, हरि आवहिं किहिं बाट ।
निपट विकट जब लौ जुटे, खुले ना कपट कपाट ।।
खुले ना कपट कपाट, डाट लागि जहाँ डटिके ।
हरि आवे किहिं बाट कुटिल ते रहते हटिके ।।
ढोंग कपट पाखण्ड दिखावा करते जब लगि ।
'भँवर' मूढ मन सदन, हरी नाहिं आवे तबलगि ।।

पद

मेरौ मन भयौ विषयन कौ चेरौ ।
ज्ञान ध्यान मे मन नहिं लागै उर अज्ञान अँधेरौ । मेरौ

सरसगति ते दूर भगत प्रिय लागै चोर लुटेरौ ।
सद् ग्रथन कौ मनन कर नहिं काम भोग को हेरौ । मेरौ

परधन देखत ही ललचावै, पर तिय चित्त बसेरौ।
पर उन्नति को देखि जरत नित, राग द्वेष की डेरौ। मेरौ

स्वारथ, अनहित, आपाव्रति राखै मेरौ नेरौ।
देख दुखी जन करत अनादर डर अभिमान घनेरौ। मेरौ

काम क्रोध मद लोभ मोह ममता माया कौ बेरौ।
पार होय किमि भव सागर ते बीच नरक को झेरौ। मेरौ

विषय विकार वासना विसयन मे फसि गयौ मन मेरौ।
ना जानौ कब है जाएगौ जमदूनन कौ फैरौ। मेरौ

अबहू चेति 'भँवर' मन माही पुरषोत्तम हिय हेरौ।
सद् ग्रन्थन के पठन मनन ते मन मे होय उचेरौ।। मेरौ

मेरौ मन भयौ विसयन कौ चेरो।
ज्ञान ध्यान मे मन नहि लागै, उर अज्ञान अँधरा।। मेरौ

पद

एक दिन यह तन धरनि परैगौ।
जा दिन कालि बली आय जायगौ टारे नहीं टरैगौ।। एक

बैद हकीम सबई पचि हारे कोऊ ना कष्ट हरैगौ।
व्याधि असाधि भये पै भैया सब विपरीत परैगौ।। एक

नौ कोठेन ते नबज छुटि है दिल धक-धक ना करैगौ।
आय कण्ठ म कफ अटकैगौ गहरौ साम भरैगौ।। एक

नाहि काहू की त्रिया तकैगी नहि परिधनहिं हरैगौ।
नाहि घमड के वचन कहैगौ नैनन नीर ढरैगौ।। एक

छुटै सास, बास मारै तन, प्रेत सरूप धरैगौ।
भाई बन्द सुत, कुटम, त्रियन दल, भारी रूदन करैगौ। एक

विषय वासना के सपने मे सुधि–बुधि सब बिसरैगौ।
सब कछू छोडि 'भँवर' उडि जायगौ जब जमदूत परैगौ।।

एक दिन यह तन धरनि परैगौ ।
जा दिन काल बली आय जायगौ, टारे नही टरैगौ ।। एक

पद

चेतन अनुपम अलख निरजन ।
निराकार, निगु न, नारायन, निर्विकार निब-धन । चेतन

घट-घट बासी, ज्ञान प्रकाशी, अविनाशी, मल मजन ।
जन-जन पापन पु जन भु जन, नन मन कु जन रजन । चेतना

जेतन अनुपम अलख निरजन ।
निराकार निगु न नारायन निर्विकार निब धन ।
काम, क्रोध मद, लाभ, मोह, ममता, माया मल मजन ।
धम कम सत ज्ञान 'भँवर मन' विषयन के गठ गजन ।।
चेतन अनुपम अलख निरजन ।
निराकार निगु न नारायण निर्विकार निबन्धन ।। चेतन

पद

हमारौ मन चेतन ज्ञान स्वरूप ।
परमातम कौ रूप आतमा ज्यो सूरज ते धूप ।। हमारौ

जैगै रवि ते प्रगट हुऐ हे सब ग्रह तेज सरूप ।
जल, थल, बादल सरित, सम दर, शिखर सुन्दर रूप ।।
हमारौ मन चेतन ज्ञान सरूप । परमातम कौ रूप आतमा ज्यो ।
ज्यो बिजली घर के प्रताप ते लट्टून जोति अनूप ।
ट्राजिस्टर बोले बतरावे, गावे शुद्ध हरुप ।। हमारौ

मन चेतन ज्ञान सरूप । परमातम कौ रूप आतमा ज्यो सूरज ते धूप ।
विषय विकार बासना बनि रहे ज्यो कहु अन्धे कूप ।
तजि आसक्ति, भक्ति हरि करि कछु सयम 'भँवर स्वरूप' ।।
हमारौ मन चेतन ज्ञान सरूप ।
परमातम कौ रूप आतमा ज्यो सूरज ते धूप ।

पद

हमारो तन चेतन कौ आवास ।
बिना चेतना जग जीवन की बन्द होत है सास ।। हमारो

अन्तमन विषयन कौ ध्यावै, बढत काम अभिलाष ।
सत् चिन्तन श्रुति मनन करे ते, मन ने होय उजास ।
हमारौ तन चेतन कौ आवास । बिना चेतना जग जीवन की बद ।
मानस दुलभ देह 'भँवर' करि कछु सयम अभ्यास ।
लख चौरासी जीव जौनि ने भटकि ना मूरख दास ।
हमरो तन चेतन कौ आवास बिना चेतना जगजीवन की ।।

पद

मन में माया बैरिन व्यापी ।
काम, क्रोध मद लोभ मोह के तस्कर घुसि रहे पापी ।।
मन मे माया बैठ अहकार पुकारत, मन म बनि रह्यौ प्रबल प्रतापी ।
भवसागर मे उठे लहर ज्यो मिटे आपन आपी ।।
रे हरि, क्रोध भभरि रह्यो मन मे, बोलत वचन प्रलापी ।
फौरन रन कौ बिगुल बजावे, द्वेष ईर्षा पापी ।
परधन हरन लोभ लालच वश चोरी की धैक व्यापी ।
घूँस, मिलावट, लूटमार की, है रही आपाधापी ।।
महा मोह, जग राम बाम यह काम देव परतापी ।
विषय वासना मे भटकावै ममता मोह जाल मे जकडयो दुराचार की
रापी ।।
'भँवर' भयौ सन्तापी । उर अन्तर शुचि राखि निरन्तर बनि ईश्वर-
को जापी ।।

पद

प्रभु जू ते कहियौ लाज हमारी ।
नीलकण्ठ नर हरिनारायण नील वसन बनवारी ।। प्रभू जू
परम पुरुस परमेसर स्वामी, पावन पवन अहारी ।

माधव महा जाति मधुमरदन मान मुकुन्द मुरारी ।। प्रभू जू

अमृत पान-घतिमान धराधर, अनिविकार अखिधारी ।
हौ मतिमन्द चरन सरनागति, कर गहि लेहु उबारी ।। प्रभू जू

श्रीमद्भागवत गीता को भावानुवाद

सवैया

ओउम् अखण्ड, अनादि, अनन्त अपार, अगोचर, अन्तर्यामी ।
प्रात पुञ्ज प्रताप प्रभा, परमेश पिता परमात्म प्रणामी ।।
ब्रह्म विकार विहीन विश्वम्भर विष्णु विराट विधायक नामी ।
सत्य सनातन सच्चिदानन्द, सदाशिव शोभित सुन्दर स्वामी ।।

□

यह ब्रह्म स्वरूप अनेप महा, जग व्यापि रहा चहु ओरन है ।
कहू नीरवता सुनसान महा, असमान जहा कहु शोरन है ।।
कहू गजन तजन होय महा, नहिं जाय कहा घनघोरन है ।
कहू तेज प्रचण्ड न जाय सहा, ब्रह्माण्ड महा कहु छोरन है ।।

□

ससार को सार सोई निराकार, अनन्त अपार अगम्य अगोचर ।
'भँवर' अम्बर भाव उगै जब भोरहिं ब्रह्म चराचर गोचर ।।
रैनि तरैयन हीरन खानि, वितान तने नभ ब्रह्म सगोचर ।
विद्युत वलव धरे जिमि जोरि, विमानन दिव्य दिबारी दृगोचर ।।

□

धावत आवत विद्युत सी, जगजोति बडे बिजली घर ते ।
जड चेतन को चैतन्य करै, नित नूतन शक्ति प्रभाकर ते ।।
अणु पिण्ड ब्रह्माण्ड मे शति अखण्ड, गुरुत्व है तत्व महेश्वर ते ।
नभ वलव समान नक्षत्र है भानु प्रकाशित है परमेश्वर ते ।।

□

कोटिन कोटि नक्षत्र भरी, नभ दूरिलो सोहत अकाश गगा ।
ज्यो देवयानी निहारिका पुजन, हीरन जोति जडी सब सगा ।।

च द्रप्रभा छवि ब्रह्म स्वरूप ज्यो काचुरी शेष भरे सित गगा ।
औरहू आगे अकाश महा, किमि जाय कहा न वने कछु ढगा ।।

□

आतम सौ परमातम तत्व कौ एकहि रूप बताबहिं ज्ञानी ।
ब्रह्म स्वरूप प्रभाकर ते प्रगटी किरने जग जीवन दानी ।।
एकहिं जोति जुरी जड जगम, ब्रह्म प्रकाशित है सब प्रानी ।
एकहिं चेतन शक्ति प्रचण्ड, अखण्ड अनन्त अन त बखानी ।।

□

ज्यो रवि के चहु ओर फिरे ग्रह सूरज मण्डल घूमे सदाई ।
त्यो तन जीवन कोष बने विकसे औ नसे है विषाणु की नाई ।।
ज्यो रक्ताणु झूमे इलैक्ट्रान है नाभिक के चहु ओर फिराई ।
तैसेहि ब्रह्म स्वरूप मयी जग घूमत है नित देत दिखाई ।।

□

द्वादश राशि अकास मे मानहु द्वादश मील विशाल सुहाई ।
मेष ते मीन लौ बारह मास लौ बास करै क्रम सौ रवि जाई ।।
एकहिं अश बढै औ घटै नित ब्रह्म स्वरूप सदा सुखदाई ।
काल कराल के जालन मे, जग घूमत है प्रभु की प्रभुताई ।।

□

उत्तर मे दृढ स्थित है ध्रुव ब्रह्म स्वरूप समाधि लगाई ।
सप्तऋषि परिक्रमा करे, सब उत्तर ओर के तारे सदाई ।।
जानि परै निस देखि दिशा ध्रुव, छोटे बडे हू ऋषी समुदाई ।
उत्तर दूसरौ लोक लगै, यह लोक अगस्त के फेरे फिराई ।।

दोहा

प्रकृति आतम-परमात्मा, जड चेतन एकत्र ।
घट घट व्यापक जानिये, अत्र–तत्र–सवत्र ।।

पञ्च तत्व ज्यो तन रमे, हिय आतम आनन्द ।
त्यो जानो ब्रह्माण्ड मे, व्यापक ब्रह्मान द ।।

बालमीकि रामायण कौ भावानुवाद–प्रथम सर्ग यानी नारद सर्ग

दोहा

नारद मुनि पुनि सब कही राम कथा विस्तार ।
ज म ब्याह बनवास, खरदूषण दल सहार ।।

सिया हरन, बाली मरन, लक जरन हनुमान ।
वानर दल सागर तरन, रावन मरन ग्रगान ।।

राम राज मुनि, भयउ अब, मिटे जगत सताप ।
रामचरित्र पवित्र इमि वेद हरे जिमि पाप ।।

विप्र पढे विद्वान हो क्षत्रिय पाये ताज ।
वश्य लाभ व्यापार मे शूद्र बने सरताज ।।

क्रोंच वध

तेहि अवसर निषाद इक आवा ।
देखि क्रोच सो बान चढावा ।।

मुनि देखेउ मारेउ नर पक्षी ।
लै गयौ ताहि ब्याध खग भक्षी ।।

क्रदन करन क्रौंची लागी ।
अति समीत इत उत कौ भागी ।।

बालमीकि मुनि कोमल हियके ।
देखि न सके दुख खग जियके ।।

अनायास मुनि वचन उचारे ।
कियौ अधम अरे हत्यारे ।

मा निषाद् चिर शाति प्रतिष्ठ ।
मोहित काम मिथुन वध क्रोध ।।

पुनि पुनि सोच कियौ निज वचना ।
खग लखि कहा कीन मैं रचना ।।

कही सिस्य सौ मुनि यह बाता ।
सोकित बचन कहे मुनि ताता ।।

दोहा

मुनि प्रणीत रघुवर चरित सरल शास्त्र अनुसार ।
सोई लवकुश गायन कियौ भगत जगत उद्धार ।।

राम राज्य सुख शाति नित पूरन तन मन-काम ।
सो लवकुश गायन कियौ कवि कृत काव्य ललाम ।

रामायन गगा सरिस पापन नासनहार ।
पठन आचरन ते जगत जीव होय भव पार ।।

□

गणपति वदना

आराध्य गणपति, गुरु ब्रहस्पति विचार वाणी विनाय कम ।
ऋद्धि-सिद्धि दाता, बुद्धि प्रदाता, बेदादि ज्ञाता विधायकम ।
अन आदि अन्ता, अज्ञान ह ता, विसानव ता, सुखदायकम ।
आनन्दकर्त्ता, मन मोद भर्त्ता, भवभार हर्त्ता, जग नायकम ।।

परभाती (प्रभाती)

आइये चेतन मन मन्दिर । निमल निर्विकार नित सु दर आइये ।।
सृष्टा पालक प्रवल भयकर । ब्रह्मा विष्णु सदा शिव शकर ।।
'भँवर' सच्चिदानद महे-दर । आइये चेतन मन मन्दिर निमला ।।
पावक, पवन, गगन, रवि, चन्दर । महि मडल, सर, सरित समन्दर ।।
वन, उपवन, कानन, गिरिक दर कच्छमच्छ खग मानस, बन्दर ।।
व्यापक घट घट कन-कन अ-दर । आइये चेतन मन म-दिर निमल निर्विकार ।।

भारती की आरती

मेरी माता भारती, हिमालै कण्ठ धारती,
ब्रह्मपुत्र विस्तारती, गगाजी कूँ प्रसारती ।
मेघन उतारती, सरोबरन धारती,
पबन सचारती, तू बनन बहारती ।
घनन घहारती, तू बनन बहारती
सुमारुती चलत, षट ऋतुन बिहारती ।।

धन धान धारती, सुफल, फूल वारती,
तू स्वग भूमि भारती, उतारु तेरी आरती ।

ऐरी माता भारती ! तू भरम निवारती,
कुक्मन कौ टारती औ धमध्वज धारती ।।

शास्त्र निधारती, सुशिला को प्रसारती,
तू वेदन उचारती औ ब्रह्म को विचारती ।।

गीता माता भारती, रामायनहू भारती,
तू आत्मवादी भारती, परमात्मवादी भारती ।

सत्य ज्ञान भारती, तू सत्व ज्ञान भारती,
तू विश्व ज्ञान भारती ऊनारूँ तेरी आरती ।।

साम्यवादी भारती, निष्काम वादी भारती,
समाजवादी भारती, समानता प्रचारती ।

सन्तन की भारती, बहु प थन की भारती,
तू सिक्ख, जैन, बौद्ध और कबीरप थी भारती ।

हब्शी, रूसी, पारसी, यहूदी, चीनी हि दुस्तानी,
ईसाई मुसलमान भाईन की भारती ।

सर्व धम धारती निष्पक्ष धम भारती,
तू विश्व धम भारती, उतारूँ तेरी आरती ।

तिब्बत तिजारती से चीन कौ बिडारती,
दुलारती है लक पाव सि धु मे पखारती ।

वैर कौ विसारती, असुर सहारती,
तू दान वीर भारती, मैदान वीर भारती ।।

सत्य कौ पुकारती, असत्य दुत्कारती,
तू कामी खल स्वार्थी शरारती को मारती ।

दुष्टन विदारती, अनिष्टन को तारती,
तू वीर भूमि भारती, उतारूँ तेरी आरती ।।

समाज-सुधार

साबाजी सत्यानासी,

अपने ही हाथन आप गरे मे लगाय रहे फासी ।।
कोऊ पान चबाय थूक की मारै पिचकारी ।
दातुन करते नाय कटे ज्याते सब ही बीमारी ।।
कोऊ पीवै चाय टैम ते चूल्हौ सिलगावै ।
पीवै गरमा गरम बाल बच्चेन मुख भुरसावै ।।
अपने गरे

कोऊ भगडी घोटि भग के गटकि जाय गोला ।
ज्ञान बावरे फिरै पुकारै हर हर बम बम भोला ।
अपने गरे

कोऊ खाय अफीम नीद की लगी रहे झपना ।
टट्टी उतरै नाय बैठ माथौ ठोकै अपना ।
अपने गरे

बीडी गाजे सुलफा के कोऊ लगाय रहे लुक्का ।
दै मुँह मे झूठे हुक्का कर रहे थुक्कम थुक्का ।।
अपने गरे

दमा कैसर टीबी बनि जाय कैसी मति नासी ।
खो खो खो खो करै उठै जब जोरदार खाँसी ।।
अपने गरे

करै शराब खराब बनै इसान कुकर मुत्ता ।
दारु पी गिर परै मूत जाय म्हौडे पै कुत्ता ।।
अपने गरे

भारत मे तीसन करोड रुपया कौ नित खर्चा ।
गन्दी आदत छाड, भवर के पढि लीजै पर्चा ।।
अपने गरे

ब्रजभाषा

ब्रज भासा तौ हिन्दी की आत्मा है,
'भँवरा' यह भारत भूमि की भासा ।

ना ये अंग्रेजी कौ मिक्चर है,
ना विदेशीन के अलफाज की भासा ।

रासो रची कवि भट्ट नैं जो,
अपभ्रंस मची दरवारन भासा ।

सोई मजदूर किसान के मुख,
गामन मे विकसी ब्रजभासा ।।

•

बिना पानी की जिन्दगानी

'नाय घर मे टपकाऊ पानी ।
सबके हा हा खाय कुआ पै खडी महतरानी ।।
सब कोऊ न्हावै जोर शोर ते राम नाम लैते ।
हर हर गगा गोदावरी जै तिरबेनी कहते ।।
सबके हा हा खाय कुआ पै खडी महतरानी ।
कह रहे सबई रिस्याय बहुत गुण्डा है गये भगी ।
दीन खेत उजारि पारि राखे मूअर जगी ।।
अबई तोकू भरवाय दै पानी ।। सबके हा हा

बोल्यौ एक रिसाय कै इनके हड्डा नै तोरूँगौ ।
छोरेऔ लठिया लाऔ दारी के चपटाय फोरूँगौ ।
बात सुन सुन के थर्रानी । सबके हा हा खाय

'एक बूढे ने कही खोट नाय कछु बिचारी कौ ।
इनकूँ सिर्री लगा रह्यौ है भँवर अँध्यारी कौ ।।
तबई ये करि रहे मनमानी ।। सबके हा हा

बहुत देर है गई करसिया एक बुढिया लाई ।
बाते मन की बात महतरानी यो बतराई ।।
सास मैं है गई नक मानी ।। सबके हा हा

नौ दस छोरा छोरी है गये आफत मोहि ब्यापी ।
बालिक प्यासे मरे जेठ मे लगै बहुत रापी ।।
करो निंक तुमही महरवानी । सबके हा हा

जैसै तैसै खैंचि डोकरी ने चपटा भरि दीयौ ।
देती गई असीस मात तेने बहुत पु न लीयौ ॥
पिवायौ बच्चन कौ पानी । सबके हा हा

भरी लोटा लै गई पती ने हक्कानी छोडी ।
कब ते प्यासे मरे कौनते बतराय रही घोडी ॥
उतरि गयौ आखिन कौ पानी । सबके हा हा

परिवार-नियोजन

भलौ परिवार नियोजन है ।
ज्यादा बच्चा पैदा करि क्यो मरि रहे बोझन है ।
जिस किसान के बट मे धरती दस बीघे आई ॥
पाच चार छोरान पै रह जाय बीघे दो ढाई ।
सधै नाय कछू प्रयोजन हे । ज्यादा बच्चा

जो कारीगर मकान चिनवे काहू कै जावै ।
प द्रह सोलह बीस रुपया नित मजजूरी लावै ।
तऊ रहतौ भव ब ध है । ज्यादा बच्चा

कबहू पियै शराब हारि आवै कबहू जुआ ।
क जा करिके मरै करै नॉय कोउ याके पूआ ॥
नारि नित करती क्र दन है ॥ ज्यादा बच्चा

विधवा दुखिया मरी भूख बीमारी की मारी ।
छोडि गई छोटे बच्चान की भई भारी ख्वारी ॥
कि इनको नाथ निरजन है ॥ ज्यादा बच्चा

भूखे बच्चा तिलफत डोने कोऊ नाय दे रोटी ।
इन ने कैसे उकताप लीनै कहे खरी खोटी ॥
देत नितगारी दुजन है ॥ ज्यादा बच्चा

कोऊ काटै जेब करि रह्यौ है कोऊ चोरी ॥
कोई ठग विद्या रचै बिगड गये सब छोरा छोरी ।
जेल मे करते भोजन है ॥ ज्यादा बच्चा

नामी गुण्डा बने जेल ते जब बाहर आये ।
बुरे काम, अपराध, डकैती चोरी अपनाये ।।
पुलिस कौ भलौ सुनियोजन है । ज्यादा बच्चा

कुण्डलोभिक्खीमल की

मक्खीमल कै छह सुता, पढि गई पाच किलास ।
भिक्खीमल क सात सुता नौ दस दर्जा पास ।।
नौ दस दर्जा पास, सगाई बारे आवै,
मागे बीस हजार लौटि सब बानिस जावै ।।
मक्खीमल की बेटिन की जब बात चलावै,
मागे तीस हजार करम ठोकत घट आवै ।।
बोली बढती देखि मगन मन मे भिक्खीमल,
तोबा दैया करे बडे भैया मक्खीमल ।।

विधवा-विलाप

समस्या कैसै सुरझै, समस्या कैसै सुरझ ?
इन बाल विधवान की समस्या कैसै सुरझै ?
इन दीन दुखियान की समस्या कैसै सुरझै ?
ब्याह है गयौ रे पर गौनो नाय भयौ रे ।
दूल्है पहिले ही छोडि गयौ रे, समस्या कैसे सुरझै ?
जुलम है गयौ रे, गजल है गयौ रे,
कैसौ काल खाय गयौ रे सगस्या कसे सुरझै ? इन बाल

घुमडि घन गरजै, बिजुरिया तरजै,
हमारौ मन लरजै, ममस्या कैसें सुरझै ?
इन बूढे डुकरान को कोऊ तौ नाय बरजै । इन दीन

सब सुख की नीद सोवे हम बैठे बैठे रोवे ।
आमुन ते मुँह धोवै रे, समस्या कैसै सुरझै ।।
घर के मतलब के गर्जी, सब बान बनावै फर्जी ।
मेरी हिंदू समाज ते अर्जी, समस्या कैसै सुरझै ?

कछू कोशिश करो 'भँवर जी' सब सुनले जेठ ससुर जी।
अब मेरे मन की हो गयी मर्जी रे समस्या ऐसै ही सुरझै।
इन बूढे डुकरान को कोऊ नाय बरजै ।
इन बाल विधवान की समस्या कैसै सुरझै ।।

कुण्डलियाँ

बेटी विधवा है गई, रही बाप घर आय ।
माता पिता अति दुखित है, बुद्धू रहे सिहाय।
बुद्धू रहे सिहाय, इशारेन मे बतरावै ।
आगि-फूस कौ बैर कहा लो मन समझावै ।।
पुनर्ब्याह मे नाक कटै, समझै कुल हेटी ।
सधवा फूली फिरै दुखी है विधवा बेटी ।।

□

लाला कै लाली बहुत, पुत्र दियौ नही राम ।
इच्छुक दूजे ब्याह के, ब यौ नही कहु काम ।।
बन्यौ नही कहू काम रुपया कौ लोभ दिखायौ ।
तऊ कोऊ बेटी बारौ बुद्धू नहिं आयौ ।।
लगवाय लीने दात खिजाब लगायलियो माला ।
आखिन सुरमा सारि छैल बनि बैठे लाला ।।

□

गीता रामायण पढौ, चाहे पढौ कुरान ।
कान सबन के काटती, इक डोकरी पुरान ।।
इक डोकरी पुरान सबन कूँ सीख सिखाती ।
ब्याह करौ चाहै मरौ सब जगह टाँग अडाती ।
भँवर पुजाए भूत, अन्ध विश्वास बढ़ाए।
दरिया बुस्यौ खबाय, सेढते पुत्र बचावे ।।

कवित्त

बन गौड यूहिदिन इन वल्ड व्यापक तू ।
निर्विकार 'भँवर' विकार विनमागा है ।

नामी गुण्डा बन जेल ते जब बाहर आये ।
बुरे काम, अपराध, डकैती चोरी अपनाये ।।
पुलिस कौ भलौ सुनियोजन है । ज्यादा वन्चा

कुण्डलोभिक्खीमल की

मक्खीमल कैं छह सुता, पढि गई पाँच किलास ।
भिक्खीमल कैं सात सुता नौ दस दर्जा पास ।।
नौ दस दर्जा पास, सगाई बारे आवैं,
मागे बीस हजार लौटि सब वापिस जावैं ।।
मक्खीमल की बेटिन की जब बात चलावैं,
मागे तीस हजार करम ठोकत घट आवैं ।।
बोली बढती देखि मगन मन मे भिक्खीमल,
तोबा दैया करे बडे भैया मक्खीमल ।।

विधवा-विलाप

समस्या कैसै सुरझै, समस्या कैसै सुरझै ?
इन बाल विधवान की समस्या कैसै सुरझै ?
इन दीन दुखियान की समस्या कैसै सुरझै ?
ब्याह है गयौ रे पर गौनो नाय भयौ रे ।
दूल्है पहिले ही छोडि गयौ रे, समस्या कैसे सुरझै ?
जुलम है गयौ रे, गजल है गयौ रे,
कैसौ काल खाय गयौ रे समस्या कैसे सुरझै ? इन बाल

घुमडि घन गरजै, बिजुरिया तरजै,
हमारौ मन लरजै, समस्या कैसें सुरझै ?
इन बूढ़े डुकरान को कोऊ तौ नाय बरजै । इन दीन

सब सुख की नीद सोवे, हम बैठे बैठे रोवे ।
आसुन ते मुँह धोवै रे, समस्या कैसै सुरझै ।।
घर के मतलब के गर्जी, सब बात बनावैं फर्जी ।
मेरी हिन्दू समाज ते अर्जी समस्या कैसै सुरझै ?

कछू कोशिश करो 'भँवर जी' सब सुनले जेठ ससुर जी।
अब मेरे मन की हो गयी मर्जी रे समस्या ऐसै ही सुरझै।
इन बूढे डुकरान को कोऊ नाय बरजै।
इन बाल विधवान की समस्या कैसै सुरझै ।।

कुण्डलियाँ

बेटी विधवा है गई, रही बाप घर आय।
माता पिता अति दुखित है, बुढ्ढ़ रहे सिहाय।
बुढ्ढ़ रहे सिहाय, इशारेन मे बतरावै।
आगि फूस कौ बैर कहा लो मन समझावै।।
पुनर्ब्याह मे नाक कटै, समझै कुल हेटी।
सधवा फूली फिरै दुखी हे विधवा बेटी।।

□

लाला कै लाली बहुत, पुत्र दियौ नही राम।
इच्छुक दूजे ब्याह के, ब यौ नही कहु काम।।
बन्यौ नही कहू काम रुपया कौ लोभ दिखायौ।
तऊ कोऊ बेटी बारौ बुढ्ढ़ नहिं आयौ।।
लगवाय लीने दात खिजाब लगायलियो माला।
आँखिन सुरमा सारि छैल बनि बैठे लाला।।

□

गीता रामायण पढौ, चाहे पढौ कुरान।
कान सबन के काटती, इक डोकरी पुरान।।
इक डोकरी पुरान सबन कूँ सीख सिखाती।
ब्याह करौ चाहै मरौ सब जगह टाँग अडाती।
भँवर पुजाए भूत, अन्ध विश्वास बढाए।
दरिया बुस्यौ खबाय, सेढते पुत्र बचावे।।

कवित्त

बन गौड यूहिदिन इन वल्ड व्यापक तू।
निर्विकार 'भँवर' विकार विनसाय द

फ्रौम अनरीयल यू लीड मी टू दी रियल ।
असत नसाय सत्पथ पै चलाय दै ।।
फ्रोम डार्कनैस लीव मी टू यौर लाइट ।
निवारि अ धकार ज्योति पास पहुचाय दै ।।
फ्रौम डैथ लीड मी टू इममोरटैलिटी टू ।
मृत्यु से उबारि मोहि अमृत पिवाय दै ।।

□

साई परम स्वतत्र तुम राम च द रघुन द ।
न द न द आनन्द कन्द क्यो हवालात मे बद ?
हवालात म ब द गुसाई तुमको राखै ।
वे सब भोगे भोग तनक तुम क्यो नाय चाखै ।
हम तुम बुद्धू बने खुदा बनि गऐ गुसाई ।
भूलि गये गीता रामायन बनि गये साई ।।

□

धेला पइसाते अलग, बाबा नगा नाथ ।
मन्दिर प धूनी रमै, सबई नवावै माथ ।।
सबई नवावै माथ, हाथ चरनन पै धरिकै ।
बिन पूतन की नारि च्रिमा लै जाय करिकै ।।
नित करे सत्सग, भग गाज कौ चेला ।
मन्दिर फूटयौ जाय लगाइबे को नहिं धेला ।।

□

हुक्का भरिवे म बच्यौ, लल्लू हुक्काबाज ।
बीडी पीवै चोरिकै, घरते लै जाय नाज ।।
घरते लै जाय नाज, साँझलौ रहै अवारा ।
गाजौ सुलफा भग पियत नित ठाकुर द्वारा ।।
घरके बुद्धू लडै करै नित डुक्कम-डुक्का ।
लल्लू सेटे नाय बजावै निसि दिन हुक्का ।।

□

नसबन्दी चौ करि रहे, क्यो रहे लूप लगाय ।
दारू खूब पिवाइये, जनसख्या घटि जाय ।।

जनसख्या घटि जाय, करो बुद्धून की छुट्टी।
सब कोउ जहरीली शराब की पीवे घुट्टी ।।
यादव छप्पन कोटि लडि मरे पी यह गन्दी।
मरि रहे दारूबाज करावे क्यो नसबन्दी ।।

कवित्त

मेरौ कुँवर जि भट्टू, काम करै अधकट्टू,
पढिवे मे बडौ रट्टू, खावै पडित पै चट्टू है।
बुद्धि वजर बट्टू, गारी देवे मे सुपट्टू,
पिटिवे ते नाय हट्टू, फेरि रोबै मुँह फट्टू है।
काछत जनाने पट्टू, डोलत फिरात लट्टू,
बैठत गधा पै छुट्टू, गोरि जात टट्टू है।
काम कौ है नट्टू, चाय बीडीन कौ चट्टू
अब कैसै करू भट्टू, छोरा निपट निखट्टू है ।।

दोहा

बुद्धू घर कौ लाडिलौ, पढि गयौ पाच किलास।
तीन साल मे कर लई, एक परीक्षा पास ।।
पढिवे मे बुद्धू 'भँवर' चटक मटक मे तेज।
मोटर, फटफट, रेडियो मागै खूब दहेज ।।

☐

लाला सोलह साल कौ, लालो सत्रह साल।
बेटी बारौ यो कहै, ब्याह होय याही साल ।।
ब्याह होय याही साल, चढै जेवर जडियासौ।
धूमधाम ते लाओ, तुम नादिक बढिया सौ ।।
बुद्धू रह जाय दग, देखि कै ब्याह विसाला।
हँसन की होय कार बैठिके निकरै लाला ।।

☐

लाला ब्याहन की फिकरि, गाडी भरी किसान।

नाज गज कौ ले गयौ, चोरन घेरयौ आनि ।।

चोरन घेर्‌यो आनि खैंचि लई दो द्वक बोरी ।
हल्ला हबकौ करयौ, करी ताकी हुडफोरी ।
फिर आढत पै गयौ, जपै जहँ लाला माला ।
बुद्धू बैठ्यौ चुप्प लूटि रहे दिन लाला ।।

□

हलला साहेन को मच्यौ, सबकौ लगि गयौ दाव ।
कपडा चीनी डालडा, सबके चढि गये भाव ।।

सबके चढि गये भाव, कपट चादी सोने मे ।
रुपया तीस हजार लग्यौ, शादी गोने मे ।।

खेत कुआ बिक गये कज मे पिस रहे लल्ला ।
बेटा ब्याहयौ खूब, बुद्धू कौ हल्ला ।।

□

बुद्धू पै विपता बहुत, बाप भयौ बीमार ।
बिना दवाई मरि गयौ, खर्चा ते लाचार ।।

खर्चा ते लाचार, फूल गगा मे डारे ।
पडा कहै रिम्याय, दच्छिना धरिजा मारे ।।

कह रहे भैया बन्धु, मरै नाय फिर फिर दद्दू ।
दस मन होइगौ चून सनाकौ खायगौ बुद्धू ।।

□

स्वग सिधार्‌यो डोकरा, चिट्ठी दई भिजवाय ।
बेटी रोवे सुनि खबरि, बुद्धू रहे सिहाय ।।

बुद्धू रहे सिहाय आय गये अब तौ पूआ ।
रोइबे को चलि दई, डोकरी दादी भूआ ।।

झूठ-मूठ डकराय, राम ने जुलम गुजारे ।
हमको नाये काल डोकरा सुरग सिधारे ।।

□

पुआ चालू है गये, खीर हुई तैयार ।
न्योतारी अरु गामके, आ गये नातेदार ।।

आ गये नातेदार, सम्हरि कै बैठे धौदू।
पेट ढोल है गये, हटे नाय तौऊ भौदू।।
घासलेट धरयि याद मग आवै आलू।
कछ्छू हेजा करि मरे, तऊ फिर पूआ चालू।।

बुद्धू हारयौ मुकदमा, कहबे लगौ वकील।
चिन्ता की का बात है जल्दी लऊँ ऊपील।।
जल्दी लऊँ अपील, जौधपुर जानौ परि है।
खर्चा सुनिकै डबल मुवक्किल चिन्ता करि है।।
राजीनामा करूँ कहे, मोइ सब कोऊ लट्टू।
बासन भाडे बेचि जोधपुर चलि दीयौ बुद्धू।।

कवित्त

'भँवर' मास्टर, मैया इन्सपक्टर,
ताऊ ऐडीटर, काका कम्पोजीटर है।
छोरा कन्डेक्टर, जावै बस मोटर
चलै खटर पटर करै फटर फटर है।।
खेत दस हैक्टर, जामे चलै ट्रैक्टर,
बोऊँ चना मटर, कछू आलू टमाटर है।
गाव आयौ मिनिस्टर, सग लायौ कलैक्टर,
बोलै गिटिर मिटर, दूकै मटर मटर है।।

कवित्त

अनिल तुपार कहु भारी जलधार बाढ,
कहू मारवाड तातौ रेत बरसत है।
'भवर पहाड ठाडे झाड झखाड ताड,
कहू वन बागेन हरयाली सरसत है।
कहु बारह मजिल, मकान ऊँचे ठाडे हे,
कहु झुग्गी झोपडी, सडी सी दरकत है।

कहू ईट सोने की छिपाय राखी भीतिन मे,
भूखन मरत कोऊ, प्यासौ तरसत है ।।

कुण्डली मक्खीमल की

मक्खीमल सोची अकल, खोलो दूध दुकान,
'भँवर' बेचते साथ मे, भाति-भाति मिष्ठान ।।
भाति-भाति मिष्ठान, इमरती बालूशाही ।
दिन भर मक्खी परे, मैल की जमि जाय स्याही ।।
लड्डू, पेडा, कलाकन्द, रबडी रसगुल्ला ।
सब पै गन्दी धूलि गिरत है खुल्लम-खुल्लम ।
पानी मिलवा दूध मिलावै कछु सपरेटा ।
चीनी डार खूब, चतुर व्यापारी बेटा ।।

पाप हरन कुण्डली

राजनारायण कर चुके, जनता दल उद्धार ।
राजघाट पै जाय कै, कीनौ मत्रोचार ।।
कीनौ मत्रोचार, यज्ञ करि पाप पजारे ।
गंगाजल दियौ छिडकि, शुद्ध पापी करि डारे ।।
सबई पार्टी सुनौ, बनौ मत पाप परायन ।
नहि फिर पाप हरन करि डारे राजनारायन ।।

सवैया

बीडी औ चाय शराब नै खूब, खराब कियौ यह भारत शासन ।
भारत गप्प की लप्प दुशासन, ठप्प कियौ जनतत्र प्रसासन ।।
घूँस बिना नहि काम करै कौऊ काहू कौ, मानै नही अनुशासन
दीन की कोन सुनै अरजी, मरि जाऔ मल दम घोटि उसासन ।।

कवित्त

काहू के मकान और, दुकान कारखाते है

कोऊ दाने दाने कौ तरसि प्रान खोवै है।
कोऊ हाथ मारत हजारन किरोरन पै,
कोऊ कजदार ब्याज, देत देत रोवै है॥
'भँवर नवाब साब, ऐठ मे फरत कोऊ,
टट्टीन के मैल ढोय, नीच भगी होवै है।
पकरि रह्यौ है कोऊ, दोऊ पाव रामजी के,
कोऊ जाम पीके परयौ, नाली बीच सौवै है॥

□

विविध सिंगार करै, बार बने हिप्पी कट्ट,
डाढी मूछ अट्ट पट्ट, पीवै सिगरेट है।
नये नये सूट बूट शाकाहार झूठ-मूठ,
बैड टी, डिनर, मद्य—मीट भरपेट है॥
छोरा-छोरा फेर कछु भँवर ना जायौ परै,
तहमद जनाने से, लगाय जात लेट है।
नारि रूप नर है कि नर रूप नारि यह,
अद्ध नर नारी ते भला सी लागै भेट है॥

□

कैसौ ऊँचौ स्तर 'भँवर' घर है गयौ है
जब ते भयौ है लुक्का काका सरपच है।
प्रात पीबै बैड टी, करत ब्रेक फास्ट फेरि,
शाम को डिनर औ दुपैर लेत लच है॥
अण्डा, मच्छी, मीट सब पेट मे समाय जाय
हुक्का दारू बाजन की जोरि बैठे मच है।
करत हराम, गाम काम ना करत रच,
झूठ, फूट लूट कै रच्यौ करै प्रपच है॥

दोहा

भैस भये वोटर 'भँवर' बिन अकोर नटि जाय
दारू बोतल नोट लै, डारे वोट सिहाय।

जाति पाति की ओट लै, ठाडे भये निघोट,
होय जमानत जब्त जब, दै कमन कौ खोट ॥

ओछौ जीति चुनाव मे, बबर शेर बनि जाय,
'भँवर' असलियत आपनी हारे पै दरसाय ।

'भँवर' धरनि मे बैठि जा करम लिखी नाय सीट,
ऊँची कुर्सीन मत चढ कोऊ डारगौ पीट ॥

चोरी की रपट

'भँवर' सोयो सुट्ट, लीनी चोरन लपट्ट,
खर घुसे खोलि पट्ट, लीनो माल ताल झट्ट ।

मैने सुनी खट्ट खट्ट तब कीनी हट्ट हट्ट,
भागे सब सरपट्ट, गयौ एक है रिपट्ट ।

मैने पकरयौ झपट्टि, गयौ कण्ठ ते लिपट्ट
आये लोगे बाग छट्ट, उन पीटयौ खूब डट्टि ।

गयौ पावते चिपट्टि, बाध्यौ लेज ते लपटिट,
थाने लगै झटट पट्ट, मैने कीनी है रपटट ।

□

थानेदार चौपट्ट, बाने कीनौ है कपटट,
घूस लीनी भरि पट्ट बाकूँ छाडि दीनौ झटट ।

हाथ बेत सरासटट, बानी बानी बोलै अटट पटट,
दारू पीके गटागट्ट, गारी दैत फटाफट्ट ।

मोकूँ दीनी है डपटट कीनी झूठी है रपटट,
चल भाग यहाँ सौ हटट, नहि मारूँगो चपटट ।

मै तौ भूल्यौ अटपटट, म्हाँते भाग्यौ चट्टपट्ट,
सास चले सुर सटट घर लीनौ सरपट्ट ॥

दोहा

धन्य किसान समाज कौ, भरै जो सबकौ पट,
अन्न बिना सब सुन्न जग, है जाय मटियामेट ॥

हरि इच्छा हारयौ 'भँवर', पथ्वीराज चौहान ।
ऐशियाड ज्यो हारिगौ, हाकी हि दुस्तान ।।

देश, भेष, भाषा, धरम, जाति गोत परिवार ।
भेदभाव क गढ 'भँवर' ज्यो बर्लिन दीवार ।।

जाति पाति के नाम पै, क्यो रहे बैर बढाय ।
एक पितगा आगि ते, गाम भसम है जाय ।।

सुनि कटु वचन अजान के, क्यो मन 'भँवर' रिस्याय ।
काटे परे जो गैल मे धरिये पात्र बचाय ।।

भगवन दीन दयालु चौ परि गयौ नाम तुम्हार ।
कम कार कौ कार नहिं, बेकारन कौ कार ।।

ब्रह्मा ते ईरान लौ, धुर अफगानिस्तान ।
सब मिलि सघ बनाइये, भारत–पाकिस्तान ।।

जिन्ना जो नहिं करि सक्यौ कियौ याहियाखान ।
पूरन पाकिस्तान कौ चूरन पाकिस्तान ।।

गढ तौ लोहागढ

कौन धाम जाऊँ, न्हाऊँ कौनसी नदी मे कूद,
पडान के डडान कौ व्यापि रह्यौ त्रास है ।
शहरन के मैल गगा जमुना मे बहाये जात,
'भँवर' किनारे ठाडौ देखत उदास है ।।
गिलगित हिन्दू कुश पाक ने दवाय लीने,
चीन चाहै छीनवौ हिमालै कैलाश है ।
ब्रज की कहानी हू पुरानी परि गई है आज,
कु ज ना कदम्ब ठाडे मेडन फरास है ।।

□

कामवन, विन्दावन, मधुवन, महावन,
लोहवन रह गये है नाम के महान है ।

केवल बच्यौ है केवल देव गौ घनौ ही एक,
सेंचुरी हमारी जाने गाकल अहान ।।

दूर दूर देसन ते आवे टूरिस्ट लाग,
लाज मे रहत कोऊ तानि के वितान है।

घूमि घूमि देखे भूमि, प्रातकाल पछी झील,
कुकड-कुकड कुक्क-कुक्क कल गान है।।

□

बैर, औ भुसावर ते ब्याने रूपवास तक,
गाम गौत खेतन मे पेढ बसुमार है।

पानन के बाग है खरैरी बागरैन में औ,
सैंधली रणधीर गढ़ आमन बहार है।।

शीशो, नीम, पीपर, बमूर, बेरिया है बेर,
बिरबिरा औ धौ त हर लागत पहार है।

बारैठे कौ बन्ध व्यानौ चौमास सुहानो लागै,
आक ढाक फूलन पै 'भँवर' गुंजार है।।

जेठ दोगरे

तपत तरन ब्योम करत किरन होय,
धरन मचाती धूम परम गरम तूम।

चलत पवन सूम सनन सनन् सूम,
दामिनि दमक दूम कडर तडर तूम।

पटर पटर बूंद परत गिरात भूम,
बाल बच्चे नगे चगे नाचत झमक झूम।

गगन मगन घन घिर आये घूम घूम,
बरसें 'भवर' भव्य भारती चरण चूम।।

व्याकरण बोध

नारि पढी थोरी 'भँवर', सरल व्याकरण बोध।
हमने तीनो पुरूष के, पूछे लक्षण शोध।

पूछे लक्षण शोध, लपक कर बोली बैना।
है वो उत्तम पुरुष, मढावै बढिया गहना।
मध्यम है वो पुरुष खरीदै कबहुक साड़ी।
कछु नही लावै अ य पुरुष, अति सूम अनाडी।

भूत बाधा

घर के और सब गाम के सुन लेओ कान लगाय,
जीमत ही कवि 'भँवर' कौ देऔ थान बनवाय।
देऔ थान बनवाय नई तौ भूत बनु गौ,
आख कान मे दद सबन के खोर करूँगौ।
ऐठ मरौरा उठे पेट मे होयगौ अफरा,
ठोकर खाय कोऊ गिरै भरयौ जायगौ कनकपरा।
तार काढ हललन कह दे कोऊ नाय बाहर कौ,
देयो थान बनवाय देवता बिचरयौ घर को।
फिर होयगौ गगौज थान बन जाये पत्थर के
खील बतासे चढे ढोक दिंगे सब घर के।

आप बीती

कवित सुनन की सबन कूँ परि रही,
कबी सूर के सिर पै सनीचर बिठौआ है।
रहबे मढ़ैया नाय ओढिवे उढैया कछू,
सौरि ना बिछैया जाडौ जानि कौ लिवौआ है।
दूध दही नही कहू घृत हू मिलत नही,
चटनी ते रोटी खाऊँ नाज पाँच पौआ है।
घर के हमारे सब तारे कूँची बारे बने,
'भँवर' समझि राख्यौ जैसै कोऊ रडुआ है।।

☐

पूरे एक दजन बाल बच्चे पैदा भए,
खाइबै ना नाज कैसै राम कौ बनौआ है।

कोऊ मागैं रोटी, दूध, दरिया, महेरी कोऊ,
पूरौ, गुर डीमरी कूँ ठिनक ठिनौआ है ।।

कोऊ फैंकै पत्थर परौसिन की फोरैं टाट,
सि नी बाटि 'भवर' मनावत मनौआ है ।

बेगम हमारी की लिलारी रिस भारी भरी,
बे लगाम बोल नीम नीम कौ पतौआ है ।।

औरन की नारिन पै गहने अनेक देखि,
कहे फूटे भाग मिलयौ 'भँवर' मुतौआ है ।

मेरे छौरा ज्वान हुगे जबई बताय दऊगी ।
बैठी राज भोगूँगी कहा कौ कनकौआ है ।।

पीऊँ जब महेरी दूध, माखी परैं कूदि-कूदि,
छत चढि जैऊ करैं काउ-काउ कौआ हे ।

पेडन पै चैंटा करकैंटा ततैया बर,
खेतन औ गौतन कलीली कीट जौआ है ।

स्याप बिच्छू छप्परान बिटौरान मच्छर है,
विस्तरान जूआ खटमल खून खौआ है ।

'भँवर' जनिन जिन्द सब पीछे परैं,
राम के सपूत जमदूत भूत हौआ हें ।।

बाल लीला

छन्द

श्री कृष्ण कृपाला, नन्द के लाला, प्रगटे गोकुल ग्रामा ।
भई मात निहाला, गोपी ग्वाला, हर्षित निज-निज धामा ।।

हरि दीन दयाला, मदन गुपाला, लाला तन घनश्यामा ।
रूप रसाला, नैन विसाला, असुरन काला रामा ।।

रग बरसैगौ

कवित्त

रोवत है, होबत हे चुप्प, फिर सोवत है,
त्यागि मलमूत लाल लतन भिगोबै है।
चाहे जब कूचर पुचग बोबो पीवत है,
चाहै जब छोना निज ध्यान लीन होवै है।
चाहे जब सुसकि मसकि के उसास लेत,
चाहै जब हाथ पाव झटकि के रोबै है।
जैसे क्षीर सागर म बास करै विष्णु ब्रह्म,
राम रूप घनश्याम सोबरि मे सोबै है ।।
आई अहि पूतना ज्यो भेजी कस दूतना सी,
कुटिल कपूतना सी पूतन कौ खाबै है।
नग अवधूतना सी, अगना भभूतना सी,
भूतना सी भागै, जमदूतना सी आवै है ।।
नारी नवनूतना सी, जोर मे अकूलना सी,
ऊँटन के थूथना सी, धूँकना सी धाब है।
टेढी टेढी ढूकना सी, बछलन बूँकना सी,
नाक याकी फूँकना सी हूकना मचावै है ।।
पापन की पकिनी सी, कपट कलकिनी सी,
मोहन की बकिनी सी, डकिनी सी आबै है।
हाल माल बालकन कठिन कराल काल,
काली काली कालिका सी जीभ लपकाबै है।
छूआछूत भूतरी सी, बीमारी की सूँतरी सी
जाराहूली पूतरी सी, पूतना बन्याबै है।
आई जसुदा के धाम छाती ते लगायौ श्याम,
दूध म दुराय बिष बोबो मुखे प्याब है ।।

दोहा

कटु लाग्यौ थन विष वमन, कियौ लाल तत्काल ।
मरी डरी महि पूतना, परी विकट विकराल ।।

कवित्त

लाल एक साल कौ लिपटि लागै मैया कंठ,
बाबा कंठ लागै, पुनि मैया कंठ लागै है।
पाव परे अड्डु बड्डु, लैया पैया गड्डमड्डु,
ऊपर गिरत भड्डु फेरि हँसि भागै है॥
मैया और बाबा सब हँसत तमासगीर,
नंद मौन भीर देखि देखि अनुरागै है।
दस बीस चक्कर लगाय थकि जाय जब,
मैया गोद बैठि कछु खेलिबे कौ मागै है॥

नीति मुक्तावली कवित्त

कोऊ भूखौ काम कौ है, कोऊ भूखौ दाम कौ है,
कोऊ भूखौ नाम कौ है, कोऊ गाम गोट कौ।
कोऊ भूखौ सूटन कौ, कोऊ भूखौ बूटन कौ,
कोऊ भूखौ पेंटन कौ, कोऊ भूखौ कोट कौ॥
कोऊ भूखौ नाचिबे कौ, गाइबे बजाइबे कौ,
'भँवर' रिझाइबे कौ, कोऊ खाट लोट कौ।
कोऊ भूखौ रोटन कौ, कोऊ भूखौ नोटन कौ,
कोऊ भूखौ वोटन कौ, कोऊ है सपोट कौ॥

दोहा

जाति पाति की ओट मे, ठाडे हुए निघोट।
होय जमानत जब्त जब दे कमन कूँ खोट।
जाति पाति के नाम पै, मागि रहे जो वोट।
हँसी करामे आपनी, मूरख करे सपोट॥
जग मे जितनी खोपडी, उतन ही मति मुंड।
जितनी बनि रही झौपडी, उतने न्यारे झुंड।
सुने न समझे डूंड से, यारे मूरख मूंड।
भरे रहे अभिमान मे, हाँके न्यारे कूँड॥

काम क्रोध मद मोह तजि, जीव मुक्ति-मुख पाय ।
ज्यो सपने दुख पायके, जगे भँवर हर्षाय ।।

बहुतक साथी जेल के, छोडि गये निज नाम ।
अमर भँवर कोऊ नही, अबहू करि कछु काम ।।

स्वजन जाति जन गाम के सबके प्यारे ध्येये ।
कहा परेखौ और कौ, निज तन साथ न देय ।।

दाना दुश्मन हू भलौ जाकौ सुदढ सुभाव ।
भँवर मित्र कैसे निभै, जिनके कपट दुराव ।।

□

जो सबते ऊँचे बने बिनके दभ घटाय ।
भँवर कहामे नीच जा, उनको लेउ उठाय ।।

भँवर बुद्धि बल पायके, करहु न जन अपमान ।
चेटी एक घटाबई, हाथी कौ अभिमान ।।

जौ भौतिक उन्नति चहै, तौ धन भँवर कमाय ।
आतम उन्नति जो चहै, सदाचार अपनाय ।।

धम जाति के नाम पै, क्यो रहे रारि मचाय ।
भँवर बीज बिष बोइके, सबही गये नसाय ।।

□

ठगिया बहुत बजार मे, भँवर राखि निज ध्यान ।
मीठे पै माखी घनी, फीके से पकवान ।।

सुनि कटु वचन अजान के, क्यो मन भवर रिसाय ।
सत्पथ मे काटे परे, धरिये पाँम बचाय ।।

धन धरती पद परमिया भँवर पाय ललचाय ।
दुश्मन की कहिये कहा, मित्र दगा दै जाय ।।

फसि कुसग दूषित भयौ, तन मन विषय प्रभाव ।
भली वाल अवलान के, करि दिये कुटिल सुभाव ।।

□

भँवर किसान समान को, भरै जो सबको पेट ।
अन्न बिना सब सुन्न जग, है जाय मटियामेट ।।

नारि नहामत नगन तन, भेरि न पौरि किवार ।
उझकत झिझकत चित्त भँवर, चौकति बारम्बार ।।

भगवन दीन दयालु क्यो, परि गयौ नाम तुम्हार ।
कमकार को कार नहिं, बेकारन को कार ।।

गीता रामायन पढी, अथ न समझयौ गूढ ।
ज्यौ कौ त्यौ बुद्धू भँवर, किकत्तव्य विमूढ ।।

तर्ज आल्हा

ओम भूभु व स्व मह जन तप सत्य लोक लौधरिये ध्यान ।
ईशावास्य इदम सवम यह जहँ लगि जा यौ परै जहान ।।
जड चेतन जग ब्रह्म रूप है, निराकार साकार समान ।
सह सनाम जरथुस्त्र पहोबा, ईश्वर अल्ला गौड महान ।।

सबही मजहब एक रूप हे, सबकौ है एकहि भगवान ।
हम सब आपस मे मिलि रहै, सब एकई ईश्वर की सतान ।

है वसुधैव कुटुम्ब हमारा कहते आये वेद पुरान ।
कहत यही धम्मपद, जि दावेस्ता, बाईबिल और कुरान ।।

'आजादी की लडाई (तर्ज आल्हा)

पार ब्रह्म परमेश्वर सुमरूँ परमातम ते ध्यान लगाय ।
सकल चराचर के घटघट मे, चेतन शक्ती रही समाय ।।

जोति पु ज सूरज नारायन, जो असुरन कौ रहे जराय ।
अगनि भवानी जगदम्बा जो, चण्डी काल रूप बन जाय ।।

हर हर शकर महा भयकर, जिनकौ रूद्र रूप विकराल ।
काम जराय के असुर सँहारे, नाचे पहरि मुण्ड की माल ।।

राम कृष्ण नरसिंह रूप धरि, प्रगट भये असुरन के काल ।
पवनपुत्र रन मे बजरगी, जय हनुमान अजली लाल ।।

राम राज्य स्थापित कीन्हो, हरनाकुश कौ उदर बिदारि ।
अभिमानी दशकन्धर मार्यौ, केश पकरि दियौ कस पछारि ।।

धरती माता व्याकुल है गई, जब जब पर्यौ पाप कौ भार ।
अनुर सहारन कारन हरि ने तब तब धरि लीन्हो अवतार ।।

जब जब भीर परी भारत पै, तब तब हरि ने करी महाय।
चढे विदेशी जो भारत पै, सब लै गये कलक लगाय ।।

सब देसन कौ जीति सिकन्दर, आयौ झेलम के मैदान।
ऐसौ बान लग्यौ पोरस कौ, पहुच नही पायौ यूनान ।।

सौमनाथ ते चल्यौ गजनबी, पिटके बन्यौ सिंध मे राग।
हत्यारौ तैमूर लग हू, लँगढौ कियौ टोरि दई टाग ।।

फ्रासीसी पुतगाली गोरा, आये अजगर सौ मुँह खोल।
सन्मुख भिड गये भारतवासी, सबके करि दिये बिस्तर गोल

अभिमानी हरिनाकुश बाढयौ, लका मे रावण बढ्यौ प्रचड
तैमे ही साम्राज्य बढे पै, अँगरेजन कौ बढ्यौ घमण्ड ।।

लूट मचाय दई अँगरेजन ने, भारतवासी करि दिये तग।
भडकि उठे सब क्रुध सिपाही, मेरठ माहि मचाय दई जग।

जकी अजीम तातिया टोपे, नाना कुँवरसिंह सरदार।
झाँसी बारी रानी भिड गई, लैकर मे नगी तरवारि ।।

हजरत महल लखनऊ बारी, अँगरेजन पै रही रिसाय।
जीनत महल मुगल बेगम ने, गुप्त योजना लई बनाय ।।

अतिम मुगल बादशाह बूढे, शायर जफर मुहम्मद शाह।
कैदी बनि गये आजादी हित, गद्दी की छोडी परवाह ।।

कोऊ फासी पै लटकाये, कोऊ गोलीन ते डारे भून।
कोऊ बरछी भालेन ते छेदे, लाखन कौ करि डारयौ खून ।।

जो विपता भारत पै परि गई, सो दुश्मन पै परियो नाँय।
बोल बन्द सबके करि दीन्हे, क्षत्री कानन मे बतराय।

राजा जमीदार व्यौपारी, बनि गये खैर ख्वाह गद्दार ।

नारि नहामत नगन तन, भेरि न पौरि किवार ।
उझकत झिझकत चित्त भँवर, चौकति बारम्बार ।।

भगवन दीन दयालु क्यो, परि गयौ नाम तुम्हार ।
कमकार को कार नहिं, बेकारन को कार ।।

गीता रामायन पढी, अथ न समझयौ गूढ ।
ज्यौ कौ त्यौ बुद्धू भँवर, किकत्तव्य विमूढ ।।

तज आल्हा

ओम भूभु व स्व मह जन तप सत्य लोक लौधरिये थान ।
ईशावास्य इदम सवम यह जहँ लगि जान्यौ परै जहान ।।
जड चेतन जग ब्रह्म रूप है, निराकार साकार समान ।
सह सनाम जरथुस्त्र पहोबा, ईश्वर अल्ला गौड महान ।।
सबही मजहब एक रूप हे, सबकौ है एकहि भगवान ।
हम सब आपस मे मिलि रहै, सब एकई ईश्वर की सतान ।
है वसुधैव कुटुम्ब हमारा कहते आये वेद पुरान ।
कहते यही धम्मपद, जि दावेस्ता, बाईबिल और कुरान ।।

'आजादी को लडाई (तर्ज आल्हा)

पार ब्रह्म परमेश्वर सुमरू परमातम ते ध्यान लगाय ।
सकल चराचर के घटघट मे, चेतन शक्ती रही समाय ।।
जोति पु ज सूरज नारायन, जो असुरन कौ रहे जराय ।
अगनि भवानी जगदम्बा जो, चण्डी काल रूप बन जाय ।।
हर हर शकर महा भयकर, जिनकौ रूद्र रूप विकराल ।
काम जराय के असुर सँहारे, नाचे पहरि मुण्ड की माल ।।
राम कृष्ण नरसिंह रूप धरि, प्रगट भये असुरन के काल ।
पवनपुत्र रन मे बजरगी, जय हनुमान अजली लाल ।।
राम राज्य स्थापित की‑हो, हरनाकुश कौ उदर बिदारि ।
अभिमानी दशकन्धर मार्‌यौ, केश पकरि दियौ कस पछारि ।।
धरती माता व्याकुल है गई, जब जब पर्‌यौ पाप कौ भार ।
अनुर सहारन कारन हरि ने तब तब धरि लीन्हो अवतार ।।

जब जब भीर परी भारत पै, तब तब हरि ने करी महाय ।
चढे विदेशी जो भारत पै, सब लै गये कलक लगाय ।।

सब देसन कौ जीति सिकन्दर, आयौ झेलम के मैदान ।
ऐसौ बान लग्यौ पोरस कौ, पहुच नही पायौ यूनान ।।

सोमनाथ ते चल्यौ गजनबी, पिटके बच्यौ सिंध मे राग ।
हत्यारौ तैमूर लग हू, लँगडौ कियौ टोरि दई टाग ।।

फ्रासीसी पुर्तगाली गोरा, आये अजगर सौ मुँह खोल ।
सन्मुख भिड गये भारतवासी, सबके करि दिये बिस्तर गोल ।

अभिमानी हरिनाकुश बाढयौ, लका मे रावण बढयौ प्रचड
तैसे ही साम्राज्य बढे पै, अँगरेजन कौ बढयौ घमण्ड ।।

लूट मचाय दई अँगरेजन ने, भारतवासी करि दिये तग ।
भडकि उठे सब क्रुध सिपाही, मेरठ माहि मचाय दई जग ।

जकी अजीम तातिया टोपे, नाना कुँवरसिंह सरदार ।
झाँसी बारी रानी भिड गई, लैकर मे नगी तरवारि ।।

हजरत महल लखनऊ बारी, अँगरेजन पै रही रिसाय ।
जीनत महल मुगल बेगम ने, गुप्त योजना लई बनाय ।।

अन्तिम मुगल बादशाह बूढे, शायर जफर मुहम्मद शाह ।
कैदी बनि गये आजादी हित, गद्दी की छोडी परवाह ।।

कोऊ फासी पै लटकाये, कोऊ गोलीन ते डारे भून ।
कोऊ बरछी भालेन ते छेदे, लाखन कौ करि डारयौ खून ।।

जो विपता भारत पै परि गई, सो दुश्मन पै परियो नाँय ।
बोल बन्द सबके करि दीन्हे, क्षत्री कानन मे बतराय ।

राजा जमीदार व्यौपारी, बनि गये खैर ख्वाह गद्दार ।

अँगरेजन कौ क़ाबू चढि गयौ, करि लियौ भारत पै अधिकार ॥

जैसे राहु भानु को लीलै, फैल चारो दिस अँधेर।
त्यो भारत अँगरेजन दाब्यौ, जैसे फसे जाल मे शेर ॥

पुलिस राज क़ायम करि दीयौ, पूरौ देश कियौ पामाल।
भारत माँ की लाज बचाइबे, पैदा हुये हजारन लाल ॥

बहुत पुरान ब्रह्म समाजी, राजा राम मोहना राय।
धम प्रचार कियौ भारत मे, सती प्रथा दई ब द कराय ॥

छुआछूत कौ भूत भगायौ, कन्या बध करवा दियौ बन्द।
विधवा ब्याह करि गये चालू, विद्या सागर ईश्वर चन्द ॥

सच्चे सत दयान द स्वामी, जिनके भाषण हुये प्रचण्ड।
स्वतत्रता कौ मत्र फूँकि गये, पाखण्डन के उडाय गये खड ॥

थियोसोफिकल सोसाइटी के विश्वबन्धु कनल अल्काट।
मानव धम कियौ स्थापित, भेदभाव की कीन्ही काट ॥

हिन्दु धर्म की जोति जगाई, भारत के सच्चे एजन्ट।
भारी विद्यादान करि गये एरडल ऐनीबीस ट ॥

सदगुरु रामकृष्ण के चेला स्वामी भये विकनान द।
कीर्त्ति भारत की फैलाई, अमरीका लौं बढी अन त ॥

कागरेस स्थापित करि गये पिच्यासी मे सर ए ओ ह्यूम।
मागे कछु अधिकार प्रजा को गोराशाही बनि गई सूम ॥

राना डे गोपाल गोखले बकिम बाबू केशव च द्र।
स्वतत्रता की जोति जगाय गये रविन्द्र ठाकुर विश्व कविन्द्र।

तिलक बाल गगाधर पडित, गीता के प्रकाण्ड विद्वान।
कमयोग कौ कियौ विवेचन, धम भीरू कौ आनम ज्ञान ॥

भोगे कष्ट जेल मे तौहू, रही केसरी की हुकार।
हम आजाद स्वराज हमारा, सबका जन्मसिद्ध अधिकार।।

श्याम कृष्ण वर्मा लन्दन गये, इण्डिया हाउस दियौ बनाय।
फ्रान्स ब्रिटेन रूस जमन लौं, भारत क्रांति दई फैलाय।।

मदनलाल धींगडा बहादुर, लन्दन मे भारत के शेर।
हत्यारौ वाई के घर मे, गोली मारिकें करि दियौ ढेर।।

मिन्टो कर्जन आगाखाँ ने, लीने मुसलमान बहकाय।
फूट डारि के राज कियौ, फिर हिन्दू मुस्लिम दिये लडाय।।

प्रथक चुनाव घोषणा करि के काटि दियौ मुस्लिम बगाल।
भूख अकाल महामारी मे, मरे करोडन ही कगाल।।

बग भग के आन्दोलन ते, हलि गये गवनमेन्ट के खम्भ।
विपिन चन्द्र अरबिन्द घोष के बगाले ने बनाय लिये बब।।

खुदीराम फाँसी पै झूले, कियौ हकूमत पै बम्बाड।
सन् बारह मे बचे बम्ब ते, वाइसराय हार्डिग लाड।।

भारत मे नामी बकील भये इलाहाबाद के मोती लाल।
बाल लाल के सच्चे साथी बगाल के विपिन चन्द्र पाल।।

मोहनदास कमचन्द गाधी सत्य अहिंसा के अवतार।
अफ्रीका मे करी वकालत, जहाँ पर गोरेन की सरकार।।

रगभेद की नीति चलाय कें गोरा करि रहे अत्याचार।
गाधी ने सत्याग्रह छेड्यौ तब गोरेन कौ भयौ सोच अपार।।

सन् चौदह मे प्रथम लडाई, छिड गई यूरूप के मैदान।
लडे सिपाही हिन्दूस्तानो, अँगरेजन के बचा दिये प्रान।।

सन् चौदह मे गाधी जी फिर आय गये भारत दरम्यान।

भारी मदद युद्ध मे कीन्ही गोरेन के नाये गुन अहसान ।।

वायदा करि अधिकार दैन कौ, बनाय दियौ फिर रौलट एक्ट ।
दमन चक्र चालू करि दीनो ऐसे है गोरेन क टैक्ट ।।

यह गति देखी गाँधी जी ने, मन मे कीन्हो सोच विचार ।
बिना लडाई के जनता कौ गोरा नाय सौंपिगे अधिकार ।।

अमृतसर मे सभा भई जहा घेरयौ जलियावाला बाग ।
ओ डायर ने जनता भूँजी जैसे चना मटर कौ साग ।।

नर सहार की खबर फैलि गई, भारत भर मे व्याप्यौ रोष ।
अगरेजन ते लडिबे कौ फिर, बढयौ जवानन म अति जोश ।।

असहयोग चालू करि दीयौ, कियौ कचहरीन कौ बायकाट ।
कालजन की बन्दी करि दई, असेम्बली पै लगाय दई डाट ।।

चल्यौ स्वदेशी आन्दोलन जब, बस्त्र विदेशी दिये बराय ।
देशी अँगरेजन क सिर ते टोप खेंचि के दिये जराय ।।

सिर पै गाँधी टोपी धरि दई, सन्मुख दरपन दियौ दिखाय ।
भारत माता की जय बोली नौकरशाही गई लजाय ।।

सन इक्कीस मे यह गति कीन्ही, दीनी धुँआधार मचाय ।
पर्दा त्यागि उठी महिला सत्याग्रह ते हेत लगाय ।।

गाव गाव और शहर शहर मे कीन्ही सभा और हडताल ।
साठ हजार जेल मे बन्दी, हुये शहीद हजारन लाल ।।

गाधी जी और नेता पकरे, दीन्हे सबई जेल मे डारि ।
मनमानी जनता ने कीन्ही लीनी सबही कुमक निकारी ।।

युक्त प्रान्त आसाम उडीसा, बगाली पजाब किसान ।
मध्य प्रान्त गुजरात मराठा, सबने असहयोग लियौ ठानि ।।

सच्चे सत्याग्रही बने, ग तूर जिले के बीर किसान।
सिर पै सही मुसीबत भारी, परि नही दीनो राज लगान ।।

चौराचौरी काण्ड हुऔ फिर दीने थाने पुलिस बराय।
भारत ते ल-दन तक पूरी गोराशाही गई थर्राय ।।

अग्निकाण्ड और हिसा कौ नहि गाधीजी ने कियौ पस द
सत्य अहिसा के साधक ने आन्दोलन फिर करि दियौ बद।

शाति काल मे गॉधी जी ने चालू किये ग्राम उद्योग
मोतीलाल और चितरजन कौ बढ्यौ असेम्बली मे सहयोग।

अँगरेजन की फूट नीति ने, हि दू मुस्लिम दिये भिडाय।।
छोटे बडे सबई शहरन मे दी ही मारकाट मचवाय ।

साईमन इ र कमीशन, घूम्यौ सबई देश मे आय।
कागरेस ने बायकाट करि, कारे झडा दिये दिखाय।

देशभक्त पजाब केसरी लाला वीर लाजपति राय
सत्याग्रह मे सन्मुख अडि गये, शका करी काल की नाँय।

लठिया मार पुलिस ने कीन्ही घायल भये हजारन ज्वान
भारत माँ के लाल लाजपति आजादी प हुये कुर्बान।

भगतसिह बटुकेश्वर ने जब, असेम्बली मे डारयो बम्ब।
भारत भर मे शोर है गयौ, अगरेजन कौ मिटि गयौ दभ।।

बटुकेश्वर की जनम कैद भई, लिखी कथा यशपाल प्रवीन
भगतसिह फाँसी पै झूले, भारत माता हुई गमगीन ।।

काँग्रेस जलसा गु तीस मे हुऔ लाहौर शहर दरम्यान।
मोतीलाल के लाल जवाहर लाल काँगरेस के बने प्रधान ।।

बूढे नेता रहे देखते, सग मे अडे सुभाष चन्द्र बोस।

काग्रेस ने सोचि समझि के, आजादी कौ करि दियौ घोष ।।

दाडी यात्रा कूँ जब गाधी चलि दिये अपनी लठिया टेक ।
नमक बनायौ सब जनता ने गाधी जी की रही अटेक ।।

चल्यौ स्वदेशी आ दोलन फिर, बस्त्र विदेशी दीन फेंक '
दारू बाजी ब द करि दई, छूआछूत की मिटि गई रैंक ।।

शोलापुर के मजदूरन ने शासन लियौ आपने हाथ ।
भारतवासी तन मन-धन ते काग्रेस के है गये साथ ।।

सत्याग्रह के रन मे अडि गये पेशावर के वीर पठान ।
उन पै नही हथियार उठाये फ्रन्ट गढवाली ज्वान ।।

लाखन वीर जेल मे डारे हुऔ हजारन कौ बलिदान ।
गोराशाही हारि मान गई, काग्रेस जीती मैदान ।।

आजादी के रग मे रगि गये, भारतीय तेतीस करोड ।
गाधी इरविन समझौता मे नेता दिये जेल ते छोड ।।

गोलमेज सम्मेलन माँही, गाधी जी ने कियौ कमाल ।
दशन करि के गाधी जी के जारज पचम हुये निहाल ।।

हार मानि के अँग्रेजन नै सन पेतीस मे रच्यौ विधान ।
आठ प्रा त मे काग्रेस की बनी मिनिस्ट्री नीति निधान ।।

तीन वष काग्रेस राज मे सुखी बनि गये दुखिया दीन ।
खतम जमीदारी करि दीनी भूमिहीन कूँ मिली जमीन ।।

अशफाकुल्ला राजगुरू और बक्सी विस्मिल राम प्रसाद ।
आजादी के बने परवाने वीर चन्द्रशेखर आजाद ।।

सन्त महात्मा गाधी जी ने अनशन किये अनेको बार ।
छूआछूत उ मूलन कौ अलख जगायो चकित हुई गोरी सरकार ।

सन उन्नीस सौ उनतालीस मे यूरुप मे फिर छिड गई जग
हिटलर मुसोलिनी क हल्ला सुनि सुनि दुनिया सगरी ग्ह

फ्रास ब्रिटेन रूस सब दाबे हिटलर दीने जुलम गुजारि
आखिरकार हारि गये दोऊ विकट मचाय गये धूँआधार।

तानाशाह बनि गये गोरा भारत दियौ युद्ध मे झोकि
राय नही काऊ की लीन्ही नेता गये देखिके चौकि।

सब प्रान्तन की छोडि मिनिस्ट्री काग्रेस ने कियौ विरोध
गाधी जी ने सत्याग्रह करि व्यक्तिगत कीन्हो प्रतिरोध ।।

सत्याग्राही विनौवा भावे, नेहरू दिये जेल मे डारि
त्यागे प्राण यतीन्द्रनाथ ने इकसठ दिन नहि कियौ अहार।

सत्याग्रह की चली लडाई, भारत भर मे फैल्यौ जोश
भेष बदल के चले गये, पहुचे जापान सुभाष चन्द्र बोस।

फौज बनी आजाद हिन्द जो आय लडी मणिपुर इम्फाल
उत जापानी विजय वाहिनी ने अग्रेज किये पामाल।

स्टैफड क्रिप्स लै आये लन्दन ते थोथे प्रस्ताव
अग्रेजन की मक्कारी ते काग्रेस कूँ आयौ ताव ।।

सन व्यालीस के आन्नोलन मे गाधी जीनें दई ललकार।
अँग्रेजो तुम भारत छोडौ है याही मे भलौ तुम्हार ।।

काँगरेस की महासभा म आन्दोलन कौ कियौ बिचार।
नौ अगस्त कौ बम्बई माही सब नेता कीन्हे गिरफ्तार ।।

फिर जनता आजाद है गई काटे टेलीफून के तार।
सडक टोरि दई लैन उखारी यातायात कियौ बेकार ।।

भारत मत्री ऐम्री ने दई काग्रेस दोषी ठहराय।

सुभाष बाबू ने बर्मा ते जनता कौ दियौ जोश बढाय ।।

फिर जनता ने तोड फोड करि ब्रिटिश राज पै कियौ प्रहार ।
बहुत हुऔ विध्वंस देश मे, लाखन वीर हुये गिरफ्तार ।।

अगरेजन की बन्दूकन ते मरे वीर पच्चीस हजार ।
तौहू कछू नही डर कीनो शासन पै करि लियौ अधिकार ।।

महाराष्ट्र दक्षिण पूरब और बलिया मिदनापुर बगाल ।
ठप्प कियौ शासन अगरेजी शासक बने देश के लाल ।।

देशी रजवाडेन मे फैल्यौ फिर जन आन्दोलन तत्काल ।
शोषण दमन चक्र मे पिसि कें, जनता बनी दीन कगाल ।।

यूरूप और एशिया भर मे अग्रेज हुये भारी बर्बाद ।
हार मानि के काग्रेस के नेता करि दी हे आजाद ।।

जमन और जापान हारि गये, अग्रेजन की है गई मौज ।
राजद्रोह कौ केस चल्यौ गिरफ्तार करी आजाद हिंद फौज ।।

भारत भर मे शोक छाय गयौ सुनि नेताजी कौ बलिदा
भारत वीर देश भक्तन कौ जनता करै सदा गुणगान ।।

भूला भाई देसाई और नेहरू जी हू बने बकील ।
सब सैनिक आजाद कराये देश प्रेम की दई दलील ।।

सन गुनीस सौ छ्यालीस मे नाविक बेडा ने जब कियौ बिद्रोह
भारत के बन्दरगाह मे तब अग्रेजन कौ लोटयौ लोह ।।

बीस जहाजन के विद्रोही नाविक है गये बीस हजार ।
काग्रेस कौ झडा फहर्‌यौ जैक यूनियन दियौ उतारि ।।

अग्रेजन की खस्ता हालत हुई लडाई के दौरान ।
भारत कूँ बेकाबू देखि कें गोरे हुये बहुत हैरान ।।

सन् छियालीस मे फिर भारत में बनि गई राष्ट्रीय सरकार।
नेहरू और पटेल लियाकत सबने शासन लियो सम्हारि ॥

अँग्रेजन की कूटनीति ने हिन्द मुस्लिम दगा दिये भडकाय ।
पाकिस्तान बनाइबे खातिर मारकाट दीनी मचवाय ॥

गोराशाही रही देखती लुटी दुकाने बीच बजार ।
लाठी भाले छुरी चलि गई गलियन बही रक्त की धार ॥

बहुत दुर्दशा हुई जनता की खूनी तत्व न आये बाज ।
खबरि सुनी तब प्राण त्याग दिये पडित मालवीय महाराज ॥

जगह जगह फिर दगा भडके ह्वैबे लगे बहुत उत्पात ।
नोआखाली मे दगा करिके निर्दोषन की करि डारी घात ॥

लूटि लिये सब मारि काटि कें घर-घर दीनी आग लगाय ।
बालक बूढ़े मारि गिराये लडकीन कूँ लै गये भगाय ॥

गाधी जी अति दुखित ह्वै गये नोआखाली पहुचे जाय ।
पैदल घूमे शान्ति कराई सुहरावर्दी को समझाय ॥

लॉड एटली पार्लियामेट के प्रधान मन्त्री भये मशहूर ।
भारत को आजाद करि गये सच्चे नेता दल मजदूर ॥

पन्द्रह अगस्त सन सैंतालीस को भारत ह्वै गयौ परम स्वतन्त्र ।
कांग्रेस कूँ राज मिलि गयौ कायम कर दीनो जनतन्त्र ॥

सार्वभौम सरकार बनि गई, भारत माँ के कटि गये फन्द ।
फहराय उठ्यौ तिरगौ झडा, घर घर मे बाढ्यौ आनन्द ॥

स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधानमत्री बने जवाहर लाल ।
वल्लभ भाई पटेल बनि गए गृहमत्री शत्रुन के काल ।

रक्षामत्री रहे प्रमम मौलाना अबुल कलाम आजाद ।

माउ ट बेटन रहे गवनर जनरल फौजन े उस्ताद ।।

अनगिनती शरणार्थी आये जनता कू भये कष्ट अपार ।
अ न वस्त्र धरती मकाा दै सबही ाो कीनो सत्कार ।।

राजाशाही के मद मे भूले कश्मीरी हरीसिंह महाराज ।
गाधी-नेहरू क छु नही समझे जानि सुरक्षित अपनौ ताज ।।

बड जोर ते चढ कबायली सग मे पाकिस्तानी फौज ।
भारतीय काश्मीर परयो सकट म राजा भूलि गयो सब मौज ।

दई दुहाई हरीसिह ने सुनियो भारत की सरकार ।
राखी जाय तौ लाज राखि लेउ नैया डूबि चली मझधार ।।

विकट समस्या पैदा है गई, कश्मीर कौ रस्ता बन्द ।
भरे विमानन मे फिरि सैनिक जिनके मन हौसले बुलद ।।

गाधी ने आशीर्वाद दै दई, भरि भरि सैनिक उडे विमान ।।
जैसे बाज चिडी पै झपटै, तैसेहि टूटि परे सब ज्वान ।।

भारत की पल्टन के आगे रहे कबायली थर थर काप ।
भगे सिपाही पाकिस्तानी जैसे गरुड देखिके साप ।।

काश्मीर की कठिन लडाई अँग्रेजन ने दई बनाय ।
अमरीका अड्डा बनबाइबे मिलिके गिलगित लई दबाय ।।

भारतीय पल्टन जब कोपी दीनी धूँआधार मचाय ।
चलि गयौ केस सुरक्षा परिषद् युद्ध बन्द दीनो करवाय ।।

तीस जनवरी सन् अडतालीस कूँ नाथूराम ने कियौ कुनाम ।
राष्ट्रपिता गोली ते मारे दुनियाँ मे मचि गयो कुहराम ।।

लौह पुरुष वल्लभ भाई ने छीनी लिये राजान के ताज ।
पूरौ देश एक करि दीनो खतम किये न्यारे न्यारे राज ।।

लगे अधिक अन्न उत्पादन मे भारत भर के सफल किसान ।
बागवान की बुद्धिमता सौ सोभित होवै ज्यौ उद्यान ।।

इ जीनियर कारखानेन मे करि रहे निर्मित सब सामान ।
मोटर रेल जहाज ट्रैक्टर टैंक मसीनन कौ निर्माण ।।

श्रमिक बन्धु लगि परे काम मे खून पसीना करे समान ।
मातभूमि की रक्षा करि रहे धीर वीर सैनिक बलवान ।।

कारीगर नित नये बनाइ रहे सु दर मदिर महल्ल मकान ।
सत् साहित्य सृजन मे लगि रहे कवि लेखक जो ज्ञान निधान ।।

भँवर स्वरूप अँधियारी वारौ या आल्हा कूँ रह्यौ सुनाय ।
देस बनाइबे मे सब पचौ राति दिना लगियौ भाय ।।

☐ भँवर स्वरूप शर्मा 'भँवर'
अँधियारी, भरतपुर
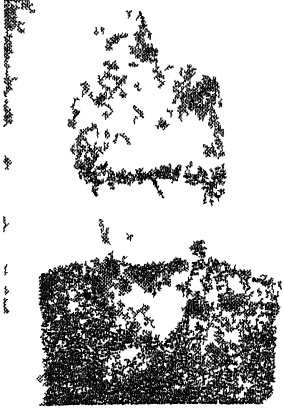
पटवारी रामजीलाल शर्मा
आयु—बानबे बरस
पता – अगमा मौहल्ला, कामा
(भरतपुर)
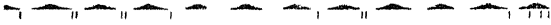
पटवारी रामजीलाल शर्मा

पैदा भए कामबन शिष्य गगाबक्श जी के,
विप्र गगाधर ने हू ज्ञान अति सिर
भजन जिकरी छद रसिया लिखे ख्याल कलग।।,
लोग मान गये लोहा, सौ उस्ताद पद पायौ है ।
झूलना कवित्त लिख लिखी नौटकी इन,
दूर लौ गवाय यश झडा फहरायौ है ।
भादो वदी छठ बुद्ध उन्नीस सौ एक सन,
रामजी को लाल हरी ताहि दिन जायौ है ।।

पटवारी रामजीलाल शर्मा

परिचै

जन्म	भादो वदी 6, सम्वत 1957 वि (सन् 1901)
पिता कौ नाम	श्री प भूधरमल शर्मा
माता कौ नाम	श्रीमती भूरी देवी
शिक्षा	प्रारम्भिक शिक्षा एग्लोवर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल कामा
काव्य गुरु	प गगाबक्स ज्योतिषी
रचना	रसिया छ द कवित्त सवया भजन जिकरी, भजन सवादी दुकूला व रगतदार, ख्याल लावनी कलगी अखाडा, की ढेरन फुटकर रचना (सिगरी अप्रकाशित)
विशेस रचना	1 अखाडा कलगी माहि उस्तादी पगडीबध (उस्ताद तुर्रा अखाडा श्री नेकशाह आगरे के हाथन बधी 2 आकाशवाणी दिल्ली ते ब्रजमाधुरी माहि साक्षात्कार प्रसारित ।
परिवार	दो छोरा व दो छोरी
व्यवसाय	पटवारी (राज्य सेवा) कमीशन एजेन्टस, खाद-बीज व्यापार, ठेकेदारी खनिज विभाग ।
वतमान पतौ	पटवारी श्री रामजीलाल शर्मा अगमा मौहल्ला कामा (भरतपुर)

कलगी खयाल उस्ताद प रामजीलाल पटबारी

लम्बौ छरहरौ सरीर, फबते भए धोबती, कुर्ता अरु भरतपुरी फैंटी, आँखिन पै ऐनक और हाथ म बेंत लैकें प रामजीलाल पटबारी घर ते ज्योंई निकसै, 'पडित जी डडौत' कौ अम्बार लग जाय। पटबारी जी ने ई प्रतिष्ठा बडी साधना सौ सँजोई ए। जीबन म बाभम बसन्त निहार चुके ऐ। हर बस त बिनकूँ नई उमग लैकै आबै। थकिबे कौ नाम नाहि। आजऊ भोर ते साझ लौ कछु न कछु करते ई रहे। मुख के घा मीठे, लच्छेदार लुभावनी बानन के धनी, हर बात मे दष्टात दैबै म माहिर पटबारी जी के बहुतेरे रूप समाज ने देखे अरु परखे है। चतुर पटबारी, राम लीलान के तुलसीदास, सातौ जाति की पचायतन के प्रमुख पच (अध्यच्छ), खयालन के उस्ताद, भजन-जिकरीन के सायर, पुरानन के ज्ञाता अरु बुढापे मे पत्थर फोरिबे बारे बजरी की खानन के मालिक पटबारी जी कामाँ के गौरब ऐ। बिनके औरऊ रूप ऐ यै 'जो जाही कू भावतौ सो ताही कै पास' बारी उक्ति के अनुसार या 'जाकी रही भाबना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी' कै अनुहारि जा रूप मे बिनै देखनौ चाहौ, बे बाई रूप मे मिलिगे। बिनकौ एक रूप 'खयाल गोई के उस्ताद' मन कूँ भौत भाबै ए। या रूप मे बिनने कामाँ के सग ई सग भरतपुर रियासत कौ नामऊ उजागर कियौ ए।

प्राचीन काल सौ ई कामाँ नगरी उत्कृष्ट कोटि के कलाकार, साहित्यकार, कवि साहित्यकार, बैद्य, पडित, सत, महात्मा अरु राजनीतिज्ञन कूँ जनम दैती रही ए। खयालन मे ऊ कामाँ मे कलगी अरु तुर्रा दोनो अखाडेन के पीढी दर पीढी उस्ताद अरु गायक भए है। सामाजिक परब अरु त्यौहारन पै खयाल गोई के दगलन कौ आयोजन कामा की अपनी बिसेसता रही है। कैई कैई दिना लौ चलिबै बारे दगलन मे हरियाना, उत्तर-प्रदेस अरु राजस्थान के प्रतिष्ठित उस्ताद, सायर अरु बिनकी उत्कृष्ट रचनान कूँ गायबे बारे, आबाज मे दम-खम रखिबे बारे, कोलय की सी मधुर स्वर लहरी मे टीप लगायकै

ढपली की तानन पै जन-जन कूँ रिझायबे बारे सगीतकार भाग लेबे ए। इन दगलन की स्मृति आज लौ मन पै अमिट छाप अकित किए भई ए। जन-जन कौ मन बाँसन उछलौ करै ओ। बाह उस्ताद, बाह, के स्वर गूँजौ करै ए। मन तरसै किधौ गए बे दगल, बे गायबे अरु गबायबे बारे ? काहे को हम छाडिते जा रहे हैं अपनी लोक सस्कृति अरु लोक साहित्य कूँ ?

पटबारी जी ने दो गुरू बनाए। भजन-जिकरीन के गुरू प गगाधर जी। ख्याल गोई के गुरू प गगाबक्स जी जोसी। प गगाधर जो अनपढ ए पै सगत कौ असर अरु सुरसुति की किरपा सौ आसु कवि ए। प गगाबक्स जोसी उच्च कोटि के विद्वान हते। गगाबक्स अरु गगाधर कौ सग चोली-दामन कौ सग औ। दोनो बडे त्यागी तपस्वी अरु हँसमुख सुभाव के ए। पटबारी जी ने चौदह बरस की आयु मे गगाबक्स जी कूँ अपनौ गुरु बनायौ।

एक बरस के अन्तराल मे ई कामाँ मे भोजन थाली परिकम्मा मेले पै लाल दरबाजे खयालन कौ दगल जुडौ। कलगी अरु तुर्रा अखाडेन के सायर अरु गबैया मचन पै आमने सामने बिराजे पटबारी जी अपने दोनो गुरुन कै सग पैली पैली बार कलगी की ओर ते बैठे। तुर्रा बालो की ओर सौ प्रमुख सायर अरु गबैया प हरबस लाल जी खुरजा ने एक खयाल भोजन थाली पै गायो। खयाल गायबे के बीच मे प्रति पक्षी अपनी ओर सौ गाये जा रहे खयाल की रगत मे ई टेक लगाबै यासौ गायबे बारे कूँ थोरौ विश्राम मिलै अरु प्रतिपक्षी की योग्यता की परख हू ह्वै जाय। प हरबस जी क खयाल पै पटबारी जी ने पैली-पैली टेव लिखी—

'है भक्ति मुक्ति की दाता भोजन थारी।
भोजन थारी पै भोजन किए मुरारी॥'

ई टेक बिनने लल्लूराम गायक कूँ दई। बाने गायी। टेक कूँ सुनिकै जोसी जी नें लल्लू राम ते पूछी, ई टेक तैने लिखी है ? बे बोले, मैने नाहि रामजीलाल ने लिखी ए। जोसी जी ने बाई समै रामजीलाल जी की पीठ थपथपाई अरु कही बस अब हम नहि लिखिगे अब लिखिबे कौ भार रामजीलाल पै है। पटबारी जी नें बिनके चरण पकड लिए, कहिबे लगे, कोई जाने अनजाने अपराध ह्वै गयौ होय तौ क्षमा करौ, ऐसी प्रतिज्ञा मत करौ। मोकूँ आसीरवाद देऔ।' जोसी जी ने सच्चे मन सौ सुभासिस दियौ। गुरु किरपा भई अरु पटबारी आसु कवि बन गए। पटबारी जी की साधना रग लायी। आज बे कलगी अखाडे के राजस्थान मे एक मात्र पहुचे भए उस्ताद माने जाएँ।

बरस मे खयाल गोई के दो तीन दगल कामा मे होनौ आम बातई । पटबारी जी ने खयाल गोई के दगलन मे मथुरा, आगरा, हाथरस, खुरजा अरु पु हाना (हरियाणा) के तुर्रा अखाडे बारेन ते दो दो हाथ किए हे । आगरे के मौलबी साब, रूप किशोर, लालता प्रसाद, नेकसाह भडभूँजा, हाथरस के बामम पडित, मुरलीधर, ओमप्रकाश, खुरजा के प हरबस जी, बुलन्दशहर के बेलौद जी, मथुरा के रामसरूप हलबाई, महाबीर ठाकुर, सम्पत सिह जोसी, गोकुल के करीम खा रँगरेज अरु पु हाना के साई बाबा सौ बिनने अपने खयाल लडाये ह । पटबारी जी स्वय नाहि गाय सकै ए । बिनके खयाल पढिबे बारे कलगी अखाडे के गायक होओ करै ए । बिनमे प्रमुख गवैया ए बुनियाद अली मम्मद खाँ प मनाहर लाल कार्मा, छुट्टन खा साहिल, प लल्लूराम अरु प घसीराम ।

दगल जुरिबे त पैलै महीनान लौ गायबे कौ अभ्यास गुरु गहन पै होऔ करै औ । बिना दाम के सुद्व मनोरजन, कला अरु वाक चातुरी कौ प्रदसन, मान प्रतिष्ठा कौ सबते बडौ प्रस्न बन जाबै औ । कछु उस्ताद तौ खयाल दगलन मे भाग लैबौ अपनी सान समझते । सेठ राघवदास जी झासी बा जमाने मे अपनी गाडी लैकै पधारते । खयाल गाते अरु वाह वाही लूटते । फिरोजाबाद के मिसरी खा भी दगलन मे आनो नाहि भूलते । इन दगलन मे बिनकूँ किरायौ तक नाहि मिलतौ पै भोजन हर जगह बडे प्रेम सौ कराये जाते । पुरस्कार म सेला, ग्यारह रुपैया अरु हाडी भरे लडुआ मिलौ करते ।

आजादी मिलबै सौ पैले भरतपुर अरु अलवर रियासत कौ खयालन कौ दगल नगर कस्बा मे भयौ । प हरीशकर जी तहसीलदार जो उर्दू फारसी अरु ब्रजभाषा के अच्छे जानकार हते, निर्णायक बनाए गए । अलवर की ओर सौ तुर्रा के उस्ताद अरु गायक प गगा सहाय जी प्रमुख साहित्यकार ए अरु भरतपुर की ओर सौ प रामजीलाल पटवारी जी । प गगा सहाय सुन्डाना धे तिताला मे खयाल तालबन्दी गाई—

'जल मे तिल भर रही, जो भी बह जायेगी'

खयाल गजग्राह की कथा प्रसग कूँ लैकै गायौ गयौ । पटबारी ने याई तालब दी पै भक्त प्रहलाद के प्रसग कूँ लैकै रचना लिखी अरु प कन्हैया लाल भुक्कड (डीग) अरु मुर्री सुनार सौ पढ़बाई—

टेक—स्वामी जन की तो ये जा निकल जायेगी

चौक – हे दीन बन्धु दिनेश माधव, दीन हौ तेरी सरन
जन जानकर भगवान कीजै हित दया सकट हरन

मिलान—'शीतल दृष्टि सौ ये बिपता टल जायेगी ।।'

या तरिया रगत पै रगत गबनी रही । रग जमतौ रह्यो भोर है गयौ । बा समै मास्टर आदित्ये द्र के चाचा लाला गोकुलच द्र ने ठाडे होकै ऐलान कियौ कि प सु डाना जी अलवर रियासत की ओर सौ कठिन ते कठिन तालब दी की चोज गामे । पटबारी बाकौ जवाब लिखिगे । यदि नहिं लिख पाँये तौ एक सेला अरु ग्यारह रुपया प सु डाना जी कूँ भेट किए जामिगे । पडित सु डाना जी ने भैरबी म उदू की एक गजल कही—

'जबाबे खत मे आए ह लिखे मजमून के टुकडे'

पटबारी जी ने बाई समै भैरबी राग मे ही तालब दी की गजल लिखी—

'अदू को पढ सुनाए हे तेरे मजबून के टुकड'

गजल गाई गई । तहसीलदार साब ने निनय दियौ कि सु डाना जी की गजल कौ जवाब पटबारी जी ने दै दियौ ए । प सु डाना ने ह हामी भरी । सेला अर ग्यारह रुपैया प सुन्डाना ने पटबारी जी कूँ अपने हाथ सौं गहाय दीयौ । पटबारी जी ने बू बाई ठौर पै बिराजमान कुन्डा के ठाकुर जी कूँ अपन कर कही, भरतपुर रियासत मे तौ एक ते एक ऊँचे उस्ताद भरे परे हे, मै तो अकिंचन हू । भरतपुर रियासत की लाज ठाकुर जी की किरपा सौं ई रही ए । मैं तौ साचरन की चरन रज हू । बाई समै नगर बारेन ने फौजा सुतर सबार के लडका नबाब मिया, जो अच्छौ गायक हौ, कूँ पटबारी जी कौ सिस्य बनाय दियौ । आजकल बू पाकिस्तान मे हे ।

एक समै कामाँ मे ई खलाल दगल चल रह्यौ । तुर्रा अखाडे के एक उस्ताद राय साहब जयपुर ते पधारे । बिनने उदू मे अलिफ अरु बरनमाला के आखर हर प्रथम मिसरे मे निकालते भए एक खयाल पढौ । कलगी बारेन कूँ ऐसोई खयाल पढिबे की चुनौती दई । पटबारी जी ने बिनते या खयाल कूँ एक बेर और पढिबे कौ निबेदन कियौ । ज्यौ लौ बिनने खयाल पढौ त्यौ लौ पटबारी जी ने अपनौ खयाल लिख लियौ अरु प मनोहर लाल गायन मास्टर सौ बू खयाल गबायौ—

'अकल खच कर अधा अधा कर नद तैंने बेकार चली
अखरेगी मेरी चाल मगर तेरा गरब निखार चली
अगर करोगे गुमा चाल पर कह दूँ माहे निगार चली
अघ खडन करता को सुमिरत अचल चपल उघार चली'

इस खयाल मे पटबारी जी ने हर मिसरे मे 'अ' कौ प्रथम आखर मे लैकै दूसरे आखर मे बरनमाला अरु अन्त म क्रमस का, खा, गा, घा, निकारे। खयाल गबौ। राय साब ठाडे भए। बोले—'मैं नाँहि समझै औ कामा मे ऐसे मजे भए सायर बिराजै ऐ मैं ऐसे सायरन कूँ सादर नमस्कार करूँ हू।'

ऐसे भौतेरे उदाहरन हे। पटबारी जी ने अपनी राज सेवा के सगई सग लोक साहित्य मे जो अनबरत साधना करी ए बाय कामा वासी जुग-जुग लौ स्मरन रखिगे। बिनके चेला छुट्टन ग्या साहिल (कामा) जो ब्रजभाषा के चहेते कवि हैं, पटबारी जी के पूरन प्रसाद सौ खयाल गोई परम्परा को बागडोर कूँ गभारे भए हे।

पटबारी जी ने खयालन की सभी रगतन मे खयाल लिखे हे। रगत खडा, रगत माफन लामनी, रगत छोटी लामनी, रगत बहरे तबील, रगत छोटी तबील, रगत शिकस्त, रगत बारहमासी, रगत जामिनी, रगत लगडी आदि म बिनकी कलम बे रोक टोक चली ए। पिगल शास्त्र क छन्दन कौ प्रयोगऊ बिनने खयालन मे कियौ ए। एकई खयाल मे कैई कैई रगतन कौ समावेस करिबौ बिनके बाये हाथ कौ खेल रह्यौ ए। बिनने प्रचुर मात्रा मे खयाल लिखे हृ। कापी अरु रजिस्टरन के पन्नाऊ चिपकबे लगे हे पै बिनकौ प्रकासन बिनने अभी तक नाँहि करायौ ए। बानगी सरूप बिनके खयालन के कछु अस उद्धत है—

जिस समय लखन बीर घातिनी मारी।
गिर गए धरा पै बे शेषा औतारी।
महाराज लास लै दौडे पवन कुमार।
लास कूँ उठाय, बो तौ चले बेगि धाय,
गये रामा दल मे आय, करि हुशियारी।
निकट राम के, लास रख दीनी हनुमत बलकारी।।

या खयाल मे ऊपर की तीन पक्तिया, 'जिस समय ...... पवन कुमार माफत लामनी की है। 'लास कौ ...... करि हुशियारी' पक्ति रगत जिकरो ए अरु निकट राम के ...... हनुमत बलकारी' रगत लँगडी ए।

खयाल सिकस्त कौ ड्यौडा कौ नमूना—

'कुसन मे, कानन मे, कटकन मे कठिन मे, काजन मे तू ही तू है
खलन मे, खेलन मे, खजरन मे, खसन मे, खडन मे, खिदमतन

मे खटन मे, खासन मे तू ही तू है ।
गुनन मे, गायन मे, गुन निधन मे, गगन मे गजन मे तू ही तू है ।
घनन मे घोरन मे, घिर घटन मे, घुटन मे, घुमडन मे,
घट घटन मे, घडिन मे, घटन मे तू ही तू है ।
चितन मे चोरन मे, चचलन मे, चमन मे, चालन मे तू ही तू है ।
छलन मे, छैलन मे, छवि छटन मे, छकन मे, छाकन म,
छौकरन मे, छुटन मे, छाटन मे तू ही तू है ।
जलन मे, जीवन मे, जल चरन मे, जपन मे, जापन मे तू ही तू है ।

प्रतिपच्छी कूँ अरु आयबे कूँ बे अपने खयालन मे रगतन के सगई सग कछु विसेसता छिपाय कै लिखै है । खयालन मे बारहखडी निकारबौ मत्र निकारबौ, एकहि बरन कूँ हर पक्ति मे सीमित सख्या मे लायबौ, पिंगल के अनुसार छन्दन कौ प्रयोग खयालन के बीच मे करिबौ तौ बिनको सहज सुभाव है ई पै खयालन मे पूछिबौ बिनके अध्ययन की गहनता कौ परिचायक हे । बिनने पुरानन कौ बिसेम अध्ययन कियौ ए । बिनकौ पुरानन की कथान पै खयाल लिखकै प्रतिपच्छी ते आगे कौ प्रसग पूछिबौ सुनिबे बारेन कूँ घनौ अच्छौ लगै ए । एक बानगी–

स्थायी

नौ दुर्गा जिनमे आठ सलाह कर लीनी
मिल पारबती कौ मार जान सौ दीनी
मास लौ सिब कूँ दियौ खबाय
हमाचल की जायी, बू तौ सिब सकर नै खायी
खाकै अपनी भूख बुझाई, कैलास पती
हमे बताना मिलेगी सिब कौ कैसै पारबती ।।

चौक

आठन मे, नमी गिरजा कूँ नही निहारा
तौ सिब सकर ने ऐसे बचन उचारा
महाराज कहाँ गिरि सुता प्रान प्यारी
मानौ सच बैन, मोय परै नाँहि चैन,
प्रान सुख दैन, सैल जाई जाई ।
नजर न आई, छिपायी सूरत कहाँ बो बिलगाई ।।
कित गयी त्याग कैलास सुघड सुकुमारी

खजन नैनी ससि मुखी, चन्द उजियारी
महाराज, सुनत क्यौ आठो चुप्प भई
कहू समझाय मोय कछु न सुहाय, पल जुग सम जाय,
देऔ बतलाई ।
सुन दहलाई, न आई सन्मुख आठौ थर्राई ॥

झोला

दहलाई आठौ नारी, लख कुपित सम्भु त्रिपुरारी
लै मूल गरजने लागै, मानो सिंह सोबत जागे
अब बचै न जान तुम्हारी, लख कुपित सम्भु त्रिपुरारी

मिलान

तुम्हे जिन्दी छोडूँ नाँहि, पैलै कहू समझाय
मोते राखौ ना छुपाय हाल एक रती ।
जबाब देना, मिलेगी सिब कौ कैसै पारबती ।

ऐसी पूछ कौ जवाब दैवौ हाँसी खेल नाहि । पुरानन कौ, उपनिषदन कौ गहन अध्ययन करिबौ ऐसे लोक साहित्यकारन की मजबूरी ह्वै जाय । पटबारी जी कूँ कामाँ मे पौरानिक की उपाधि याई कारन मिली भई ए ।

पटबारी जी ने प्रकृति चित्रन, होरी, बिरही नायिका, राष्ट्रीय प्रेम, महा पुरुष, परब आदि पै अपनी लखनी चलाई ए । रगत तबील मे बिरही नायिका के ऊपर लिखौ खयाल दृष्टव्य ऐ—

स्थायी

प्रिय तम परदेसन जाय बसे, मै करे उपाय अनन्त सखी
पिय बिन फीके सिंगार सभी अरु फीकी लगै बसत सखी

चौक

पतियाँ लिख हार गई सजनी, निर्मोही मोह बिसार गयौ ।
अब सिमकत प्रान बिना पियके जिमि दुस्तर मार तुसार गयौ ॥
कर कौल गये सो भुलाय गये अब सूल बिरह उर पार गयौ ।
बिरहानल जिगर जलावत है कैसै यह देह बिचार गयौ ॥

मन कुसुम सेज पीतम बिन लागै फीकी
चुभती नौके कटक सम कुसुम कली की
गु जार असार भयानक मधुर अली की
सिंगारन की कोई वस्तु लगै ना नीकी

मिलान

निस दिन बैठी मग जोबत हो, कब आम प्यारे कन्त सखी
पिय बिन फीकै ''

खयाल के काव्य सौस्ठव अरु अलकारन के सहज प्रयोग कूँ गुनीजन निहार कै पटवारी जी के बारे मे अपनी धारना सुनिस्चित करिंगे। भागीरथी गगा पै लिखौ बिनकौ ई खयाल सास्कृतिक चेतना कौ प्रतीक तौ है ई बामे छिपे भए उनके साहित्य लाघब ऊ दष्टव्य ऐ –

अकास बैकुठ नाथ पद सौ चली मही निर्विकार गगा।
अखड पापो के पु ज हरती विसुद्ध कर डर उर पखार गगा।।
अगाधि गुन गन अगम्य मजुल न कोई तेरे अगार गगा।
अघो के पु जो का तम हृदय में तू ज्ञान चक्षु उघार गगा।।
अचल अटल पद का सुक्ख भोगें हौ सबके निमल विचार गगा।
अछोम मन मुद महान उनका बसै जो तेरे कछार गगा।।

शेर

अजर ही आजन्म लौ, तन सौ मिटै अघ की जलन
अक्षय निम्सक्रोच रह मन, सत्र सुन लागै झपन
अटल ब धन काल, के टूटे सुयस सुनकर टलै
अठ पहर थर्रायेगा यम, तब नाम का सुनकर पठन

मिलान

अडौल मन कर जो ध्यान धर ले दे जन्म सकट बिडार गगा।।

अपने देस पै ज्यौ ई पाकिस्तान ने आक्रमन कियौ पटवारी जी की लेखनी सूँ ई खयाल लिखौ गयौ–

बापू के खूँ से सीची जागीर की रक्षा करनी है।

गगा जमुना बि ध्य हिमाचल वीर की रक्षा करनी है ।
जिसकी हम पैदास उसे हम यूँ ही नही गमायेगे
काल भी गर लडने आए तो उमसे भी टकरायेगे
वीर सिवाजी अरु प्रताप का ऊँचा नाम करायेगे
झाँसी वाली रानी सा जौहर करके दिखलायेगे
हम पवन पुत्र सम होकर लडै निसका
पाकिस्ता फूकै जैसैं फूँकी लका
भारत के नामी विकट वीर रन बका
रन छिडौ बजैगौ बेगि फतह कौ डका
अटल हिमालय सिधु हिन्द रन धीर की रक्षा करनी है ।
गगा जमुना बिन्ध्य ।

पटवारी जी की भाषा खयालन मे सामान्य जन की भाषा रही ए । ब्रज, हिन्दी, उदू के सब्द मिले जुले बिनकी रचनान मे मिलै ए । छन्द अलकार कौ प्रयोग आवस्य-कतानुसार सहज रूप ते बिनके खयालन मे भयौ ए । अनुप्रास, उपमा, रूपक, अति-सयोक्ति, बक्रोत्ति आदि अलकार स्वत ई बिनके खयालन मे आए हे बलपूवक लाबे कौ प्रयास बिनकौ कतई नाहि रह्यौ ए । पटवारी जी के खयाल तौ जनता के खयाल ऐ । जनता जनादन समझ ले, भरपूर मनोरजन होय, जनता कूँ कछु नयौ मिलै अरु प्रति-पध्छी गायक, सायरन कूँ ऐडो ते चोटी तक जोर लगानौ परै, कलगी अखारे की मान-मर्यादा बनी रहै इनई उद्देस्यन सौ बे आज हू साहित्य की साधना मे रत है । बिनकूँ दुख ए कि ई खयाल गोई की बिधा धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही ए । टी वी, चल-चित्र, बिडियो आदि ने या खयाल गोई परम्परा के सग लोक साहित्य एव लोक नाट्य परम्परा कूँ भौत छति पहुचाई ए याकौ सरच्छन आधुनिक पीढी कूँ करनौ ए ।

☐ जमुना प्रसाद शर्मा
कामाँ, भरतपुर

आमई-सामई दो दो बात

☐ आप सरकारी नौकरी मे पटवारी कौ पद लैकै रये। काव्य कौ शौक कब ते लग्यौ ? दोऊन कौ निर्वाह का तरिया करयौ आपने ?

मैं श्री गगाबक्स ज्योतिषी कौ शिष्य 1915 ई मे भयौ। पटवारी की नौकरी 2 वष पीछै लगी। दोनू कामन मे कबहु कोई न्यूनता ना आई। भोर मे उठतौ स्वाध्याय करतौ। लिखतौ। दुपैर कू कचैरी जातौ।

☐ आपकी पैली रचना ?

खुर्जा के पडित हरिवश (तत्कालीन तुर्रा उस्ताद) नै एक ख्याल भोजन थारी पै गायौ। ई दगल लाल दरवज्जे कामाँ मे भयौ। मैन याके ज्वाब मे खयाल लिख्यौ। या कौ सिरवन्दाई याद है–

हे भक्ति युक्ति की दाता भोजन थारी।
भोजन थारी पै भोजन करै मुरारी ॥

☐ आप जीवन भर काव्य रचना माँहि लगे रये हौ ब्रज लोक साहित्य की अनेकन विधान मे आपनै दिल खोल कै लिख्यौ है। कबहु प्रकाशन माहि आपकौ ध्यान च्यौ ना गयौ ?

प्रकाशन कै जोग अरु मुकाबिले के लेखन मे अन्तर रयौ है। हमकू अन्तकथा पुरानन ते लैकै लिखती होवै है—ई परम्परा मे रहै है–साँमई वारौ ज्वाब दे। दोनून कौ

लेखन मच पै ई प्रकट होय । या मे गोपनीयता जरूरी है गई । या कारन ते छपाई कौ ऊधम कबहु जरूरी ना भयौ ।

☐ आप कामाँ ते दूर दूर मडलो लै कै जाते । वाद विवाद अरु गायन के मुकाबिले म कैई कैई दिन लग जाते कोऊ ऐसौ दगल जाकी याद आजऊ आपकै मन ते ना उतरती होय ? वाय बताओ ।

सन 1935 मे बनचारी (हरियाणा) कौ दगल लक्खी दगल हो । ई दगल वहा पै दाऊजी के मन्दिर म भयो हो । 'शशिमाल चक्र' पै श्रीमद्भागवत की अ तकथा ते ब द लडायौ—बनचारी वारे चतुभु ज तुलाराम नै । बाके बोल हे—

चक्कर सुन तारागन के ।

हमनै उत्तर मे जा जिकरी पढी वाको सिरबधा हो—

देवन के कहू ठिकान ।
सूरज शशि ते एक लाख योजन है ऊँचो ।
तहा बसै नौ गिरह भेद कहू दऊँ समूचो ।
श्रोता लेउ पहचान, चन्दा ते नक्षत्र जो ऊँचे
रवि लख योजन मे जान ।

तारी पिट गई—कामवन कौ नाम अरु मान खूब बढ्यौ ।

☐ कामा म आपने खूब दगल कराए, आपकौ कहनौ तौ यहा तक है कै या ठौर साल मे कैई कैई दगल होते । यहाँ के कौनसे दगल कू श्रेष्ठ मानौ हो ?

सन 1938 मे मडी बाजार मे भजन जिकरीन कौ दगल अब तक के दगलन मे श्रेष्ठ कह्यौ जा सकै है । या मे चौबीसी की पचायत करकै बनचारी वारे आए हे । कामा की पचायत मे भरतपुर राजा के लगभग सिगरे अखाडे सामिल हे । चन्द्रमासी मदिर के गुसाई जी श्री गोविन्द लाल अरु महाराज ब्रजेन्द्र सिह (तत्कालीन भरतपुर नरेश) कौ पूरौ योगदान हो । साजिन्दा बम्बई ते आए हे । सतसुरा कौ प्रयोग यामे भयौ हो । सतसुरा के एकमात्र वादक कलाकार भोले महाराज कू बम्बई ते कामाँ बुलायौ गयौ हो । पिंगल की श्रेष्ठ रचनान कौ प्रदशन हो । आज या तरियाँ के दगल

सभव नाय। इतनौ भारी परिश्रम आज कौन जुटावै ? आज तौ चट्टपट्ट मे मनोरजन पै भरोसौ अधिक है।

☐ आपके समै मे तौ कवि सम्मेलनन की समस्यापूर्ति को जोर हौ। आपनै हू कभी कभार काहू कवि सम्मेलन मे समस्या पूर्ति करी का ?

सन् 1950 के औरे ठौरे इन कवि सम्मेलनन कौ खूब जोर रयौ। बिन दिनान कोसी, डीग, भरतपुर तक इ जा पायौ। मेरी कहन मे लय ना होवे के कारन ई क्रम आगैं चल्यौ नाँय। समस्या पूर्तिन कौ सुनवे कौ औसर खूब मिल्यौ।

☐ काहू समस्या कौ स्मरण है ?

स्मरण तौ है। डीग मे एक कवि सम्मेलन हो। समस्या ही–विसराम कहा मन पावै ? पूर्ति करी ही–

ममता मान मोह मद त्यागै, हरि पद ध्यान लगावै, विसराम तभी मन पावै।

एक बेर की समस्या ही–'मन की गति वेग कहा लौ'

या की पूर्ति करी ही–मन गति लिखे अपार, रसातल भू आकास जहाँ लौ
मन की गति वेग कहाँ लौ ?

☐ आपने नौटकी हू लिखी है। पैलै तौ मचन हू भयौ है। कोई विवरन।

मैंने कामवन महात्म पै चौबौला लिखे हे। ऊषा अनिरूद्ध चरित्र लिखौ हौ। नई नौटकी 'द्रोपदी हरण' लिखी है। याकू ब्रज माधुरी पसारन कै ताई भेजवे कौ विचार है।

☐ आपने अपने जीवन के चार दशकन ते ऊपर कौ समै स्वाधीनता आ दोलन कौ देखौ है। वा समै के लोक साहित्य कौ या आ दोलन मे कहा योगदान हौ ?

स्वाधीनता आन्दोलन मे वा समै भाग लैबौ मो जैसे पटवारी कूँ सभव ना हौ। या कारन ते खुले दगलन मे वा समै की सरकार कौ विरोध ना हौ। हाँ छोटी बैठकन मे स्वदेशी आन्दोलन, चरखा प्रचार, सादगी, अछूत उद्धार पै खूब जम कै चरचा हौती।

☐ आपनैं ब्रजलोक सगीत के नामी गिरामी अखाडे देखे है । बिनने आपकी खूब भिडन्त भई है । या तरिया के अखाडेन कौ सामान्य परिचै देऔ ।

छाजू नत्थन कौ अखाडौ बनचारी (मथुरा) म हौ । जिला अलवर के तिगरिया गाम के देवनारायन व भदीरा वालेन के अखाडे है । आजनौक, गिडौय (उ प्र) के अखाडे है । आजनौक के ठाकुर मेघ श्याम नामी गवैया है । मथुरा मे अर्जुनपुरा के प प्रयागदत्त कौ अखाडौ, शिकोहाबाद बारेन कौ अखाडौ हू नामी हो ।

ख्यालगोई मे हाथरस के प वासदेव कौ अखाडौ, आगरा के आशीक अली मौलवी कौ अखाडौ, खुर्जा के प हरवश कौ अखाडौ अरु फिरोजाबाद कौ अखाडौ हू नामी हौ ।
झूलना के कोसी पुन्हाना होडल डीग मे नामी अखाडे भए है ।

☐ इन अखाडेन कौ अब का सरूप है ?

अब तौ इनकी प्रगति बहुतइ न्यून है गई है । कभी कभार कोई आयोजन हो जाय तौ बहुत ममझौ । समै समै कौ फेर है ।

☐ छद रसिया की विधा तौ कछु बढी चढी सी लगै । का कारन रये जासौ या की गति अवरूद्ध ना भई ?

छद रसिया के पैले रूप अरु आज के रूप मे अन्तर है । पैली शादी ब्याह मे मनोरजन मे इनकौ चल्ला हौ । भजन जिकरी ख्यालगोई मे शास्त्रीय पच्छ प्रबल रहै । कथानक हू गूढ रहै । छन्द रसिया छोटे प्रसग कूँ मोहक ढग ते प्रस्तुत करै । फटकाबाजी हू कछु अधिक होय । नौक झौक हास्य रस पैदा करै है । याते लोकप्रिय है रये है । वैसे इनमे हू मुकाबले जो होय बिनमे कहू कहू तौ शास्त्रीय पच्छ इतनौ मुखर है जाय कै रसिया की टेक, अन्तरा छन्दन के वन्दन मे हौवे लगै । गेयता अधिक लोकप्रिय भई है । फिरउ रसिया तौ रसिया है ।

☐ आपकूँ ब्रजलोक साहित्य की इन ख्यालगोईन कौ, भजन जिकरीन कौ, झूलान कौ भविष्य का दीखै ?

भविष्य तौ अधरझूल मे है । लोगन के मनोरजन के ढगा बदले है । सिनमा, टी वी , वी सी आर कौ जमानौ है । लोक रूचि कै सगइ लोक गीत सगीत पै इनकौ गहरौ प्रभाव पर्यौ है । अब तौ नौटकी मे हू फिल्मी धुनन कौ प्रवेश है । बीच बीच मे

फिल्मी पैरोडी बहुत फूहड लगै पर लोक चल्ला ते पेस कौन की खावै ? सब कुछ मिटौ मिटौ सौ सिमटौ सिमटौ सौ लगै ।

राजस्थान सगीत नाटक अकादमी, राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, पयटन विभाग ब्रज मेले कौ फागोत्सव कौ आयोजन कर तौ रई हे पर या सरकारीकरण ते नई प्रतिभान कूँ कोई सहारौ ना मिल रयौ । घिसी पिटी लीक पिट रई है ।

☐ आप लोक सगीत, लोक वाद्य अरु लोक साहित्य के विकास कै तई का सुझाव दैनौ चाहौ ?

सरकारी प्रचार माध्यम नए नए कलाकारन कूँ प्रोत्साहन दे । बिनकूँ रेडियो, टी वी आदि पै औसर दे । ठौर ठौर कायक्रम आयोजित होय । बिनकौ स्थल रिकार्डिग होय । बिनकौ प्रसारण होय । पुरानी पीढी नए नए कलाकारन मे प्रतिभा कूँ उजागर करै ।

☐ नई पीढी कूँ आपकौ सदेश ?

ब्रजभूमि मे रहबे बारे नवयुवकन कूँ ब्रज सम्कृति की रक्षा कूँ तैयार रैनौ चइये । ब्रजलोक सगीत, ब्रजलोक नाटय, ब्रजलोक साहित्य मे रूचि लैनौ चइए । ब्रजलोक सस्कृति की सेवा ब्रजराज की सेवा है । या मे नैकउ सशय नाँय । याकूँ सोच कै नई पीढ़ी कूँ आगै बढनौ चइए ।

आपाधापी फैशन परस्ती छाडि कै सूधे ब्रजवासी बनकै भारत के आदश नागरिक कौ सरूप उपस्थित करनौ चइए ।

☐ श्री रामशरण पीतलिया
बडौ बाजार कामाँ, भरतपुर

ब्रज-रचना माधुरी

रचियता–श्री रामजीलाल पटवारी

रसिया दहेज पर

रसिया– डुबा दई लुटिया भारत की घर घर मे ।
बढयो रे दहेज चौके बढे धन के लोभी मक्कार ।
3 मिसरे दाम मागै जो बेशुम्मार । कमीने नखरा करै अपार ।।
दोहा– मुँह सिकोड बाते करै बनते साहूकार ।
बेचे अपने सुतन को पाजी सरे बजार ।
मिलान– मुँह मागी कीमत लैने मे तनक न करत परहेज ।।

□

चौक– दाम लेकर भी खल नादान ।
बहुन को देते दु ख महान ।
लडे नित सास नन्द अज्ञान ।।
दोहा– मार मार ताने लडे बहु रही नित झेल ।
कहाँ तक झेले बिचारी जलै डाल कर तेल ।
मिलान– जल जल मरै, मरै फासी खा डाल गले मे लेज ।।

□

आत्महत्या दुख पाप करै ।
अनेकन विष खाय खाय मरै ।

काल चौ फिर भी नाय डरै ।।

दोहा— सरिता सर डूबे घनी डूबै कूआ बीच ।
हत्या नितप्रत हौत है फिरहु न माने नीच ।

मिलान— तौऊ नाय डरै सुतन को बेचै कीमत कर दई तेज ।।

□

चौक— नियम सरकार बने थोते ।
अमल नाय सही ढग से होते ।
न्याय नाय होय रहै रोते ।

दोहा— जब लौ सख्ती होय ना मानै ना बदकार ।
दहेज रूकै हत्या रूकै गौर करै सरकार ।।

मिलान— आर एफ बिन सजा रूकै ना होयगी सूनी सेज ।।

ख्याल रगत लगडी रिश्वत पर

टेक— मुतलक खौफ खतर नाहिं दिल मे होता है व्यापार ।
अया देखलौ खुले दा रिश्वत का बाजार खुला ।

चौक— मोल बिक इ साफ कोट अफसर जो अधीन नही ।
बिन पैसे के, पूछता कौडी के कोई तीन नही ।
गरीब की सच्ची बातो का करता कोट यकीन नही ।
नोट अडा दो कतल के चले केम सगीन नही ।

गजल— रिश्वत के बल इस देश का इन्साफ खो चुका ।
अफसोस सद अफसोस बेडा गक हो चुका ।
बन बैठे सभी बहरे अब हुक्काम देश के ।
इन्साफ से यह देश सारा हाथ धो चुका ।।

मिलान— खौफ न आला से अदना को सभी करै रुजगार खुला ।।

□

चौक— नेता करन दलाली लागे जनता को गुमराह करै ।
लूट मचाई, कहर से गजब खुदा से नही डरैं ।।
बने मिनिस्टर वोटो से नहिं बात किसी की कान धरै ।
पेट इन्हो के बडे, थोडी रिश्वत से नही भरैं ।

गजल— नेता अमूमन देश का दल्लाल हो चुका ।
बस इस सपन से देश पनिया ढाल हो चुका ।
जाकर कटै गर दुख तो उलटा जवाब हो ।
हरगिज ना देना वोट अब यह हाल हो चुका ।

मिलान— मुफ्त वोट नहिं मिले हमे कुछ नेता का गुब्बार खुला ।।

□

चौक— जब हम वोट मागते हे तो तुम सब आख दिखाते हो ।
सतराते हो, वोट के बल पर दाम कमाते हो ।
दामो से हम वोट खरीदै क्यो अहसान जताते हो ।
वरत पडे तौ, वोट नहिं सैत डालने आते हो ।

गजल— पहले दिया था आपको कुछ ध्यान दीजिये ।
बस वह अमानत हमारी अब अदा कीजिये ।
सुनकर डरो खामोश लोग बोलने वाले ।
बोले कि कीजै काम आप दाम लीजिये ।

मिलान— श्री राव आपके भारत मे ।
यह बदले का ब्यौहार खुला ।।

□

चौक— डूब चुकी जनता नेता कुछ चद लोग ईमान पै है ।
चलै न उनकी, देश ऊँचा उठे इस ध्यान मे है ।
लोग चूतिया कहै उ है जो नेता अपनी शान मे है ।
जीबा जैसे, हमेशा भारत के सम्मान मे है ।

गजल— गगाबकस बल्लभ सबै अब ध्यान हो चुका ।
गगाधरन इस देश का इमतहान हो चुका ।
लल्लू अकेले राब ही रोकेगे बात को ।
सौनी के दिल को ठीक इतमीनान हो चुका ।

मिलान— आर एल जीपी भारत मे होता भ्रष्टाचार खुला ।।

ख्याल तबील चुनाव सन 80 लोकसभा

टेक— अब तक कानो से नाय सुना रसिया झासी की रानी का ।
लेकिन अब आखो देख लिया यश इ द्रा शिवा भवानी का ।

चौक– मदराज नरायण चरण घटा उस जीवन अभिमानी का।
जो असि उठाकर कसि कहा जग मे न इन्दरा शानी का।
हो चुप्प सहम कर बैठ गये जिन काम किया नादानी का।
दुशमन भी लोहा मान गये अबला कुशाग्र मरदानी का।
मिलान– दल बदलू नेता पस्त डोरो कल कुर्सी खैंचा तानी का।
लेकिन अब आखो देख लिया यश इन्द्रा शिवा भवानी का।

□

चौक– इन्द्रा को किस के तुल्य लिखू तुलना नही हृदय समानी है।
सिंहनी लिखू या रणचण्डी नहरू की अमर निशानी है।
दिल अष्ट धातु फौलाद लिखू या इन्द्र वज्र लाशानी है।
सरस्वती लिखू भगवती लिखू परदेसी दूर देसी गुणखानी है।
मिलान– जादू टौना सा कर डाला दिल जीत लिया हर प्रानी का।
लेकिन अब आखो देख लिया यश इन्द्रा शिवा भवानी का।।

□

चौक– नेता बन देश की लोकप्रिय भारत को पुनह सम्हाला है।
है धन्य तुझे इन्द्रा गाधी नहरू नाम उछाला है।।
दुशमन सारे नाकाम हुये दिया ठोक जवा पर ताला है।
गये बैठ सिमट कर कौने मे होता जो होने वाला है।
मिलान– अब तो सैब गुनगान करै इस देश भक्त दीवानी का।
लेकिन अब आखो देख लिया यश इन्द्रा शिवा भवानी का।।

□

चौंक– सुन मति जमाना बदल गया दुनिया की चाल निराली है।
प्रचलित यह रीति पुरानी है जीवा दूज देखी भाली।
इन्द्रा यह गद्दी अटल रहे जनता ने तुम्हे सम्हाली है।
बन देश आत्म निभर गूंजे घर-घर मे ही खुशहाली है।
मिलान– कवि विप्र रामजीलाल लिखै उदगार हृदय की वानी का।
लेकिन अब आखो देख लिया यश इन्द्रा शिवा भवानी का।।

रसिया पढाई पर

रसिया– पढैगी नारी हिलमिल कै भारत मे चल्यौ अभियान।

चौक— सास अरु बहु पढै इक सग ।
उठी यह सब के हृदय उमग ।
छरी छोरिन मेऊ यही प्रसग ।

दोहा— देस उठे ऊचो तभी पढै वृद्ध अरु बाल ।
खुशहाली घर-घर तभी होयगी तुरत बहाल ।।

मिलान— औरत मद सुता सुत मिलकै पढे बने विद्वान ।।

□

चौक— सुनो नर नार लगाकर कान ।
बिना विद्या के पशु समान ।
पढे बिन बनै न कोई सुजान ।

दोहा— विद्या बिन हुआ नही कभी किसी को ज्ञान ।
विद्या पढ होते रहे मूरख हू विद्वान ।।

मिलान— विद्या ते सब काम जगत के मुशकिल होय आसान ।।

□

चौक— चलै सब विद्या ते रूजगार ।
काश्तकारी अरु क्या व्यापार ।
चलै नहिं विद्या बिन सरकार ।

दोहा— बिन विद्या के कुछ नही विद्या पढनो सार ।
बिन विद्या खोको पडौ रहै तेरो भडार ।।

मिलान— बिन विद्या के रक्षा करनो समझौ कठिन महान ।।

□

चौक— गरीबी मिटे पढे बिन नाय ।
समझ सब सोच लेऔ मन माय ।
पढे ते सब सकट नस जाय ।

दोहा— कगाली निश्चय मिटे बनो सभी खुशहाल ।
गगाधर पढ कर बनो सब ही मालामाल ।

मिलान— विप्र रामजीलाल पढे ते बढै आपकी शान ।।

रसिया— लगाऔ मिलकै पेडन को रे जाते परियावण नसाय

चौक- पेड ते रूक जाय बीमारी।
औक्सीजन निकले भारी।
व्यथा याते नष्ट जामै सारी।

दोहा- जितने पर्यावरण ते फैले जग मे रोग।
पेडन ते सारे नसै कहते ज्ञानी लोग।

मिलान- नित उठ रोज टहलने जाओ नीयम लेओ जी बनाय ।।

□

चौक- सुबह की शुद्ध हवा अति होय।
हवा खोरी गर जावै फोरा।
रोग सब बाके जायै खोल।

दोहा- निरमल काया होत है ऐसे लिख गये सत।
प्रात टहलने से सदा होय रोग को अन्त ।।

मिलान- निरमल हवा सुबह खाने से निमल मन है जाय ।।

□

चौक- बसे गुण पेडन माहि अनेक।
लगाओ प्राणी पेड प्रतेक।
शुद्ध मस्तक होय बढे विवेक।

दोहा- मिटै थकावट मग चले शीतल छाया देता।
तकै सहारो पेड कौ सब थकान हर लेत।

मिलान- आप सदा सह धूप करे औरन के शीतल छाव ।।

□

चौक- मधुर फल अति सुन्दर आमै।
लोग सब हँस हँस के खामै।
करै वत लोग इहै पामै।

दोहा- शाकारी जो सत है वैसे विपन दरम्यान।
कन्दमूल फल पेड के खाय धरै हरि ध्यान ।।

मिलान- जीव जगली करै गुजारो मौसम के फल खाय ।।

□

चौक- पेड नीचे तप करते लोग।

त्याग करके ससारी भोग ।
करै तप होय न कोई रोग ।

दोहा— मिट जाय पर्यावरण अरु प्राकृतिक सताप ।
गगाधर द्वज कहत अस पेड लगाऔ आप ।।

मिलान— विप्र रामजीलाल चलो ना हिलमिल पेड लगाय ।।

जिकरी

(हर एक पहले अक्षर कौ लिख्यौ मत्र बनैगौ)

ॐ नाम शिव रहे दास नरसी नित मन मे ।
भू मण्डल के बीच भक्त नामी भगतन मे ।
रख मन मे विश्वास ।
भु वनेश्वर त्रपुरारि कौ ।
वक्त न करै विनास ।
स्वान समान समझ या जग को लौ लागी शिव के भजन मे ।

ॐ कार नाथ मन भायौ ।
तन मन धन अपण चरनन मे ।
तरुण भयौ शादी भई आई सुन्दर नार ।
सकल रूप गुण आगरी रभा के अनुहार ।।

विश्वास पात्र सुख दाई ।
तुलना कर रति सरमाई ।
रवि शशि की किरन लजाई ।
वह माणिक नार कहलाई ।
रेखा योग पडे नरसी कौ जूनागढ मे ब्याही ।
न्यात हाथ सब कुटम सदा सौ नरसी थू उतसाही ।
मगर सकल परिवार दुखी लाचार हुऐ अति भारी ।
भक्ति सौ रूठी रहै भ्रात बसीधर की प्यारी ।

रखै झगडौ घर मे जारी ।
गोष्ठी सब घर मे कीनी ।

देत दुख जन को मत हीनो ।
पकत भौजाई घरवाले ।
स्वहा स्वहा शिव रटे नही मन नरसी दु ख पावै ।
धीरे धीरे वो नरसी भगत सतायौ ।
मन मार त्याग घर चल्यौ विप्र कौ जायौ ।
हिल्की भर रोयो कष्ट रात भर पायौ ।
धिक अपनौ जीवन मान हृदय अकुलायौ ।
योगी राज चल्यौ घर तज के बेहड वन मे आयौ ।
योग ममाधि ध्यान धर शिव कौ ।
नयन सजल शिव भवन मे बार बार कुर जारे ।
प्रथम अधिक विनती करी भक्त निहारे निहारे ।

चोरी कहा नाथ करी है ।
दशन दै भीर परी है ।
या ढब से आह भरी है ।
तब नयनन लागी झरी है ।

रात दिना लौ लगा भगत नै सात दिना तप कीयौ ।
मन क्रम वचन दास पहचानौ शिव नै दरशन दीयौ ।
राखौ जन कौ मान दास पहचान के चिपटायौ ।
घर के पट खुले तुरन्त दास नरसी नै सुख पायौ ।

वचन कह शिवजन समझायौ ।
रात दिना तप कीयौ भारी ।
मगन मन बोले त्रपुरारी ।
राख उर अपने मे विश्वास ।
घर बार त्याग कै करी हमारी सात दिना अरदास ।

वरदान माग जो तेरे मन मे आये ।
बाजी मैं तोपै मत मन मे सकुचाये ।
मम हृदय सान नहिं नरसी वचन सुनाये ।
राखौ जो प्यारी वस्तु वही मोय भावे ।
घर की जान तथास्तु करी शिव कोगल वचन सुनायौ ।
वर दे वचन कहे शकर नै,

रट्ट रात दिन मे जिसे मकल जगत आधार ।
क्षण भगुर या क्षण को मूल मात्र है सार ।

मालिक है जड चेतन कौ ।
राजा अरु रक सबन कौ ।
मद मोह दूर कर मन कौ ।
राखौ विस्वास भजन कौ ।

घर घर व्यापक नद नन्दन के दरशन तुम्हे कराऊँ ।
बनबारी वा गिरधारी मे सुनदास कहाऊँ ।
राजिव लोचन सम मोय न प्यारौ कोय भक्त सुन मोरी ।
मदसूदन के कर हरस मिटैगी सब ब्याधा तोरी ।

राधिका जिन चरनन चेरी ।
धनी मत नरसी देर करौ ।
वचन मेरे पै ध्यान धरौ ।
राखते जन की लाज हमेशा ।

मन वचन करम से जिनको रहते नारद शेष दिनेश ।
रामेश्वर के सुन बैन तसल्ली आई ।
घनश्याम दरस को दोनौ चले सिहाई ।
बढ चले बैल चढ सग भगत सुखदाई ।
पारबती पति गये पहुच द्वारका भाई ।
हित चित सौ कारदासन् पुरी के मन मे मोह बढायौ ।
मान्यौ डर आनद दोऊन नै ।
ॐ ब्रह्म के नगर कौ, को कवि करै बखान ।।

नव पल्लव विटपन रूचिर कनक जडित महि जान ।
लोक नही समता में ।
शिव देख दोय हरसामे ।
वा नरसी को समझामे ।
यह करम ते पामै ।

ॐ ब्रह्म को मन्दिर सनमुख झलक पडै रतनन की ।
नद नन्दन के दरस करो, होय दूर गलानी मन की ।

मन मे मोद बढाय चले दोऊ धाय भवन मे आये ।
भगवत श्री ीनानाथ देख शकर को हरसाये ।

गरूड गामी मिलन धाये ।
वहा बैठी जो सभा तमाम ।
तेहि अवसर करन प्रणाम खडे भये अपन-अपने धाम ।

वा समय नलन सपने शकर कौ कीयौ ।
सुध्र भले नरसी मगन प्रेम रस पीयौ ।
देखो गगाधर व्रज अति आनन्द लीयौ ।
वा समारोह मे मगन सबन कौ हीयौ ।
यहा रास तुल आर रोल गोपी कौ दरस करायौ ।

होरी मे—जिकरी को पिंगल शास्त्र के गणो द्वारा हर मिश्र को रचा है

नटवर दीनानाथ सखा मन मगन बुलाये ।
श्रीदामा मन सुखा सकल के दौरे आये ।
लागत है नीके ।
असन वसन भूषण वो सबके माथे पै टीके ।
लाल गुलाल हाथ पिचकारी रे वो खेलै होरी नद सुत ।
होरी खेलत नद छैया ।
सकल सखी है गई इकठौरी ।

केशर गागर नागर छोरी श्रीपति पिचकारी तानी थी ।
नन्दन चन्दन चोबा रोरी कर लै सब सखिया सानी थी ।
राधे जू हाल निहारत ही अति कोमल कोयल सी बोली ।
हिलमिल कर घेरो नन्द कुमार हे आली री बाधौ टोली ।

सुन सत्रा जित की जाई ।
क्यो देरी बहन लगाई ।
कोडा लै तुरत बनाई ।
आयौ है कुमर कन्हाई ।
वेग सखी ललता बुलवावै प्यारी को ।

सुघड विशाखा वेग सजाऔ या अमोल क्वारी को ।

चाली च द्रावल नार पुरी अनुहार तुरत उठ धाई ।
जोवन छवि दमकत बदन सखी विद्या सुचि सो आई ।

झलक जोवन अति दिखलाई ।
पहर नब नथ भलकारी को ।
हार राग पारी प्यारी को ।
पचकडी जौ माला धारी ।

झामन पायल पहर हाथ गजरे पहुची न्यारी ।
धुक धुरी पहर तरकी धन सुघड नवेली ।
पट मुलकट दामन लामन झलक सहेली ।
इधर सखी सो उधर वो सामल श्रीपति रमन कन्हैया ।

समर तुरत बोले श्री नागर ।
मेरे साथी सो ग्वाल सकल अब यतन करौ ऐसौ भाई ।
हिलमिल कै सारे इकठौरे लो घेर सखी चचल आई ।
मैं भी लै रोरी की झोरी राधे के घू घट तक मारू
सुन्दर सु दर सब सखीयन के घायल द्रग कर डारू

होरी मे अदब घटैना ।
पीछे को कदम हटैना ।
भागौ तौ हसर डटैना ।
खेलौ तौ सहज पटैना ।

वेढव अटक रही वे कोडा लैके सखिया धाई ।
श्रीदामा को देखो घेरन नदकुमार ढिग आई ।
तनक न टाली टलत सखी सौ चलत हरस कै भारी ।
चौरे मे गागर श्री नट नागर ऊपर सौ डारी ।

भिगोई सो तन की सारी ।
रगीले नै रग डारौ है ।
मजा होरी अति भारौ है ।
सरम ते आई लाचारी ।

झोरी मैं रोरी लै प्यारे पै धावत है प्यारी ।

होरी की रगत जावत मदन मुरारी।
गोरी की चादर आदर सहित बिगारी।
रगत देखत चकित भयौ वो सखियन चीर चुरवैया।

□

निरख सखिन आन द मनायौ।
ऐसी फूली आली बोली है राधे जू नागर।
आवै है धाम हमारे पै सादर सामल श्री गुण सागर।
कहा देखौ भोरी सी भामिन श्रीपत के दरसन कर लीजै।
जल थल जड चेतन के स्वामी सादर सब पूजन कर लीजै।

कर दरश सकल सुख पायौ।
जब पुलकत बदन सवायौ।
चरनन रज तिलक लगायौ।
होरी को सकल बनायौ।

प्यारे ते प्यारी यो बोलत चरन महल मे धारौ।
फागन मे जाने ना दूँगी मो पर तरस विचारौ।
फागन मे घर रहत सखी यो कहन सबन के पीया।
हिलमिल दोऊ पौढे सेज अधिक तब होय खुशी जीया।

इरादा यही नाथ कीया।
सुनत श्री राधे के बैना।
झपाये श्रीपत ने नैना।
कहन यो लागे गोपाला।

तू मदमाती है नबल अनौखी योवन मे बाला।
योवन मे आधी शरम करत नही गोरी।
शशि बदनी प्यारी नारी नवल किशोरी।
चाल निराली है बाचाली कोमल नरम कलैया।

□

मो मन सूरत बसत अनूठी।
प्यारी की मधुर सुरतिया पट हरशित हो बोले नटनागर।
तेरे कारण बरसाने मे बल होरी खेलूँ गुण आगर।

फागुन की नौमी को धायी आऊँ मे धाम तिहारे पै ।
लेकर टोली की टोली मै खेलूँगी नाम तिहारे पै ।

जब लग जल थल रह प्यारी ।
खैलेगे रसिक बिहारी ।
मारेगे रग पिचकारी ।
डारेगे जल भर झारी ।

या ढव कौल कियौ राधे सौ लीलाधर हरखाये ।
घेवर विपन निकर मे बल श्रीदामा तुरत बुलाये ।
घेवर मे वस सकल बिचारी अकल विलम ना कीयौ ।
सब बस कर भोगे चैन विपन यह सुन्दर है ठीयौ ।

मगन यशमत सुत कौ हीयौ ।
वसै लै ग्वालन की टोली ।
रगौ की खोल दई झोरी ।
करी लीला धर नै लीला ।

हीरा के सुन्दर लाल गुरू है सागर गुण शीला ।
सायर कायर कायर से होगे गारत ।
जाहिल माहिल कायल जी पी से हारत ।
कवि रामजीलाल दरस दै दाऊजी के भैयर ।

महाभारत से

द्रोण गुरु नै समर भूमि मे प्राण गमाये ।
दुरयोधन महाराज दुखी हो वचन सुनाये ।
कोहे ऐसौ वीर ।
गुरु जूझै मैदान मे कैसे बाधू धीर ।
किस पै मुकुट धरूँ लडवे कौ रे अब तो सेनापति होयगौ

राखै को लाज हमारी ।
कौन लडै पन्डुन ते जाय कै ।
इतनी सुन गुरु सुत कहै नृपदो सोच विचार ।

वह सूरज सुत बलकारी।
अर्जुन समान धनुधारी।
राजा सुन बात हमारी।
वह राखै लाज तुम्हारी।

सुन गुरु सुत कै बैन हृदय मे दुरयोधन सुख पायौ।
सैनापति करिवे के काजे कर्ण बली बुलवायौ।
लीयौ कर्ण बुलाय कही समझाय भूप नै बानी।
पन्डुन के कुल की आज जगत ते मेटौ निसानी।

बली तुम योधर लासानी।
कर्ण कह सुन लीजै भूपाल।
न जिंदे बचै पन्डु के लाल।
आज पाडुन को मारूँगो।

जो उनकी करै सहाय वाय भी चरन पछारूँगो।
जो नटवर सम सारथी भूप मै पाऊँ।
तो कोटन अर्जुन रण मे मार गिराऊँ।
सुन बैन कर्ण के शकुनी गिरा सुनाई।
नटवर समान है शल्य सारथी भाई।
शल्य सारथी करौ कर्ण कौ रथ हिकवैया भारी।

□

कर्ण शल्य पै आये।
दुरयोधन नै कर्ण सौ एसे कही बुझाये।
नटवर सम यह सारथी जावे तुम्हे लिवाय।

सुन कर्ण खुशी मे छायौ।
राजा शल्य कठ चिपटायौ।
कह कर्ण भयौ मन चायौ।
सिर रण कौ मुकुट बधायौ।

इत मे श्याम कही यौं बानी धरम कुमर बलबाके।
कुरू दल कौ सेनापत भैया दीनौ कर्ण बना के।

वो है बाकौ सूर समर भरपूर होयगौ भैया ।
वाके जौरे है सर पाच पाच प डुन के मरवैया ।

कहै यौ यशमत कौ छया ।
बाण वाय परसराम दीये ।
कौल जब या ढव ते कीये ।
तोय मैं दऊँ पन्डुन कौ काल ।

ये समय पडे दे काम समर मे सुन कुन्ती के लाल ।
तुम कु ती को बुलवाऔ रे विलम मत लाऔ ।
वाय रवि सुत निकट पठायौ रे बाण मँगवायौ ।

सुन बैन श्याम के धरम कुमर हरसाये ।
लै सग श्याम को निकट मात के आये ।
नाये सीस जाय कु ती को ऐसे गिरा उचारी ।

□

लाय दै काल बाग प डुन के ।
माता जाऔ बेग तुम कण बली के पास ।
काल बाण ला माग कै सुनौ मात अरदास ।

न्यौ धरम कुमर नै भाई ।
माता को गिरा सुनाई ।
सुन मात मगन उठ धाई ।
जो भवन कण के आई ।

आई माता जान कण गादी ते खडौ भयौ है ।
दोऊ कर लीने जोड मात सौ कोमल वचन कह्यौ है ।
कीयौ कण प्रणाम मात कहा काम आप यहा आई ।
जो मो लायक होय काम करूँ मैं सिरधर सिवकाई ।

कहै यौ रवि सुत बलिदाई ।
कुमर की सुन कै इतनी बात ।
फेर यौ बोली कु ती मात ।
कण सुन चित है बलकारी ।
माता सुनौ ध्यान दै मेरी ।

प्रगटे तेरे गव ते मैना छैऔ लाल।
पर दुरयोधन नै मेरौ मात करौ प्रतपाल।
दुरयोधन नमक खिलायौ।
रग रग मे मात समायौ।
मेरौ हरदम मान बढायौ।
मोय गहरौ यार बनायौ।

जो धोकौ दऊँ मात मेरौ क्षत्री धम घटैगौ।
कंमर करै पाचो पन्डन ते कण न आज हटैगौ।
न्यौ सुन कण के बैन मात लगी कहन लाल सुन मेरी।
पाँचौ पन्डन के काल बाण दे मती करै देरी।

माग रही महतारी तेरी।
मात की सुन इतनी बानी।
हरस कै उठौ वीर दानी।
बाण ल निज कर मे लीय।

दिये पाचौ बाण गहाय हवाले कुन्ती के कीये।
लै लीने पाचो बाण चली महतारी।
गई पन्डन के ढिग आय जहा गिरधारी।
द्वज•गगाधर की रचना रूचिर करारी।
जोतिष के गगा बक्श विवेकी भारी।
विप्र रामजीलाल भजन कथ नई-नई रगत डारी।

भजन सम्बादी

मन हरनी सुन्दर कथा लिखी पुरानन माहि।
शुभ चरित्र वरन करूँ, सुनत पाप नस जाहि।

सुनत पाप नस जाय कथा शुभ सुन्दर वरनै सुख दैनी।
कलु के कष्ट नसावन कारन पाप काटने की छैनी।
जो नर कथा सुनै चित दे उनको ना विपत पडै सहनी।
कहै सुलभ इतिहास अपूरव शुभ चरचा मन हर लैनी।

अलबेली सुन कथा यथारथ वसै हाल तमाम ।
सुनौ गुनी धर ध्यान करौ पहचान हाल दरसामे ।
भयौ एक भूप बलवान जबर दुनिया मे ।
जाकै आठ कुमर बलवान सुक्ख की खान गुनी बतलामे
रणधीर सुतन कौ हाल तुम्हे समझामे ।

वे नृप के सुत बलबका ।
नाय खाय अरु ते शका ।
कर कर बैरिन के फक्का ।
दियौ बजा फते कौ डका ।

लख हाल सुतन कौ भूप मगन भयौ भारी ।
व छत्रपति की फूल रहौ फुलवारी ।
महाराज सुख लख अति मन मगन नरेश ।
सकल दुख नस गये भूप के नित सुख बैठ विसेस ।

कर रह्यौ धरम कौ राज भूप बलदाई ।
दिन-दिन राजा की कीरति बढै सवाई ।
महाराज राज ते नसै अधम बदकार ।
पाखडी नस गये रहे ना व्यवचारी बटमार ।

अन्याई नस गये ।
चोर लम्पट ना पुर मे रहे ।
नस गये पुर ते पाप भूप नित करै धम के काम ।

□

कुछ दिन के दरम्यान सुनौ सुज्ञान भूप के भाई ।
कोमल तन कन्या राज भवन मे जाई ।
भयौ एक अचम्बौ और सुनौ कर गौर सभा चित लाई
अचरज की चरचा लिखी बिधा मे आई ।

अचरज की चरचा भारी ।
सुनियौ गुमनाम खिलारी ।
राजा की कन्या प्यारी ।
जो जनमी भवन मझारी ।

कन्या कौ सब तन सुन्दर हौ नारी कौ।
पर मुख बकरी कौ बन्यौ सुता प्यारी कौ।
महाराज सुता लख नृप मन दुखी अपार।

अग मनुष्य कौ मुख बकरी कौ कहा रचि करतार।
तैंने सुख दैके दुख दयौ मोय बनवारी।
बकरी मुख बारी जाई सुता हमारी।
महाराज आज मेरी विपदा को टारौ।

दारूण कठिन कलेश करो प्रभु बेगी निस्तारौ।
राजा करैं विलाप।
दियौ विधना नै अति सताप।
कठिन कलेश निवारौ टारौ विपति श्री घनश्याम ॥

□

फिर मन सोच नरेस कि तज्यौ कलेस धीर मन धरकैं।
नित करैं राज भगवत के नाम सुमर कैं।
इत नप की सुकमारि रूप ऊजियार भवन मे रानी।
भई सुता भूप की शादी लायक रानी।

इक दिन क या महलन मे।
मुख देख रही दरपन मे।
मुख देख दुखी भई तन मे।
विधि कहा लिखी करमन में।

विधि की माया अति प्रबल पार को पावैं।
करनी जो जैसी करै सामने आवैं।
महाराज जनक पहले के सारे पाप।
उदय भये सौ आप सुता या विध सौ करत विलाप।

अब विकल भवन मे भई भूप की जाई।
सकोच सोच बस सकल देह मुरझाई।
महाराज फेर धर धीर भूप सकुचाई।
करके पहली याद सुता अपने मन रही विचार।
पहले जनमन की भाई।

जब याद सुता को आई ।
माता निकट बुलाय सुता यू बोली करत प्रणाम ।

□

यू कही सुता नै बात जो दोऊ हाथ मात सुन लीजै ।
मेरी बातन पै चित महतारी दीजै ।
जैसे मौते भई बताऊँ सही दया मा कीजै ।
मेरौ पूरब कौ पाप या तरह छीजै ।

इक तीरथ है बसुधर मे ।
वहा जाय पाप नस जाय ।
जितने ही गुनी सभा मे ।
सब मिलकै भेद बताय ।

कहा नाम सुता क माता पिता बताऔ ।
क्यो बकरी कौ मुख भयौ गुनी दरसाऔ ।
महाराज कियौ कहा पूव जनम मे पाप ।
क्यो बकरी मुख भयौ सुता क्यो सहे महासताप ।
कब होय कन्या कौ असली मुख बतलेखौ ।
जो गुनी होय सो मेरे सम्मुख अेखौ ।

महाराज बिप्र गगाधर काव्य कमाल ।
गगाबक्श कुशल कविता की जानै नई नई चाल ।
समझै चतुर सुजान ।
सभा ते सटक चले अज्ञान ।
विप्र रामजीलाल बसै ब्रज माहि कामवन धाम ।

□

कन्या के सुनकर बचन माता कियौ उपाय ।
भूपवली को भवन मे लीनौ बेग बुलाय ।

लीनौ बेग बुलाय फेर न्यौ राजा सौ बोली रानी ।
सुन्दर मुख है जाय सुता कौ सुनौ प्राणपति सुज्ञानी ।
अति पवित्र तीरथ वसुधा पै करै सुता अघ निसानी ।
वहा दीजै पहुचाय सुता ने तीरथ वृत की मन ठानी ।
कटै पाप सब सन के मन के है जाय शुद्ध विचार ।

रानी की इतनी सुनी भूप नै गुनी विलम नाय कीयौ।
बहु धन कन्या के काजै लदवा दीयौ।
वह सुता वेग चल दई मगन अति भई तुरत मग लीयौ।
तीरथ व्रत काजै अधिक उमग रहो हीयो।

मजिल मजिल सुकुमारि।
तट तीरथ गई बिचारी।
कन्या पकरी मुख बारी।
तीरथ लख भई सुखारी।

मन मगन सुता तीरथ म नहाय रही है।
शुभ करम करत अति सुता मिटाय रही हे।
कर करम अनेकन मोद बढाय रही है।
तीरथ फल के बस पाप घटाय रही है।

फेर सुता धर ध्यान।
दिये बडदान।
मिटे सकल सताप सुता क कट गये पाप अपार।

□

वह सुता सुघड मुख भई कथा सुन भई ध्यान धर लेना।
नाइ बकरी को मुख रह्यौ सुनौ सच बैना।
सुता रूप गुणवती देख कै रही अधिक सरमाई।
रम्भादिक सुन्दरता लख नार झुकाई।

शशि मुखी सुता मृग नैनी।
भई सुन्दर तन पिक बैनी।
रातन के मन हर लैनी।
द्रग धार सुता की पैनो।

लख रूप सुता को देख स्वग ते आये।
नर किन्नर नाग तमाम असुर उठ धाये।
लखी सुता गदभ बहुत हरसाये।
वह कामदेव ने सबके सभी दवाये।
मोहित सब के सब भाये।

सुता सौ शादी की कह रहे।
कन्या नै शादी कौ सब सौ कियौ साफ इ कार।

□

फिर भये निरास तमाम गये निजधाम असुर सुर सारे
गदभ और नर किन्नर नाग विचारे।
इत करै सुता तप घोर दोऊ कर जोर ध्यान धर प्यारे।
कैलासो वासी शिव के नाम उचारे।

लख जाप मगर शिव धाये।
कन्या कौ दरस दिखाये।
शकर नै वचन सुनाये।
वर माग सुता मन भाये।

सुन बैन शम्भु के सुता मधुर मुख बोली।
कर जोड कही तब दिल की घु डी खोली।
मेरे उर मे बस गई स्वामी सूरत भोली।
भये सिद्ध काम सब पूण तपस्या होली।

अब ये ही वर दीजै।
स्वामी वास सदा यहा कीजै।
या तीरथ पै बसौ जनन के करौ सदा उद्धारे।

□

ऐवमस्तु शिव कही कथा यह सही प्रमोद भरी है।
शकर भये अन्तर ध्यान न देर करी है।
इत कन्या लिङ्ग रचाय दई पधराय तीथ पै ज्ञानी।
जामै वर दायक शिव वसै सदा सैलानी।

अब खोलौ पूछ हमारी।
दगल मे कर हुसियारी।
पाओगे नाम खिलारी।
कहौ कथा यथा रथ सारी।

कितने दिन कन्या तपी गुनी मिल भाखौ।
हिम्मत करके मेरे सग रोयौ साखौ।

जाके याद होय सब कहो न डुबकी राखौ ।
जो वाद करो सो मजा सभा म चाखौ ।

गगाधर कहौ हाल ।
सुता कैसे भई रूप विशाल ।
विप्र रामजीलाल तीथ कौ पूछै नाम विचार ।

भजन सम्वादो

'मलिया चल गिर शिखर पै इक गधव कुमार ।
अपनी नारिन सग कियौ छ सौ वष विहार ।
छै सौ वष विहार कियौ जाको अति सुन्दर तीनौ नारी ।
रति रभा अनुहार नार वरु चन्दा की सी उजयारी ।

कुछ दिन के उपरात गभ ते भई नार तीनौ प्यारी ।
इन तीनुन के तीन कुमर भये बाँके योधा बलकारी ।
वे तीनौ रणधीर बीर सुत परवत मे जाये ।
कछुक दिवस मे जान तरूण बलवान कुमर है आये ।

सुत ना पवत पै खेल करै मन भाये ।
इक दिन गदभ कुमार वो लाल निहार बहुत हरसाये ।
जानै तीन नगर विद्या ते गुणी रचाये ।

वे तीन नगर सुखदाई ।
पुत्रन को दिये सिहाई ।
इक एक कुमर को भाई ।
दियौ इक इक पुर हरसाई ।

सुत निज निज पुर मे राज चैन सौ करते ।
गदभ कुमर खुश पवत माहि विचरते ।
महाराज त्रयन सग करै रग रसपान ।
तीनौ नारिन कै सग मिलकै भोगे सुख महान ।

इक दिन कर रह्यौ बिहार ग दरभ जायौ ।
इक सूकर वाकै नजर अचानक आयौ ।

महाराज देख शूकर मन क्रोध बढाय ।
कर मे धनुष उठाय कोप कर लीने बाण चढ़ाय ।
लिये बाण सधान ।
कोप कर गरज्यौ भट बलवान ।
फडक उठे भुज दण्ड नैन रतनारे है आये ।

□

वाई अवसर आप सुनौ चित लाय कहै समझाकै ।
इक हिरनी आयके बोली शीस नवाय कै ।
सुन गन्भ कुमार बाण कर पार मेरे तन आयकै ।
दै या शूकर को छोड दया उर लायकै ।

या शूकर को क्यो मारौ ।
अपने उर दया विचारौ ।
मोय मार मेरौ दुख टारौ ।
मानू एहसान तिहारौ ।
न्यौ सुन हिरनी की गदभ सुत बलकारी ।
बतलाऔ साँच या ढब गिरा उचारी ।

भेट भगवती महारानी

जयति जयति जगदम्ब जय, जननी जगदा धार ।
जयति जोति जीवन जगत, जग करनी सहार ।।

जग करनी सहार, तू ही भक्ति मुक्ति शुभ द्वार ।
कर तल सदा पदारथ चार, जो नर ध्यान धरै ।
आदि अनादि अखडी लोलप लम्पट नीच घमडी ।
कायर पोच महा पाखडी, तोते सदा डरै ।

जो नर तव गुण गामे, तिन कर तीनो ताप नसामै ।
वाणी विमल बुद्धि वर पामैं, भव सौ पार तरै ।
हीरा तीनो काल कविवर विप्र रामजीलाल ।
सग मे रहै सदा गोपाल, जननी जाप करै ।।
राखौ मेरी लाज आज जगदम्बा ।

राखौ लाज आज जगदम्बा तू मत करै बिलम्बा ।
शरण शरण मै शरण तुम्हारी कीजै कृपा मात अविलम्बा ।
राखौ मेरी लाज आज जगदम्बा ।

कारण तू ही करता तू ही है श्रष्टि सब साकार तू ।
खपना सकल ससार नरता विश्व विशद निराकार तू ।
गुणगान तब तिहु लोक करते मा दया आगार तू ।
घर है जननि घट घट तेरा दे ज्ञान द्रगन उघार तू ।
कुंड यशोदा तट केहर कट राजर आसन अम्बा ।
लागुर वीर द्वार पै गाजै धारण कर त्रसूल कर लम्बा ।।
राखौ मेरी लाज आज जगदम्बा ।।

□

चकोरी शिव शशि मुख की आप ।
छाल लख नासै तीनो ताप ।
जग मे खल दल भजन हार ।
झलक खजर दामि दुति धार ।
टल सकट जन करते जाय ।
चकोरी शिव शशि मुख की आय ।
पारस पीपल द्वार भवन के सुन्दर कचन खम्भा ।
कनकू कारे मणि जटित कगूरा पेख महा छवि लाजत रम्भा ।
राखो मेरी लाज आज जगदम्बा ।।

□

ठुमक ठुमक मग नचाती केहर चली है खल दल दलन को माता ।
डगर चलत डग मगी धरा तब, चली अधम मद मलन को माता ।
ढूँड ढूँड वध करै समर मे, न छोडे जिन्दा खलन को माता ।
तमाम दैत्यो को घेर लाँगुर, मिटाये उर को जलन को माता ।
सु दर गगाधर रचना पर कीन नही उर दम्भा ।
विप्र रामजीलाल काव्य गति क्षमहु चूक जो बनहि कदम्बा ।
राखो मेरी लाज आज जगदम्बा ।

रूद्राष्टक

नाथ नमामि नमामि सदा, शिव रूप अगोचर गोचर धारी ।

आदि अनादि अखड प्रभो, निय तपि विमोचन सकट हारी।
आप अकारण कारण हौ जग, मूल तू ही निरमूल पुरारी।
जानत है तिहु लोक मभी शिव नासत है दुख दारिद भारी॥

☐

अङ्ग रमावत भस्म सदा, गल मुन्डन माल सुशोभित प्यारी।
नागन कौ उपवाते लसे, तन शीस जटान महा विष धारी॥
भाल महा छवि राजत है शशि, बूँद पियूष झरै सुखकारी।
जानत हे तिहु लोक सभी, शिव नासत ह दुख दारिद भारी।

☐

गग नरग जटान महा, विचरै मद मत्त लटान मझारीय।
खोज रही मग भू विवरूँ किम, जूट सघन्य न पावहि पारी।
भूप भगीरथ सो गति पखति, जाय अखण्ड जचौ सपुरारी।
जानत है तिहु लोक सभी शिव, नासत हैं दुख दारिद भारी॥

☐

पेख महा तप पुण्य भगीरथ, शकर गग जटान निसारी।
धार अखण्ड प्रलम्ब धरा तल, काल कराल सशक दुखारी।
पापन पुज नसावन को महि मडल पावन गग निहारी॥
जानत है तिहु लोक सभी, शिव नासत है दुख दारिद भारी।

☐

तारत वश भगीरथ कौ शुचि गग चली सुर सिद्ध सुखारी।
रूप सुरम्य अगम्य निहारत देव प्रसन्न नमामि पुरारी।
शम्भु कृपा शुभ दरस भयो, भव पातक नासन गग पधारी।
जानत है तिहु लोक सभी शिव नासत है दुख दारिद्र भारी॥

☐

देव विनीत भये तब ही शरणागति वत्सव आस तुम्हारी।
सकट घोर कठोर दयो, खल दानव सो त्रपुरा भयकारी।
सो वध कीन तुरन्त दया निधि, देवन सतन सकट हारी।
जानत है तिहु लोक सभी शिव नासत है दुख दारिद भारी॥

☐

योग वियोग सुयोग यथावतु साधत नाथ समय अनुहारी।

शष दिनेश हमेश रहै तबु दिवा त्रलोचन रोचन कारी ।
मँचुल मगल मूल सदा, शिव लोक अलोकहि शोक निवारी ।
जानत है तिहु लोक सभी, शिव नासत है दुख दारिद भारी ।।

□

सतन सकट नासत हो तुम, नाथ सदा भय भजन हारी ।
को अस सकट नाथ महा जग, ताहि न नासत आप पुरारी ।
आन हरो मम कष्ट सदा मम ताप त्रलोचन जो भय कारी ।
जानत है तिहु लोक सभी शिव नासत है दुख दारिद भारी ।।

□

जयति जयति कैलाश पति, जयति उमा पति आप ।
जयति भूत पति पशुपती नानहु नासहु भव त्रय ताप ।
यह अष्टक शिव योग पति, पढत कटत भव जाल ।
विरचति सादर शरण गह, विप्र रामजी लाल ।।

श्री बजरगाष्टक

बाल विनोद भरयो रवि को, तव तीनहु लोक छयो तम भारो ।
जीव चराचर सकट मे अति त्रास भयो सुर मत्र बिचारो ।
भू सुर सग विनीत भये सुर, भान तज्यो सब कष्ट निवारो ।
जानत है तिहु लोकन मे दुख नासन को कपि जन्म तिहारो ।।

□

शैल कपीस वसै भय बालहि ता गिर सो मग नाथ निहारो ।
बालहि शाप महा मुनि को, तब या विध सो मिल मत्र विचारो ।
विप्रहि रूप बनाय लयो, तब आप कपीश जु सकट टारो ।
जानत है तिहु लोकन मे दुख नासन को कपि जनम तिहारो ।।

□

सग लिये युवराज तबै, सिय खोज कपीशहि बैन उचारो ।
जीवन अन्त करो तुमरो, सुध लीन बिना तुम जो पग धारो ।
सागर के तट टेर थके सब, लाय सिया सुध प्राण उबारो ।

जानत हे तिहु लोकन म दुख नासन को कपि जनम तिहारौ।

□

मकट गवण दीन जबै सिय कीन सहाय हरो दुख भारौ।
ता दिन वीर दशानन कौ सुत आप हयो अरु बाग उजारौ।
भूम सुता पिरटानल सौ तन जारत ही तब प्राण उजारौ।
जानत है तिहु लोकन मे, दुख नासन को कपि जनम तिहारौ।

□

रावण तातहि तीर दयौ, उर लागत लक्ष्मण होस बिसारौ।
वैद्य सुखेन कुटी सग ला, तब जागिर द्रोणहि वीर उपारौ।
बेगि सजीवन आन दई तब लक्ष्मण के तुम प्राण उबारौ।
जानत है तिहु लोकन मे दुख नासन को कपि जनम तिहारौ।

□

युद्ध दशनन घोर कियो, तब नागहि पास ब ध्यो दल सारौ।
श्री रघुवश विभूपण को दल, मोहित फद फस्यो अति भारौ।
आन रागेश सहाय करी, तब ब धन काटत कष्ट निवारौ।
जानन तिहु लोकन मे, दुख नाशन को कपित जन्म तिहारौ॥

□

रूप विभूषण कौ अहि रावण, राम सबधु पताल सिधारौ।
देविह पूज भली विधि सौ, बल देहु सबै मिल मत्र विचारौ।
आन सहाय करी पल म, अहिरावण सैन समेत सहारौ।
जानत है तिहु लोकन मे दुख नाशन को कपि जनम तिहारौ।

□

काज किये सुर सतन के, तुम वीर महा उर माहि बिचारौ।
को अस सकट वीर बली, जग जो तुम सौ नहि जावत टारौ।
आन हरौ हनुमान सबै दुख, जानत हो प्रभु सकट सारौ।
जानत है तिहु लोकन गे दुख नाशन को कपि जन्म तिहारौ॥

□

लाल अग लाली लसत, लोचन लाल विशाल।
लाल गदा लगूर तन, वज्र जयति शिव लाल।

अष्टक हनुमत वीर जो, रेट कटै भव जाल ।
विरचति सादर प्रेम सौ, विप्र रामजी लाल ।।

रीतौ जजाल जमाने कौं

माया के चक्कर मे पडकै, जीवन बेकार गमावैगा ।
तू बतला प्राणी दुनिया मे, क्या लाया क्या ले जावैगा ।।

जो बडे बडे नामी नामी मेरी मेरी कर चले गये ।
जब काल तमाचा गाल पडा तो विकट वजी डर चले गये ।
कर कर कचन का दान करण जो त्यागन कर नर चल गये ।
लुकमान दवा ना टलने की जो दुनिया से मर चले गये ।।

वीर चकवे बैन का गौरव जगत मे जानते ।
देव किन्नर दनुज डर लकापती का मानते ।
काल पाटी वीर के यम वरूण जेलो मे पडे ।
जिते तीनो लोक ताने बाण तीव्र कृपान ते ।।

जो त्याग जगत को चले गये तो तू बचा हाल गलबैगा ।
तू बतला प्राणी दुनिया मे बचा लाया बचा ले जावैगा ।

□

जब त्याग जीव जग जाय चला तौ बतला को तेरे कार चलै ।
पित मात तात नाती बेटा कर प्रीत मीत नाय नार चलै ।
रीतौ जजाल जमाने कौ यम द्वार न नातेदार चलै ।
केवल तेरौ जो कम चलै करतौ नैय्या, को पार चलै ।

नार रोवै तीन दिन तेरी जो लोका लाज को ।
दाग तक रोवै कुमर तैयार तेरे राज को ।
मात रोवै जनम लौ कर याद जीवन प्राण की ।
मतलब पडै तौ तात रोवै याद मे निज काज कौ ।

मतलब के ताते दुनियाँ मे बिन मतलब प्रेम न पावैगा ।
तू बतला प्राणी दुनियाँ मे क्या लाया क्या ले जावैगा ।

जर जेवर माल जमी जोरू दौलत का बिल कुल त्यागन कर ।
जो जन्मत कौल किया तैंने कर याद जीव तू पालन कर ।
तैं कौल किया मैं भजन करूँ गोविंद नाम कर गायन कर ।
काया माया के चक्कर मे चूकै क्यो व्रत पारायन कर ॥

मन की गती को रोक तप कर दे जगत को त्याग तू ।
जजाल रीता मान कर मन वेग लै वैराग तू ।
कर कम नीयम पाप कर रट नाम जग तारन तरन ।
मिचे मद में नैन जल्दी जाग जल्दी जाग तू ॥

पल की मत देर करै प्राणी कब गोविंद के गुण गावैगा ।
तू बतला प्राणी दुनियाँ मे क्या लाया क्या ले जावगा ॥

□

ले जान निकट नभ प्रलय तेरे चूकै मत क्यो तू टालु करै ।
ले राम नाम गुण गायन कर बरना चट दौरा काल कर ।
तोय बीच नरक मे डारन को माया तो नित प्रत जाल करै ।
तू चेत जल्द तू नेत जल्द जीवा तोय माला माल करै ॥

लल्लू लगा कौ राम पद तौ परम पद पा जाय तू ।
मगल कृपा गिर्राज बिन किम पार प्राणी पाय तू ।
चूकै तौ डूबै नाव तेरी बीच मैं चकरायगो ।
तू कर यतन तू कर यतन मत मान पा बौराय तू ।

कवि विप्र रामजीलाल गुणी नौका गोपाल तरावैगा ।
तू बतला प्राणी दुनियाँ मे क्या लाया क्या ले जावैगा ।

उठो जागो

राष्ट्र की आसा उठी मा की मधुर मुसकान बनकर ।
समृद्धी के स्वरो मे शुचि सग गूँजै तान बन कर ।
दीन ताहो दूर तब सब जो जुरौ जो भगवान बन कर ।
कम रूपी कृपा ने कीया विजय जग ज्ञान बन कर ॥

रावण कौ अन्तर्द्वन्द्व (ख्याल)

(प्रथम अक्षर मो राम महामंत्र बनै है।)

रावण यूँ करन विचार लगा रघुवर सौ वैर बढाऊँगा मैं।
मम बहन करुपा करने का, तपसियो को मजा चखाऊँगा मै।।

राखूँ मै पति निश्चर कुल की, उन की नारी हर लाऊँगा मे।
घमशान महा सग्राम करूँ, दिन की कर रैन दिखाऊँगा मैं।
बस भार हरन जो वसुधा का, अवतार तौ दरशन पाऊँगा मै।
राजिव लोचन के दरशन कर भव सागर से तर जाऊँगा मैं।।

मतसर व माया मोह बस, जप तप नही कर पाऊँगा।
राम सौ कर बैर सीधा लोक सुर पुर जाऊँगा।
घटै ना कुल कान मे पुनि जगत विदित कहाऊँगा।
बस ठान ली मन ठान ली, उन नार हर कर लाऊँगा।

राजा के लडके होगे तो, ऊनको रण मै पौढाऊँगा मैं।
मम बहन कुरुपा करने का तपसियो को मजा चखाऊँगा मैं।।

□

मम भुजबल सागर ब्याह नही हारे भट उन्है हराऊँगा मैं।
राखूँगा दोनो बात मेरी यह काम अमर कर जाऊँगा मैं।
घबडाने की कोई बात नही, मर कर भी अमर पद पाऊँगा मै।
बस ठान लिया प्रण ठान लिया पीछे नही कदम हटाऊँगा मैं।

रहना न इस ससार मे, हरगिज न नाम डुबाऊँगा।
क्षण भग नस्वर देह से, जीवन का लाभ उठाऊँगा।।
मारूँगा या मर जाऊँगा, जग नाम तौ कर जाऊँगा।
राम हो तो कर दरश, चारो पदा रथ पाऊँगा।।

मम अटल प्रतिज्ञा टलै नही, मारीच असुर अजमाऊँगा मै।
मम बहन कुरुप करने का, तपसियो का मजा चखाऊँगा मैं।।

रावण मारीच निकट जाकर बोला यह यतन बनाऊँगा मैं।

घबडा मत माया मृग बन तू अरु पुनि योगी बन जाऊँगा ।
बस पचवटी कचन मृग बन, चल अरु पुनि तेरे पीछे आऊँगा मैं ।
राघव को तू बहका लेना, अरु सीता को हर लाऊँगा मैं ।

मन मती घबडा मै, बिल कुल तेरे पीछे आऊँगा ।।
राम को ले जाय तू जब मै भी अलख जगाऊँगा ।
घट नही कुछ जाय तेरो, मे सफल हो जाऊँगा ।
बहन सूपनखा को बदला, इसी भाति चुकाऊँगा ।

राखूँगा पति निश्चर कुल की, नहिं अपना नाम डुबाऊँगा मैं ।
मम बहन कुरुपा करने का, तपसियो को मजा चखाऊँगा मै ।।

□

मन सोच समझ मारीच चला रघुवीर दरस अब पाऊँगा मै ।
राजिव लोचन के दरस करूँ भव ब धन से छुट जाऊँगा मै ।
घट घट वासी अविनासी के बाणो से स्वग सिधारूँगा मै ।
बस जान लिया बस जान लिया, याहे भाति अटल पद पाऊँगा मै

पाऊँगा मै सुरधाम, जीवा राम के गुण गाऊँगा ।
हित प्रेम सो गगा बकस, बल्लभ को पार कराऊँगा ।
मानू गा गगाधर तुम्है तब हेतु दरशन पाऊँगा ।
मगन क्यो भव जाल सौ गुणगान तुम्हे सिखाऊँगा ।।

व्रज आर ऐल जी पी तेरे दुश्मन को मार भगाऊँगा मैं ।
मम बहन कुरपा करन का तपसियौ को मजा चखाऊँगा मैं ।।

जय अलख निर जन

अलख निरजन भव दुख भञ्जन, रिपु मान गजन कर न द नन्दन
करता हू बन्दन दे काट फदन, चढाऊ च दन असुर निकन्दन ।

श्राष्टी के कारण तरनव तारण, असुर पछारन कर चक्र धारन ।
भक्त उवारन जन कष्ट टारन, खलन को मारन चले प्रचारन ।
त्रावध समीरन बमौ हौ नीरन, सर सिन्धु तीरन वरुण शरीरन ।

• जनन की पीरन दो मेट भीरन, हृणाक्ष चीरन उदर विदीरन।

सकट हरन मगल करन, करते भजन चारौ वरन।
चौदह भवन अरु वसौ लोकन, जनन मन आरत हरन।
गिरि कन्दरन उपवन विपन, मतो के मन असरन शरण।
खल के पतन भक्तो के जीवन, सुजन धन तारन तरन।

भजन कीरतन रमे हो भगवन, हवी व हवनन स्वछ द गन्धन।
करता हू व दन दे काट फदन, चढाऊ चदन असुर निकन्दन।

□

लगा के आसन समाधी साधन, मिटाऔ व्याधन करै अराधन।
ज्ञान प्रकाशन बुद्धि विकाशन, तिमर क नाशन मिटाऔ वासन।
अनेक साधन करै भक्त जन, सुखामै सब तन भजै मगन मन।
अनन्य भक्तन तुयी रतन धन, करै है अरचन अनेक मुनि जन।

वेद की ध्वनि आप हौ पुनि, करत हे पुनि बस गिरन।
गुण अगाधन सकल साधन, तुम अराधन भक्त जन।
मत्र उच्चाटन हौ मौहन, तुम्ही मारन बस करन।
सफल अवतारन के धारन, मूल कारन अघ हरन॥

तुम्ही हौ भावन चरित्र पावन कष्ट नसावन भू सप्त खन्डन।
करता हू•बन्दन दे काट फन्दन, चढाऊँ चन्दन असुर निकन्दन॥

□

तू पच भूतन अलोप लोपन, वो तीनो लोकन रमे हो भुवनन।
तू जड व चेतन हर एक कण कण तुम्हारा दरशन अलोप दरशन।
कली जो कुसुमन से हौ पत्रन सकल तरु वरन रमे छुपा तन।
हरेक व्यजन रमे हौ छन्दन वो वेद मत्रन पठन व पाठन॥

सब प्रपचन कर विसरजन मोह मन कर अपहरन।
शुद्ध मन कर चित्तवन सकट हरन की लै सरन।
प्रभु अकारन श्रष्टि कारन जगत तारन अघ हरन।
दुरा चारन कर निवारन धम धारन कर भजन।

तू फेर मत्रन दे छोड तंत्रन विसर यत्रन न कीजै मडन।
करता हू वन्दन दे काट फदन चढाऊँ चन्दन असुर निकन्दन॥

असत्य त्यागन करो विसरजन हो सत्य भाजन बनाऔ जीवन ।
अनेक अवगुण विसार पुनि पुनि ले सीख सदगुन प्रफुल्ल हो मन ।
दम्भ प्रलोभन कपट का भाषण न चैन क्षण क्षण अशान्ति हो तन
ये सत्य भाषण तू करले धारन कमाले ये धन तो पाये दशन ।

जीवा कथन वल्लभ मथन मानो वचन कर लो भजन ।
गगाधरन का भक्त बन मद लोभ तन कर विसर जन ।
श्रेष्ठ सज्जन बन न दुजन चार पन रख शुद्ध मन ।
मगल रतन का दाम बन जी पी दमन कर काम तन ।

तुला की गजन सुनी है दुश्मन हुई जो धडकन व तन मे कम्पन ।
करता हू वन्दन दे काट फदन चढाऊ चन्दन असुर निकदन ॥

करम गति

कमन सौ रक नरेश बनै, अरु मिलै अमीति कमन सौ ।
कमन सौ सिद्धी योग मिलै शुचि मिलै फकीरी कर्मन सौ ।

कमन सौ सगत सतन की, बुद्धि विकाश हो कमन सौ ।
कमन सौ प्राणी कुमग चलै, ज्ञानो विनाशै हो कमन सौ ।
कमन सौ तन त्रिय ताप दहै, अरु महाकाल हो कमन सौ ।
कमन सौ तन तेजस्वी हो, रवि सम प्रकाश हो कमन सौ ।

कम से हो नक, प्राणी स्वग पावै कम सौ ।
कम से हो मोक्ष पुनि, जग मे न आवै कम सौ ।
कम से हो सुयश जग, यश कीर्ति का भाजन बनै ।
कम से दूर बुद्धि बन, अपयश कमावै कम सौ ।

कमन सौ जीव फिरै दर दर, अरु पावै पीर कमन सौ ।
कमन सौ सिद्धी योग मिलै, शुचि मिलै फकीरी कमन सौ ॥

□

कमन सौ न विद्वान बनै, अरु मूढ अनारी कमन सौ ।
कमन सौ विस्व विदित योधा, कायर बपु धारी कमन सौ ।

कमन सो काम कला व्यापै, अर नर बम चारि करमन सौ ।
कमन सौ सत्य मधुरभाषी, लम्पट खल ज्वारी करमन सौ ।

कम सौ खट रस मिलै नित, होय फाके कम सौ ।
कम सौ शुचि वस्त्र, रह भस्मी रमा के कम सौ ।
कम से सु दर भवन, सुरपति सदन के तुल्य हो ।
कर्म सौ सम्पति कमा भटकै गमाके कम सो ।

कमन सौ नर उदण्ड बनै, पावै गम्भीरी कमन सौ ।
कमन सौ सिद्धी योग मिलै, शुचि मिलै फकीरी कमन सौ ।

□

कमन सौ काया स्वस्थ रहे, पावै बीमारी कमन सौ ।
कमन से नाम निपुत्री हो सुत आज्ञाकारी कमन सौ ।
कमन सौ करकश नार मिलै, शुभ लक्षण नारी करमन सौ ।
कर्मन सौ कपट प्रपच रचै, साधू वृतधारी करमन सौ ।

कर्म से पावै गति अरु दुरगती हो कर्म सौ ।
कर्म से सु दरमती नर दुरमती हो कर्म सौ ।
कर्म सौ सब काज नर नहिं कर्म गति टारी टरै ।
कर्म से शुभ लाभ अरु अतिशय क्षति हो कर्म सौ ।

कम सौ जीव अधीर बने द्रढवती सुधीरी कर्मन सौ ।
कमन सौ सिद्धी योग मिलै शुचि मिलै फकीरी करमन सौ ।

□

कर्मन सौ जीवा स्वग बसे बैकुण्ठ पधारे करमन सौ ।
करमन से गगा बरखा बनै, सुर नैनन तारे करमन सौ ।
करमन सौ बल्लभगती मिली यम हिम्मत हारे करमन सौ ।
करमन सौ गगाधर गुरु नै, शुचि ज्ञान प्रसारे करमन सौ ।

कर्म सौ लल्लू लगन, बृजचन्द चरनन कर्म सौ ।
कर्म से गाथा नहिं म गल सु बरनन कर्म सौ ।
कर्म सौ सौनी शत्रु भीत हो छुपने लगे ।
करम से गोपाल कर आरि मान खडन कर्म से ।

कर्म सौ आर ऐल बाची विध रेख अखीरी कर्मन सौ। ''
करमन सौ सिद्धी योग मिलै, शुचि मिलै फकीरी कर्मन सौ ।।

करम गति

कमन सौ कष्ट अनक कटै, मिल जाय फकीरी कमन सौ।
कमन सौ खल दुर बुद्धि महा, तर जाय अखीरी कमन सौ।

कमन सौ गुण ग्यानी होकर, बढ जाय अगारी कमन सौ।
कमन सौ घोर घने सकट, नासै नासै तन धारी कमन सौ।
कमन सौ चचल व्यभचारी, बनता वभचारी करमन सौ।
कमन सौ छूटै भव बन्धन, सदगती पिछारी कमन सौ।

कम से जग जाय छूटै, नाम जपते कम से।
कम सो झझट मिटै, सब शत्रु झपते कम से।
कर्म मे टल जाय सकट, फद जीबन से कटै।
कम से ठाली ठगी, ससार ठगते कम से।

करमन सौ डगर प्रेम मीरा, सागी न अडीरी कमन सौ।
करमन सौ खल दुर बुद्धि महा, तर जाय अखीरी कमन सौ ।।

□

करमन सौ ढाल कुपथ मन को, सताप बढावै करमन सौ।
करमन सौ तन त्रप ताप हटै, सताप सतावै करमन सौ।
करमन सौ थोडे अब सर मे, मन काव्य कथा वे करमन सौ।
करमन सौ दिव्य दृष्टि प्राणी, ममता मद दाबै करमन सौ।

कम सौ धमज्ञ नर होता विधर्मी कम सौ।
कम सौ नित नियम साधन, शान्ति नर्मी कम सौ।
करम सौ पति पतिन पावन, प्रेम सौ नित प्रति जपै।
कम सौ फल चार मे हो गलत फहमी कम सौ।

कमन सौ वेशा नीच तरी, सब दबी री करमन सौ।
कमन सौ खल दुरबुद्धि महा, तर जाय अखीरी करमन सौ।

□

कमन सौ भटके राम विपन, सह विपता भारी कर्मन सौ।

करमन सौ मद दशकंध मथ्यो, पुनि अवध रमाटी करमन सौ।
करमन सौ यश हनुमत पायो, कपिपति की यारी कमन सौ।
करमन सौ राज विभीषण पा, पूजे असुरारी करमन सौ।

कम सौ लक्ष्मण करैं, शुभ धम पालन कम सौ।
कम सौ विद्या विशारद, मूट जीवन कम सौ।
कम सौ सुधैर अवस्था, जीव जा सुर पुर बसै।
कम सौ हत भाग प्राणी, नक रोहण कम सौ।

करमन सौ योग वियोग मिलै, चिन्ता गमभीरी करमन सौ।
कमन सौ खल दुरबुद्धि महा तरजाय अगीरा करमन सौ॥

□

कमन सौ सन्त समागम हो, मिलते हैं दुजन करमन सौ।
कमन सौ मन आनन्द लहै, अरु दुखित रहै मन करमन सौ।
कमन सौ वैभव विपुल पढ़ै, सुख चौदह भुवनन करमन सौ।
करमन सौ क्रूर कुबुद्धी नर, दुख भोगत नरकन कमन सौ।

कम सौ जीवा गुरु का प्रेम प्रभु पद कम सौ।
कम सौ गगाधरन जन, छाड ते मद कम सौ।
कम सौ गगा बकस बल्लभ अमर पद पा गये।
कम सौ गोपाल नित प्रत हृदय गद गद कम सौ।

कर्मन सौ आर ऐल भोगे यह जीव अमीरी करमन सौ।
कर्मन सौ खल दुरबुद्धि महा तर जाय अखीरी करमन सौ।

चौकीबद (अधर—'न' की दुजग)

नरक जाय के देखैगा नर, जै गिरधर को तजै सरन।
नरस रहैगा जि दगानी का जै कीट त्यागै हरी चरन।
नरच अधिक घन चालाकी कैं, रट दीनन के कष्ट हरन।
नरह सकेगा काला आखिर, करले यश नर चहै करन।

माखन चोरी

कुँजन मे सखियाँ घेर लई, मन मोहन मदन मुरारी नै।

अमुरारी नै दनुजारी, मद झारी नै छल कारी नै ।

हसकर बोले यौ यदुराई, बिन दान दिये कहा जाती हौ ।
छुप जाती हौ बहकाती हौ, मुसकाती हौ तरसाती हौ ।
गई निकल बहुत दिन छुप छुप कर, नहिं हाथ हमारे आती हौ ।
मन्माती हौ इतराती हौ, इठलाती हौ धमकाती हौ ।

छोंडू नही बिन दान दधि, माखन चखाये जात कहा ।
निकली हौ छुपकर बहुत दिन अब मुँह छुपाये जात कहाँ ।
यूँ कह बुलाये सुदामा, प्रभु मनसुखा बुलवा लिये ।
बोलै सकल मिल सखी बिन माखन खवावै जात कहा ।

श्रीदामा सहित सखा सारे, बुलवाये रसिक बिहारी नै ।
अमुरारी नै दनुजारी नै मदझारी नै छलकारी नै ।।

□

मिलजुल सबने सखिया घेरी, जो इत उत कुंजन म मटकी ।
बैंय्या झटकी चोली चटकी, दधि की मटकी सिर सौ पटकी ।
झुंजलात हँसत बिनबन सखिया, लख चाल चतुर नागर नटकी
वा नटगट की जानी घट की, झटका पटकी सब झझट की ।

घनश्याम के पहचान घट की, पिय सखि सब चल दई ।
देंगी उराहनौ मात को, वह बात नटखट सौ कही ।
हम को जो छेडो रोज मग, सब बात यशुमत सौ कहै ।
झुंझलाय कर मुसकाय कर, तब राह गोकुल की लई ।

यशुमत ढिग हाल कह्यो जायकै, जा कुछ कीयो बनबारी नै ।
असुरारी नै दनुजारी नै, मदमारी नै छलकारी नै ।

□

सुन मात लाल तेरौ छल बलि धुटम सौ नित रार मचावत है ।
मग पावत है इतरावत है, दधि खावत है लुटवावत है ।
वृन्दावन कुंज सघन बन मे, मुरलीधर अधर बजावत है ।
मधु गावत है ललचावत है, जब आवत है तरसावत है ।

करमन सौ मद दशकंध मथ्यो, पुनि अवध समाटी करमन सौ।
करमन सौ यश हनुमत पायौ, रघुपति की यारी कमन सौ।
करमन सौ राज विभीषण पा, पूजे असुरारो करमन सौ।

कम सौ लक्ष्मण करैं, शुभ धम पालन कम सौ।
कम सौ विद्या विशारद, मूट जीवन कम सौ।
कम सौ सुधैर अवस्था, जीव जा सुर पुर बसै।
कम सौ हत भाग प्राणी, नक रोहण कम सौ।

करमन सौ योग वियोग मिलै, चिन्ता गमभीरी करमन सौ।
कमन सौ खल दुरबुद्धि महा, तरजाय अमीरी करमन सौ॥

□

कमन सौ सन्त समागम हो, मिलते हैं दुजन करमन सौ।
कमन सौ मन आनंद लहै, अरु दुखित रहै मन करमन सौ।
कमन सौ वैभव विपुल पढ़ै, सुख चौदह भुवनन करमन सौ।
करमन सौ क्रूर कुबुद्धी नर, दुख भोगत नरकन कमन सौ।

कम सौ जीवा गुरु का प्रेम प्रभु पद कम सौ।
कम सौ गगाधरन जन, छाड ते मद कम सौ।
कम सौ गगा बकस बल्लभ अमर पद पा गये।
कम सौ गोपाल नित प्रत हृदय गद गद कम सौ।

कर्मन सौ आर ऐल भोगे यह जीव अमीरी करमन सौ।
कर्मन सौ खल दुरबुद्धि महा तर जाय अखीरी करमन सौ।

चौकीबद (अधर—'न' की दुजग)

नरक जाय क देखैगा नर, जै गिरधर की तजै सरन।
नरस रहैगा जिन्दगानी का जै कीट त्याग हरी चरन।
नरच अधिक घन चालाकी कै, रट दीनन के कष्ट हरन।
नरह सकेगा काला आखिर, करते यश नर चहै करन।

माखन चोरी

कुंजन मे सखिया घेर लई, मन मोहन मदन मुरारी नै।

अमुरारी नै दनुजारी, मद झारी नै छल कारी नै ।

हँसकर बोले यौ यदुराई, बिन दान दिये कहा जाती हौ ।
छुप जाती हौ बहकाती हौ, मुसकाती हौ तरसाती हौ ।
गई निकल बहुत दिन छुप छुप कर, नहिं हाथ हमारे आती हौ ।
मदमाती हौ इतराती हौ, इठलाती हौ धमकाती हौ ।

छोड़ू नहीं बिन दान दधि, माखन चखाये जात कहा ।
निकली हौ छुपकर बहुत दिन अब मुँह छुपाये जात कहा ।
यूँ कह बुलाये सुदामा, प्रभु मनसुखा बुलवा लिये ।
बोले सकल मिल सखी बिन माखन खवावैं जात कहाँ ।

श्रीदामा सहित सखा सारे, बुलवाये रसिक बिहारी नै ।
अमुरारी नै दनुजारी नै मदझारी नै छलकारी नै ।।

□

मिलजुल सबने सखिया घेरी, जो इत उत कुजन म सटकी ।
बैंय्या झटकी चोली चटकी, दधि की मटकी सिर सौ पटकी ।
झुंजलात हँसत बिनबन सखियाँ, लख चाल चतुर नागर नटकी ।
वा नटखट की जानी घट की, झटका पटकी सब झझट की ।

घनश्याम के पहचान घट की, पिय सखि सब चल दई ।
देंगी उराहनौ मात को, वह बात नटखट सौ कही ।
हम को जो छेडो रोज मग, सब बात यशुमत सौ कहै ।
झुंझलाय कर मुसकाय कर, तब राह गोकुल की लई ।

यशुमत ढिग हाल कह्यो जायकै, जो कुछ कीयो बनबारी नै ।
असुरारी नै दनुजारी नै, मदमारी नै छलकारी नै ।

□

सुन मात लाल तेरौ छल बलि घुटम सौ नित रार मचावत है ।
मग पावत है इतरावत है, दधि खावत है लुटवावत है ।
वृन्दावन कुंज सघन बन मे, मुरलीधर अधर बजावत है ।
मधु गावत है ललचावत है, जब आवत है तरसावत है ।

हम सौ कहै अब कहन तब, बुलवा सखा मग घेरकर ।
झटकै चुन्दरिया बाल के गह, गलबाह गन मे गेर कर ।
नाचत नचावत साथ हमको, सग सखा ले मनसुखा ।
ऐसी अनीती नित करै, दधि खाय देत बखेर कर ।

सब नकवानी बजबाल करी, मैय्या छलिया गिरधारी नै ।
असुरारी नै दनुजारी नै, मदकारी नै छलकारी नै ।।

□

समझा लै मात लाल अपनौ, नहिं कसा द्वार पुकार करै ।
हम ख्वार करै नही प्यार करै, इजहार करै हरबार करै ।
है भलौ यही मे नन्दरानी, हम विनय मात हर वार करै ।
बेसार करै नहिं रार कौ, लाचार करै ना टार करै ।

जीवा बुला गगा बकस, बल्लभ को समझा दीजिये ।
यामे भलाई मात बस, तुम काम इतनो कीजिये ।
मानै नही गगाधरन, तो रार की सूरत बनै ।
बदी बनावै कस मा, बस ध्यान तुम धर लीजिये ।

द्वज आर ऐल जीपी की पत राखी न द सुत औतारी नै ।
असुरारी नै दनुजारी नै, मदकारी नै छलकारी नै ।

चौकीबद

सरद निशा बजी श्याम की बसी, राग रागनी रहे बरस ।
सख काम तज के बज लाला, चलीं जो तन मन होके हरस ।
सरह कहो कैसे बिन जाये, बसी सौत नहिं करै तरस ।
सरत लगा भागी सब गोपी, जा मोहन के किये दरस ।

लिलहारी लीला

इस ख्याल लावनी, शेर व दौड को छोडकर बाकी पूरे ख्याल मे लिख की दुअग दोनो और वणमाला के अक्षर आद अत मे ही जो ख्याल की टेक से प्रारम्भ होय है अरु ख्याल के भीतर शेर चौक सब मे है जो अनुप्रास सहित है ।

नद नन्द गोकुल चद मोहन, आय बरसाने गये ।
धर रूप लिलहारी लिया, रस रग दरसाने गये ।
रूप अनुपम रूचिर झोली, द्रगन ललचाने गये ।
बृखभान की सुन्दर लली, छलने व हरसाने गये ।

लगाये हेला बनबारी, सुघड अहि लिल हारी ।
गुदालौ लीला कोऊ प्यारी, सुनत आई राधा प्यारी ।

लिख कर कमलन कपोल कुच पर, केवश करुणा की कारी तू लिख ।
निख खल घालक घर क्षीर सिन्धु सातो सागर सो खारी तू लिख ।

लिख गल गुपाल गोविन्द अली, करूणा के आगारी तू लिख ।
लिख घट घनश्याम घुमड घन सम, हरिता द्रोपति की घारी तू लिख ।
लिख चरनन मे चित चोर अली, वह बालब्रह्मचारी तू लिख ।
लिख छैल छकनिया छाती पै, खल कटक ध्वन्स अब छारी तू लिख ।

लिख जाघ पै जै जगति पति, रह नाम जग जारी तू लिख ।
लिख झलक झझक मरे झट, खल निश्चरन झरी तू लिख ।
लिख टेर गज की सुनैय्या, टकनौ पै अघ टारी तू लिख ।
लिख ठाट ठोडी नवल के, नरसी का कोठारी तू लिख ।

लिख डार डारे ये ही मेरी, अखलेश्वर भडारी तू लिख ।
लिख खल घालक घर क्षीर सिंधु, सातो सागर सौ खारी तू लिख ।

□

लिख ढू ड ढू ड ढग सो ढिग आ, कसासुर पहा ढारी तू लिख ।
लिख तन सो मन सो यादो पति, यशुमत सुत औतारी तू लिख ।
लिख थकित भये क्यो कर तेरे, नागिन कौ कथारी तू लिख ।
लिख दीनबन्धु दीनन दयाल, द्रग बिन्दु बीच मे दारी तू लिख ।

लिख धाम बृज बृन्दा विपिन, रस रास गिरधारी तू लिख ।
लिख नृत्य नूतन नवल के, नित केल बृज नारी तू लिख ।
लिख पाव परमानन्द प्यारो, सग मे प्यारी तू लिख ।
लिख कद मटकी पटकना, झट चुन्दरीया फारी तू लिख ।

लिख बसीवट वक्ष स्थल पै, बृज लीला बारी तू लिख ।
लिख खल घालक घर क्षीर सिन्धु, सातो सागर सो खारी तू लिख ।

□

लिख भट केसी जरु कस हने बज कष्ट टलैया भारी तू लिख ।
लिख मदन मुरारी मुरली धर, सग राधा सुकमारी तू लिख ।
लिख यशुमत सुत यदुराई को, मनसुखा सखा की यारी तू लिख ।
लिख रौम रौम राधा बल्लभ, रग रग मे असुरारी तू लिख ।

लिख लवन लाला नन्द कौ, अब विलम मत लारी तू लिख ।
लिख वा दिना की छवि अनौखी, कोट ज्ञत्रि वारी तू लिख ।
लिख सत्य सागर साथ मे, अष्टो साली सारी तू लिख ।
लिख हृदय हलधर भ्रात भैना, कष्ट भव हारी तू लिख ।

लिख क्षण क्षण कष्ट हरैया को, जन रजन रक्षारी तू लिख ।
लिख खल घालक घर क्षीर सिन्धु, सातो सागर सो खारी तू लिख ।

□

लिख त्रविध ताप के मोचन को, खल मदन बन्जारी तू लिख ।
लिख ज्ञान सिन्धु गुण के अगार, भसमा सुर असारी तू लिख ।
लिख जीवा बल्लभ गगाधर, गुण की कविता सो न्यारी तू लिख ।
लिख गगा बक्श जोतिषी की, सुरधाम छटा सौ प्यारी तू लिख ।

लिख रूचिर लीला प्रेम की, बेहोस छलकारी तू लिख ।
लिख सुध नही तन की रही, वह प्रेम का प्यारी तू लिख ।
लिख होस जब तन का हुआ, प्रेमी कथा न्यारी तू लिख ।
लिख मिलन लागे अक भर गोपाल हुशियारी तू लिख ।

लिख विप्र रामजीलाल गुणी, रह कलम सदा सो जारी तू लिख ।
लिख खल घालक घर क्षीर सिन्धु, सातो सागर सो खारी तू लिख ।

मध्य अक्षरी

(इस छ द के अथ के मध्य के अक्षर से नाम निकलता है)

कहा लेत भ्रमर पुष्पन मे बस, किसको भागीरथ जी लाये ।

कलयुग मे पैदा कौन भये, जिन धम कम बिसराये।
दुनियाँ मे सबते बडो कहा, सुन के सावर क्यो सरमाये।
द्वज गगाधर कह मध्याश्वरी, तुल रामी को लिख समझाये।

ख्याल लावनी रगत छोटी

गोपिन के सग नद नन्दन, काम विपन मे।
कर अनुपम लीला, धेनु चरावत बन मे।

इक समय राधिका बोली, करती शका।
कैसी थी स्वामी, त्रेता तोडी लका।
जिसमे रहता था, रावण भट बल बका।
तिहु लोक विजय कर, जबा बली डका।

चहु ओर समद की खाई।
कैसे पाटी यदुराई।
रामेश्वर शिव पधराई।
बहु भाति करी शिवकाई।

किम तैराये पाषाण, नीर पै क्षण मे।
कर अनुपम लीला, धेनु चरावत बन मे।

□

प्यारी के सुनकै बैन, भक्त हितकारी।
मन मुदित भये, पुनि हँस के गिरा के गिरा उचारी।
तब हित कारण सौ, सुन वषभान दुलारी।
चित्राम लका कौ, खैच दिखाऊौ प्यारी।

बज कौ तीरथ कहलावै।
पापिन कौ पाप नसावै।
जो जन चल तजवै न्हावै।
फल चार पदारथ पावै।

सद गति पावै, नाय जीव पडै नरकन मे।

कर अनुपम लीला, धेनु चरावत बन मे ।

□

उत्तर तट प्यारी, सेतु बन्धु रामेश्वर ।
भक्तन को अटल पद हेतु सदा शिव शकर ।
शुभ धाम कामवन, दरश करै नारी नर ।
पापी प्राणी भी, पार करै भव सागर ।

फिर सेतु श्याम बधवायौ ।
लका कौ चित्र बनायौ ।
श्री राधे को दिख लायौ ।
कियौ प्यारी कौ मन भायौ ।

नागर लीला लख मुदित राधिका मन मे ।
कर अनुपम लीला धेनु चरावत वन मे ।

□

कामा के दक्षिण, लका कु ड कहावै ।
जो दरश करै वह, भक्ति मुक्ति फल पावै ।
कोटान कोट जनमन के पाप नसावै ।
हो जाय मोक्ष पुनि जीव, न जग मे आवै ।

गुरु जीवा राम हमारे ।
जिन को गगाधर प्यारे ।
गगाबख्श नैन के तारे ।
बल्लभ मे गुण सब सारे ।

कवि बिप्र रामजीलाल कुशल कवियन मे ।
कर अनुपम लीला धेनु चरावत बन मे ।

आदि अक्षरी

(अथ जो मिसरे से निकले बाके पहले अक्षर को लो)

रावण महेश जीवित लालच लडाई—रामजीलाल

दस सीस वीस भुज थे किसके किसका सेवक वह बलकारी ।
कहकियौ सुखैन लखन भटकौ कोख क्यो कियो भारत भारी ।

अर्जुन सुत चक्रव्यूह जाकै, कहा किया जो आदि सेना मारी।
विप्र रामजी लाल गणित लख आदि असरी कथ डारी।

देश भक्ति

सरवस्व त्याग सच्चे सपूत, सम्मान नही जाने देंगे।
करि कैसे करेगे काज कठिन, कुल कान नही जाने देगे।

उपदेश दियो जो बापू नै, ताको न कभी बिसरावेंगे।
अन्याय व हिंसा के आगै सर अपना नही झुकायेंगे।
हम करें सामनो दुश्मन कौ रण से ना पीठ दिखायेंगे।
हम जान निछावर कर देंगे, जग मे शहीद कहलायेंगे।

भारत माता के अधरो से, गुण गान नही जाने देंगे।
करि कैसे करेगे काज कठिन, कुल कान नही जाने देंगे।

□

जबरन जो हम से आन भिडा, वह भिडकर के पछताया है।
मुँह तोड जवाब दिया उसको, अरु अच्छा पाठ पढाया है।
बातो से जो अरि नहिं माना, तो लातो से समझाया है।
शत्रू की छाती के ऊपर, भारत का ध्वज फहराया है।

इस उज्वल भव्य तिरंगे की, हम शान नही जाने देंगे।
करि कैसे करेगे काज कठिन, कुल कान नही जाने देंगे।

□

यह मातृ भूमि है वीर भूमि, वीरो की भूमि जग जानी।
जन्मे यहाँ भट राणा प्रताप, जन्मी यहाँ झाँसी की रानी।
जन्मे यहाँ पर बाबू सुभाष, जिनकी दहशत अरि नै मानी।
रणधीर बांकुरे भारत के, तिनके वंसज हम बलबानी।

हम निज जननी के अधरो की मुसकान नही जाने देंगे।
करि कैसे करेगे काज कठिन, कुल कान नही जाने देंगे।

□

जीवा द्विज निस दिन निज मुख से, भारत मा का गुणगान करैं।
गंगाधर होकर अति प्रमुदित, श्रवणन वचनामृत पान करैं।

अदश काय लख कर इनके, दुश्मन इन का सम्मान करैं।
हो विजय सदा इस भारत की राधा बल्लभ कल्यान करैं।

□

द्वज आर ऐल शक्ती का वृथा, ऐलान नही जाने देंगे।
क्टि कसै करेगे काज कठिन, कुल कान नही जाने देगे।

विभीषण शरनागति

(ख्याल लावनी दोनो तरफ ओर वणमाला के अक्षर बनै है।)

(प्रथम अक्षर व कफिला अतका प्रथम अक्षर देखो।)

कर भक्त विभीषण प्रण लीया, रघुपति पद सीस चुकाऊँगा मैं।
खल नीच दशनन नगरी मे, अपना मुख नही दिखाऊँगा मैं।

गुण सागर आगर नागर के, पद पकज के गुण गाऊँगा मै।
घट घट वासी उल्लासी के, दरशन कर नही अघाऊँगा मैं।
चचल चितरोक चकोर बनू, मुख चन्द निकट पहुचाऊँगा मैं।
छल छिद्र छाँड जग जाल सभी, उन पद मग पलक बिछाऊँगा मैं।

जब हो दया की दष्टि मे, भव जाल सौ छूट जाऊँगा।
झझट मिटै ससार के, स्वामी को जाय रिझाऊँगा।
टकटकी इकटक लगा पुनि, जीवन का कष्ट मिटाऊगा।
ठकुर जगत के नाथ मन, सादर भवन बैठाऊँगा।

डगमग डोलत इस नय्या को, उनके आधार डिगाऊँगा मैं।
खल नीच दशानन नगरी मे, अपना मुख नही दिखाऊँगा मैं।।

□

ढिग जाय चरण रज शीस चढा, अपने मन मोद बढाऊँगा मैं।
तब मन अभिलाशा पूरण हो, यू जीवन काम बिताऊँगा मैं।

थाती यह जीवन उनही कर, उन प्रेम की ग्रथि गुथाऊँगा मैं।
दुगम से सुगम सरल मग हो, तन कटक नही छिदाऊँगा मैं।

धाम करूणा राम को, बन दास निस दिन धाऊगा।

नाचर सकल ससार तज, प्रभु पद कमल सिर नाऊँगा।
पद रेणु वर सिर प्रेम सौ, चारो पदारथ पाऊँगा।
फल जन्म तब होगे सफल, तरु डाल धम लकाऊँगा।

बन दास अनन्य कमल पद का, गुणगाऊगा और गवाउँगा मै।
खल नीच दशानन नगरी मे, अपना मुख नही दिखाऊँगा मैं।

□

भूलूँ न कभी दिन रैन उन्है, यू अपना धम निभाऊँगा मैं।
मेघादि वण सौ ध्यान हटा, कर जीवन नही गमाऊँगा मैं।
यहि भाति राम रस रुचि कर, इस जीव आत्म को धाऊँगा मै।
रघुकुल भूषण अनुकम्पा हो, तो जीवन मुक्ति कराऊँगा मै।

लू यही नीयम व सयम, ध्यान ऊर मे लाऊँगा।
पा जगतपति मल्लाह सो, भवधार नाव खिवाऊँगा।
सव गुण समपन्न क कर दरशण नसाऊँगा।
हरबार कर पद कज पूजा, अष्टयाम सिहाऊँगा।

जिन पद रज गोतम नार तरी, उनकी रज शीस चढाऊँगा मैं।
लख नीच दशानन नगरी मे, अपना मुख नही दिखाऊँगा मैं ॥

□

वह दीन दयाल कहावत है उनके अगणित गुण गाऊँगा मे।
जीवन नैय्या हो पार मेरी, भव सागर से तर जाऊँगा में।
अघनाशन बुद्धि विकाशन के, जिस समय दश कर पाऊगा मै।
उस समय लाभ हो जीवन का, फल चार पदारथ पाऊँगा मैं।

जीवा चरण रज धार बल्लभ को नही विसराऊँगा।
गगा बकस गुण कर, जीवन को सफल बनाऊँगा।
शरण ले गगाधरन की, स्वग सीधा जाऊँगा।
लल्लू मिलै सुरधाम तो, भक्तो मे नाम लिखाऊँगा।

द्वज आर ऐल जी पी प्रभु को जीवन आधार बनाऊँगा मैं।
खल नीच दशानन नगरी मे, अपना मुख नही दिखाऊँगा मै।

सर्वव्यापी प्रभु

(ख्याल लावणी तबील हर पिछले मिश्रे मे 4 विराम है।)

तुम रमे अणू परमाणू मे, निरगुण विस्तारो मैं।
उपकारो मे उद्धारो मे साकारो मैं अवतारो मै।

तुम जल थल पवन अकाश मे हो, भू मण्डल श्रष्टि सारी मे।
जल चारो मे थल चारी मे, नभ चारी म बन चारी मे।
तुम अण्डज पिण्डुज मे पावै तप ताप व त्रविध बजारी मैं।
आचारी मे बम चारी मे, व्यम चारी मे बपुगारी मे।

गिर क दरा अरु शिखर पुनि, पाषाण वक्ष लतान मे।
कुश कटकन के मध्य मे, उपवन विपन उद्यान मे।
विविध सरता विविधि सर सोते व सिन्धु न मध्य म।
तुम चक्र मे शिशु माल म, नक्षत्र शशि अरु भान मे।

तुम मदाकिन बैतरणी मे हा गगा यमुन की धारौ मे।
उपकारौ मे उद्धारौ साकारौ मे अब तारौ मैं।

□

तुम आदि अनादि अखडित हो, अति प्रेम प्रीति रस पागी मैं।
तुम त्यागी नै वैरागी मे, अनुरागी मे बडभागी मे।
शुभ लक्षण और कुलक्षण म खल सत दुष्ट हतभागी मे।
तुम रागी मे जो लागी मे खट रागी मे बढ रागी मे।

मत्री मै गयन्ती सुलभ, हो चार छै के सार मे।
तुम श्रुती मे स्मृति मे, हो अरट दस अरधार मे।
धम और विधम सब मे, रमे हो सब रूप मे।
निरगुण अलख मानै तुम्है, हो सच्चिदा साकार मे।

खल दण्ड अदण्डी विप्रो मे, तप सध्या वन्दन सारौ मे।
उपकारौ मे उद्धारौ मे, साकारौ मे अवतारौ मे।

□

तुम कम काण्ड उपनिशदो मे, जोतिश व्याकरण विचारन मे।

अघ टारन मे भव तारन मे, खल मारन मे मद झारन मे।
त्यागिन मे और प्रपचिन मे, तल्लीन सदा उपकारन मे।
उद्धारन मे भव धारन मे, जगतारन मे सब सारन मे।

मगल अमगल बुद्धि दाता, ऋद्धि सिद्धि मूल मे।
भक्तो के हौ अनकूल तुम, दुष्टो के हो प्रतिकूल मे।
रमे अगणित रूप तुम, कवि वन्द गणना कर थके।
वक्ष मे हो पल मे अरु, कविन मे तुम फूल में।

तुम आसन मे सिंहासन मे, थिर मे उदवेग विचारौ मे।
उपकारो मे उद्धारौ मे, साकारो मे अवतारो मे।

□

तुम मोक्ष भक्ति पथ दाता हो, तुमदानी और अदानी मे।
अज्ञानी मे अभिमानी मे, ज्ञानी मे हो विज्ञानी मे।
तुम हव्य कष्ट पचामृत मे, तुम चरणामृत के पार्नी मे।
मुनि मे ध्यानी मे खल मानी मे, वाणी मे रूचिर कहानी मे।

तुम विप्र जीवा राम के, रमते मिले मन सदन मे।
गगा बकस बल्लभ को पाये, कीरतन मे भजन मे।
विप्र गगाधर निहारे, रौम रौमन मे मिले।
लल्लू निहारे प्रेम सौ, गोपाल सुदर कथन मे।

कवि विप्र रामजीलाल लखैं, सतो मे गुण आगारो मे।
उपकारो मैं उद्धारौ मे, साकारौ मे अवतारौ मे।

दो लाइना

(या छन्द के दो मिश्रा तीन लाईन मे भरै है।)

किया खुशी शिव महा दसानन काट सीस कर बढा बढा कर।
किया वशी जब रहा बसा मन कोट ईस सर चढाचढा कर।

नकशा

कि खु शि म द न का सी क व व क
या शी व हा सा न ट स र न न र
कि व ज र व म को ई स च च क

शिकिस्त

सुने अृष्ट दस श्रुती रिचा सम सुन मत्र मन द्रढा दढाकर ।
हने दुष्ट अस गति बचा सब गुने यत्र मन बढा बढाकर ।।

नकशा

सु अ द श्रु रि स सु म म द्र ढ क
ने ष्ट स ती चा व ने त्र न न न र
ह दु अ ग व स गु य म व न क

प्रकृति पुरुष

रमा जो सब म रकार देखा, मकार मिलकर निहार दो है ।
थके है मुनिगण न भेद पाया, लखे अष्ट दान विचार दो है ।

अनादि इन को अखड कहत, अनन्त अरु गुण अगार दो है ।
गनिक गुणमय अनूप अनुपम, अगुण सगुण के अधार दो है ।
विभिन्न मत सो विभिन्न मुनिगण, रटै चार छै उचार दो है ।
व ध्यान योगी अरु भक्ती प्रेमी, रटै ये दोनो निहार दो है ।

ज्ञान अरु वितान लख, ज्ञानी जनो क सार दो ।
ध्यान के अभ्यास म, शुचि श्रुति साधी तार दो ।
अबृज योगो क सहारे, ध्यान योगी जन धरै ।
साधना के मूल कारण, जीव के उद्धार दो ।

अद्रष्टि द्रष्टि हो द्रष्टि गोचर, सकल श्रष्टि जग अधार दो है ।
थके है मुनि गण न भेद पाया, लखे अष्ट दान विचार दो है ।

अगम्य तप से हो योग सिद्धी, व ज्ञान वद्धी के तार दो है।
अटल समाधी सो ध्यान योगी, सुनै शब्द मधु अपार दो है।
प्रफुल्ल चित हो कर योग दशन, हो भिन्न माया न लार दो है।
शिखर समाधी का सुन्य मन्दिर, अनूप अनुपम किवार दो है।

अन हद बजै तहा तौ सुनत है झकार दो।
हो शब्द नव अरु शून्य, पुनि पुनि होत शुचि टकार दो।
हो पुरुष अरु प्रकृति मे, दो भेद उस स्थान पर।
योग दरशन कर निरीक्षण, लखत नर हर बार दो।

विराजै पक्षी वौ सून्य मदिर, सदैव उसके प्रचार दो है।
थक है मुनिगण न भेद पाया, लखे अष्ट दस विचार दो है।

□

है रूप सुन्दर न रूप देखा, असीम देखे उदार दो है।
दया द्रष्टि सो हो पार खवो, कठोर तीक्षण ये धार दो है।
निहारे अपने को आप पक्षी, मनो कामना विचार दो है।
हो मुग्द पल पल करै व दशन, स्वरूप अनुपम अपार दो है।

क्षण क्षण निहारे प्रेम सो, तब क्षण कर उदगार दो।
अगणित पतगन तेज पु जन, सम है जगदाधार दो।
मूल दशन निगम आगम, मुख्य जन कोई करै।
जो करै भव सो तरै, बस करत है उद्धार दो।

समूल नाशन को पाप पु जन, अनूप तीक्षणा कुठार दो है।
थके है मुनि गण न भेद पाया, लखो अष्ट दस विचार दो है

□

निरुप सूक्षम है रूप जिसका, समझ सून्य के मझार दो है।
न काम की गति न कम बन्धन, रूके अचानक ही हार दो है।
अनन्य भक्ति मुमुक्ष कारण, प्रथक ये लक्षण प्रकार दो है।
प्रसिद्ध प्राणी है मोक्ष मारग, अलेख मुक्ती के द्वार दो है।

जीवन बल्लभ मोक्ष भक्ती, प्रेम सौ उर धार दो।
गगा बकस गगाधरन के, सग कर उपकार दो।

मगल व लल्लू योग साधन, सीख गुरुवर सो मिल ।
मोक्ष पथ सिद्धी समाधी, वे विदित ससार दा ।

समझ लो जी पी युमुक्ष कारण, आर ऐल जग म सार दो है ।
थके है मुनिगण न भेद पाया, लखो अष्ट दम विचार दो है ।

दो लाइना

इस छन्द मे करं की दुअग ता पीछे एक अक्षर र को जादा लिखो है । बीच मे 3 लाईन मे भरा गया है दो लाइन का है ।

शिकिस्त

कर दूर पीर धर वीर धर कर घोर सारे सर चढ़ा चढा कर
कर सार मार टर वीर भार अर थरे करै कर बढा बढा कर

नकशा

क	दू	पी	ध	वो	धी	क	घो	सो	न	च	च	क
र	र	र	र	र	र	र	र	र	र	ढा	ढा	र
क	सीं	मा	ट	वी	भा	अ	घे	के	क	व	व	क

निम्न छद के अथ सो लोम विलाम बनता है ।

शिकिस्त

वही जो घातक है लकपति का, नया आदि कवि द्रढ़ा द्रढाकर ।
1 2
निवास तरू मे करै वटुक सो, का प यग मुख कटा कटा कर ।
3 4

अथ — 1–राम 2–मरा

3–नीम 4–मनी

रोम रोम मे राम

(लावनी ख्याल तबील दोनो तरफ वणमाला के अक्षर व मम्मा है।)

मै करूणा सिंधु खरारी मे, निराकार सा कारो मै।
मै खारो मे खल सारो मे, सारो मे शुद्ध निखारो मैं।

मै गुणमय रूप अनूप सदा, गुण ग्यानी गुण अगारो मै।
म घारो मे सुर द्वारो मे, टकारो मे घटारो मै।
म चर अरु अचर सकल जग मे, तून्य प्रसिद्ध प्रचारो मै।
मै छारो मे छपिहारो मे, धारो मे शुद्ध कछारो मै।

मै जल म थल मे विपन मे, उपवन मधुप गु जार म।
मैं झलक मे हू अलख द्रष्टि, सकल श्रष्टि मझार मे।
मै टेर सुन रक्षा करी, निज जनन की सकट मै।
मै ठोस भव बन्धन नसावन, तेज धार कुष्टर मै।

मे डगमग डोलत नैय्या मे, सब यत्रो मे राडारो मै।
मैं खारो मे खल सारो मे, सारो मे शुद्ध निखारो मै।

□

मै ढोल शब्द ढप ढोलक मे, शुभ लगन विवाह बढारो मैं।
मैं तारो मे घन सारो मे, विस्तारो मे इक तारो मै।
मै थिर जन के मन मन्दिर में, योगी जन मन मन्थारो मैं।
मै द्वारो में हरि द्वारो मे, विस्तारो में छवि दारो मै।

मै घरणी धर धरमज्ञ धीरज, धम धर आधार मै।
मै नवल नूतन नृत्य नव रस, निरस नर नव नार मै।
मै परम पावन पूज्य पद, पुनि प्रथम पार अपार मै।
मै फबन फूलन फद फस, फिर अग विध दो फार मै।

मै वारी अवारी व्यवस्था मे, बधक अबन्ध हर वारो मैं।
मै खारो में खल सारो में, सारो में शुद्ध निखारो मै।

□

मै भनत भाँति भल भृम अभृम, भटकत भू भार अभारो मै।

मैं मारो में मद मारो में चारो में सनन कुमारो मैं ।
मै यद्दपि यज्ञ यती योगी, युद्धादि धनय यारो मै ।
मै रारो मे सुर सारो मे, भू भारो मे उपकारो मै ।

मै लक्ष लेख अलेख लक्षण, लखत लोलुप लार मै ।
मै विस्व व्यापी बहद वन, विचरत वियोगी द्वार मै ।
मै सकल सरता सरन सब, श्रेष्ठ श्रष्टि सार मै ।
मै हर हृदय हस हरत जन, अघ हरी सिरजन हार मै ।

मै जन रजन रिपु मद गजन, भव भजन दीन उदारो मै ।
मै खारो मे खल सारो मे, सारो मे शुद्ध निखारो मै ।

□

मै कल मल कष्ट अरिष्टो को, दूँ लौटे दृष्ि उपकारो मे ।।
मै धारो मे भव धारो मे, मन धारो मे आधारो मै ।
मै आदि अनादि अखड सदा, अगणित अनूप आकारो मै ।
मै कारो मे साकारो मे, विस्तारो मे सब सारो मै ।

मै जीव जीवा राम को, जकडा नही जग जाल मै ।
मै गुणी गगा बख्श गगाधर की बुद्धि विशाल मै ।
मै बनाँ बल्लभ सुलभ मगल की कथन तल्लीन मै ।
मै मिटा जग जाल लल्लू कीन, तार निहाल मै ।

मैं आर ऐल जोली पी जन की, रचना सुन्दर प्रस्तारो मैं ।
मै खारो मे खल सारो, सारो में शुद्ध निखारो मै ।

दुकूला कलमबन्द

(जिकरी दुकूला कलमबन्द इसमें प्रथम टेक में बारह अक्षर है हर एक अक्षर को हर एक अक्षर हर मिश्रे के प्रथम है और ई अन्त सब में काम आयगी बारह कवी में मरो कमल फूल बना कर अधर है ।

कमल बद अधर मे

नर रट गिरधर चित लाई ।

नर नन्द के है नाहक सागै कहा नीच तेरी अकल गई।
रट नर गिरधारी चित लाके जिसकी जग से कला नई।
रट हरि सागर अन्दर जन के करते काज सिहाई।

□

नर रट गिरधारी चित लाई।
टरते है अघ हरि दासन के ध्यान धरै नित हर साई।
गिर के तलै जनन की रक्षा कर दई जल ते रिस खाई।
रख ने गज की लाज चल हरि तनक न देर लगाई।

□

नर रट गिरधर चित लाई।
धर नरसिंह तन गये हरि ने जन की लज्जा राख लई।
रख जघा लई खल की काया चीर रखन सौ डार दई।
चित कर कीने काज दास के खलहन के हरराई।

□

नर रट गिरधर चित लाई।
तक तक हने नीच खल सारे गिरधर दासन हित जाई
ला लिख ऐसी तज कहत अस गगाधर निज सिर नाई
ई रचना लिख आर ऐल ने अरि कर कलम गिराई
नर रट गिरधर चित लाई।

सर्वव्यापी

ख्याल लावनी हर मिश्रे में छ विराम व छ मम्मा आदि अन्त वणमाला के अक्षर है। (यानी मम्मा की सत अग है) हर मिश्राम से शिऊ।

मुक्तिन मै भक्तन मैं लो लपन मैं, तनन मैं लिप्तन मैं हो लुकन मैं।
मखन मैं हल्यन मैं हो अगिन मैं, पठन मैं मत्रन मै द्वज मुखन मैं।

मगन मैं सज्जन मैं सत जन मै, वरण मैं नीलम मैं हो गगन मैं।
मेघन मैं वरसन मैं शुभ घम मैं दुखन मैं दुजन मैं हो अघन मैं।

मिचन मै मीचन मैं चक्षुअन मै, सतन मै साधन मै सत वचन मै ।
मच्छन मैं मीनन मै शुभ तन मै, स्वजन मै पलकन मै हो विछन मैं ।

भज्जन मैं दशनन मैं, मिलन मैं सज्जन मैं ।
माझन मैं हर स्वरन मैं, ध्वनि मै झाजन मैं ।

मेटन मै विधि अक मिटन मै, मठधीशन मैं आप गठन मै ।
मडन मैं सत अघ खडन मैं, माढन मैं आकृति गढ़न मैं ।

मैं तलुन ने यत्रन मै, मत्रन मै मूल रतन मैं ।
मथन मैं हो सि धन मै, सत्यन मैं सद मथन मै ।

मदन मैं कटु शब्दन मैं, सतन मैं शुद्ध मदन मै ।
मधु बन मैं वृ दावन मैं, रासन मैं कम वधन मैं ।
तत्रन मै यत्रन म, मत्रन मैं मूल रतन मैं ।

मनन मै साधन मै कीरतन मै, भजन मै पूजन मै सद गुनन मै ।
मखन के हव्यन मे हो अगिन मै, पठन मै मत्रन मै द्वज मुलन मै ।

□

मे पल मे चारुन मे हू सबन मे, जगत मे सावन मे वो स्वपन मे ।
मे फल मे नागन मे सहस्त्रकन मे, गिरन मे शिखरन मे व गुहन मे ।
मे बन मे उपबन मे हू सघन मे, शाखन मे झू मन मे हू नयन मे ।
मे भू सुरन मे द्वजन मे मन मे, धरन मे धारन मे खम्ब तिन मे ।

मम तन मे रग रगन मे, रोमन मे मन मे ।
मयनन मे मदनन मे, गुन मे गायन मे ।

मारन मै हो वसी करन मे, मूलन मे तम सत मिलन मे ।
मेवान मे हो नाथ हवन मे, मिष्ठानन मे और रत्नन मे ।

मे हँसन मे सिहन मे, महलन मे सिंहासन मे ।
मीनन मे अवतारन मे, महि भारत मे टारन मे ।

मे सतन मे दुष्टन मे, मारन मे मान हरन मे।
मृदु भाषण मे दासन मे, मल नासन मे त्रासन मे।
मे हँसन मे सिंहन मे, महलन मे सिंहासन मे।

मै वन उपवन मे सागरन मे, शखन मे फू कन मे पच जन मे।
मखन मे हवन मे, हो अगन मे, पठन मे मत्रन मे द्वज मुखन मे।।

□

मे त्रण मे पत्रन मे रज कणन मे वक्षन मे पुष्पन मे वो लतन मे।
म कदरन मे गिरन मे, वन मै सघन मे कूकन मे कोकिलन मे।
मधुक मे झकारन मे स्वरन मे, कीरन मे शष्दन मे शुचि रटन मे।
मोरन मे शोरन मे चातकन मे, खजन मे बाजन मे मधुकरन मे।

मन मोहन मे मदन मे, नरन मै नारन मे।
मे दापन मे दमन मे, वरन मे चारन मे।

मैं विप्रन मैं वेद पढन मे, मे क्षत्रिय मे, रण धीरन मे।
मैं वैश्वन मे व्यापारन मे, मे शूद्रन मे सेवक जन मे।

मे देवन मे इन्द्रन मे, मोहन मे अज रुद्रन मे।
मे दिन मे दिवाकरन मे, मे रैनन मे च द्रन मे।
मुनि गण मे सप्त ऋशिन मे, मे तारन मे अपयिन मे।

मदन मे स्वछन्दन मे, मगलमय शुद्ध लगन मे।
मैं देवन मे इन्द्रन मे, मोहन मे अज रूद्रन मे।

मिलन मे बिछुडन मे आग्र गण मे, असन मे आनन मे हो उरन में,
महलन मे हत्यन मैं हो अगन मैं, पठन मैं मत्रन मे द्वज मुखन में।

□

मलन में विछेदन में सबन मै, रसन मे रसिकन मे रसियन मे।
मै क्षण मै वन्दन मै हो चरन मै, शरण मै तारन मै हो तरन मै।
मै गण मै आठन मै हो मगन मै, छ दन मै गायत्रिन मै मनन मै।

मैं पन मै चारन मै हो रमन मैं, भजन मै उपवन मै हो वसन मैं।

मै तिर गुण मै भुवन मै, चौदहन मै तिन मै।
मै पचन मै रमन मै भूतन मै क्ष्ण मै।

मै जीवन मै जीवा जन मै, मद मोचन मै गगधरन मै।
मिलन मै वल्लभ सतन मै पणी कुटिन मै शुद्ध सदन मै।

मै सारन मै चरनन मै, मत्रन मै उच्चारन मै।
महि भारन मै टारन मै, शास्त्रन सचारन मै।
मै दीपन मै लोकन मै, मै हरसन मै शोकन मै।

मै क्षारन मै जारन मै मै लालन मै पालन मै।
महि भारन मै टारन मै, सास्त्रन मै सचारन मै।

मथन मै काव्यन मै हो रतन मै, तुलन मै रासन मै जी पी मन मै।
मखन मै हलन मै हो अगन मै, पठन मै मत्रन मै व्रज मुखन मै।

दुकूला

कर यतन तरन के खातर।
कर नर दान तरन के काजै सारे जग का यश ले तर।
रटना लै हरि के चरनन की चित है नित लगन नतेर।
यही यतन जग सो तरने का कर नित दिल सो चातर।
कर यतन तरन के खातर।

□

तन ले राख लगा हरि के हित तज दीजे दिल का अन्तर।
नटखट नाथ नीत सो रट नित यही ठीक तोरा ततर।
तन सौ क-लै पतन हरी हित काहे करै दिल कातर।
कर यतन ।रन के खातर।

रट लै हरी लगा के दिल नर जग का लैना चहै अतर।
नद नन्दन रट तज नादानी गिरधारी दिल राख खतर।
केढ़ी चाल छाड हरि हर रट हरी हरी हर गातर।
कर पतन तरन के खातर।

□

खाकी तन से गा हरी दिल से निज अरि के ले कान कतर।
तरस दिखा नादान काजैं नीचन सगत छाडं चतर।
रट हरी आर ऐल के काजैं तरज अधर की लातर।
कर यतन तरन के खातर।

—रचयिता श्री रामजीलाल पटवारी
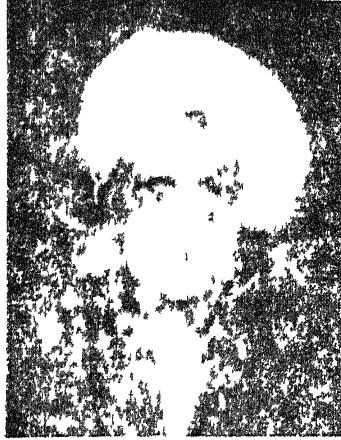
श्री यशकरण खिड़िया

परिचै

जनम	4 अप्रल सन् 1904
जनम-स्थान	ग्राम जैतपुरा, तहसील आमी द, िला-भीलवाडा (राज)
पिता कौ नाम	श्री शक्तिदानसिंह जी
मैया कौ नाम	श्रीमती अनूप कुँवरि
काव्य-गुरु	नानाजी राव शादूलसिंह जी। पिताजी हू कवि हे। दोनून सौं बचपन सौ ही काव्य रचना की प्रेरना मिली।
शिक्षा	प्रारभिक सिच्छा निम्बाहेडा म। वैसे कछू दिना कहू अरु कछू दिना कहू रहे, सो जमिके नही पढि सके पुस्तक पढ़िबे में रूचि सदा रही जासो स्वा याय सौ हिन्दी, उदू अरु गुजराती कौ हू अ ययन कियौ। वैद्यसभा सौं प्राईवेट परीक्षा दैके वैद्यक कौ प्रमाणपत्र हू प्राप्त कर्‌यौ हो।
व्यवसाय	खेती। जैतारण म जागीर ही।
प्रकासित पोथी	आत आहे (काव्य), खारी बाढ वणन, शिवाशिव महिमा अरु यशकरण दोहावली।
अप्रकासित रचना	उदबोधन-काव्य, सवैयावली, राजस्थान ोहावली, घरेलू औषधालय, प्रश्नोत्तरी काव्य आदि।
प्रसारन	तीनि बेर आकासबानी के जयपुर केन्द्र सौ रचनान कौ प्रसारण भयौ।
सम्मान	महाराणा मेवाड फाउण्डेशन सौ कु भा पुरस्कार मिल्यो।
वतमान पतौ	शिवाश्रम, पुरानौ बस स्टैड, आजाद नगर, भीलवाडा (राजस्थान)

कविवर यशकरण खिडिया व्यक्तित्व अरु कृतित्व

भारत वष की भूमि जहाँ एक ओर अपनी भू सम्पदा के काजैं विश्वभर मे ख्यातनामा रही ए, वही अपनी विविधता के लिएँ ऊ विशेष सुख्यात मानी जावै ए। य्हाँ कवल अन्न की उपज के वास्ते ई किसान प्रयत्न करतौ नाय दीसै अपितु य्हा की भाव भूमि पै वैचारिक उपज के लिएँ ऊ प्रयत्न होत रहे एँ। य्हाँ हर प्रदेश मे ऐसी जाति मिलै एँ जो कवन भावभूमि पै वैचारिक बीज उत्पन्न करिकै साहित्य को भडार भरती रही एँ। राजस्थान म चारण, भाट, राय, रावल, मीरासी ऐसी ई यशस्वी जाति रही एँ जो राजा महाराजान को आश्रय प्राप्त करिकै बिनके पौरुष कौ बखान करैं ई। बिनकी भुजान म फरकन पैदा होवै ई, सहज ही हाथ मौछ मरोरवे लग परै औ। वीरन आखिन म लाल डोरा उतर आवै ए, तरवार की मूठ पै हत्था जम जावै औ। वीरन की हुकार निकरते ई, हर हर महादेव की धुनि ते आसमान गूँजवे लग परैऔ। शरीर की रक्तन लिका अपने आप ई फूल जावै ई, मरो भयो खूनऊ खौलबे लग परैऔ। कवि के काव्य कौ भाव अरु वैरी के शरीर कौ घाव दोऊन मे कछू सह सम्बध सो स्थापित ह्वै गयौ हतो।

समय ने फेर खायौ। राजा महाराजान की समै विदा भयौ। देश सुतन्त्र भयौ। लडाई भिडाई देश-प्रदेशन की सीमा ते बाहर निकर गई। ढाल तरवार-भालौ-बरछी नाकामयाब ह्वै गए। राजा महाराजा नाम केवल शब्दकोषन की निधि मात्र रह गए, पर भावभूमि के साँचे किसान 'चारण' अबहु अपनी भूमि पै वैचारिक खेती करते रहे। अब बिनकी किस्म बदल गई। राजा महाराजान के परिवेश ते आगे बढिकै बिनने ऊ परम पिता परमात्मा कौ जस बखानवे पै कमर कस लई। बिन कवीन मे शिवाश्रम-आजाद नगर भीलवाडा (राजस्थान) के रहवैय्या कविवर यशकरण खिडिया ऊ एक कवि कर्म के चितेरे हते। इ नैं छोटी-मौटी कितनी ई पुस्तकन कौ लेखन कियौ ए जिनमें

खारी को वाढ़ बनन, शिवाशिव महिमा, यशकरण दोहावली (पहलो भाग) प्रकाशित ह्वै चुकी एँ। अप्रकाशित पोथीन म-उदबोधन काव्य, सवैयावली, राजस्थान दोहावली, घरेलू-औषधालय, प्रश्नोत्तरी काव्य आदि एँ। वैसे इनकी रचना पत्र पत्रिकान मे ऊ प्रकाशित होती रही एँ—राजपूत-आगरा, चाँद-इलाहाबाद, क्षात्रधम-अजमेर, चारण-जोधपुर आदि पत्रन मे। आकाशवानी जयपुर ते इनकी कवितान को पाठ भयो ए। डा मोहनलाल जिज्ञासु की लिखी भई इतिहास पोथी 'चारण साहित्य को इतिहास (भाग-2) मे राष्ट्रीय चारण कवीन मे यशकरण को नामोल्लेख भयो ए। इनके काव्य पाठ कूँ बहोत सराहो गयो ए। महाराणा मेवाड फाउण्डेशन उदयपुर नै सन 1980 म इहे "महाराणा भूपालसिंह" पुरस्कार ते सम्मानित कियो हतो।

इनकी रचना खडी बोली म ज्यादा भई एँ, पर व्रजभाषा बीच बीच म ऐसी फब गई ए जैसे मोतीन की माला मे चमकदार मणि-मेरु। उर्दू अरु राजस्थानी के शब्द नै ऊ सहजई प्रवेश पाय लियो ए। ब्रजभाषा म काव्य सजन करते रहे एँ, यातें ब्रजभाषा इनकी सहज काव्य भाषा रही ए।

राजस्थान के मज्झ मेवाड के जैतपुरा नामक गाव मे इनको जनम स 1961 बैशाख बदी आठम तदनुसार 8 अप्रैल सन 1904 ई मे भयो। इनके पिता शक्तिदान खिडिया जैतपुरा के जागीदार हते। राजस्थान प्रदेश के भीलवाडा मण्डल म आमीद तहसील के माँहि जैतपुरा एक छोटी सी जागीर हती। मेवाड महाराणा जगतसिंह ने इनके पूर्वजन कू स 1707 म वीरता के पुरस्कार स्वरूप जि जागीर दई हती। इनके परिवार म दो भैया अरु एक छोटी बहिन हती। छोटे भैया को निधन तौ बचपन मे ई ह्वै गयो। बहिन प्रभावती बाई मेवाडी भाषा की कवयित्री अबई विद्यमान है। ब्रज-भाषा इनके काव्य को मूल आधार एँ, पर आधुनिकता को प्रभाव इनै खडी बोली म लिखबे की प्रेरणा देवै है।

श्री यशकरण की प्रारम्भिक शिक्षा अजमेर निवासी सौदानसिंह जी देख रेख मे निम्बाहेडा मे भई। कछू दिना इनै प्रतापगढ अरु उदयपुर म ऊ अध्ययन कियो हतो। ये बचपन ते ई कवि हते। परिवार मे ई काव्य को वातावरण हतो। अतएव परिवार म ई काव्य-सृजन की सिच्छा दीच्छा भई अरु कविता बनायवे लग परे। 13 वष की आयु मे इनके पिता को देवलोकवास ह्वै गयो। ये अपने नानाजी रावजी शार्दूलसिंह जी के पास प्रतापगढ आ गए। वे कविकर्म मे निपुण हते। बिनै इनकूँ काव्यशास्त्र को ज्ञान करायो। ये बचपन ते ई पुस्तकन के शौकीन हते। देश विदेश की नव-नव्य घटनान कूँ जाननो अरु बिनपै काव्य सृजन करनो, इनको शौक ह्वै गयो। कुरीति, कायरता, अंध-विश्वास के प्रति आक्रोश, राष्ट्रीयता की भावनान के प्रति प्रगाढता और अध्यात्म चेतना

इनके काव्य को मूल विषय बन गयो। योगीराज महाराज चतुरसिंह जी बावजी की अनुकम्पा सौ आध्यात्मिक गुत्थी सुलझती चली गई। ईश्वर के प्रति विश्वास बढ गयो।

मन म मथन मनन कर, अतिशय रख अनुराग।
प्रगटेगो प्रभु तत्व तब, अरणी ते ज्यौ आग॥

श्री यशकरण देशकाल की परिस्थितीन ते प्रभावित अवश्य भये पर इनै अपनी भाषा कूँ भागवत-पीयूष को पान करायकै अमरता दई। शिव-शक्ति इनके कुल के आराध्य रहे हुते। अत बिनके यशोगान सौ अपनी काव्य स्रोतस्विनी प्रवाहित करी। इनके काव्य की विषय वस्तु सामा यत या प्रकार ऐ—

शिवा महिमा, शिव महिमा, ईश्वर महिमा, बुद्धदव महिमा, मनोपदेश, हितोपदश, मिथ्याचार निंदा, सत्कम महिमा, भावात्मक एकता, धार्मिक सम वय, नीतिपरक रचना।

मानव धम—सज्जनता, साहस, श्रमशक्ति महत्ता, मानवता, परोपकार, प्राकृतिक व्यवहार, शठता नि दा, वृद्धावस्था की बिकलता, चिन्ता-तृष्णा मोह-आलस्य आदि की निन्दा, जीवन की क्षण भगुरता, सतोष सुख, साधु पहचान, गुरु-शिष्य व्यौहार आदि। ग्राम्य जीवन, यम नियम, परिवार कल्याण, स्वास्थ्य परक दोहे, घरेलू औषधालय, अछूतोद्धार ब्राह्मण धम, नकली नेता।

उक्त विषयवस्तु को चित्रण विविध मार्मिक छन्दन मे कियो गयो ए। इन छन्दन मे सवैया, मालती व मत्तगयन्द छन्द, कुण्डलिया, त्रोटक, भुजगी, षटपदी (छप्पय) रोला पद्धरिया, दोहा, मनहर, कवित्त, घनाक्षरी को नामोल्लेख रचना ते पहलै कियो गयो ए। दोहा इनको प्रमुख छ द ऐ। हजारन ते ऊ अधिक सख्या मे दोहा लिखे गए एँ। यशकरण दोहावली म 711 दोहा, यशकरण ग्रन्थ माला म 235, उद्बोधन मे 125 के लगभग दोहा दखे गए एँ।

विषयवस्तु को विवेचन काव्य की रसात्मक पद्धति के अनुसार माधुय, ओज व प्रसाद गुन पूण ए। कविवर यशकरण काव्य के मर्मज्ञ कवि कहे जावै एँ। वीर दुर्गादास की औरगजब के प्रति लिखी गई पाती मे प्रसाद व ओज गुन दर्शनीय एँ।

दोहा— दुरगादास सुभट्ट को, बादशाह प्रति पत्र।
ताको कर अनुवाद यह, अकित करहू अत्र॥

पद्धरी— स्वस्ति श्री भव्य देहली सुथान, [illegible] न विभव [illegible]पुर समान।
श्रीमान हिन्द के बादशाह, खुश रखे खुदा [illegible] निगाह।
आदाब अर्ज कर दुर्गादास, भेजतौ अर्ज लिख आप पास।
कीजिए गौर इस पर जरूर, हे मुगल नूर हम बेकसूर॥

सहिहैं न अधिक अब कैद कष्ट, कढ़िहैं निशंक कर दुष्ट नष्ट।
जो फौज रोकिहै पथ आय, वह फौज रुकहि जमलोक जाय।

रोके न रुकहिं राठौर वीर, तब फौज तूल हम हैं समीर।

अतिशय कृतघ्न अरु दुष्ट घोर, देखे न सुने बिन यवन और।
कर ब्याह बहन बीबी बनाय, लज्जा बिहाय निज उर लगाय।
पशु तुल्य यवन करत प्रसंग, दुष्कर्म देख हम रहत दंग।

अल्लाह आय करहिं न सहाय, अवशेष एक रहि है उपाय।
तोबाह करहि तृन मुख दबाय, करबद्ध होय अरु गिडगिडाय।
जो खान मांगि है जीव दान, नहिं पाय दिल्ली करिहै पयान।
राठौर एक अवशेष कोय, तब तक न जोधपुर विजय होय।

कविवर यशकरण की चारन जाति कूँ क्षत्रिय शब्द को गौरव अत्यधिक हतो। यवनन को तिरस्कार, बिनकी सामाजिक निलज्जता अरु राठौर वीरन की मातृभूमि के प्रति श्रद्धा को बनन बहौत सरल शब्दावली मे कियौ गयौ ऐ। क्षत्रिय महिमा को बर्नन करते भये कवि यशकरण लिखे एँ—

कुण्डलिया — भाई अवध अरण्य में, तृन चरती इक गाय।
प्रलयंकर पहुँचौ तहा, पचानन इक आय॥
पचानन इक आय, गाय कूँ मारन धायौ।
धर्म सुवीर दिलीप कूद आगे कूँ आयौ॥
गोरक्षन हित त्वरित, काट निज देह दिखाई।
सार्थक छत्रिय शब्द, कौन अब करता भाई॥

राजा शिवि की धर्म वीरता व आश्रय रक्षना को एक दोहा देखौ—

काट काट निज मांस कूँ, तृप्त कियौ जिन बाज।
रक्षण कीन्ह कपोत कौ, धर्मवीर शिविराज॥

वतमान म ब्राह्मण समाज कूँ धन लोलुप अरु धम-कम हीन देखिकै बिनपै करारौ व्यग्य या तरियाँ कियौ ऐ—

दोहा— वहा मृतक कौ मिलत है, यहा देत ही दान ।
कहा इन विप्रन की रहनि, यमपुर मज्झ दुकान ।।

षटपदी — नौ ग्रह कोप निवारि, उन्है झट वश मे आनै ।
अन्य विबुध आधीन, रहै नित आज्ञा मानै ।।
शुभ मुहूत अरु शकुन, मत्र तत्रादिक जानै ।
तीन काल कौ ज्ञान, रखै हम परम सयाने ।।
ऐसे ही कहते द्विजन कौं देखे हम रोगी दुखी ।
फिर वे धन लौ जन और कौ, कैसे कर सकि है सुखी ।।

साँचे ब्राह्मन कौ लच्छन एक दोहा मे बतायौ ऐ—

दोहा— करिहै ब्राह्मन कर्म जो, ब्रह्म तत्व कौ ज्ञान ।
वह ही ब्राह्मन सत्य है, व्यथ वश कौ मान ।।

आज क दुव्यसनासक्त साधून की चुटकी लेते भये लिखै एँ—

दोहा— पहुचाते निज पेट मे, भर भर लोटे भग ।
गाँजा मे गाफिल रह, अद्ध नग्न रख अ ग ।।

रोला — लगा एक लँगोट, खूब तन खाक लपेटे ।
आप अल्प वय, तदपि कहत वृद्धन ते बेटे ।।
अपढ हठी अति मूख, भूरि गदभ के भाई ।
पागलपन की पाट, सदा सिर रखै उठाई ।।

भिखारिन कूँ भारत कौ भार मानते भए लिखौ ऐ—

दोहा— करै नही कछु काय श्रम, आलस के अवतार ।
भारत भू पै व्यर्थ है, भिक्षुक दल कौ भार ।।

ऐसे उपदेशक जो स्वयं तौ व्यसनन में सने रहै अरु दूसरेन कूँ उपदेश करैं उनपै फबती कसते भए दोहा लिख्यौ ऐ—

आप रहे अप व्यसनरत, औरन कू उपदेस ।
ऐसे उपदेशक यहाँ, कैसे कटहिं कलेस ।

नारी के सम्मान के प्रति पुरुषन कू सावधान करते भए एक दोहा लिख्यौ ऐ—

जैसौ तुम तिय सौ चहौ, अपने प्रति ब्यौहार ।
तियहू तुमते चहत है, ताही के अनुहार ।।

नारा समाज मे व्याप्त दुर्व्यसनन के प्रति उन्हे सावधान कियौ ऐ—

नशा रसिकता भ्रमन नित, परघर बास कुसग ।
अक्सर इन अवगुनन ते, होत पतिव्रत भग ।।

विधवा विवाह, वद्ध विवाह, अनमेल विवाह, मृत्युभोज, दहेज आदि समाज मे व्याप्त बुराईन पै ऊ लेखनी चलायवे मे कवि नैं कोताई नाय बरती—

रोकत विधवा ब्याह कौ, सतयुग मे बन सत ।
आखिर वे ही करत है, गभ स्राव शिशु अ त ।।

बाल वद्ध अनमेल के, करहु न कबहु विवाह ।
इनतैं उर म रहत है, कलह दुखानल दाह ।।

देवैं अधिक दहेज जो, ताकौ बेड़ा पार ।
जो दहेज देवैं नही, बो डूबत मझधार ।।

समाज मे मदिरा कौ प्रवेश देखिकैं कविवर तिलमिला उठे एँ—

दोहा— री मदिरा मोहित किये, पडित सत प्रवीन ।
प्रकट नही तौ गुप्त ही, सब तेरे आधीन ।।

न्यायालय के ऊँचे आसन पै बैठिकैं ऊ न्यायाधीश रिश्वत लैबे मे नाय चूकैं जि बात कविवर ने या तरिया कही ए—

मनहर— न्याय माग रकन की कानन रुदन होत,
होत न दयाद हिय कान ना पसारे हैं ।

उच्च कोट शासन के आसन बिराज कर,
पूरन प्रपच जाल जग मे पसारे है ।
मारे कई तारे कई चाहे कर डारे वही ।
धूत धनवानन के विजय सहारे है ।
पास नही पैसा तौ मसोस मन बैठे रहौ ।
रिश्वत खवैया कछू जज्ज ये हमारे है ।।

एक सोरठा मे साचे न्यायाधीश की परिभाषा दई ऐ—

सोरठा— शत्रु मित्र सम जान, सत्य पक्ष तजतौ नही ।
करतौ दण्ड विधान, वह ही न्यायाधीशवर ।।

अपनी चारण जाति के प्रति उपालम्भ नीचे लिखे छन्द म दियौ ऐ—

क्षत्रिय के हित बीच नही, अपनौ हित माने ।
देत न उत्तम सीख, सिफ खुश करनौं जानै ।।
तप त्याग रहित, भय लोभ वश, कथन सत्य करते नही ।
वे कविवर चारण वश के, कहला नहि सकते कही ।।

दोहा— वे चारण निज वाक्य सौ, सतत वीर रस सीच ।
कायर को भी वीर कर, ला रखते रन बीच ।।

कविवर नै परोपकार पूण जीवन कूँ ई साथक समझौ ऐ । यदि जीवन मे परोपकार नाय है सकै तौ जीवनई बेकार ऐ—

प्रभु कर मत्यु प्रदान अब, यह जीवन बेकार ।
जीवन यदि जग रखहु तौ, करवा पर उपकार ।।
मलयज कु कुम सौ नही, शोभित होय सरीर ।
केवल शोभा देह की, हरने सौं पर पीर ।।

ससार मे माया मोह कौ जाल ऐसौ ऐ, याते पार हौनौं बहौत ई कठिन ऐ—

माया मकरी नैं तना, जग मे विस्तृत जाल ।
मनुज मशक उलझे रहत, सुखी दुखी सब काल ।।

मत्यु मोह या जगत मे दोनो दुखद मकार ।
मोह मत्यु सो हू अधिक, दीघ दुराह अतिभार ।।

मोह जाल ते कढिबे के काजै वर विवेक की जागृति आवश्यक बताई गई ऐ—

वर विवेक यदि साथ हो, मोह न द्रोह मचाय ।
वैसें विष जयपाल कौ, घृत दधि ते घट जाय ।।

कविवर जसकरन कूँ आयुर्वेद कौऊ घनो ज्ञान हतै । जयपाल कौ विष घी अरु दही ते घटि सकै, याकौ विवेचन रोग निदान के बिना औषधि कौ प्रयोग नही करनौ चइऐ—

औषधि पाछे दीजिए, करिकै रोग निदान ।
बिन निदान के औषधि, बिना लक्ष्य कौ बान ।।

स्वास्थ्य कौ ध्यान रखिवे की चेतावनी देते भये लिखै एँ—

सर्वोपरि है स्वास्थ्य सुख या सम सुख नहिं आन ।
जन अस्वस्थ्य कौ सुरग मे, होत नरक कौ मान ।।

स्वास्थ्य नियम नित पालिये, करिये कबहु न भग ।
सबल बना रखिए सदा, अपनो मन अरु अग ।।

घरेलू नुस्खान के दोहा ऊ देखिबे जोग एँ —

सेवहु त्रिफला सवदा, मधु घृत विषम मिलाय ।
चर्म-चक्षु अरु अग्नि के, त्वरित राग टल जाय ।।

प्रतिदिन तुलसी पत्र कथौ, करते रहहु प्रयोग ।
जड से जैहै विषम ज्वर मिटि जैहै मुख रोग ।।

कसरत मालिश तैल की, ब्रह्मचय पय पान ।
सब बल वधक औषधी, है नहिं इनहिं समान ।।

कविवर यशकरन परम आस्तिक अरु धार्मिक एँ । शिवा (भगवती पार्वती) अरु शिव के उपासक एँ । पर सबई देबी देवतान कौ ध्यान करिवे मे आस्था राखै एँ ।

ससार नाशवान ए। दई की क्षणभगुरता जग प्रसिद्ध ऐ। अत भगवान कौ भजन करनौई सार तत्व ए।

क्षण भगुर तन मनुज कौ, विनसत लगै न बार।
करिए परहित प्रभु भजन, माया मोह निसार ॥

भज रे मन भव पाल कौ, मत फँस माया जाल।
ज्यौं ज्यौं जावत हाल यह, त्यौं त्यौं आवत काल ॥

भगवती सौं प्रार्थना करत भये कविवर नै कही ऐ कि माता की उदारता कौ कोई पार नहीं ए। जीव नौ पाप अरु अपकार करतौ ई रहै ए पर भगवती सदैव कृपा ई करैऐ—

मा मेरे अपकार कौ, पार न पारावार।
पर यासे ऊ अधिक है, तब अनन्त उपकार ॥

शिशु को स्वल्प सनेह यह, जो बन जाय सुमेर।
तौ हू तेरो प्रेम माँ, हो ऊपर हिम ढेर।

जीव पाप की उत्कृष्ट अवस्था मे पहुच कै भगवान की उद्धार क्षमता कूँ चुनौती देवे लग परै है। ई भगवान सौ भगत की अत्यधिक समीपता अरु स्पष्ट आत्म निरीक्षण कह्यौ जा सकै ए।

ढूढे प मिलि है नहीं, मुझसौ पतित न आन।
प्रभु निज व्रत पूरन करहु, पतित उधारन बान ॥

सीमित मानव शक्ति है, ईस्वर शक्ति अनत।
पार न वाकौ पा सके, कवि कोविद ऋषि सत ॥

प्रभु के प्रति सनेह अरु श्रद्धा भगवान कूँ आकृष्ट करै ऐ—

श्रद्धा और सनेह सौ, चित चुम्बक बन जाय।
लोहा जैसे लोकपति, आतुर खिचकर आय ॥

भगवान की प्राप्ति सनेह सौ ई सभव ऐ।

या प्रकार कविवर यशकरण नैं विविध विषयन कूँ अपने काव्य में चित्रित कियौ है।

इनकी रचनान में रूपक, यमक, उपमा, उत्प्रेक्षा, उदाहरण, दृष्टान्त, तद्गुण, मीलित आदि अलकारन कौ ऊ सहज प्रयोग भयौ ए।

कवि कम की कुशलता, लोक व्यवहार की मार्मिकता, जन जीवन की भाव प्रवणता, कवि हृदय की सरसता, कौ अवलोकन करिकैं इनकी श्रेष्ठता कौ सहज ई मूल्याकन कियौ जा सकै ऐ। मेवाड भूमि पै कविकम की उत्तम परिणति कौ सहज दिग्दर्शन यशकरन खिडिया के काव्य सौं कियौ जा सकै ऐ।

☐ डॉ रमेश चन्द्र मिश्र
शास्त्री सदन, कामा
भरतपुर (राजस्थान)

जन चेतना के कवि जसकरण खिडिया

राजस्थान के रतनन के भंडार सौ भरी भई धरती माँहि अनेक कवि-मनीषी उत्पन्न भये। इनै अपनी वाणी अरु लेखनी सौं एक ओर सुरसुती के भंडार की श्रीवृद्धि करी, तौ दूजी ओर सामान्य जन कूँ रूढ़िन, अन्धविश्वासन अरु पराधीनता के फंदा सौं मुक्ति दिबाबे में भरपूर योगदान दयौ। जि एक सुखद आश्चर्य सौ दिसै हतै कै राजस्थान माहि चारनन की काव्य भाषा डिंगल अरु भाटन की पिंगल के रूप माहि सामान्य धारणा व्याप्त रही है अर कह्यौ ऊ है —

'चारण डिंगल चातुरी, पिंगल भाट प्रकाश।'

परि या सत्य जि है कै राजस्थान के चारनन नें जितेक पिंगल काव्य रचौ, बितेक न तौ भाटन नै, ना अन्य जातिन नै रचौ। सोलहवीं सदी सौ लैकै वर्तमान समय तानूँ मरुधरा के चारन कविन नै एक ओर डिंगल कौ डमरु गुंजायमान कियौ, तौ दूसरी ओर ब्रज की बाँसुरी पिंगल के परिवेश में मुखरित करी। वस्तुत डिंगल अरु पिंगल राजस्थान की द्वै आँख हैं, जिनमें कोऊ छोटी बडौ नाय हतै। बीकानेर माँहि राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के साहित्यिक समारोह में 'आई है' समस्यापूर्ति के रूप में मैंने सन् 1990 माहि द्वै मनहर कवित्त पढे हे। बिनमें सौ एक याही भाव कौ परिचायक हो-

डिंगल अरु पिंगल द्वै आखें मरु मेदिनी की,
रासौ अरु राम लीला संग सरसाई है।

वेलि क्रुस्न रुक्मणी तो रची कवि पीथल नै,
गिरधर गोपाल छवि मीरा मन भाई है॥

हजारा कवि न्न के भाति-भाति छन्दन मे,
साजरिया बन्न की आभा उमगाई है ।
मीठी मनुहार सुन प्रीत की पुकार आज,
व्रज को बहार बीकानेर माहि आई है ॥

याही दृष्टि सौ ह्या पै चारन कविन नै जिनकी सख्या म डिंगल चारन के रूप मे अपेक्षाकृत अधिक रही—डिंगल के सग पिंगल म ऊ बराबर काव्य रचना करी । चारन कविन माहि सूर के समकालीन भक्त कवि ईसरदास (भाद्रेस बाडमेर) ने श्री कृष्ण की स्तुति माहि उद्धोर छद ब्रजभाषा मे रचे है । भक्त कवि नरहरिदास बारहठ नै तौ 24 औतारन कौ महान ग्रन्थ 'अवतार चरित' पिंगल मेई लिखौ है । (स 1733 वि) अरु चारन महात्मा स्वरूपदास (दादूपथी) नै 'पाडवयशे दु चद्रिका' जैसौ लोकप्रिय ग्रन्थ ऊ पिंगल मे रचौ । याई तरियाँ कविराज बाँकीदास, महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण, कवि राजा मुरारिदान, स्वामी गणेशपुरी आदि महान चारन कविन नै विपुल मात्रा माँहि पिंगल काव्य कौ सजन करयौ । वतमानकाल मऊ डा अभयसिंह रत्नू (जयपुर), अजयदान बारहठ (मालवा-सिरोही), धनदान लालस (चाचलवा-जोधपुर), डा केसरी सिंह (रूपवास-पाली) अरु आलोच्य कवि ठा जसकरण खिडिया जैसे वयोवृद्ध चारन कवि प्रचुर मात्रा मे ब्रजभाषा मे विविध विषयक काव्य रचना कर रहे है ।

ठा जसकरण जी खिडिया कौ जनम स 1961 वि माहि भीलवाडा जिले के जैतपुरा गाम मे भयौ । कवि घराने मे जनम लैबे के कारन आप बचपन तेई कविता प्रेमी है । आपसौ छह बरस छोटी बहिन प्रभावती देवीऊ आज 84 बरस की आयु मेऊ सतत काव्य रचना मे लीन है अरु वतमान राजस्थानी कवयित्रिन मे विसेस सम्माननीया हैं । ठा जसकरन जी नै ग्रामीन अचल मे रहते भये समै समै पै विविध विषयक इतेक काव्य रचे कै बामे सौ भौत सौ तो गुम है गयौ है अथवा विस्मृत है चुकौ है । कैई बेर हस्त-लिखित कापी तैयार भई परि कोऊ सम्बधी या मित्र पठनार्थ ले गयौ अरु आज लौ नाय लौटाई । फिरऊ जो कछु बच गयौ बूऊ कम नाय हतै अरु साहित्यिक दृष्टि सौं विसेस महत्वपून हैबे के सगई ऐतिहासिक अरु सास्कृतिक दृष्टि सौऊ बिलेक ई उल्लेखनीय एव सग्रहणीय कह्यौ जा सकै है ।

ठा जसकरण जी खिडिया के काव्य कूँ निम्नाकित भागन मे विभक्त कियौ जा सकै है—

1 भक्ति काव्य 2 नीति काव्य 3 ऐतिहासिक काव्य 4 उद्बोधन काव्य 5 व्यग्य काव्य 6 राष्ट्रीय काव्य 7 प्रकीणक काव्य ।

भक्ति काव्य—भक्ति पूज्य के प्रति अनन्त प्रेम को ई दूसरो नाम है। चारण कवि हैबे के कारन सिव अर सक्ति की इष्ट आराधना या विसिष्ट कवि कूँ संस्कार मेई मिली है, अत सिवा गिरि-महिमा विषयक दोहा, सोरठा, कुण्डली, त्रोटक, भुजगप्रयात, सवैया, कवित्त, पद्धरी आदि प्रचुर मात्रा में प्रणीत करे है। पिता सौ पहले मैया कौ स्थान होय है यासौ कवि नैं सिवा महिमा के रूप माहि प्रणति भाव सबसौं पैलै व्यक्त कियौ है। सिवा महिमा के रूप माहि वन्दना कौ प्रथम सवैया याई भाव कौ प्रत्यच्छ प्रमान है जामे गणेश की महानता कौ आधार ई गिरिराज सुता कौ पुत्र होनौ अंकित करयौ है। यथा—

> गिरिराज सुता सुत के गुन कौ, सहसानन सन्तत गान करै।
> पर पार उसे न मिला अब लौ, इक आस्य कहौ किम पार परै॥
> वरदायक बारन आनन कौ, सुभ नाम सदा जन जो सुमिरै।
> उसका नहि काम अपून रहै, सब बाधक विघ्न समूम टरै॥

सुभ निसुभ अरु महिषासुर मर्दिनी त्रिशूलधारनी महाशक्ति कालिका का तब गान करते भये कवि नैं मातेश्वरी की विनम्र वन्दना करी है। निम्न षटपदी पढबे जोग है—

> जय ईश्वरि जगदम्ब, सत सज्जन सुर रजनि।
> गजनि सुभ निसुभ महिष आसुर भुज भजनि।
> जय ईश्वरि जगदम्ब, दुष्ट अघकारन दडनि।
> मडनि सब ब्रह्माड, खूब दानव दल खडनि।
> जय जयति जयति जगदीश्वरी, प्रणव भक्त जल पालिका।
> सकट समस्त शिशु के हरहु, करहु सुरक्षण कालिका॥

कवि नैं अपनी वृद्धावस्था की दारुण दसा कूँ दर्साते भए जगदम्बा के चरनन माहि आत्म समर्पन प्रकट करयौ है। कवि नैं अपनी अनूठी उक्ति सौ जऊ सिद्ध करयौ है कै महेश्वर के घर माहि उमा के अभाव मे एक घडीऊ काम नई चल सकै, क्यो कै म्हाँ स्थिति ई ऐसी विचित्र हैं। कवि के सब्दन मे सिवा की अतुल सक्ति अरु स्वय को आत्म निवेदन निम्न सवैया छन्द मे दृष्टव्य है—

> शशि शेखर मग्न समाधि रहे, जब जाग्रत हो विजया निगले।
> चमु भूत पिसाच चुडैलन की, उतपात अनेक मचा मचले॥

नहि आखु मयूर हरी वृष भी, इक उपर एक करे हमले।
जगदम्ब बिना जगदीश्वर के, कछु भी घर को नहि काम चने ।।

कवि नै मातेश्वरी की दया दृष्टि सौ सबई प्रतिकूल वस्तु अनुकूल बनबे कौ सकेत करते भए जि कारण ऊ बतायौ है कै जो सिंह पै आरुढ है सकै है, बाकी सर्वशक्तिमता माँहि भला सशय ई का ? यथा -

सिंह सुरभि अरि मित्र से, शूल फूल पवितूल ।
होतौ विष अमृत सरिस, यदि ईश्वर अनुकूल ।
गज वष खग मग सुरन के, वाहन बल अनुसार ।
महा अबल मृगराज पै, सक्ति ही होत सवार ।।

जगदम्बा के स्तव गान कै पाछै कवि नै भोलनाथ की अतुल महिमा गाई है । अनेक सवैया, दोहा अरु अय छदन माँहि कवि नै शकर की भक्ति कूँ ई सवश्रेष्ठ उपाय मानते भये अपनौ आत्मकथन प्रकट करयो है । सिव भक्त ई सच्चौ सुख पाबे कौ अधिकारी है सकै है, अन्य जन कदापि नाय । याकौ स्पष्टीकरण स्वय कवि के सब्दन मे प्रस्तुत है—

वनिता वर सुदर किंतु वही पति के प्रतिकूल रखै मन है ।
गह मे सब वस्तु विलासन की, पर रूग्न असक्त रहै तन है ।
तन स्वस्थ बलिष्ठ तथापि नही, जिसके ढिग मे कुछ भी धन है ।
इस सब अपूर्ण सुखी जग गे, सब भाँति सुखी शिव के जन है ।

शिव की भक्ति मे कवि नै जो दोहा काव्य रचौ है, बामे भाव पच्छ के सग अनेक स्थानन पै कला पच्छ कौऊ सुन्दर समन्वय भयौ है । विविध अलकारन के सहज प्रयोग के सग 'चौकडिया अनुप्रास' के कतिपय उदाहरन बिमेस अवलोकनीय है—

भूषण भयद भुजग के, श्रवत सीस पै गग ।
शिवा सग जो रहत वह, करि है मम दुख भग ।
रैन बसेरा जगत मे, अधिक अधेरा साथ ।
करहु उजेरा ज्ञान उर, निज कर नेरा नाथ ।।

नीति काव्य—मानव जीवन की सफलता के लिए नीति कौ महत्व असदिग्ध है । चरित निर्माण अरु सुखी जीवन के काजै नीति कौ आधार ई सर्वोत्तम है, अत राजस्थान

के कवि न या ओर प्रारम्भ माई विसेस रूचि राखी अरु बाई परम्परा माहि कविवर जसकरण सिंघ या कै विपुल मात्रा माँहि नीति काव्य कौ प्रणयन कियौ। वृन्द के दोहान की तरियाँ या कवि कै अनेक दोहान मे उदाहरण अलकार कौ प्रयोग भौत सुरुचिपून अरु मार्मिक बन पडी है। या कवि के नीति काव्य की एक विसेमता जिऊ है कै बिन्नै मौलिक अर आधुनिक उदाहरणन सौं अपने अनुभूत सत्य कूँ उजागर करयौ है। 'यशकरण दोहावली' मे ऐसे अनेक दोहा मिलै है यथा—

कट मिटता करता नही, चढते चरखी चीख।
नहि तजता निज मधुर गुण, सीख ईख से सीख।।
दुखद मोह होता सुखद, सुमति ज्ञान के सग।
जहर सुधा जैसे बनै, पाय सु बैद्य प्रसग।।

अनेक स्थानन पै राजस्थानी के लोकप्रिय सब्दालकार 'वयण सगाई' (वन सम्ब घ) कौ निर्वाह करते भए कवि नै नये उदाहरणन सौं उपमित कर अपने नीति कथन कूँ पुष्ट करयौ है जैसें—

स्वल्प विभव सौं शठ मनुज, फूल होत फुटबाल।
खा ठोकर खाली बनै, होत अन्त बदहाल।।
महा हठी शठ मनुज की, हठ को सकै हटाय।।
मुख न मकोडा खोलता, कटि चाहे कट जायँ।।

कवि के काव्य माँहि कहू-कहू देसज या विदेसी भाषा के सब्दन कौ प्रयोग दिखाई देय है, जो कि अपने कथन कूँ आधुनिक वस्तुन सौं प्रमानित करबे के उद्देश्यो सौ करयौ गयौ है। जैसे वृद्धावस्था के सुफेद बार, ऊपर की अदालत कौ वारट अथवा एकई वस्तु के भिन्न नामन मेऊ बाई सरूप कौ बोध कवि के सब्दन म—

तू अपनौ कतव्य तज, फिरता फूल फरट।
आप गया अबलोक रे, बाल धवल वारट।।
भाषा मत मे भिन्न जनि, समझहु मनुज समस्त।
वस्तु वही चाहे कहौ, हैण्ड दस्त या हस्त।।

उपर्युक्त दोहान में अग्रेजी, फारसी अरु सस्कृत के सब्दन के सग 'वयण सगाई' कौ निर्वाह उल्लेखनीय है कवि के नीति काव्य माँहि विविध विसैन पै मार्मिक अभिव्यजना भई है।

ऐतिहासिक काव्य—कवि नै प्रचुर मात्रा माँहि ऐतिहासिक व्यक्तिन अरु घटनान कूँ अपने काव्य मे सजोयौ है, जिनमे कछु तौ प्राचीन इतिहास की घटनान सौ सम्बद्ध है अरु कछु समसामयिक व्यक्तिन अर घटनान सौ जुडी भई है। 'वीर दुर्गादास कौ पत्र औरगजेब के प्रति' रचना माहि द्वै दोहा अरु 54 पद्धरी छ दन मे कवि नै राठौड वीर दुर्गादास की ओर सौ क्षत्रियोचित स्वाभिमान, स्वामी भक्ति धरती प्रेम अरु हिन्दुत्व की रक्षाथ अपनी दृढ प्रतिज्ञा कूँ निर्भिकता किन्तु सिष्टता के सग प्रकट कर्यौ है। या रचना माहि जोधपुर के बालक महाराजा अजीत सिंह के समै की दसा को ममस्पर्शी चित्रन भयौ है। महाराजा जसवतसिंह (प्रथम) की मृत्यु के पाछै का विकट परिस्थिति ही, बाकौ चित्रन भौत सटीक भयौ है। उदाहरणार्थ—

देखिए इधर बालक नरेस। अरु है न यहाँ निज गेह देस
रक्षक कुछेक राठौड पास। जसवत कीन परलोक वास ॥

ई तरियाँ देस भक्त वीरन की स्मृति माहि कवि नै स्फुट काव्य रचना करी है।

उद्बोधन काव्य—यामे प्राय नीति कथनन कौ ही बाहुल्य है। देस प्रेम की भावना अरु समाज सुधार की दष्टि सौ कवि नै ऐसे काव्य की प्रचुर मात्रा माँहि रचना करी, जो अधिकाशत अप्रकाशित ई है। कवि ने समाज के कणधारन, पडे पुजारिन, वकीलन, सिच्छकन, साहित्यकारन आदि कूँ खरी खरी बात सुनाते भये अपने कत्तव्यन कूँ दर्सायौ है। क्राति दृष्टा चारन कविन कै लिए कवि कौ कथन (स्वतत्रता पूव)—

सन्तत साहस शौय का, दे सब कौ उपदेस।
क्राती कर साति गहौ, कर स्वतत्र निज देस ॥

ब्राह्मनन के प्रति कवि कौ उद्बोधन—

जनता सौ अब ब्राह्मनो, तजिये ठगना द्रव्य।
सच्चे ब्राह्मण हूजिये, करिये भारत भव्य ॥

व्यग्य काव्य—ठा जसकरण खिडिया के अप्रकासित काव्य मे अधिकासत व्यग्य काव्य है, जो बिन्नै स्वतत्रता प्राप्ति के लिए तत्कालीन घटित सघष के दिनन माँहि लिखौ हो। देस की दीन हीन एव पराधीन दसा के लिये सामाजिक रूढ़ीन, कुप्रथान, असिच्छा, अग्यान, अन्धविस्वास अरु शोषण कूँ कारन मानते भये बापै तीखौ कटाक्ष कियौ है। याके अतिरिक्त पाखण्ड-खण्डन की दृष्टि सौंऊ अनेक चित्र प्रस्तुत करे है। मृत्युभोज, पडे पुजारी, देवतान के सम्मुख बलि, भूत प्रेत की बातन आदि के सग विष-

वान की दुदसा अरु समाज कटकन की कारी करतूतन कौऊ भडाफोड कियौ गयौ है। कवि नै शोषक साहूकारन पैऊ व्यग्य कर्यौ है।

अन्य विसैन माहि हडताल, नकली नेता आदि अनेक व्यग्य चुटीले बन परें है। जसे—

होय निरकुश मूख जन, जँह तँह करत धमाल।
भारत म होती रहति, हर दिन ही हडताल॥

दिल मे दानव वाद है, मुख मे गाँधी वाद।
ऐसे नता आजकल, करत देस बरबाद॥

रहे अधिक दिन जेल मे, सहे अधिक सिर जूत।
देस भक्ति के आजकल, शठ यह देत सबूत॥

तत्कालीन विलासी एव कत्तव्य विमुख राजान की मानसिकता अरु मनोवति पै कवि कौ व्यग्य

पेरिस की म नहि परी, नहि हू गौहर जान।
कैसे फिर मेरो करै, सब नप ये सनमान॥

आधुनिका क रूप माहि तथाकथित विदुषी नारी की निलज्जता पै व्यग्य करते भये कवि ने आर्य सभ्यता के महत्व कू प्रकट कियौ है यथा—

अर्ध नग्न निज अग कर, पर पुरसन मे जाय।
त्रिहँस विहँस बाते करै, वह विदुषी कहलाय॥

कम ए पढ़ कछु युवतियाँ, पाय विदेस प्रसग।
होय उच्छृखल करति वे, आर्य सभ्यता भग॥

नसा रसिकता भ्रमण अति, पर घर वास कुसग।
अकसर इन अवगुनन ते, होतौ पतिव्रत भग॥

स्त्रीन द्वारा पुरुष को पहनावो अरु पुरसन द्वारा जनाने वस्त्र धारन करबे के आधुनिक फैशन पै व्यग्य करते भये कवि नै या अनोखी एकता कू आश्चर्य सहित प्रकट कर्यौ है—

तिय करती है पुरुष को, पुरुष करत तिय भेस।
ऐसी अनुपम एकता, मिलि है और न देस॥

कालेज के छात्रन द्वारा ढाढी मूछ चट कराकै शीश पै माग बनाते देखकै बा जमाने माहि कवि कूँ बू रूप भायौ नाय हौ। यासौं जि उक्ति करी—

मूँछरु दाढी मूड कर, सिर पर माग सवार।
सुन्दरि सा सुदर बनै, कर सिगार कुमार।।
सीख विदेशी सभ्यता, भारत गौरव भूल।
करत छात्र कालेज के, आय धर्म उनमूल।।

मृत्युभोज पै तीक्ष्ण कटाक्ष करते भए कवि नै अनेक छद रचे है। करुणा कलित बा काव्य कौ बानगी रूप म एक दोहा प्रस्तुत है—

कष्टित जन का रूदन सुन तजत सज्जन अन्न।
खल जन खाते मृतक का, हलुआ होय प्रसन्न।।

मदिरा पान की बढती भई प्रवृत्ति पऊ कवि नै पर्याप्त लिखौ है। कवि की व्यंगोक्ति पठनीय है—

री मदिरा मोहित किए, पडित सत प्रवीन।
प्रकट नही तो गुप्त ही, सब तेरे आधीन।।
बनिक विप्र लेकर सुरा, खिसकत घर की ओर।
मानहु पर धन हरण कर, चम्पत होता चोर।।

आजकल के नेतान पै, वकीलन अरु वैद्यन पै कवि का व्यग्य ऊ कम रोचक नाय। ईसुर ते प्राथना के सुर मे कवि कौ कथन वयण सगाई युक्त पठनीय है—

विश्वेश्वर मेरी विनय, सुनिये श्रवण पसार।
वैश्या वैद्य वकील का, दिखलाना नही द्वार।।
परिहित का परित्याग कर, निसि दिन निज का ध्यान।
नकली नेता नरकी, सब विधि एक समान।।

राष्ट्रीय काव्य—राष्ट्रीय काव्य धारा चारण कविन कौ प्रिय विसै रह्यौ है। या कवि नैऊ भौतेरी राष्ट्रीय काव्य की रचना कीनी है। सुतत्रता प्राप्ति के काजै बा समै की देशी रियासतन मे हैबे वारी हलचल, राष्ट्रीय नेतान के प्रति कवि के श्रद्धास्पद उद्गार तथा देशप्रेम अरु स्वाधीनता के महत्व कूँ सिद्ध करबे वारी अनेकन रचनाऊ पिंगल अरु डिंगल दोनू भासान मे रची हीं। जगदम्बा की स्तुति मे ऊ जा कवि नै अपनी जेई मनोकामना प्रकट करी—

भारत के भयभीत जन, सह न सकत अब त्रास ।
दानव दुष्ट विदेश के, काली करहु विनास ।।
रण चंडी रण कीजिये, लै तलवार त्रिशूल ।
अब अविलम्ब उखाडिये शासन ब्रिटिश समूल ।।

बा समै के छत्रिन कूँ विलासिता अरु प्रमाद की स्थिति ते जगाबै हेतु कविन तेऊ आग्रह कर्‌यौ गयौ हो । यथा—

क्षत्रिय जाति प्रमाद बश, आज पडी है सुप्त ।
सिंहनाद कर सुकवि सब, करिये निद्रा लुप्त ।।

कवि नै राजान की जो व्यंग्यमय भर्त्सना करी है, बाकै पाछैऊ राष्ट्रीयता को दरद दीख परै है । जो विदेशी सत्ता के संग तालमेल करिकै ह्यां की जनता अरु किसानन कौ सोसन कर रहे हे, बिन पै कवि नै तीखे व्यंग्य बाण चलाए हैं । देखौ एक उदाहरन—

रात भर रंडिन की सेवा में सदैव रहै
जाया को वियोग ज्वाला मांला मे जलाते हैं ।
मूंछ मुंडवाते सिर तिय सी सजाते मांग,
नखरे कर बातन मे हाथ कौ हिलाते हैं ।
बंदर सी घुडकी दिखाय कर बार-बार,
दीन कृषि कारन के दिल दहलाते हैं ।
द्रव्य निज कोष का उडाते है विलास में जो,
सच्चे नर राज आज वे ही कहलाते हैं ।।

याके संगई कवि नै गोपाल सिंह खंवा अरु लालबहादुर शास्त्री जैसे राष्ट्रीय नेतान पै शोक काव्य ऊ रच्यौ है ।

प्रकीर्णक काव्य —उपर्युक्त विसैन के अलावा छुआछूत मूर्तिपूजा, सती प्रथा, टीका व दहेज प्रथा आदिन कौ खण्डन तथा परिवार कल्याण की भावना कौ मण्डन कर्‌यौ हो । अनेकन व्यक्तिन कूं काव्यमय पत्र लिखकै कवि नै व्यक्तिगत अरु सामाजिक बातन पैऊ प्रकाश डारौ है । कवि की विचार धारा पै आर्य समाज कौ निरौ प्रभाव दीख परै है । सन् 1939 में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के औसर पै जा कवि नै दो कवित अरु आठ दोहा सुनाए हे, जिनकूँ भौत पसन्द करौ गयौ । हैदराबाद के निजाम उस्मान अली खाँ के प्रति रचित बा काव्य मे खरी खरी सुनाई ही । यथा —

दड साम भेद दाम नीति कौ प्रयोग कर,
जहाँ तहाँ हिन्दुओं को यवन बनावै है।

यवन बने कौं पुनि हिंदु जो बनाय डारै।
आय उपदेशक तौ घोर दण्ड पावै है।

मंदिर बनावे की न आज्ञा अब हिंदुओं को,
बने हुए मन्दिर भी प्राय ढहवावै है।

आज उस्मान खा के देख जोर जुल्मन कौ,
शाह अवरग कौ जमानौ याद आवै है।।

दोहा

हर दिन ही होता वहाँ, आयन पर आघात।
करता है उस्मान खा, नादिर शाही मात।।

आयन के श्रम कौ सुफल, रु ते हो उपभोग।
करहु न आयन ऊपरै, अनुचित दण्ड प्रयोग।।

समग्र रूप मे इतेकई उल्लेख करबौ पर्याप्त होयगौ कै ठा जसकरण जी खिडिया पुरानी पीढी के चारण कविन म अग्रगण्य रचनाकार हे। इनके काव्य माहि इनके हिरदै के उद्‌गार है, जामे राष्ट्रीयता की पुकार अर समाज सुधार के सुर विषम रूप ते गुजाय मान भये है। परतत्र भारत के स्वाधीनता सग्राम म सक्रिय भागीदारी निभायबे वारे एक प्रखर देशभक्त कौ तथ्यात्मक चित्रन भयौ है। इनकी भाषा माहि सादगी अरु सहजता है, परि भौतेरी जगैन पै रूपक, उत्प्रेक्षा उपमा, विसम क्रम, उदाहरन आदि अलकार, वैण सगाई अरु चौकडिया अनुप्रासन कौ सहज एव अनायास ई प्रयोग भयौ है। आज 90 बरस की वृद्धावस्था मे ऊ इनके मुखार बिन्द ते काव्य रूपी मकरद के कन निस्सत होय है। राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के प्रति हार्दिक आभार जा नै या वयोवृद्ध एव ज्ञानवृद्ध कवि के विसै म परिचै पोथी प्रकासित करबै को शुभ सकल्प लीनौ। मनीषी कवि श्री खिडिया के स्वस्थ दीघ जीवन की मगलमयी कामना है।

☐ डॉ शक्तिदान कविया
पोलो द्वितीय, जोधपुर

यशकरण खिडिया की भक्ति भावना

श्री यशकरन खिडिया, वतमान समै मे चारन जाति को सुमेरु कह्यौ जा सकै ऐ। बिनम प्रभु क प्रति लगाव, गुरु जनन के प्रति पूज्य बुद्धि कौ सम्कार, मानव भाव के उद्धार की कामना अरु प्राणी भात्र के उपकार कौ भाव कूट कूट कै भर्यौ ऐ। यशकरण-ग्र थमाला जो बिनकी मुद्रित रचना ऐ वाके प्राक्कथन म 'दो शब्द' शीषक सौ उ न लिख्यौ ऐ—'एक चारण परिवार म ज म होने के कारण कविता से सहज सम्ब ध रहा है। कितनी ही कविताए लिखी गई, वैसे ही जैसे अनेको फूल पौधौ पर लगे, पर धन्य वही फूल रहा जो प्रभु चरणो तक पहुच सका। इसी तरह तुकबन्दियो मे वही तुकब दी, (कविता कहना तो उचित नही) सफल रही, जो जनता जनादन के कर कमलो तक पहुच सकी।' श्री खिडिया ने अपने काव्य की साथकता जनता-जनादन के हाथन तक पहुचबे म मानी ऐ जनता-जनादन तक पहुचती वो सामग्री ही सोभा पावै है, जो जनता के ताँई उपयोगी होवै। अत ई बात स्वय सिद्ध ऐ कै श्री खिडिया कौ काव्य जनता कौ काव्य ए। उनकौ चिन्तन जनता जनादन कौ चिन्तन ऐ। उनके हृदय कौ भाव-प्रसून जनता-जनादन के लिए समर्पन मे ई सुख पावै।

श्री खिडिया कै काव्य म जनता जनादन कौ रूप देश प्रेम अरु भगवत प्रेम के रूप मे देख्यौ जा सकै ऐ। श्री चन्द्रशेखर श्रोत्रिय ने उनके बारे मे लिख्यौ ऐ—चारण जाति के होने से आप मे जाति और देशप्रेम तो कूट कूट कर भरा है किन्तु आपका भगवत प्रेम सोने म सुहागा का काम कर रहा है।[1] इनकी भक्ति भावना मे इनकौ शरणागत स्वरूप अरु भगवान सर्व नियन्ता सरूप देखने कूँ मिलै ऐ। इन्नै भगवान कौ बहुदेववाद स्वीकार

1 यशकरण ग्रन्थमाला—'प्राक्कथन—पृ 2

कियौ ए। शक्ति अरु सामथ्य कूँ एक रूप मे देखनौ इनके दशन कौ अद्वैत तत्व ए। इनके काव्य 'शिवा शिव महिमा' माँहि शिवा शिव कौ विभेद अभिधान मात्र ऐ, जो लोक जीवन मे प्रतीति मात्र ऐ। इनकौ वास्तविक रूप अभेद ऐ—

ईश्वर ईश्वरी तत्व इक, है विभेद अभिधान।
जननी चाहे जनक तू, मन अपने मे मान ॥[1]

इनकौ अभेद रूप हू मातृ-रूप मे स्वीकृत भयौ ऐ। इनकी भक्ति मातृ शक्ति सरू-मिनी ऐ—

एतदथ विभु ईश कौ, मातृरूप मैं मान।
शिशु के अटपट शब्द ज्यो, गुण यश करता गान ॥

मातृ शक्ति की अनन्तता अरु अपार महिमा कौ वनन कविरूप मे कैसें ह्वैं सकै ऐ। सहसानन शेष नाग हू आपके ऐश्वय अरु माधुय कौ वनन करिवे मे असमथ रहै ऐ—

कोटि कल्प वणन करै, सहसानन से शेष।
जगदम्बे, तव जस जदपि, अवामे रहे अवशेष ॥

यावद्देवी-देवादि रूप सिगरे मातृ शक्ति कौ प्रपच ए। इनकौ भेद पायबे की क्षमता काहू मे नाय।

त्रोटक

नाहि आदि न अन्नत न आकृति है, सब ही सब मे जिसकी गति है।
अधिकारिणी और निरजनी है, भव जीवन के दुख भजनी है।

भजगी

तू ही है अनादि नही अन्त तेरा, नही गम्य है रम्य आकार तेरा।
तू ही इन्द्र रुद्रादि विष्णु विधाता, नमो विश्व माता, नमो विश्व माता ॥

समस्त प्रकृति प्रपच भगवती कौ ई सरूप ऐ। मातृ शक्ति को विभु रूप कौ वर्नन करते भए लिखै ऐ—

1 शिवा-शिव महिमा—दोहा 3

सबैया

द्विजराज दिवाकर लोचन द्वै, द्युतिमान गृहादि रहावलि है।
गति श्वास प्रश्वास समीर चले, तृण बल्लारि वृक्ष कचावलि है।।
जल रक्त बहे सरिता धमनी, हिय सिंधु पताल पदावलि है।
शिर उर्द्ध्व लोक स्वरूपिनि मा, सुनिये शिशु को विनयावलि है।।

कविवर को माननो ऐ कै माता अपने सुत के अपराध पै ध्यान नाय देवै। बालक तौ अपराध करते ई रहै, पर मैया उनै सदा क्षमा करती रहै–

जगदम्ब नही शिशु का जननी सुनि रोदन को वह धैय धरै।
अविलम्ब उठा निज अंकन म, पय पान करा सब कष्ट हरै।।
वसनादि भरे मल मूत्रन सौं, पुनि चचल पाद प्रहार करै।
पर मा उसके अपराधन को, मन रजन मान सुमोद भरै।।

या लिये माता सौ निवेदन है—बालक समार मे वासनादिकन मे फँस कै अपराध ग्रस्त ह्वै गयौ ऐ। मैया बालक के अपराधन कूँ क्षमा करिकै, वाय जगत जाल सौं छुट-कारौ दिवावै–

बिसरौ शिशु के अपराध सभी, शिशु का वर प्रेम नही विसरौ।
तन की भय ताप विनाशन कौं, सु सुधाकर सा कर शीश धरौ।।
रसना उर और विलोचन म, विभु मातृ विशेष सदा विहरौ।
नत्र ध्यान निभान तुरीय दशा, करके जग जाल विमुक्त करौ।।

व्यक्ति सामथ्य रहते भये अपने बल कौ अभिमान करीकै वाके महारे ते ससार मे मे प्रवृत्त होय। पर जब शक्ति क्षीण है जावै तब वो सव नियन्ता की सरन मे जावै। भक्त कवि बुढापे मांहि प्रवेश करिकै मातेश्वरी सौ प्राथना करै ऐ—

सिर के सब बाल सफेद भये, अति अल्प विलोचन दष्टि रही।
करि रीढ़ कसेरू झुक धनु ज्यौ, पद कम्पन से कर यष्टि गही।
तन क्षीण बिलीन रदावलि है, वय जीण व्यथा नहिं जाय सही।
जगदम्ब तवात्मज है जग मे, अब आप बिना अवलम्ब नही।।

शिवा ते शिव कौ अभेद ऐ। जासौं शिव महिमा गायबे मे भक्त उतनौ ई गौरव मानैं—

रे शिव मेरा करहु शिव, रे भव हर भव भीति ।
हे हर अघ हर पालिये, पतित उधारक प्रीति ।।

यमक विशिष्ट अलकारन सौ युक्त दोहा मे शिव कौ पतित पावन रूप वनन कियौ ऐ । शिव अपने काज कोई ऐश्वय नाय स्वीकारैं, पर भगत के काजै काई सम्पदा देवे मे सकोच नाँय करैं । स्वय नि स्व होते भये हू, भगत के काजै सब सम्पदा बक्सीस देवैं ।

पात्र खोपडी अजिन पर, अहि धन गेह मसान ।
तब ढिग ये पर लोक त्रय, दे सकता तू दान ।।

शकर भगवान परम उदार अरु पर दुख भजक एँ । कामदेव जैसे प्रबल लोक-अरि कौ मारिवे मे भागीरथ के हिताथ गगा कूँ सिर पै धारिवे मे अरु परहित के काजै विष-पान करिवे मे इन्ने कोई सकोच नाय कियौ ।

धारक सुर सरि शशि धवल, मारक अधक मार ।
दारक दुख जन दीन के, प्रभु शिव परम उदार ।।
वृषकेतु विष को पिया, छक परहित के छोह ।
इनके उर आया नही, घर घरनी का मोह ।।

मानव ईश्वर की एकात्मकता कूँ यो नाय समझै कै वाकै अनेक भाषान मे अनेक नाम देखिवे कूँ मिलै पर इश्वर एक ई तत्व हे—

मानव मत भाषा विविध, उनमै नाम अनेक ।
अनुपम आकृति रहित विभु ईश्वर सबका एक ।।

मनुष्य ईश्वर के रूप कूँ नाय देख सकै । जासौ बाके अरु नाय होयवे के बारे मे तक वितक करै । बाकी अल्प बुद्धि के माहि सब व्यापक ईश्वर कौ ज्ञान सभव नाय । जासौ मनुष्य कूँ आपसी झगडन कूँ छोडकै मानव धम कौ पालन करनौ चहिऐ । मानव धम को परिपालना ई ईश्वर की साची सेवा ए—

कुण्डलिया

ईश्वर है या है नही, है तौ कवन प्रकार ।
इस पर तनक विक कर, निज मति के अनुसार ।
निज मति के अनुसार, व्यथ खल वाद बढाते ।
भ्रातृ भाव को भूल, द्वेष—पावक दहकाते ।।
झगडे झझट छोड, धम मानव धारण कर ।
मानव मति गति अल्प, समझ वह सकत न ईश्वर ।।

☐ डॉ पुष्पेश कुमार मिश्र बी ए एम एस
शास्त्री सदन, कामाँ (भरतपुर)

———————

काव्यमय पत्रन मे ठा जसकरण खिडिया

हरेक कवि जो छदमय रचना करे वे अपने जीवन म कमोवेसी पद्य माहि पत्र जरूर लिखै । थोरे आखरन म मन की बात काव्यमय पत्रन म विसेस कारगर होय । हमनै घनऊ मानस ऐसे देख हे जो पत्रन कौ उत्तर नाहि दै । पर, काव्यमय पत्र ऐसौ असर करै कै बिनकौ उत्तर दैनौ ही परै । ई बात मनगढत ना८ । निरखी परखी भई है । हाँ एक बात जरूर है – कविता मे मिले पत्रन नै लोग बडे सहेज कै रखै । सयोग सौ मोय वयोवृद्ध मनीमी ठा जसकरण खिडिया के हाथ मौ लिखे भए कछू काव्यमय पत्र मिले । मैंनै ह बिनकू सम्हार कै राखौ । बिनकौ ब्यौरौ ज्यौ की त्यो दै रह्यौ हू । ये 9 पत्र मेरे निजी सग्रह म है जि नै काल क्रमानुसार अपनी टिप्पणी के सग प्रस्तुत कर रह्यौ हू –

(1) सबसौ पहलै 8-12-78 कू ठा जसकरण खिडिया कौ एक पत्र मिल्यौ । पत्र के सग 'वीर दुर्गादास राठौर कौ बादसाह औरगजेब के नाम पत्र' पद्धरी छदन मे पिंगल सैली म लिखी भई रचना हू मिली । मलसीसर (शेखावाटी) के विद्यानुरागी ठा शिवनाथ सिंह के अनुरोध पै रचित कुल दो दोहा अरु 54 पद्धरी छदन मे सजोई भई बू रचना या ताँई भेजी कै बू कहू छपवा दई जाय या सम्हार कै हिफाजत सौं रखी जाए । मूल रचना कवि नै अपने हाथ मौ सुलख मे लिखी बाके सग जो छोटौ सौ पत्र हौ, बू या तरिया सौ हौ

सेवाग,

श्रीमान डॉ शक्तिदान स। कविया,
पोलो – 2 पी जोधपुर (राज)

दोहा— मलसीसर शिवनाथ को, पुनि पुनि आग्रह पाय ।
खिड़िया नै अंकित करी, पद्धरी छंद बनाय ।।
यह अब भेजौ जा रह्यौ, कवि कविया के पास ।
उसकी इच्छाधीन अब, होगौ नाम विकास ।।

(2) ऊपर लिखे पत्र के पाछै लम्बौ समै बीत गयौ । अचानक 6-10-91 कूं दूसरौ पत्र मिल्यौ । या पत्र मे 'यशकरण दोहावली' को दूसरौ भाग अरु 'उद्‌बोधन काव्य' कौ पहलौ भाग प्रकाशित करबे की मन की प्रबल इच्छा प्रगट करी । मेरी राय भी चाही । बुढापे की झोझरी देह कूं ध्यान में रखतं थका कवि नै अपने मन की टीस यों उकेरी है—

दोहा — कर कम्पन की बजह सौ, सुंदर लिखा न जाय ।
टेढे मेढे बरन ये, पढियौ चित्त लगाय ।।
कछु मेरे काव्यादि नै, पायौ नहा प्रकास ।
उन्हे प्रकाशन हेतु अब, करिए आप प्रयास ।।
पारस सी तब भूमिका, कृपया देहु लगाय ।
लोहे जैसे काव्य कूं, सौनौ देहु बनाय ।।
कविया कुल म सूय ह, श्री कवि शकतीदान ।
याके पुंज प्रकास सौ, गम्य काव्य द्युति ज्ञान ।।
सूरज सकतीदान को, पस्मरियौ परकास ।
कविता रूपी कमल सौं, हर ठां होय विकास ।।

निवेदक—
यशकरण खिड़िया
शिव आश्रम, पुराना बस स्टैण्ड
आजाद नगर, भीलवाडा (राज)

(3) लगे हाथ, 22-10 91 कूं तीसरौ पत्र मिल्यौ जा या तरिया है— आपके दि 19-10-91 के पत्र के उत्तर मे निवेदन—

दोहा— नही अधिक धन बल रह्यौ, नहिं सेवक सहयोग ।
सायद इक दो साल मे, होगौ देह बियोग ।।
अब मेरे हित उचित हैं, चम्पत करनौ चाह ।
आ पहुची अति निकट वह, मृत्यु बढ़ा निज बांह ।।

जब तक मेरी जिंदगी तब तक रख कर प्रेम।
कुमन पत्र लिखते रहहु, यहहि निभावहु नेम ।।

निवेदक — [illegible] खिड़िया

(4) 21-2-92 कूँ आपने पत्र म लिखो —

(ओउम)

निवेदन, आपरो 17-2 92 रो कार्ड मिल्यो। धन्यवाद। शिवा-शिव महिमा अरु दोहावली आज जयपुर डाक सौ आपके लिखे पते पै भेज रह्यो हू। आप मुद्गल जी सचिव कूँ सूचित कर दीजिगो। सवैयावली की [illegible] कापी कुटिया मे काफी ढूँढी पर नाँय मिली। कोऊ नकल करबे कूँ लै गयो फिर माय याद नाय रही। याद आते ही बाय मँगाकै आपके पास भेजुँगो।

दोहा— परिजन अर परिवार कौ, अब है अल्प सनेह।
यह मेरे हित दुखद अति, अधिक उमर की देह।।
छाय रह्यो है जगत मे, स्वारथ को उन्माद।
करत न जन करतव्य की, या युग मे कछु याद।।

—यशकरण खिड़िया

(5) 23 6-92 के पत्र म खास खास बात यो लिखी—

निवेदन,

शिवाशिव महिमा' अरु 'दोहावली' प्रथम भाग आपके पास नही होय तो सूचित करे, ताकि भेजी जाँय। बहिन प्रभावती जी आपकूँ सुभासीस लिखा रही है। इनकी 'काव्यलोक' पोथी नही होय तो भेजी जाय।

दोहा- बालकाल मे ब्याह भौ, पिता गए तन त्याग।
अपढ रह्यो, इत उत भ्रमौ, रख ईसर प्रति राग ।।
याते उर सान्ती रही, सहन भए गद सोक।
अब ईसुर ते याचता, परम सान्ति परलोक ।।
सोतो रह्यो प्रमाद मे, खोली कबहु न आख।
अब आतुर उडनो चहत, प्रान-पखेरू पाँख ।।
लिख न सकूँ लेखक नही, नहि रहती कछु याद।

कविया जो चाहौ करहु, यन मेरी फरिया द।
जब तक जीवित जगत मे, मेरी जीविन नेह।
तब तक कनिया राखिये, यापै अटल सनेह।।

पढन मनन की लगन रख, सुजनन कौ कर सग।
यासौ मेरे हिय पै रूचिर चढी कछू रग।।

अपन भोग विलास सौ, पसा सदा बचाय।
बिविध विसै पोथीन कूँ, पढत रहौ मँगवाय।।

—निवेदक यशकरन

(6) 4-9-92 कू एक छोटौ सौ पत्र मिल्यौ जाम माल नह भरो न्यौतौ मिलबे के ताई दियौ पर मै सासारिक जजालन मे फसौ भयौ जाय नही पायौ। पत्र अविकल रूप सौ यो है—

श्री कनिया साहब सुनहु मेरो विनय पुकार।
मन मेरौ हरसित करहु, कृपया यहाँ पधार।
अमन बसन सौ सवदा, होय रह्यो निरवाह।
अब तौ तुमसौ मिलन की, चित म कवल चाह।।

निवेदक—यशकरण खिडिया
शिव आश्रम, आजाद नगर
भीलवाडा, दिनाक 4-9-92

(7) सातवे पत्र म 8-12-92 कूँ एक छोटी सी सिलिप मिली जाम राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी क अध्यक्ष श्रीयुत मोहनलाल जी मधुकर नै जो 'ब्रजशतदल' पत्रिका भेजी वाए पायकै प्रसन्नता जाहिर करी। मग मे सम्मतिपरक एक दोहा लिख्यौ—

मधुकर नै मधुरस भरो, याम अधिक सवाद।
पात्र पत्रिका शुद्ध यह, तनिक न त्रुटि प्रमाद।।

– यशकरण खिडिया

(8) 29 1-93 कूँ पत्र मे पूज्य कविवर नैं मरे सारे पीरदान देथा (खारोडा उमरकोट) के सग आतिथ्य हेतु नेह भरो न्यौतौ भेजौ। पीरदान जी पाकिस्तान के नागरिक हैबे के कारन बीसा सौ बधे भए हे। पासपाट मे जिन-जिन ठौरन कौ अकन हो वही जा सकै हे और मैं हू अपने सारे (पीरदान देथा) की भतीजी के ब्याह मे लग्यौ रह्यौ। यासौं जाइबे कौ सुयोग हाथ नही लग्यौ। कवि कौ छोटौ सौ पत्र पत्र यो हौ—

(ओउम)

श्रीमान डॉ कविया साहब सौ निवेदेन यदि सभव हो तौ अपने साल्याजी ऋ सग दरसन देवे की कृपा करे।

दोहा—   दोनो के दरसन बिना, है मन चित्त अधीर।
आवहु इत कविया सहित, पीरदान बन पीर ।।

निवदक :- यशकरण खिड़िया
दिनाक 29-1-93

(9) 12-2-93 कूं श्रद्धेय कविवर यशकरण जी खिडिया नै पुराने कागज पै रूल पेसिल सौ लिखौ पत्र लिफाफे मे भेजौ। या पत्र ने मेरे ताई अरु श्री मधुकर जी कूं इक जाई सदेस हौ। अकादमी की ओर सौ बिनकौ मोनोग्राफ छपनौ तै भयौ। सग मे धौलपुर मे बिनकूं सम्मान समारोह म जानौ हौ। बि नै दुबल देह सौं लम्बे सफर करवे मे असमथता प्रकट करी। क्षमा याचना चाहते भए एक इच्छा जरूर प्रकट करी कै बिनपै प्रकासित हैबे वारी पोथी की दस प्रति अरु सम्मान के आखरई काफी हुगे। वह ऐतिहासिक महत्व कौ पत्र या तरिया है—

(ओउम)

निवेदन,

श्रीमान डॉ शक्तिदान जी कविया साहब,
व मधुकर जी साहब सौ

दोहा —   मेरौ जीर्ण शरीर है, धौलपुरम अति दूर।
आय सकूंगौ मैं न उत, करियौं माफ कसूर ।।

मैं हू सौरभयुक्त कछु, जड तरु कौ नहि भान।
कवल मधुकर ही करत, या गुण की पहचान ।।

मधुकर तरु के निकट आ, करत प्रदर्सित प्रीति।
मधुकर जी अपनाइए, मधुकर की यह रीति।

दस प्रति पुस्तक साथ मे, सिफ सब्द सम्मान।
मेरे हित दुलभ यही, करिए आप प्रदान ।।

निदेदक — यशकरण खिडिया
शिव आश्रम, भीलवाडा, दि 12 2 93

कविया जो चाहौ करहु, यह मेरी फरियाद ।
जब तक जीवित जगत मे, मेरी जीर्णित देह ।
तब तक कविया राखिये, यापै अटल सनेह ।।

पढन मनन की लगन रख, सुजनन कौ कर सग ।
यासौ मेरे हिय पै, रूचिर चढौ कछु रग ।।

अपन भोग विलास सौं, पैसा सदा बचाय ।
विविध विसै पोथीन कूँ, पढत रहौ मँगवाय ।।

—निवेदक यशकरन

(6) 4 9-92 कूँ एक छोटौ सौ पत्र मिल्यौ जाम माघ नह भरौ न्यौतौ मिलबे के ताईं दियौ पर मै सासारिक जजालन मे फसौ भयौ जाय नही पायो । पत्र अविकल रूप सौ यो है—

श्री कविया साहब सुनहु मेरी विनय पुकार ।
मन मेरौ हरसित करहु, कृपया यहाँ पधार ।
असन-बसन सौ सवदा, होय रह्या निरवाह ।
अब तौ तुमसौ मिलन की, चित म केवल चाह ।।

निवेदक—यशकरण खिडिया
शिव आश्रम, आजाद नगर
भीलवाडा, दिनाक 4-9-92

(7) सातबे पत्र म 8-12-92 कूँ एक छोटी सी सिलिप मिली जामे राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी क अध्यक्ष श्रीयुत मोहनलाल जी मधुकर नै जो 'ब्रजशतदल' पत्रिका भेजी वाए पायकै प्रसन्नता जाहिर करी । मग म सम्मनिपरक एक दोहा लिख्यौ—

मधुकर नै मधुरस भरौ, याम अधिक सवाद ।
पात्र पत्रिका शुद्ध यह, तनिक न त्रुटि प्रमाद ।।

- यशकरण खिडिया

(8) 29 1-93 कूँ पत्र मे पूज्य कविवर नैं मरे साले पीरदान देथा (खारोडा उमरकोट) के सग आतिथ्य हेतु नेह भरौ न्यौतौ भेजौ । पीरदान जी पाकिस्तान के नागरिक हैबे के कारन बीसा सौ बधे भए है । पासपोर्ट मे जिन-जिन ठौरन कौ अकन हौ वही जा सकै है और मैं हू अपने सारे (पीरदान देथा) की भतीजी क ब्याह मे लग्यौ रह्यौ । यासौं जाइबे कौ सुयोग हाथ नही लग्यो । कवि कौ छोटौ सौ पत्र पत्र यो हो—

(ओउम)

श्रीमान डॉ कविया साहब सौ निवेदन यदि समव हो तौ अपने सालाजी व सग दरसन देने की कृपा करें।

दोहा— दोनों के दरसन बिना, है मन चित्त अधीर।
आवहु इत कविया सहित, पीरदान बन पीर ॥

निवदक यशकरण खिड़िया
दिनाक 29-1-93

(9) 12-2-93 कूं श्रद्धेय कविवर यशकरण जी खिडिया नै पुराने कागज पै रूल पेसिल सौ लिखौ पत्र लिफाफे म भेजौ। या पत्र ने मेरे ताई अरु श्री मधुकर जी कूं इक जाई सदेस हो। अकादमी की ओर सौ बिनकौ मोनोग्राफ छपनौ तै भयौ। सग मे धौलपुर मे बिनकूं सम्मान समारोह म जानौ हो। बि नै दुबल देह सौ लम्बे सफर करवे मे असमयता प्रकट करी। क्षमा याचना चाहत भए एक इच्छा जरुर प्रकट करी कै बिनपै प्रकासित हैबे वारी पोथी की दस प्रति अरु सम्मान के आखरई काफी हुगे। वह ऐतिहासिक महत्व को पत्र या तरिया है—

(ओउम)

निवदन,

श्रीमान डा शक्तिदान जी कविया साहब,
व मधुकर जी साहब सौ

दोहा -- मेरौ जीर्ण शरीर है, धौलपुरम अति दूर।
आय सकूंगो मैं न उत, करियौं माफ कसूर ॥
मैं हू सौरभयुक्त कछु, जड तरु कौं नहिं भान।
कवल मधुकर ही करत, या गुण की पहचान ॥
मधुकर तरु के निकट आ, करत प्रदर्सित प्रीति।
मधुकर जी अपनाइए, मधुकर की यह रीति।
दस प्रति पुस्तक साथ मे, सिफ सब्द सम्मान।
मेरे हित दुलभ यही, करिए आप प्रदान ॥

निदेदक—यशकरण खिडि॰
शिव आश्रम, भीलवाडा, दि 12 2 93

आखीर मे या ठौर पै ई लिखिबौ जरूरी है कै मैं और खिडिया दोनो एक दूसरे कूँ कवि रूप म ही जानै हे । कबहू मिलिबे कौ सुयोग नही मिलौ । जाँ, एक बेर 23-9 91 कूँ भीलवाडा जाइबे कौ औसर हाथ लग्यौ । वहाँ हिन्दी के प्रख्यात कवि मनीषी डॉ रामेश्वरलाल खण्डेलवाल तरुण कौ नागरिक अभिनदन कौ आयोजन हो । ता समै भीलवाडा क जिला परिवहन अधिकारी श्री गोपालदान रत्नू जो मेरौ भानजौ है बाके सग खिडिया जी के दरसन कौ लाभ मि यौ । लगभग आधे घण्टा तक बिनकौ सतसग अरु सान्निध्य सुख मिल्यौ । न वाते पहलै मिलिबौ भयौ न बाद मे । तौऊ मोकू इतेक काव्यमय पत्र लिख दिए । मोय बडौ अचरज होय । एरौ वयोवद्ध कवि नै जब मो जैसे अपरिचित के ताई इतेक पत्र लिख दिए तौ न जानै जीवन म अपा लोगन क ताँई किलेक पत्र लिखे हुगे । म कहनौ चाहूगाँ कै खिडिया जी के पत्र साहित्य कौ सकलन कर लियौ जाय तौ यह अत्यधिक महत्व कौ होयगौ । सचमुच श्री खिडया की रससिद्ध रसना सौ काव्य के उदगार सहजई झरना की नाई झर झर झरत रहे । वे सचमुच कवि कुल परम्परा के जन्मजात कवि है । मेरी हार्दिक मगलकामना है कै कविवर श्री यशकरन जी खिडिया अर बिनकी अनुजा प्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती प्रभावती देवी दोनो भाई बहिन स्वस्थ रह । सुदीघजीवी होइ ।

प्रोलो द्वितीय, जोधपुर (राज)

--- ---

डा कविया नै साची कही है बिनै जीवन मे अनकन कूँ अनक पत्र लिख हुगे । एक उदाहरण दैकै श्री शक्तिदान जी की बात कौ समथन यो कर रहे है—

हम 22 3-91 कूँ भीलवाडा हे है लौट रहे हे । श्री खिडिया जी सौ मिलिबे कौं मन कर रह्यौ हो । वे कुटिया पै मिल । पहल-पहल कौ मिलन हो भाव विभोर है गए । हमहू अपनी सुध बुध भूल गए । एक घण्टा तक बतरामत रहे । जब अपने वाहन मे बैठ गए तौ चाय की हठ कर बठे । चाय पान कछु लोगन नै करौ पर कछू बिनकी बानी सौं ही तृप्त है गए । थोरे दिना पाछै जिनतो नेह भरौ पत्र यो मिल्यौ—

श्री मोहनलाल जी मधुकर साहब,
श्री गोपाल प्रसाद जी मुदगल साहब सौ हार्दिक निवेदन—

> कियौ नही जलपान कछु, लौट गए झट आप ।
> अब पुनि आ, जलपान कर, हरिए मम हिय ताप ।।
> या जग म मरौ नही, अधिक दिनन तक बास ।
> अब द्रुत पुनः कीजिए, तब दरसन की आस ।।

निवेदक—यशकरण खिडिया
शिव आश्रम, आजाद नगर, भीलवाड

दोहान पाछै लिख्यौ–मेरी परिचय पोथी कब तक प्रकासित है जायगी ? सूचित करियौ ।

पातो पायकै हम विभोर है गए । उत्तर हू दियौ या तरिया—

आदरनीय रोडिया जी,
पाती पाई । मन कूँ भाई ।
दरसन करकै आपकै, हम तौ भए निहाल ।
मधुकर अनुचर आपके, सेवक है गोपाल ।।
जो तुमसौं नेहा मिल्यौ, कैसै करै बखान ।
मन नेहा सौ भर दियौ, भूल गए जलपान ।।
या विधि सौ मिलते रहौ, पत्र भेजकै आप ।
सौ बरसन लौ तुम जिऔ, मिटै जगत त्रय ताप ।।
परचै पोथी छपैगी यामै नाहै देर ।
अगली पाती मे तुम्हे, दऊँ सूचना फेर ।।

भवदीय
गोपाल प्रसाद मुद्‌गल

रचियता-श्री यशकरण खिडिया

दोहा— सुरसुति का वाहन सदा, मोती चुगत मराल ।
सुरसुति की कर नही सकत, समता सुर सुरपाल ।।

शिवा महिमा

सवैया— गिरिराज सुता सुत के गुन का, सहसानन स तत गान करै ।
पर पार उसे न मिला अब तौ इक ग्राम्य कहौ क्रिम पार परै ।
वरदायक बारन आनन का, सुभ नाम सदा जन जो सुमिरे ।
उसका नहिं काय अपूण रहे सब बाधक विघ्न समूल टरै ।।

सबही निज स्वारथ मे रत है, परमारथ रोंदि रखे पग मे ।
तब लो तिय प्रीति करे पति सौ, जब लो वह जौबन के मग म ।
शिशु रक्षण हेतु सतक रहे, तब रक्त बहे तब लो रग मे ।
तब त्याग स ेह सनी प्रतिमा, जननी, सम और नही जग मे ।।

द्विजराज दिवाकर लोचन द्वै, द्यु तिमान गृहादि रदावलि है ।
गति श्वास प्रश्वास समीर चहै, तृण वल्लरि बृक्ष कचावलि है ।
जल रक्त बहे सरिता धमनी, हिय सिन्धु पताल पदावलि है ।
शिर उद्ध व लोक स्वरूपिनि मा सुनिये शिशु की विनयावलि है ।।

भव रक्षिणि पोषणि भव्य भवा, भव को सुख सम्पति से भरिये ।
शिव शक्ति समन्वित मातृ शिवा, करते शिशु का शिव नाटरिये ।

हरिये दुख दारिद आदि हरा मद आदि विकारन को हरिबे ।
रमिये मम मानस मदिर मे, निज साथक नाम रमा करिये ।।

अपस्तारथ प नग दश लगा, शुचि शाति प्रदायक बुद्धि हुई ।
अघ कवर सग्रह खूब किये, तब भक्ति सुदिव्य मणी न छुई ।
शठ पूत कुपूत अनेक हुए पर मातृ कुमातु कभी न हुई ।
कृपया जगदम्ब निकाल मुझ, गिर त्रस्त हुआ भव पक कुई ।।

जबलो तन म बल है तबलो, तिय मानत है अपना पति हे ।
इम हो सुत ब धु मखादि सदा, रखते स्वारथ मे रति है ।
परमारथ का नही पान्थ यहा, भव मे भ्रम पूण रखे मति है ।
मम अ तिम आप बिना जननी, अब शेष न और कही गति हैं ।।

सिर क सब बाल सफेद भए, अति अल्प विलोचन दष्टि रही ।
कटि पीठ कसरू झुक धनु ज्यो, पद कपन से कर यष्टि गही ।
तन क्षीण विलीन रदावली है वय जीण व्यथा नहिं जाय सही ।
जगदम्ब तवात्मज के जग मे, अप आप बिना अवलम्ब नही ।।

शशि शखर मग्न समाधि रहे जब जाग्रत तो विजया निगले ।
चमु भूत पिशाच चुडैलन की, उतपात अनेक मचा मचले ।
अहि आंख मयूर हरी वृष भी, इक ऊपर एक करे हमले ।
जगदम्ब बिना जगदीश्वर के कुछ भी घर का नहिं काम चले ।।

दोहा—

क्राति को उपदेश कर, कर तब आय सशक्त ।
शक्ति समर मे पीजिए, परदेशिन करु रक्त ।।
भारत क भयभीत जन, सह न सकत अब त्रास ।
दानव दुष्ट विदेश क काली करहु विनाश ।।
रच चण्डी रण कीजिये, ले तलवार त्रिशूल ।
अब अविलम्ब उखाडिये, शासन ब्रिटिश समूल ।।
गोरन के बहु गुप्तचर, भ्रमते भेद न पाय ।
मुझको तू मानेश्वरी रिपु से रखति बचाये ।।

कुण्डलिया -

मां शिशु को पुचकारती, पुनि पुनि करती प्यार ।
पर शिशु उसके उदर पर, करता पाद प्रहार ।।

अति पातक ग्रस्त म न नन को, नित रक्षित रौरव म दहते ।
सुर लोक धराधिप को पद द, उर नग धडग सदा रहते ।।

भव अणव कष्ट विलान भग, अति लोभ बवडर की लहरे ।
ममता बडवानल क्रोध अही, मद ग म कु ग्राह यहा बिहरे ।
मम जीवन मध्य अटक्क पडा, अघ पत्थर शीष अनेक धरे ।
शिव नाविक की करूणा तरणी, बिन का मुझ को पर पार करें ।।

हिय फुफ्फुस जीवर जीण हुए, शुचि रक्त प्रवाह नही रग मे ।
कमजोर विलोचन कण हुए कर कम्पित ग ा है पग म ।
फिर भी न विवेक विचार कर, मन मूढ चल भ्रमता जग म ।
जगदीश्वर को जप रे शठ तू ा नीवन अल्प रहा जग ा ।।

कमलामर केशव वासव स, सुर न रन का यह आगम है ।
इम ही ऋषि सिद्ध मुनीशन का, नहि आगम तत्र कभी कम है।
रजनीचर दानव दैत्यन से, गण भूत मलीन महा धम है ।
कुछ भी न अछूत विचार वहाँ, शिव के दरबार सभी सम है ।।

शुचि पन्थ चलाय सदा तुझको, अपक्रम कुकण्टक टारहिंगे ।
तव मस्तक ऊपर स्नेह सदा, नित पकज सा कर डारहिंगे ।
शिशु हो शरणे रह रे उसके वह अधम आदि बिसारहिंगे ।
करूणाकर शकर सा न कही, अपन जन आप उधारहिंगे ।।

तन लाल हुआ बल वारि विना, नय चन्द्र बिभाकर रश्मि परी ।
वर यौवन पकज पुष्पन की, पखुरी सुपराग प्रभा प्रजरी ।
बिन दष्टि निढाल रहे सुठि चचल लोचन की सफरी ।
कष अग उपागन दादुर है, मद मस्त रहै ममता मकरी ।।

अप कमन कण्टक ह वविये श्रुति क शुचितम मारग को अपना ।
पुनि पावन सयम शाति गहो, तज काम विकारन से तपना ।
नहिं वीतत वैर लगे कुछ भी, इस नश्वर जीव का सपना ।
मन की गतिये कर निश्चल तू, जनि भूलहुरे शिव को जपना ।।

रसना वह मेढक सी रसना, जिसमे शिव जाप सुधा न पिया ।
श्रुति रन्ध्र भुजगम के बिल से, श्रुति वाक्य नही श्रवणस्थ किया ।

कर थूहर नागपणी सम है, दुखिया जन को नहि दान किया ।
बनमानुष सा वह मानुष है, जिसने न कभी परमाथ किया ।।

अविनेश्वर का उर ध्यान नही, धन सग्रह का उर ध्यान धरे ।
सकुचे करते शुभ कर्म सदा करते अपकर्म नवीन डरे ।
गुजरे निसि वासर की घडिये, घडिये इम आयुस की गुजरे ।
निरखें नित ही पर का मरना, इस पै अपना न विचार करे ।।

अति मिष्ट अलापिनि कोकिल है, पर कुत्सित कारन से पर है।
बल पूण विशाल मतगन का, उर भीरू अतीव भरा डर है ।
दल नीम निवारक रोग घन, पर वे कडुवापन का घर है ।
गुन औगुन युक्त सभो जग म, बिन औगुन एक विशभर है ।।

कृपि कौन किसान जमाय सके, थिर प्राप्त नही जब लौ थल है।
बपु वशन मीन बढाय सकै, जब लौ न रहै सर म जल है ।
निज ध्यान न पूण निभाय सकै, चित की वतिये जब लौ चल है
प्रतिबिम्ब न देख सकै प्रभु मन दपण पै जब लौ मन है ।।

तन पिंजुर को तज के उडि है, जब प्राण पखेरू बिना पर के ।
सहगामिनि हू नहि सग चलै, न चलै सुत बधु सखा घर के ।
फिर क्यो फसता जग फ दन मे, अपनापन को अपनाकर के ।
मन चार विकार विहीन बना, शरणागत हो रह शकर के ।।

षट्पदी—

अति उतग कैलास शिखर सुन्दर हिम छादित ।
आसन बर अवदात, तत्र तृभुवन पति राजित ।
अक कनक अरु भग गरल पुनि पुनि गटकाते ।
अरुण नयन जिमि अक, कलम कलिये चटकाते ।
पुनि पचानन के चम का, अमल वसन इक अग पर ।
ऐसे अनूप शिव रूप का, रे मन! तू नित ध्यान धर ।।

दोहा—

थके सहस मुख शेष के, शिव यश स तत गाय ।
एकानन अल्पज्ञ किम, पूण कथन कर पाय ।।

मैं नहि थकिहो नाथ अब, करते करते पाप ।

हार मान जनि बैठना, हरते हरते आप ॥

वीतराग शिव कीजिए, मम हिय म अनुराग ।
यह पतग होकर जले, तव सनेह की आग ॥

पीता प्रतिदिन भग जो, रहता नग धडग ।
करि है वही अनग अरि, भव दुख मेरा भग ॥

भूषण भयद भुजग के, श्रवत शीश से गग ।
शिवा सग जो रहा वह, करिहै मम दुख भग ॥

जिनके अग विभूति है, चख विधु अनल पतग ।
तिपुर भग जिसने किया, वह करि है दुख भग ॥

आशुतोष शिव पर अटल, रे मन रख विश्वास ।
वह हा हरिहै त्रास तव, औरन की तज आस ॥

अति वैभव अति दीनता दोनो ही दुख मूल ।
मध्य दशा मेरी रखहु, यदि प्रभु तू अनुकूल ॥

अधम शिरोमणि एक मै, मुझसा अधम न आन ।
अधम उधारन बान निज, भूलहु नहि भगवान ॥

जीवन नौका जग उदधि मोह भवर मझधार ।
मेरे असु मल्लाह का, प्रभु होवहु पतवार ॥

विश्वेश्वर मेरी विनय, सुनिये श्रवण पसार ।
वैश्या वैद्य वकील का, दिखलाना नही द्वार ॥

सब सुर मानव स्वार्थरत, परहित स नहि प्रीति ।
हे समर्थ शिव शरण मे, भय बिन भय की भीति ॥

पटक सुमति के पिजरे कर बदी मन कीर ।
शिव शिव रटन सिखाइये, भजन को भव पीर ॥

धारक सुरसरि शशि धवल, मारक अधक मार ।
दारक दुख जन दीन के, प्रभु शिव परम उदार ॥

मानव मत भाषा विविध, उनमे नाम अनेक ।
अनुपम आकृति रहित विभु, ईश्वर सबका एक ॥

उडिजहै अब अन्य ठा, मेरा जीव मराल ।।

पाषक है माता पिता, जगदम्बा जगदीश ।
अभिमानी आगे कभी, नत करिए नहिं शीश ।।

क्षीण क्षीण सब अग है, है उमग की भग ।
तृष्णा तरूणी सग मे, रे मन कर न प्रसग ।।

वीत रहे वय साथ म, थोथे यौवन थाट ।
अब तो आवहु मूढ मन, बानप्रस्थ की बाट ।।

कटि झुक हुई कमान सी, श्याम शिरोरुह श्वेत ।
रे मन अब नहिं राखिये, हिरन नयनि से हेत ।।

घडी घडी तन वय घट, चित तू शुचि पथ चाल ।
घडी घडी तुझको कहे, गजन कर घडियाल ।।

या— जा भारत क रण जूझ मरे, कुल कौरव सयुत सब अनी ।
यवनादि अनायन आयन की, इस अचल मै तरवारि तनी ।
पहुमी नर मुण्डन पाटित हो, बहु श्रीपति की सरितादि बनी
अपनी अपनी कर अस्त हुए, अपनी किसकी न हुई अवनी

वपु उच्च विशाल विलोकि वथा गिरिराज सुमेरू गरूर करे
पर सनिधि के सब पत्थर वे परिवतन होन पडे प्रसरे
जिन ऊपर ही जग की जनता, पद न्याय समन्वित पाद धरे
मलयागिरि चन्दन की महिमा सब वृक्ष सुगधि सभान भरे

शुक की पिक की नहिं सगति है शिर वायस सच कुमाद ध
बहु कटक व्याप्त बिना छद की, कित पाथ वहा विसराम करे
अवलोकि मालव आम्रन का, मधुरामृत से रस पूर भरे
मरु म निज कोहि महागिन तू कर गव करीर वृथा इतरे

सब देश हमेश कलेश करे, इक से इक छीनत शासन को
कटु नीति रखे पर को मुचले परपच रखे पर त्रासन कों
अणु बम्ब अनेक बनाय रहे, विधि की सब सृष्टि विनाशन को
खल अमृत की नहिं खोज करे, नय मानव पूण विकाशन को

दुखिया जन के दुख मोचन मे, जिसका नित ही व्यय हो धन है।
यह जान न हिंसक कर्म करे, अपना तन सा पर का तन है।
शुचि शांति भरा प्रभु प्रेमसना, जिसके मन मे अपना मन है।
वसुधा पुर ग्राम प्रत्यक्ष वहा, जग मे वह पूज्य महाजन है।

करके इतना यह और किया, अब शेष रहा इतना करना।
करना जग कानन मे न कभी, अविलम्ब हि हो अपना मरना।
गहरा दुख कर्दम गत भरे, जब लौं झरता ममता झरना।
वर ज्ञान विराग मिले न बिना, अति दुष्कर है इसका भरना।।

कुण्डलिया- ईश गाड अल्लाह इक, भाषा नाम विभेद।
भाषा नाम विभेद से, खून बहाना खेद।
खून बहाना खेद, करो मत कभी लडाई।
ऊँच नीच नही एक, सब सम मानव भाई।
अप स्वारथ अज्ञान, खनी दुख भ्रम की खाई।
मानहु मानव धर्म उचित यह ईश रजाई।।

इतराता कम अनिल से, फूल खूब फुटबाल।
इत उत से उछलन लगे, चपल बना निज चाल।
चपल बना निज चाल फुदक फूला न समाता।
तब हि ठोकर त्वरित, खूब चहु दिशि से खाता।
बन कण्टक मे विद्ध, रिक्त रोता रह जाता।
है इम शठ जन हाल अल्प धन से इतराता।।

यशकरण दोहावली

विनय— गणपति सुरमुनि शिवशिवा, विधि कमला जगदीश।
नन्दी हनुमत राम सिय, देवहु शुभ आशीष।।

ईश-महिमा

ईश प्रेम के उदधि मे, डूबहु डुबकि लगाय।
ऊपर फिर तू आयगा, मुक्ति मुक्ता पाय।।

समय न व्यर्थ गमाइये, मंदिर मंदिर डोल ।
ईश लखहु अविवेक पट, मन मन्दिर के खोल ।।

मन मे मन्थन मनन कर, अतिशय रख अनुराग।
प्रकटेगा प्रभु तत्व तब, अरणी से जिम आग ।।

मानव मत भाषा विविध, उसमे नाम अनेक ।
अनुपम आकृति रहित विभु, ईश्वर सबका एक।।

धनं उदारता नम्रता, ये तीनो इक साथ ।
किसी एक को देत है, जो प्रसन्न जगनाथ ।।

जो देता सब जगत को, बसन असन सुख वित्त ।
तुझको भी देगा वही, रे निर्भय रह चित्त ।।

महादेव मिलि है नही, मन्दिर मूरति बीच ।
पावन प्रेम प्रदीप्त कर, हेरहु हृदय नगीच ।।

उस अनन्त विभु लखन का, कर कर कोटि उपाय ।
जन सब हारे जगत के, अलख लखा नहिं जाय ।।

वैज्ञानिक की बुद्धि गति, जब उड-उड थक जाय ।
तब अनन्त विभु ईश की आस्तिकता अपनाय ।।

जिव्हा पर तव नाम जप, हो हिय मे तव ध्यान ।
बिना व्याधि बिन कष्ट के, हर हरना मम प्रान ।।

कैसे हो किस रूप मे, तुझ न जाना जाय ।
जसे हो वैसे प्रभु रखो शरण अपनाय ।।

हितोपदेश

कर न सकत शुभ कर्म कछु मेरा जीर्ण शरीर ।
ईश अन्त इसका करहु, बिन आमय बिन पीर ।।

अचला चित वृत्ति यें, प्रेम भक्ति म लीन ।
उर अन्तर ईश्वर लखहु, ले विवेक दुरबीन ।

सब ही प्रभु का समझता, अपना कुछ नहिं मान ।

अष्ट भक्ति नहिं और है सवा भक्ति समान ।।

युवा उम्र म वी गई, जो भी अपनी भूल ।
वृद्ध हुए खटकति हृदय, वही भूल बन शूल ।

राम नाम अंकित तरे, जड पत्थर जल बीच ।
क्यो न तरे जग जलधि मे, राम नाम रट नीच ।।

अथ सयुन जग म अमर, राम भगत की प्रीति ।
इम सब स्राता राखिए लाभ रहित यप रीति ।।

भव से तजिए प्रीतिमन, भव स करिए प्रीति ।
भव म भव ही मेटिहै भव त। तीनो भीति ।।

दाम नाम रट छोड द, राम राम रट राम ।
दाम न देगे अ त म, राम बिना कुछ काम ।।

कब हू रक कुटीर पर, अतिथि न बठे आय ।
जिस द्रुम क फन दल नही, उस न खग अपनाय ।।

जो जन पागल श्वान जिमि, पर पीडन का धाय ।
व्यथ वहा उपदेश है समुचित दण्ड उपाय ।।

जैसा तुम पर स चहो, निज क प्रति व्यवहार ।
वैसा ही उससे रखो, सदा समय अनुसार ।।

सब जन रात स्वाथ हित, लखि मृत देह वियोग ।
सच्चा र न सनेह का, करते है कम लोग ।।

प्रेम न रहत प्रगाढ वहँ जहँ स्वारथ व्यवहार ।
जमे सिकता मदन को, गिरत न लागहि वार ।।

जिस जन के उर म अधिक, रहत सुयश की चाह ।
वह कब हू करता नही तन धन की परवाह ।

मानवता से मनुज है दिव्य गुनन से देव ।
दानवता से दुजन वह, समझा जाय सदैव ।।

यश लोलुप कम मनुज है जिनके हृदय विवेक ।
धन के लोलुप आजकल, जहँ तहँ भ्रमत अनेक ।।

कट मिटता करता नही, चढते चरखी चोख।
नहि तजता निज मधुर गुण, सीख ईख से सीख ।।

कबहु न दुष्ट कृतघ्न का, निज घर रखहु निवास।
अमर लता आश्रित विटप, वेगहि करहि विनास ।।

सेठ धनिक है राहु सम राष्ट्र अधिप राकेश।
सब ही प्रजा चकोर सम, किम यह मिटहि कलेश ।।

अन्ध बधिर उनमत्त हो, शठ शासक पद पाय।
तीन रोग तबही हटे, जब पद से हट जाय ।।

सुने-सुने माने नही, जहँ श्रोता उपदेश।
वह उपदेश न दीजिए, करिये व्यय न कलेश ।।

पीनस के रोगी कभी, समझ न सकत सुगन्ध।
नग द्युति कैसे निरखता, अँखिए जिसकी अँध ।।

पहले अपने दोष सब, करिए दूर निहार।
पीछे पर के दोष का करिए आप प्रचार ।।

सदाचार धन स्वास्थ्य हो, शुभमति सहित सनेह।
इतने जिस परिवार मे, स्वर्ग सरिस वह गेह ।।

धनिक सदा धनिक न रहै, दीन रहै नही दीन।
पूर्ण रिक्त जिम पात्र हो, अरठ चाल आधीन ।।

सुमति ब्रुश से सर्वथा, कर मल दूर कदम्ब।
दिल दर्पण पर देखिए, प्रभु का वर प्रतिबिम्ब ।।

पथिकन की हरता क्षुधा, ये लघु बेरी झाड।
ऊंचे हो अकडे वृथा, चढ पहाड शिरताड ।।

जग मुख लड्डू बूर का, जन सब रहे लुभाय।
बिन खाये पछता रहे, खाये वे पछताय ।।

रवि पर कीच उछालता, यदि क्रोधित हो रंक।
पहुचे वह न पतंग तक, गिरत रंक सिर पंक ।।

यदि शठ के कटु वचन से, क्रोध उमड कर आय।

तो रहिए कुछ समय चुप, रसना दशन दबाय ॥

कहत सभा में और कछु, करत रहत कछु और।
ऐसे झूठे धूर्त से, होत अहित हर ठौर ॥

जहाँ एकय तह शक्ति सुख, जह विभेद तहँ द्वेष।
द्वेष हि करता रहता है, नित नव कष्ट कलेश ॥

सम्मति सबकी प्रथम ले, करिए पूण विचार।
श्रेष्ठ सुगम जो होय वह, करहु उसे स्वीकार ॥

सुत हित धन सग्रह करत, कर-कर विविध प्रयास।
यदि वह होय कुपुत्र तो, शीघ्रहि करहि विनास ॥

अपव्यसनी, शठ आलसी, जो अपनो सुत होय।
उस हित सम्पत्ति-सदन-धन करहु न सग्रह कोय ॥

सुत उद्योगी मितव्ययी, अथक श्रमिक मतिमान।
उस हित धन सग्रह, वृथा होगा वह धनवान ॥

रद को क्रूर कठोर लखि, देता मुख बिलगाय।
रसना नम्र बिलोकि मुख, रखत सदा अपनाय ॥

गज पीछे करिये गमन, पथ निभय हो पार।
गदभ पीछे गमन से, मिलत दुलत्ती मार ॥

अगुवा उसको कीजिए, हो मग जानन हार।
अनजाने अगुवा बन, पहुच किम बन पार ॥

दुखद मोह, होता सुखद, सुमति ज्ञान के सग।
ज्यों र सुधा जैसे बने, पाय सुवैद्य प्रसग ॥

रहित बिभव तन रोग युत, परिजन दुजन पास।
मन अशात ता मानिए, निश्चय नक निवास ॥

ज्यो ज्यो बढ़ता जगत मे, कामिनि कचन-मोह।
त्यों-त्यो प्रतिपल मे बढ़त, दुखद परस्पर द्रोह।

काम-क्रोध मत्सर लोभ मद, औषधि एक विवेक।
इसके बिन जगत के पावत कष्ट अनेक ॥

अधिक लालची अन्त मे पाकर दुख पछताय।
जैसे मछली माम को, कंटक सयुत खाय।।

बनहु मदान्ध न विभव से करहु न नखरे नाज।
गये काल के गाल मे, बडे बडे अधिराज।।

दण्डनीति

दण्डनीति दुबल हुई, वोटो से बन राज।
अभिवद्धि अपराध की, गुण्डे सक्रिय आज।।

वोट नोट की चोट से, घायल है नय नीति।
दुर्जन गुण्डे दल बना, फिरते करत फजीति।।

शासन आसन उलटते, अल्प न लगहि अवार।
अणुबम्ब से अधिक है, वोट बम्ब की मार।।

दीन जनो के गेह ते, नीके कारावास।
असन वस्त्र अरु औषधि, पाते बिनहि प्रयास।।

मनोपदेश

मूरख अँखिये मीच कर भ्रम न भँवर भव बीच।
आय रही अवलोक वह नागिन मीच नगीच।।

वैश्या वैश्य वकील ये, दुखप्रद तीन वकार।
चोसत रहते रक्त धन, जिम जलोक तन मार।।

दश इन्द्रिय बल दशन ये, है तन जावन हार।
प्रिय परिजन सहयोग की, रखहु न आस गवार।।

याद सवदा राखिए औरन के उपकार।
पर अवगुण पीछे लखहु, निज के प्रथम निहार।।

रात दिवस द्वै पग धरत, आवत काल समीप।
जो कछु करना करहु हित, उर रख ज्ञान प्रदीप।।

कबहु न मन मे मोह रख, सुख-दुख का डर फील।

दर्शक बनकर देखिए, जगत सिनेमा रील ।।

चित गगर गन्य विचार की, नित नव उठत तरग ।
तब तक ये चलती रहत, जब तक तन नही भग ।।

जो तुम चहते पत्नि का, रखना शुद्ध चरित्र ।
तो तुम प्रथम चरित्र निज, रखिए परम पवित्र ।।

श्रमहु न भोग प्रमाद म अधिक उच्च पद पाय ।
उम्र और पद की अवधि प्रतिदिन घटती जाय ।।

मन अपना जिस मनुज से, जो नहिं जीता जाय ।
उत्तम योग विभूति स, रीता वह रह जाय ।।

बाग रहित मन बाजि पर, शठ जन होत सवार ।
इत उत करता भ्रमण वह, मिलत उसे झट मार ।।

ऐ रे ! मेरे मन पथिक, तू न जाहु उस ओर ।
तरुणी तन बन बिहड म, कुचगिरि घोर कठोर ।।

गाडा बूक गहस्थ का, दम्पत्ति दो है बल ।
इ च एक ऐ च न सकत, मिले बिना मत मेल ।।

पर पीडन करिए नही, करिए पर उपकार ।
निज कर्त्तव्य निभाइए यह सुधर्म का सार ।।

पूरति पूण पराग क, सुखप्रद ममझ सरोज ।
निकट निशा निपरा नही, मान मधुप मनमोज ।।

दुपहर रवि जनि दाहुरे, उगल अनल अति घोर।
पद तेरे पहुचे निकट, अस्ताचल मग ओर ।।

मन का मत मत मान तूं मत विवेक का मान ।
रहकर सन्तत कार्यरत, करहु प्राप्त कल्यान ।।

असन मनुज का अन्न है, कद मूल फल फूल ।
आमिष का करना असन प्रकृति के प्रतिकूल ।।

सुनतहि कविता शौर्य की, कर मूछो पर जाय ।
निजकी नर की मूछ की, शोभा सुजस बढाय ।।

वाणी चग बजाय पुनि, भक्ति भग कर पान।
शिव के स्नेह सुरग म, रगहि हृदय समान ॥

सोच समझ करते नही, भ्‍रत हित की बात।
विविध वग निज स्वाथरत, करन घात प्रीतिघात ॥

समय न व्यथ गवाइये, कर करऊ बकवास।
काय ठोस करिए अधिक, जिसमे होय विकास ॥

सभा मच पर आपका, जितना भाषण जोस।
उतना यदि राखो सदा, दूर होहि सब दोस ॥

जिसके उर अविवेक है, छते नयन वह अ व।
सदाचार विद्या सहित, सोना मध्य सुगन्ध ॥

स्वास्थ्य सुमति धन ह्रास हो होता अति उपहास।
जग म वह पिशाच जो, वेश्या वारुणि दास ॥

वनमाली चाली निशा, लाली नभ चहु कोर।
ताली दे सूचित करित, आली आ इत ओर ॥

कहत अब्ज ए रे मधुप, गया चहत रवि गेह।
इस अनेह मे नेह रख, करहु न बलि निज देह ॥

अबला क अजल लगे, खजन से चल नैन।
पति का मन रजन करत, गजन पर मन चैन ॥

अस्थिर तन धन विभव है, अस्थिर है पद मान।
तजहु नहि कत्तव्य पथ, भजहु सदा भगवान ॥

पापी पर धन हरण हित, करहु कुकम न घोर।
ऐसा धन ऐसे उडत, जैसे पावक सोर ॥

शासन धन अस्थिर समझ, कबहु न करहु गरूर।
मर मिलि जैहे धूल मे, दिन वे अधिक न दूर ॥

अलसी और अयोग्य हो, हो अति ही मति हीन।
हरिजन है तो होत वह, उच्चासन आसीन ॥

जिनकी मति पाषाण सी, पूजत वे पाषाण ।
पूजा उसका कीजिए, जिसमे हो नर प्राण ।।

होत रहत हैं शुभ अशुभ, काय कम अनुसार ।
झूठे मुहुरत जाल , फाने व्यथ गवार ।।

रसना की ध्वनि नहि सुनत, वद्ध बधिर भगवान ।
ध्वनि विस्तारक ग त्र मन, उसमे कर गुनगान ।।

तिथि-मुहूत ग्रह सकुन का कबहु न करहु विचार ।
काय श्रेष्ठ करत रहहु सदा समय अनुसार ।।

राम रावण रावण नहो, नहीं क ा गात ।
शेष रही ससार , जस अपजस की बात ।

समय पाय रहत न सुमन, रहता शेष सुग ध ।
शेष नाम साथे रहत, इस यश का अनुबन्ध ।।

राष्ट्रीय एकता

भाषा मत स भि न जनि, समझहु मनुज समस्त ।
वस्तु वही, चाहे कहो, हैण्ड दस्त या हस्त ।।

हरि क सब जन जगत क, हरिजन नाहि विशेस ।
हरिजन जाति विभद कर, किय उत्पन्न कलेस ।।

चाहे जिस मत जगत म, नाता अपना जोड ।
कि तु कभी किस काल मे, मानवता मत छोड ।।

त्रिविध धम क सुमन तरू, सौरभ करत प्रसार ।
उपवन भारत म यहा, सम पौषक अधिकार ।।

सतोष

कबहु स्वस्थ अस्वस्थ रह, नेचर नियम अधीन ।
प्रतिपल बनती बिगडती, जीवित देह मशीन ।।

क्या गति होती जीव की, दह नाश के बाद ।
नहि निश्चय निर्णय हुआ, सब कर थके विवाद ।।

सज्जनता

विश्व बाग में विविध तरु, मिल लय होत हमेश ।
रहता सज्जन सुमन का, सुयश इत्र अवशेष ॥

अवगुण तज जन और के, शुभ गुण लेत सुजान ।
जैसे जल परित्याग कर, करत हंस पय पान ॥

नहिं सुमेरु निज सम किये, उपल निकट के अन्य ।
सब तरु चंदन सम किये, मलयागिरि मति धन्य ॥

शठता

शठ समझत नहिं सत्य सुख, मन मानत वहि चैन ।
जैसे व्यसनी जानता, सुखद स्वाद अहि फैन ॥

अनायास शठ को अधिक, जो वैभव मिल जाय ।
तो वह बुद्धि विवेक तज, अधिकाधिक इतराय ॥

उसको ही उपदेश दो, जो माने उपदेश ।
दुर्जन को उपदेश दे, क्यों नहिं करहु कलेश ॥

अनुचित नीती उदधि की, रहहु न उसके पास ।
देता दुष्ट तुफान में, तटवासिन को त्रास ॥

महा हठी शठ मनुज की हठ को उसके हटाय ।
मुड़ न कमोडा मानता, कटि चाहे कट जाय ॥

साधु की पहिचान

संतन को सरताज वह, शाहन को वह शाह ।
जानें तज दी जगत में, चिन्ता ममता चाह ॥

प्रतिदिन ही परहित करे, सबकों निज सम जान ।
मुड़े न मानव धर्म सों, मानव वही महान ॥

क्षण भंगुरता

सुन्दर मानव देह यह मुक्ता मनहु तुषार ।

लगतहि काल बयार के, विनसत लगै न वार ।।

क्षण भंगुर तन यत्र का, होत अचानक अंत ।
करहु कबहु अपकर्म नहिं, भजहु सदा भगवंत ।।

जानहु मानव जिन्दगी, चपला चमक समान ।
इसके क्षणिक उजास में करलो द्रुत कल्यान ।।

वृद्धावस्था

तू अपना कर्त्तव्य तज, फिरता फूल फरंट ।
आय गया अवलोक रे, बाल धवल वारंट ।।

औषधि सौं मिटते नहीं, इसके विविध विकार ।
जरा व्याधि का जगत मे, एक मृत्यु उपचार ।।

वृद्ध अशक्त शरीर हो, प्रेम रहित परिवार ।
पुनि पैसौ नहिं पास तो, भव मे जीवन भार ।।

जैसे हिरणी बधिक से, भय खा दूर पलाय ।
तैसे ही वर वृद्ध से, बच्ची बधु बिलगाय ।।

करते पूर्ण प्रयत्न भी रहै सफलता दूर ।
तब प्रारब्ध प्रधान गिन, करिए चिन्ता दूर ।।

भाग्य और प्रयत्न द्वै, रहते संग सनेह ।
एक एक बिन व्यर्थ इम, जिम जिय के बिन देह ।।

साहस-श्रम और शक्ति की महत्ता

आलस अरु अविवेक से, मुख नहिं रखिए म्लान ।
साहस मति श्रम शक्ति से पूर्ण कीजिए प्लान ।।

सुमति धैर्य रख सर्वदा, करता रहत प्रयास ।
प्रभुवर पूरण करत है, उसके मन की आस ।।

उद्यम करहु न कहहु अस, मिलिहै लिखा लिलार ।
सिंह सुप्त के मुँह में, गिरत न आय शिकार ।।

जीभ रई, शठ मुख-मर्थान, पर निंदा दधि तोय ।
कढत कलह नवनीत विष, पुनि पुनि म ना होय ॥

परिवार कल्याण

असन वसन मँहगे अधिक, यह मँहगाई काल ।
दम्पति वे रहते दुखी, जिनके हो बहु बाल ।

मानवता

अधम मनुज धन चहत है, मध्यम धन मान ।
उत्तम केवल मान क, मान रखे द प्रान ॥

तृष्णा

चित चूल्ह मे चाह घृत, ज्यौं ज्यौं गिरतौ जाय ।
त्यो त्यो दुखद अशांति की ज्वाला देह जलाय ॥

शात तृषा कर नहिं सकत, मृगतृष्णा का नीर ।
भव के झूठे भोग हित, इम जन भ्रमत अधीर ॥

मोह

मशक बिचारौ मरत है, फस मकडी क फन्द ।
जग के माया जाल मे, इम मानव मति मन्द ॥

मोह भँवर भव-जलधि म, गिर जन गारत होत ।
कुसाल कढत जिसको, मिल, ईश अनुग्रह पोत ॥

बहु वैभव परिवार प्रति, ज्यो ज्यो बढतौ राग ।
त्यौ त्यो अधिक अशांति की, उर म धधकति आग ॥

मुझ पर है शिव की कृपा, मैं हू शिव का दास ।
होगौ नहिं वशकरन वश, माया तजहु प्रयास ॥

परोपकार

जब तक तेरौ जगत म, वपु को हो न विनास ।
तब तक तू करता रहहु, पर उपकार प्रयास ॥

निज स्वारथ मे मग्न नित, करत न पर उपकार।
उस मानव को मानिए, व्यर्थ भूमि को भार॥

मलयज कुंकुम से नहीं, शोभित होय शरीर।
केवल शोभा देह की, हरने मे पर पीर॥

प्रकृति व्यवहार

राजा रंक विभेद कछु, मैत्री मे नहिं होय।
कृष्ण सुदामा की कथा जानत है सब कोय॥

जो नहिं होतो जगत मे, दुख पावक की आंच।
तौ करना अति कठिन था, मित्र कनक की जांच॥

जहाँ कपट अरु स्वार्थ है वहां न सत्य सनेह।
कैसे रहहिं स्वरूप को, ज्वलत ज्वाल मे गेह॥

कहना रखना और कछु, मन के भाव दुराय।
ऐसे मानव आजकल, जहँ तह पाये जाय॥

कर्ण निकट ध्वनि मधुर कर, शोषण करता सार।
मच्छर कपटी मित्र को, विष समान व्यवहार॥

मेरा तेरा मान कर, थोथे करहु न थथ।
रैन बसेरा जगत है, पुनि चलना है पथ॥

वश कमला के हरि बसे, ससुर सिंधु के भौन।
करते यदि अनुकरण नर, इसमे अचरज कौन॥

...मक भूमि मे, अब भेसा आसाम।
...भाग मे, करत बैल कृषि काम॥

जन्म द्रोण का द्रोण मे, मिथ्या कहत लोग।
परखनली शुक्राणु मे, आज सत्य यह योग॥

होय निरंकुश मूर्ख जन, जहँ तहँ करत धमाल।
भारत मे होती रहति, हर दिन ही हडताल॥

नृत्य निपुण पर कायर पुनि, मधुरालाप मयूर।

ब्याल बाल बतला सकत, करतब इस कि क्रूर ।।

नाना आयुध नाश के, बहुत ही रखे बनाय ।
अमर बनन कौ नहिं, बनौ अबलौ सफल उपाय ।।

सब सम ककर समझते, कोली कजर कोल ।
जौहरि बिन जाने कवन, मणि माणिक कौ मोल ।।

सुकवी कर कविता सुरभि, पय दधि शब्द पुनीत ।
कर मथन कोविद चख, नवरसमय नवनीत ।।

बिन रुचि क बनता नही, अपनापन अनुबध ।
अपनाता कबहू न अलि, चम्पक सुमन सुगन्ध ।।

मृत्यु बाद क्या होता है, कवन जीव गति पाय ।
अबलौ नहिं जाना गया, नहिं अब जाना जाय ।।

पातुरि के पाजेब की, नर घातक झनकार ।
वीणा जैसे बधिक की, करती हिरण शिकार ।।

मरुधरणी सर विमल सी, टीबे सुमन सरोज ।
पूण करत परिभ्रमण मे, मधुप पथिक मन मोज ।।

जब शरीर अति जीण हो, करना तज ते काम ।
उसको लागत अटपटे, धन वैभव सब धाम ।।

मै अपनी नही छोडि हो, अध करबे की बान ।
अधम उधारन बान तव किम तजि हौ भगवान ।।

सुमति सलिल सौ धोइए, छुआछूत कौ पक ।
रखहु न भारत भाल पर, कलुषित कठिन कलक ।।

कोई जाति क्यो न हो जाति से नही पवित्र ।
मानव वही पवित्र है, जिसके शुद्ध चरित्र ।।

स्वार्थ

सोच समझ करते नही, भारत हित की बात ।
बिविध वग निज स्वार्थरत, करत घात प्रतिघात ।।

व रत परस्पर कलह नित, स्वाथ के दास।
अपढ आलसी जन जहाँ, वहाँ नक को वास ।।

भ्रष्टाचारी भूत को, देकर रिश्वत दाम।
कितना अनुचित क्यो न हो, करवा सकते काम ।।

शासक जहँ करता नहि, नीति दण्ड प्रयोग।
वहाँ अमिट रहता सदा, शठ उदण्डता रोग ।।

सुख साधन बनते दु खद, चिन्तित चित्त अधीर।
मरो पर ही मिटत है, प्रियजन बिछुरन पीर ।।

शासक और राजनीति

दिन म दानववाद है, मुख मे गाधीवाद।
एस नेता आजकल, करत देश बरबाद ।।

चुनत थे गत काल म, शासक स त समाज।
शासन सिर पर थोपते, अपढ मूख गण आज ।।

नकली नता स्वारथी, कर जनता गुमराह।
जहँ तहँ वथा विवाद की, दहकाते नित दाह ।।

बाँ [illegible] बकरे दीन जन, वोट नोट तलवार।
[illegible] शासक आजकल, करत रहत प्रहार ।।

यथा तथ्य [illegible] रत नही, नकली नेता आज।
[illegible] ल हो हल्ला करत, स्वाथ सिद्धि कै काज ।।

रहे [illegible] दिन जल म, सहे अधिक सिर जूत।
देश भक्ति र आजकल, शठ यह देत सबूत ।।

भारत भूमि तडाग मे, है कम नेता हस।
बक नेता देते बहुत, दीन मीन सिर दस ।।

चहु दिशि आज चुनाव की, ढम-ढम बजती ढोल।
झम-झम नेता नटनि के, झमक रचे रमझोल ।।

अपन-अपने पक्ष के शठ निज बना समूह।

जहा-तहाँ झगडन लगे, कर-नर हा हा हूह ।।

जह तहँ झाड दुलत्तिये, छक मद बन्धन तोड ।
भोक-भोक निशि दिन भ्रमण, देनहु गदभ दाड ।।

तुन के सब अवयव थके, नीद गई तज नैन ।
इस चुनाव उ मार गौ, बहुत मनुज बेचैन ।।

कुप्रथा

तन मन धन । ाजिए, जीविन हित इमदाद ।
व्यथ धन करना व्यय है, मानव मरन बाद ।।

पति शव साथे जलहु नहिं, आत्मघात पद पाय ।
पतिव्रत को पालन करति, सति वह समझी जाय ।।

सर्वोपरि है स्वास्थ्य सुख, इस सम सुख नहिं आन ।
जन अस्वस्थ जो स्वग म, होन नक को भान ।।

स्वस्थ-देह शुचि शात मन, पूण विभव हो पास ।
परिजन सज्जन प्रीति युत समझहु स्वग निवास ।।

जीवन हित जल अन्न से जल से अधिक समीर ।
इनकी तनिक अशुद्धि से, रहत न स्वस्थ शरीर ।।

प्रतिदिन तुलसी पत्र को, करते रहहु प्रयोग ।
जड से जैहै विषम ज्वर, मिटि जैहै मुख रोग ।।

वीर दुर्गादास का पत्र औरगजेब के प्रति

दोहा — दुरगादास सुभट्ट का, बादशाह प्रति पत्र ।
उसका कर अनुवाद यह, अंकित करता अत्र ।।

पद्धरी — स्वस्ति श्री भव्य दहली सुधाम । सम्पन्न विभव सुरपुर समान
श्रीमान हिंद के बादशाह । खुश रक्खै खुदा रख खुश-निगाह ।।

अदाब अर्ज कर दुर्गादास । भेजता अर्ज लिख आप पास ।
कीजिए गौर इस पर जरूर । हे मुगल नूर ! हम बेकसूर ।।

तब फौज शिविर ढिग आज आय। चहु ओर घोर घेरा लगाय।
आयुध दिखाय कर नेत्र लाल। नर नीच चमुय मागत नृपाल ॥

पर है अबोध बालक अजीत। जानता नही दरबार रीत।
जब तक उतीण नही बाल्यकाल। तब तक न होहि हाजिर नपाल ॥

बिन मातृ पुत्र रहते न आन। यह ही विचार उर मध्य आन।
जसवन्त विरह सहती हमेश। महिषी न कीन अग्नि प्रवेश ॥

है यही एक सब का आधार। जी रहे नित्य इनको निहार।
रह सके नही इस समय दूर। करिए न व्यथ हठ अब हजूर ॥

देखिए इधर बालक नरेश। अरु है न यहा निज गेह देश।
रक्षक कुलेक राठौड पास। जसवन्त कौन परलोक वास ॥

उनका वियोग होकर कटार। कढ रहा हृदय के वार पार।
व्यय हुआ द्रव्य पैसा न पास। असहाय आज हम होत ह्रास।

है हाय, घोर यह विपत्ति काल। हूजिये शाह ! हम पर दयाल।
घेरा उठाय काटहु कलेश। उपकार याद रखिहै हमेश ॥

सब से वह प्रबल सम्राट आप। पूरण प्रसिद्ध जग मे प्रताप।
सेवक तरुण सहयोग देत। सेना विशेष साधन उपत ॥

[illegible] एक शिशु भूप संग। लज्जा विहाय जो करहु जंग।
तो तुम्हें [illegible] हे हिन्द नाथ। अपकीर्ति पराजय मिलहिं साथ ॥

कर माहि रहे जब तक कृपाण। अरु रहे देह मे रक्त प्राण।
तब तक न यवन तेरे समीप। पहुचाय सकहिं बालक महीप ॥

[illegible] खुदा की शपथ खाय। विश्वास प्रेम पूरण बताय।
[illegible] बुलाय सेना पठाय। कर रखे कैद घेरा लगाय ॥

[illegible] अरु दुष्ट कर्म। करते हो शाह ! करते न शर्म।
मिलता न अन्न मिलता न नीर। प्यासे क्षुधात राठौड वीर ॥

सहि है न अधिक सब कैद-कष्ट। कढ़िहै निशक कर दुष्ट नष्ट।
जो फौज रोकिहै पथ आय। वहि फौज रुकहि जम लोक जाय ॥

मुगनाम्नि शेग मरयद पठान । ले प्राल भर्गहिं तज स्वाभिमान ।
मरिहै जनक टरिहै अनेक । रहिहै न खड़ा रन-भूमि एक ॥

रोके न रुकिहैं राठौड़ तार । तव फौज तूल हम है समीर ।
मृगराज अग्र कूकर कपाट । लगिहै न कभी रुकिहै न वाट ॥

जो होहु सब तुम मुसलमान । ता मिलहि तुमें रन भूमि मान ।
ऐसे अनेकु तेरे प्रलोभ । सुन होत हृदय म पूण क्षोभ ॥

स्वादिष्ट मिष्ट निज पय पिलाय । परिपुष्ट स्वस्थ तन मन बनाय ।
माता समान जो पूज्य गाय । उसको हि हाय जल मार खाय ॥

अतिशय कृतघ्न अर दुष्ट घोर । दख न सु । बिन यवन और ।
भारत कपोत मारत मयूर । देखा न जाय यह कम क्रूर ॥

कर ब्याह बहन बीबी बनाय । लज्जा विहाय निज उर लगाय ।
पशु तुल्य यवन करते प्रसग । दुष्कम देख हम रहत दग ॥

मसजिद समीप सुन वाद्य नाद । बढ जाय यवन उर मे विवाद ।
हो क्षीण क्षणिक रहत न नमाज । तज जाय त्वरित मुस्लिम समाज ॥

इन घोर शीश पर घुर्रहिं गाज । उठ करहिं निकट तोप अवाज ।
सुनते न ध्वनि उन समय कान । टलना न आय उर ईश-ध्यान ॥

यदि यवन पाक सुनत कराय । बीबी न पाक सकते बनाय ।
है हम सदैव तिय सहित पाक । करत न हँस निज वत्ति काक ॥

मिलता समग्र साधन विलास । हो रहत वहा सब हरी दास ॥
पीते शराब खाते कबाब । एसा न स्वग चहिए जनाब ।

करता न कायामत पूव न्याय । जिय रहत जेर तजवीज जाय ।
शैतान सदा रहता उदण्ड । दे सकत खुदा न दण्ड ॥

सातवें गगन म रखत वास । हूरें अनेक हर वक्त पास ।
प्रिय सिफ यवन अरु अरब देश । अनुचित अशुद्ध जिसके निदेश ॥

हिंसादि कर्म बतला सबाब । ससार शाति सुख किय खराब ।
ऐसा न खुदा हमको अभिष्ट । वेदोक्त व्याप्य अखिलेश इष्ट ॥

कौस्तुभ अमूल्य मणि तजत पाय । गुंजादि ग्रहण जो करत धाय ।
अमृत विहाय विष करहि पान । वहि मूख पढहि कलमा कुरान ।।

भय लोभ विवश तजहि न विवेक । होगा न यवन राठड एक ।
ये सब असत्य है स्वप्न आप । मानता कौन पागल प्रलाप ।।

खालसा जोधपुर के जनाब । है सारहीन मन के पुलाव ।
सफल व्यर्थ जाहिर जहान । न हूजिए शेखचिल्ली समान ।।

मृगराज शीश ऊपर सियार । कर बार बार पजे प्रहार ।
कर सकै प्राप्त यदि खोह-खास जो भुजग खगपति निवास ।।

चोंच चलाय चिड़िया समाज । कर सके विजय जो नीड बाज ।
तो होहि जोधपुर शाह हस्त । नहि तो विचार फीके समस्त ।।

सेना पठाय मरुधर प्रदेश । करिये न व्यर्थ क्रय अब कलेश ।
मरुधर-समुद्र राठौड-ग्राह । यवनादि शशक गिर मरहि शाह ।।

परिपूर्ण शहद का पात्र पाय । मक्षिका लोभ-वश गिरत आय ।
जुड़ जाय पंख होत न उडान । मिलता न शहद रहता न आन ।।

जल मध्य मीन लालच बढ़ाय । कटक सयुक्त पल निगल जाय ।
पछताय हाय कर बार बार । अन्त में होत धीवर शिकार ।।

गिरता प्रदीप ऊपर पतग । मिलता सुवर्ण नहि जलत अंग ।
इम दशा लोभ वश होय शाह । मिलि है न यवन दल को पनाह ।।

यह लोभ आग उर में लगाय । सवस्व राशि सुख को जलाय ।
अपकीर्ति पाय गौरव गमाय । अन्त में पहुचत हो नरक जाय ।।

तक्षक निवास में हाथ डाल । ले आत मूख निज न्योत काल ।
करिए न मूर्ख अनुकरण आप । राठौड प्रबल ईश्वर प्रताप ।।

सीमा समीप तव फौज पाय । भूखे मृगारि तिमि गिरहि आय ।
वहि यवन भेड सदृश समूह । रख सकहि नही मजबूत व्यूह ।।

ललकार यवन दल बार-बार विद्युत समान आयुध प्रहार ।
सैनिक अनेक यवनादि काट । देंगे तुरन्त रणभूमि पार ।।

भयभीत भीरू भगिहै नवाब । मल माग कढहि कच्चा कबाब ।
ह्वै माग वारि जहिहै जरूर । रहि है न रच शेखी गरूर ॥

राठौड सुभट हय फेर फेर । करिहै निराश दल ढेर-ढेर ।
अल्लाहि आय करहि न सहाय । अवशेष एक रहिहै उपाय ॥

तोबाह करहि तृण मुख दबाय । कर बद्ध होय अरु गिडगिडाय ।
जो खान माणिहै जीव दान । वहि आय दिल्ली करिहै बयान ॥

राठौड एक अवशेष कोय । तब तक न जोधपुर विजय होय ।
ये चने-लोह चबिहै न शाह । टूटिहै दत होगो तबाय ॥

जो सुमति होय तौ रखहु प्रीत । देगे अनेक हम देश जीत ।
रखिहै न आपका शत्रु शेष । हो अभय राज्य करिए हमेश ॥

जो रखहु दूर हिन्दू रिसाय । तो करहि वे न तरी सहाय ।
यह विभव लूट लेगे पठान । रहिहै न मुगल तेरी निशान ॥

तव पिता पितामह आदि शाह । तज यवन-पक्ष की कुटिल-राह ।
राठौड मित्र अपने बनाय । रक्खे सदैव निज उर लगाय ॥

इम पाय शाह से प्रेम मान । करके अनेक रन शीश दान ।
कर दिय ध्वस अरिगण गनीम । तब भई मुगला उन्नति असीम ॥

करिये समस्त इहसान याद । परित्याग अनय सयत विवाद ।
फरमान-पत्र करिये प्रदान । कर सके शांतिपूर्वक पयान ॥

पहुचाय नृपति अपने प्रदेश । फिर आय करहि सेवा हमेश ।
जय यह नरेश होगा जवान । करिहै सहाय गत-नृप समान ॥

हे शाह ! उचित यह आज अज । जो मान लेहु तो है न हज ।
मिट जाय मुगल राठौड राड, पड जाय बीच प्रीति पहाड ॥

कढ जाय हृदय से क्रोध द्वेष । बढ जाय राज्य सपति विशेष ।
कर दिये प्रकट उत्तम विचार । अब अग्र करहु इच्छानुसार ॥

शिवनाथसिंह का हुक्म पाय । यशकरण छन्द पद्धरि बनाय ।
अंकित प्रसिद्ध यह कीन आज । पढिये सहर्ष क्षत्रिय समाज ॥

दोहा — सतरा सौ पैंतीस मे, लिख यह दुर्गादास।
भेजा था दिल्ली नगर, बादशाह् के पास ।।

महाराणा के प्रति

दोहा— मेद पाट मे मच रहा, सत्याग्रह का शोर।
सबल पुलिस निबल प्रजा, जूझ रही कर जोर ।।

महाराणा मेवाड के, अधिनायक हे आप।
प्रजा पुत्र जो बहकता, दण्ण न दता बाप ।।

मनहर— आज मेद पाट की । अशात प्रजा मे से आप,
मुख्य मुख्य लोगन को पास बुलवाइये।
समझा बुझाय क छुडाइये दुराग्रह को,
सत्याग्रह होय उसे पूण करवाइये।
करिये न उग्र दण्डनीति का प्रयोग यहा,
भरिये न जेल खान, रिक्त करवाइये।
आप ही क रक्षण म नित्य यह दीन प्रजा,
एतदर्थ महाराणा, दया अपनाइये ।।

दोहा ब्राह्मणो के प्रति

ज द्विज उपदेश दे, उ नत मनुज समाज।
ज गता ठगना जानते, उनके वशज आज ।।

षटपदी — पाथी गरुड पुराण, और पचाग उठाकर।
मरणासन्न समोप, शीघ्र द्विज देव सिधाकर ।।
वैतरणी को त्राण, बहुत समझाय बताकर।
गरवाकर गोदान वत्स सयुत घर लाकर ।।
फैलाय तुन्द फुटबाल ज्यों, खूब दुग्ध घृत खात ये
खुश होय क्षेम यमदूत की, हरदम रहत मनात ये

दोहा— धनवान जजमान का, पाय निकट परलोक।
मन म द्विज होत मुदित, प्रकट दिखाते शोक ।।

वहाँ मृतक को मिलत है, यहाँ देत ही दान।

क्या इन विप्रन की रहति, यमपुर मध्य दुकान ।।

ग्रह मुहूत अरु शकुन क जो जन बनते दास ।
वे ही निधन रहत है अधिक सहत है त्रास ।।

क्या द्विज का यह उदर है, लैटर बाक्स समान ।
मिलता यमपुर मृतक को गिर उसमे पकवान ।।

करता ब्राह्मण कम जो, ब्रह्म तत्व को जान ।
वहं ही ब्राह्मण सत्य है, व्यथ वश का मान ।।

नकली साधु

पहुचाते निज पेट म, भर भर लोटे भग ।
गाजा मे गाफिल रहे अद्ध नग्न रख अग ।।

बाल कटा भिक्षुक बनत, जबहि होत दुकाल ।
सिर की मिटत खुजाल अरु, मुफ्त मिलत पर माल ।।

करते नहिं कछु काय श्रम, नालस के अवतार ।
भारत भू पर व्यथ यह, भिक्षुक दल का भार ।।

आप रहे अप व्यसन रत, औरन को उपदेश ।
ऐसे उपदेशक यहा कैसे कटहिं कलेश ।।

द्रव्य का दुरुपयोग

सत्य धम नहीं जानते, ये धनवान अयान ।
सुनते कथा पुरान की, करते तीथ पयान ।।

कर तीथन म भ्रमण, बहुत मन्दिर बनवाते ।
क्षूप उपल का ब्याह, रास लीला रचवाते ।।

ठग साधु ठग विप्र, अमित धन इनसे पाते ।
दीन अनाथ अपाड, अन्न बिन मरते जाते ।।

भ्रम का भँवर

विभु ईश्वर सब ठौर, व्यर्थ वह टेरि बुलाना ।

रवि प्रकाशमय कीन, व्यर्थ दीपक दिखलाना ॥

जग पोषक हित व्यर्थ, असन अभिनय करवाना।
जल निधि कर जल देत, व्यर्थ निर्मल नहलाना ॥

वर विश्व सजन जिमने किया, उगन मन्दिर चाहिए।
अपना ही मन मन्दिर बना, इसमे उसे रमाइये ॥

कबहु हरि के द्वार पर, कबहू हर के द्वार।
कबहु भवानी द्वार पर, भ्रमते रहत गँवार।

बिविध विबुध के द्वार, जाय इच्छा फल चहते।
मिलता कुछ नहीं तत्र अगर सुर आश्रय गहते ॥
योंही मूर्ख सदैव, आयु भर भटके खावहिं।
मृग तृष्णा से मुग्ध, मनहु मृग शावक धावहिं ॥

पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित आधुनिकाओ के प्रति

मैं तुमको अब मूढ पति, कैसे करती माफ।
अब तक तने नहिं किये, मेरे सैण्डल साफ ॥

अब तक पुरुष समाज ने, हम पर शासन कीन।
अब हम उनको राखिहै, कर गुलाम आधीन ॥

नशा रसिकता भ्रमण अति, पर घर वास कुसग।
अक्सर इन अवगुणन से, होता पतिव्रत भग ॥

पुरुषो के प्रति

निज तिय के हित करत हैं, कारावास प्रबध।
पर सुदर परतिय सुमन की, सूँघन फिरते गध ॥

बदन बसन से ढाँप, गुप्त घर अन्दर रहिये।
रोगी दीन कुरूप, तदपि पति ईश्वर कहिये ॥
निज तिय के ढिग नित्य, यही उपदेश सुनाते।
पर नित परतिय पास, जाय सिर जूते खाते ॥

उद्बोधन

जैसा तुम तिय स चहो, अपने प्रति व्यवहार ।
तिय भी तुम से चाहती, उसका ही अनुसार ।।

रोकत विधवा ब्याह को, सतयुग के बन स त ।
आखिर वे ही करत है, गभ स्राव शिशु अ त ।।

अनमेल विवाह

बाल वृद्ध अनमेल क, करहु न कबहु विवाह ।
इनसे उर मे रहति है, कलह दुखानल दाह ।।

युवको के प्रति

तिय करती है पुरष का, पुरुष करत तिय भेष ।
ऐसी अनुपम एकता, मिलि है और न देश ।।

दहेज की कुप्रथा

देता अधिक दहेज जा उसका बेडा पार ।
दे सकता न दहेज तो, वह डूबत मझधार ।।

नुकता (मृत्युभोज) की कुप्रथा

हुक्का भर-भर पियत, अधिक अहि फैन मँगावहिं ।
खावहिं बैठे द्वार, लड्डु को ताक लगावहिं ।।
विधवा का सुन रुदन, अधम जो दया न लावहिं ।
बार बार यह वचन, झिडक उसको कहलावहिं ।।
रोती ही फिर रहना सदा जलदी जेवर खोल दो ।
करिहै नुक्ता मृतक का विधवा को यह बोल दो ।।

युवती विधवा व्यथित, हाय प्राणेश उचारति ।
पुनि-पुनि शिर उपल, वक्ष पर मुटठी प्रहारति ।।
ऐंची उखाडति बाल, कूक कर काल बुलावहि ।
आस पास के और, सब नरनारि रूलावहि ।।
ऐसे ही दुखमय समय मे सजातीय सब पच शठ ।
नुकता हित धन मागते, विधवा से कर अटल हठ ।।

हा इकलोत पुत्र हाय आखिन के तारे।
हाय दुलारे लाल, हाय क्यो स्वग सिधारे।।

अ ध बधिर असक्त कौन अब सेवा करि है।
भूख प्यास दह नित हाय हम सडकर मरि है।

अति वद्ध पिता माता विकल पडे भूमि पै रात है।
नुक्ता कराय चल निकट ही, खाय लड्डु खुश होत है।।

दोहे— रोते परिजन मृतक के, फाडे सिर कर हाय।
हर्षित बठे द्वार पर, नीच मिठाई खाय।।

गल वायस पल ग्रीध अरु पीप मक्षिका पाय।
मुदित मिठाई मृतक की, खल इम खाय अघाय।।
कष्टित जन का रूदन सुन, तजते सज्जन अन्न।
खल जन खाते मृतक का, हलुआ होय प्रसन्न।।

मदिरा के दोष

री मदिरा मोहित किये, पण्डित मन्त प्रवीण।
प्रकट नही तो गुप्त हो, सब तेरे आधीन।।

अछूत का भूत

दोहा— होता रहत श्वान का, मन्दिर मध्य प्रवेश।
प्रतिमा दशन प्राप्ति का, हरिजन को न निवेश।।

न्यायालय कर्मचारी

सवैया— मिलते झट श्वान स्वरूप बने अपशब्द अनेक उचारत है।
कर को यदि जब प्रवेश करे, बक ध्यान लगाय निहारत है।।
धरने पर रिश्वत के धन को, पटु पातुरि भाव प्रसारत है।
रत लालच कीट अदालत के, नय गाय नितान्त विडारत हैं।।

मनहर— न्याय माँग रकन की कानन रूदन होत,
होत न दयाद्र हिय कान न पसारे है।
उच्च कोट शासन के आसन विराज कर,
पूरण प्रपच जालन जग मे पसारे है।।
मारे कैई तारे कैई चाहे कर डारे वही,
धूत धनवानन के विजय सहारे है।
पास नही पैसा तो मसोस मन बैठे रहो,
रिश्वत खवैया कछू जज ये हमारे है।।

सोरठा— शत्रु मित्र सम जान, सत्य पक्ष तजता नहीं।
करता दण्ड विधान, वह ही न्यायाधीश नर ॥

वकील

पाहि पाहि ईश्वर विनय त पुकार सुन।
तेरे पाद पंकज पै मेरा सीस रगडा।
फँसाओ न मुझे कभी वकीलो के फन्दन म।
दिखाओ न न्यायालय तक द्वार तगडा ॥
मनहर— पीसता भंगेरी जस भाग को बादाम संग।
ऐसे ही मुवक्किल पै वकील दल रगडा ॥
द्रव्य हर लेते सब दीन कर देते पुनि।
मिटन न देत कभी आपस का झगडा ॥

नकली नेता

हाव भाव युत दाव कर, विविध बनाय बनाव।
नेता नतकि बन नचे, देखहु समय चुनाव ॥
पर हित का परित्याग कर निशि दिन निज हित ध्यान।
नकली नेता नतकी, सब विधि एक समान ॥

चारणो के प्रति उपालम्भ

क्षत्रिय के हित बीच, नहा अपना हित मान।
देत न उत्तम सीख सिर्फ खुश करना जान।
तप त्याग रहित, भय लोभ वश, कथन सत्य करते नहीं।
वे कवि वर चारण वंश के कहला नहिं सकते कहीं ॥
दोहा — वे चारण निज वाक्य से, सतत वीर रस सीच।
कायर कों भी वीर कर, ला रखते रन बीच ॥

क्षत्रियो के प्रति

दोहा — भारत का रक्षण करत, क्षत्रिय नग सदैव।
उनके चारण युद्ध गुरु, धर्म गुरु द्विज देव ॥
रोला— साहस कवि कर्तव्य, धृति नय रखते धारण।
विद्या मद में सदा, मस्त चारण से चारण ॥
तन धन गिनते तुच्छ नहीं नृप के वश रहते।
उनके हित के अर्थ, रण रटु निर्भय कहते ॥
वे थे रक्षक देश समर सुभटन सचालक।
सदाचार की मूर्ति, घाव शत्रुन उर घालक ॥
क्षत्रिय जाति प्रमादवश, आज पडी है सुप्त।
सिंह नाद कर सुकवि सब करिए निन्द्रा लुप्त ॥

सोरठा— शत्रु मित्र सम जान, सत्य पक्ष तजता नहीं।
करता दण्ड विधान, वह ही न्यायाधीश नर ।।

वकील

त्राहि त्राहि ईश्वर विनय त पु।ार सुन।
तेरे पाद पकज पै मेरा सीस पगडा।
फँसाओ न मुझे कभी वकीलो के फ दन म।
दिखाओ न न्यायालय तक द्वार तगडा ।।

मनहर— पीसता अगेरी जैसे भाग को बालाम गग।
ऐसे ही मुवक्किल पै वकील देत रगरा ।।
द्रव्य हर लेत सब दीन कर देते पुनि।
मिटने न देत कभी आपस का झगडा ।।

नकली नेता

हाव भाव युत दाव क, विविध बनाग बनाव।
नेता नतकि बन नचे, देखहु स्वय चुनाव ।।
पर हित का परित्याग कर निशि दिन निज हित ध्यान।
नकली नेता नतकी, सब विधि एक समान ।।

चारणो के प्रति उपालम्ब

क्षत्रिय क हित बीच, नहीं अपना हित मान।
देत न उत्तम सीख सिर्फ खुश करना जान।
तप त्याग रहित, भय लोभ वश, कथन सत्य करते नहीं।
वे कवि वर चारण वश क कहला नहिं सकते कहीं ।।

दोहा— वे चारण निज वाक्य से, सतत वीर रस सीच।
कायर को भी वीर कर, ला रखते रन बीच ।।

• . क्षत्रियो के प्रति

दोहा — भारत का रक्षण करत, क्षत्रिय वग सदैव।
उनके चारण युद्ध गुरू, धम गुरु द्विज देव ।।

रोला— साहस कवि कतव्य धृति नय रखते धारण।
विद्या मद मे सदा, मस्त चारण से चारण ।।
तन धन गिनते तुच्छ नहीं नृप के वश रहते।
उनके हित के अथ, रण तर निभय कहते ।।
वे थे रक्षक देश समर सुभटन सचालक।
सदाचार की मूर्ति, घाव शत्रुन उर घालक ।।
क्षत्रिय जाति प्रमादवश आज पडी है सुप्त।
सिंह नाद कर सुकवि सब करिए निन्द्रा लुप्त ।।

दोहा— सतत महाराणा शोध का, दे सबको उपदेश ।
काती नर जाति गहो, कर स्वतन्त्र निज देश ।।

षटपदी— पहन बूट पतलून, माथ पर टोप रखत धर ।
टाई गो गल बाँध, बांध बन्धन कर ऊपर ।।

अंगरेजन को ईश, मम कमला राम गान ।
देश निवासिन संग, खूब हठनानो जान ।।

प्रति दिवस बहा मद पान कर खाते जो आमिष अधमं ।
उनको नर क्षत्रिय वंश के, कहत लज्जित होत हम ।।

बुरे व्यसन के साथ, होय कर तृप्त मनावहिं ।
पाप परे कबीर सदा जिनके मन भावहिं ।।

नाजुक देह बनाय, रहत श्रृंगार रसिक बन ।
आयुध गहत न अंग, सुनत नहिं श्रवन शब्द रन ।।

अवलोकि नान चरन अरिन के, घुस घर में फिर लेत दम ।
उनको नर क्षत्रिय वंश के, कहत लज्जित होत हम ।।

तबला संग बजाय गाय रण्डिन के गान ।
रखत न लौकिक लाज, करे वही जो मनमाने ।।

गहत नहिं रन बीच समझि निज धर्म शस्त्र खर ।
सहत शिर जूत, प्रीति पर नारिन सं कर ।।
सज्जन रे सुजाक उपदश से, झट जा पहुँचे नगरजम ।
उनको नर क्षत्रिय वंश के, कहते लज्जित होत हम ।।

सवैया

नर नाहर रूप बना कर के, कृषि कारन की भयभीत करे।
निज बान्धव वर्ग विनाशन को, मृग नायक से बन मोद भरे।।
नट नागर रूप बनाकर के, कुलटा पर तीयन मे विहरे।
इन भूपन को शत धन्य अहो, हरि के अवतार हमेश धरे।।

☐ **रचयिता—यशकरण खिडिया**

श्री यशकरण खिडिया सौ साक्षात्कार

वा दिना भीलवाडा के शिवाश्रम पै बिना पहलै सूचना दिये अचानक पहौचि

। सझा के तीन बजे हे। आधुनिक सुविधान सौ रहित अपनी कुटिया की खटिया त कवि श्री यशकरण खिडिया कापी मे कविता लिखिबे म लीन हे। लम्बी-तगडी-ली देह। नब्बै बरसन लौं समै के थपडे खाइकै अथवा अति बिनयी सुभाव सौ कमरि ,बे लगी है। कछु ऊँचौ हू सुनै है। धोबती कुर्ता कौ किसनई पहनावौ। ठेठ गाम कौ एकदम सादा रहन-सहन।

खिडिया जी क आश्रम की मेरी जि दूसरी तीरथ यात्रा ही। खिडिया जी के क पहौचिके नमस्कार करी कवि कौ ध्यान भग भयौ। ऊपर कूँ ढूँके तौ मैंने अपनौ बतायौ। सुनतई 'सबहिं मानप्रद आप अमानी' खिडिया जी भाव विभोर ह्वैकें खाट उतरि परे। मेरी भेट भरि लई। तहपगी बानी ते आग्रह करिकै मोइ बगल के कमरा खेंचिके लै गये जहा बिजली को पखा हौ। एक ही खाट पै दोनू बैठि गये। चार न लौ वा बूढे शेर के सान्निध्य म बिताये छन कबहू भुलाये नाइ जाइ सके।

बात ही बातन मे मैंन बिनके जीवन अरु परिवार के सम्बन्ध म जिज्ञासा प्रगट ो तौ वे अपनी रामकहानी या तरियाँ सुनाइबे लगे—

'मेरौ जनम जैतपुरा मे भयौ। मेरी ननिहाल प्रतापगढ़ के रावजी के ताजीमदारन है। वहाँ नानाजी श्री शार्दूलसिह जी के पास बच्चापन मे चल्यौ गयौ हो। एक ठौर मकें नही रह्यौ सो मेरी पढ़ाई लिखाई ठीक तरियाँ नही है सकी।

मेरे तीनि ब्याह भए। पहलौ ब्याह बीकानेर ते तरह बरस की उमरि म विक्रम त 1974 के असाढ महीना मे है गयौ। बात यो बनी। मेरी माताजी अरु परिवारी- देशनोंख श्रीकरणी माताजी के दरसनन कूँ गए हे। वहा सौ जनानीन कूँ बीकानेर गये। वहाँ एक लडकी के सग मेरे ब्याह की बातचीत पक्की है गई। परि वा लडकी ब्याह सौ पहलैं ही देहान्त है गयौ तौ मेरी उमरि की दूसरी लडकी ते शादी करिबे रोपना रुपि गई। पिताजी की इच्छा नाइ हती। माताजी अरु ननेरा वारेन्नें ब्याह राइ दीनौं। यापै कछू दिना मानाजी अरु पिताजी म अनैबन हू रही। पीछे पिताजी हू जी है गये।

ब्याह ते थोरे दिना पाछें माह के महीना मे मेरे पिताजी कौ देहान्त है गयौ। वा

पहली पत्नी श्रीमती ताजकुँवरि जी नें एक लडकी उच्छबकुँवरि जी कूँ जनम दीनौं जो कोटा म है। आठ नौ बरस पाछे बीकानेर मे ही मेरी पहली पत्नि कौ देहान्त है गयौ।

ता पाछे ि-ाजपुरा तहसील के कचौल्या गाम सौं मेरौ दूसरौ ब्याह भयौ अरु एक बरस पाछे ही ा ाानी सीकर राज म ीवानजी के बास (चन्द्रपुरा) के रत्नू जी के परिवार सौ श्रीमती सरस्वती जी सौं मेरौ तीसरौ ब्याह भयौ। दूसरी पत्नी के तौ कोऊ सतान नाई परि या तीसरी पत्नी नें तीनि पुत्रन कूँ जनम दीनौं—

(1) स्व श्री देवेन्द्रसिंह (2) श्री सत्येन्द्रसिंह, प्रधानाध्यापक जैतपुरा (3) श्री सज्जनसिंह डाकतार विभाग माँहि भीलवाडा मे सेवारत।

अपने प्रारम्भिक जीवन अरु भरे पूरे परिवार की एक झलक दैके खिडिया जी ने खरवा क क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह जी, सासद श्री गिरधारीलाल व्यास अरु मेवाड राजघराने के सदस्य सन्त कवि श्री चतरसिंह बावजी सौ अपने निकट सम्बन्धन के अनेक सस्मरण सुनाये। कहबे लगे—'स्वाधीनता मिलिबे सौ पहले मेरौ प्रजामडल सौ सम्बन्ध हो या कारन जागीदारन के विरोध में विचार रहत। जब की गिरधारीलाल जी व्यास जैतपुरा आमते तो मेरे यहाँ ही ठहरते।'

बात लम्बी होती देखि मैंने जब खिडिया जी सौ बिनकी परिचै-पोथी म छपिबे साक्षात्कार के ताँई कछू प्रश्नन के उत्तर पाइबे कौ अपनौ मनोरथ प्रगट कियौ तौ बिन्ने सस्मरणन कूँ विराम दै दीनौ। फिरि हमारी बातन कौ क्रम बदलि गयौ। मैं प्रश्न करतौ गयौ अरु वे नपे-तुले शब्दन मे या तरियाँ उत्तर देते गये—

☐ आपनें ब्रजभाषा माहि रचना करिबौ कहा अरु कब सौ प्रारम्भ कर्यौ?

बचपन सौं ही जैतपुरा मे ब्रजभाषा के सवैया लिखिबौ चालू करि दीनौ हो। हमारे यहाँ पुरखा पगत ते डिंगल अरु पिंगल मे कविता होती चली आई ही। वाके सस्कार जो हते।

☐ आपकूँ ब्रजभाषा म काव्य रचना की प्रेरना कैसें अरु कौन सौ मिली?

घर के वातावरन म मैं ब्रजभाषा के काव्य के सम्पक मे तौ बचपन ते ई आइ गयौ हो। विहारी के दोहान कौ बडौ प्रभाव परयौ और विहारी सतसई के दोहान सौं मोइ ब्रजभाषा मे काव्य-रचना की प्रेरणा मिली।

☐ आप अपनी प्रारम्भिक रचनान की कछू बानिगी देऔ। अपनी पहली रचना कौ स्मरन होइ तौ वायै सुनाऔ।

मोइ अपनी कोऊ प्रारम्भिक रचना याद नाइ रही।

☐ आपनें ब्रजभाषा में समस्यापूर्ति करी होइ तौ जानकारी देउ अरु जिहू बताऔ कै समस्यापूर्ति सौ आपकूँ कहा लाभ भयौ?

ने थोरी सी समस्यापूर्ति हू करी । लाभ की माइ ध्यान नाइ ।

ावि सम्मेलनन के मच पै आपने ब्रजभाषा की रचना सुनाई होय तौ बताअ कैसी अनुभूति भई ? वा समै काहू प्रकार को प्रोत्साहन हू मिल्यौ का ?

। कवि सम्मेलनन मे कहू कविता सुनाइबे नाइ गयो ।

आपनै कौन-कौनसे विषयन पै कविता रची ?

ोने जैसौ देख्यौ वैसौ ही लिखि दीनौ । सब विषयन पर कलम चलाई । समसाम मस्यान पै हू रचना करतौ रह्यौ । खारी नदी की बाढ कौ वनन याकौ उद ।

आपने ब्रजभाषा मे कौन कौन से छन्द रचे है ? कौन सौ छन्द आपकू सबस प्रिय है अरु क्यो ?

मेने दोहा, सवैया, कवित्त, कु डलिया आदि छ दन म रचना करी । छोटौ सौ छ ोइ सबसौ प्रिय लगै है, विहारी अरु दूसरे कवीन के दोहान की लोकप्रियता ।

☐ ब्रजभाषा के पुराने कवीन माहि आपकू सबसौ जादा कौने प्रभावित करय यो ?

विहारी केशव, घनानन्द अरु सेनापति ने । ब्रजभाषा क माधुय अरु लालित्य व रता के कारन ।

ब्रजभाषा पद्य की रचना मे आपकू छ दबद्ध या छन्दमुक्त, कौनसी रचना अच्छ ग्ही लगै है अरु क्यो ?

छ दबद्ध कविता अच्छी लग है जो पिगल शास्त्र के नियमन क अनुसार होइ कल की बेतुकी, रबडछ न्न वारी अरु केचुआ छन्दन की रचना मोइ अच्छी ना । बिनमे काव्यान द नही आवै है ।

आप डिगल अरु पिगल दोनू भाषान मे रचना करत रहे है। आपकू कौनसं ा मे रचना करिबे म सुविधा अनुभव होइ ?

मैने डिगल अरु पिगल दोनू भाषान म रचना करी है । सुविधा की दृष्टि सौ दो बर हे ।

ब्रजभाषा की वतमान प्रगति सौ आप कहा लौ स तुष्ट है ! वतमान मे ब्रजभाष स्थित के सम्बन्ध म आपको कहा मत है ?

पिगल (ब्रजभाषा) बहौत पुरानी मधुर भाषा है जो चलती रहनी चहियै । आज ब्रजभाषा कौ ह्रास देखिके अच्छौ नही लगै है ।

राजस्थान मे ब्रजभाषा के प्रचार-प्रसार के तांई कहा करनौ चहिये ? या सदर्भ

आप कछू सुझाव होइ तौ बताऔ।

सबकूं अपनी अपनी भाषा कौ प्रचार-प्रसार करनौं चहिए। पुराने अप्रकासित ग्रंथन कौ प्रकासन करे। शब्दकोस बनाम। भारत की एकता कूं ध्यान मे राखिके भाषा कौ प्रयोग करे। भारत की सब भाषान कौ सहयोग सौ विकास हौनो चहिए। इनमे विवाद पैदा करिबौ ठीक नाइ।

☐ राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के कायकलापन सौ आप कहा लौ सतुष्ट हौ अरु वाकूं अपने कहा सुझाव दैनो चाहौ? अकादमी सौ आपकी कहा अपेच्छा है?

आपस मे लडाई नही राखे। मिलिजुलि के अकादमी की तरक्की करे। और बात ऊपर के प्रश्न म कह चुक्यौ हू।

☐ ब्रजभाषा कूं भक्ति भाव, राधाकृष्ण के गीत गाइबे अरु सिंगार रस की कविता रचिबे के ही जोग बनायौ जाय। या सम्बध मे आपके कहा विचार है?

ब्रजभाषा मे सिगरे विषयन की रसन की रचना है सकै है। ब्रजभाषा माहि वीर भाव ह खूब आइ सकै है। फिरि याकूं सिंगार रस की ही भाषा कहबौ उचित नाइ।

☐ पुरानी अरु नई पीढी के साहित्यकारन मे आपकूं कहा अन्तर लगै है? आजु के मचीय कवीन के विषय म आपके कहा विचार हे? बिनते आप कछू कहनो चाहौ तौ बताऔ।

पहले कवि नियमानुसार छन्दबद्ध कविता करत हे। आजकल तौ तोड-मरोड कै इच्छानुसार चाहै जैसी कविता करै है। आजु के साहित्यकारन मे पहलौ जैसौ प्रेमभाव हू नाइ रह्यौ। मैं न तौ सुन सकू अरु न कहू कवि सम्मेलनन कू मच पै जाऊं। बताऔ फिरि कहा कहू।

☐ राष्ट्रीय भावनान के प्रचार-प्रसार के ताईं साहित्यकारन कू अरु अकादमी जैसी साहित्य सस्थान कूं आपके कछू सुझाव होइ तौ बताऔ।

इन्ने राष्ट्रीय एकता कूं दृढ करिबे के जतन करने चहिए। द्वेषभाव राखिकै एक-दूसरे की बुराई न करे। विचार-विनिमय करते रह। नही तौ राष्ट्र टूक टूक है जाइगौ।

☐ देश मे उठते भाषा-विवादन कूं सुरझाइबे के ताईं आपके कहा विचार ह?

भाषान के आपसी विवाद अच्छे नाय। अपने सुझाव पहलैई दै चुक्यौ हू।

☐ आजकल आप कहा लिखि रहे हो? कविता माहि पानो लिखिबे मे आपकूं कैसी अनुभूति होइ?

मोइ जब जो बात फुरि जाइ वाई ऐ हौलें-हौले लिखिबे लगू। कोऊ लिखिबे वारौ मिलै तौ लिखाई लऊं नही तौ थोरी देर मे भूलि जाऊं। आदत परि गई है सो कछू न कछू लिखतौ रहू। पाती होइ चाहै कोऊ और रचना, अच्छी रचना बन जाइ तौ

ानन्द आवै है। कविता माहि जाकू पाती लिखी जाइ बु आखिन आगे बैठयौ सौ

अपनी रचना प्रक्रिया की हू कछू जानकारी दैबे की कृपा करे।

मोइ जब जो छैन्द की पक्ति सूझि जाई वाइ लिखि लऊँ। अधूरी रह जाए तौ तब धुलि आवै, पूरी है जाइ। मन मे भावन की लहरि सी उठती रहे जो सुविधा ौ कॉपी मे उतरि आमे। बहौत सी कापी भरि गई। बहौत सी इत बितकूँ है मैंने आजु ही राज्यपाल कूँ लक्ष्य करिके जि दोहा लिख्यौ है।

जनता के धन चोरतौ,
और अधिक सब ठौर।
बनहु आप बलिराम जी
मानव के मन चोर ॥

या तरियाँ पहर भर शिवाश्रम पै खिडिया जी कौ सतसग-लाभ पाइके धन्य है। मनुहार करि-करिके बिन्ने शबत पिवायौ। बिनके नाती श्री कैलाशजी बीच-बीच ातल जल पिवामते रहे अरु खूब आवभगत करी। कैलाश जी ही मोई अपने स्कूटर ारिके मेरे ठहरिबे के ठिकाने पै पहौचाइ गए।

सूधे-साने स त सुभाव क बहुज्ञ कवि खिडिया जी सौ मिलिबे के वे अनमोल छन रह रहकै याद आमे है।